राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)

के अन्तर्गत

आचार्य विरागसागर ग्रन्थमाला

(रजत मुनिदीक्षा जयन्ती के पावन अवसर पर स्थापित)

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज

स्थापना ग्रन्थमाला : 09 दिसम्बर 2007

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)



विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन



राष्ट्रयोगी

सुरेश 'सरल'



राष्ट्रयोगी

जीवनी - चारित्ररथी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी

● सुरेश 'सरल'

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला (हिन्दी ग्रन्थांक-26)

राष्ट्रयोगी

चारित्ररथी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी

(जीवन-चरित्र)

लेखक

सुरेश जैन 'सरल'

(देश के पंद्रह महान संतों की जीवनी लिखने वाले मूर्धन्य साहित्यकार)



श्री विमर्श जागृति मंच, प्रकाशन

प्रथम संस्करण : 2015

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : (हिन्दी ग्रन्थांक-26)

राष्ट्रयोगी

सुरेश जैन 'सरल'

प्रकाशक :
श्री विमर्श जागृति मंच
116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.) 477001

मुद्रक : अरिहंत ग्रॉफिक्स, दिल्ली
फोन : 011-22002127, 9958819046

RASHTRAYOGI

By : Suresh Jain 'Saral'

Published by :
Shri Vimarsh Jagriti Manch
116, Bhuta Compound, Itawah Road, Bhind (M.P.)

समर्पण

जो/रवि से अधिक ज्वाजल्यमान हैं

जो/राकेश से अधिक शीतल हैं

जो हैं/प्रज्ञाश्रमण

ज्ञान दिवाकर

चारित्र-रथी

स्वरों के पुरोधा

कला के शृंगार

संगीत के आगार

श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी मुनिराज के
सारस्वत युगल-करों में
समर्पित

चरण चंचरीक
सुरेश जैन 'सरल'

15 नवम्बर 2013
(राष्ट्रयोगी के 41वें अवतरण-दिवस पर)

पावन प्रसंग

श्री १००८ आदिनाथ मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रय गजरथ महोत्सव

(16 फरवरी 2015 से 23 फरवरी 2015 तक)

नमनकर्ता

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति एवं श्री सकल

सकल दिगम्बर जैन समाज, पृथ्वीपुर (म.प्र)



चारित्र चक्रवर्ती के देश में : नूतन चारित्ररथी

भूमिका

चारित्र चक्रवर्ती के देश में : नूतन चारित्ररथी

सुरेश जैन 'सरल'

1. संत की अमरता

नारी का महिमागान करते हुए एक स्थान पर लिखा है कि महान नारियाँ अपने सतीत्व से, स्व के महत्त्व से, आचरण की पवित्रता से, वाणी की विनयशीलता से और मस्तिष्क में उपजे विवेक से समूची पृथ्वी के तल की शोभा बढ़ा देती हैं। वे धात्री का अलंकरण सा प्रतीत होने लगती हैं। इतने विशेष शब्द, विचार, आम-साहित्यकार या विचारक जीवन भर नहीं लिख सकते, इन्हें लिखनेवाला कोई महाचार्य और महान दार्शनिक ही हो सकता है। अध्ययन किया तो समझ में आ गया कि मेरी सोच सही है, उक्त आशय को लेकर प्रातः स्मरणीय आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने अपनी पवित्र लेखनी चलाई थी–

''सतीत्वेन महत्त्वेन वृत्तेन विनयेन च,
विवेकेन स्त्रियः काश्चिद् भूषयन्ति धरातलम्।।''

मुझे खुशी हुई कि जैनदर्शन के ग्रंथों में विश्वस्तरीय सोच को सदियों पूर्व अंकित कर दिया गया था। यह पृथक बात है कि पृथ्वी निवासी बौराने पाठक जीवन में उसे पढ़ने का समय ही नहीं निकाल पाते, दिन-रात संसारवर्धन करने वाले विचारों में खोये रहते हैं। पाठकों ने तो यह भी न पढ़ा होगा कि उक्त दिगम्बराचार्य जी ने साधुओं त्यागियों पर भी लिखा है। धरती माता का गौरववर्धन मात्र नारियाँ नहीं करतीं, साधु-संत भी करते हैं, तभी तो यह लिखा गया है–

जिन महान त्यागी-तपस्वियों ने परलोक के साथ इहलोक का पारदर्शी अध्ययन किया है और इहलोक (संसार) को समझा है, समझ लेने के बाद उसे त्याग दिया है, उनकी महिमा से पृथ्वी जगमगा रही है।

मुक्तेर्भिन्नं भवं ज्ञात्वा त्यक्तो येन महात्मना।
उद्द्योतितं जगत्सर्वं तेनैव निजतेजसा।।

प्रस्तुत महाकथा में ऐसे ही एक त्यागी-तपस्वी का चित्रण किया है जिन्होंने स्वतः को आत्मा सा, बना लिया है, कर लिया है। उनका वह आत्मा एक अर्थपूर्ण वैराट्य का प्रतीक है जो अक्षय है। अक्षर है। तपस्वी जी की चर्या पर ध्यान देकर मैं यह कह पा रहा हूँ कि वे 'अक्षर' रहकर अमरता की यात्रा कर

रहे हैं। उनका नितप्रति का पुरुषार्थ उन्हें आज नहीं तो कल मोक्षमार्ग पर ला देगा। यह सत्य आप भी जानते होंगे कि जो आत्मा मोक्षमार्ग पर चलने की जुगत बना लेती है, उसे कुछ भव पश्चात् सही, मोक्ष का द्वार भी मिल जाता है।

वह तपस्वीजी यदि मेरी आपकी भाषा में 'अक्षर' तुल्य हैं तो हमें अक्षर की व्याख्या भी समझना चाहिए। अक्षर शब्द से कुछ समय के लिए 'क्षर' हटा दीजिए, मात्र 'अ' पर विचार कीजिए तो पायेंगे कि 'अ' तो निषेधात्मक अथवा विपरीत अर्थवाचक है, यथा—अकारण या असमर्थ। तब विश्वास होता है कि 'अ' कह रहा है—व्यक्ति अकारण ही असमर्थ बना न बैठा रहे, वह कर्मठता और प्रज्ञा के श्रृंगार से समर्थ बने।

अक्षर में से 'क्ष' हटा दें तो 'अर' बचता है, 'अर' माने जिद, हठ, अड़। यह 'अर' संकेत करता है कि सत्योपासना के लिए सही साधक ही अड़ सकता है। सो हमें 'सही' बनना चाहिए और 'सही' के लिए अड़ना चाहिए।

अब 'र' को निकाल दें तो 'अक्ष' बचता है। 'अक्ष' जो पृथ्वी की धुरी है, जिस पर वह घूमती है। 'अक्ष' बतलाता है कि आदमी घूमता न रहे, केन्द्र बने या केन्द्र की ओर बढ़ने का प्रयास करे और अपनी यात्रा के समय स्वतः ही आँख (अक्ष) खोलकर रखे, स्वयं आँख बने। अक्ष बने।

अक्षर में से 'अ' निकाले जाने पर 'क्षर' शब्द की इयत्ता सामने आती है वह नाशवान का सूचक है। इंगित करता है कि शरीर, सम्पत्तियाँ और संसार नाशवान हैं अतः आत्मा (अक्षर) को साधिए जो अक्षीर्ण है।

अक्षर के रूप में मैंने श्रमणाचार्य, चारित्ररथी 108 श्री विमर्शसागर जी का संतत्व देख लिया है। अतः इस लेखनी ने प्रयास किया है कि उनकी तरह ही, हम सब अपनी आत्मा को संस्कारित करते चलें हर पल, संस्कार स्थापना का कार्य अंतिम साँस तक चलता रहे ताकि अंत में समाधि के रूप में अक्षराभिषेक सम्पन्न करने की पात्रता बची रहे, जीवन जाता रहे, संस्कार ध्वनित होते रहें।

2. विशेष संत : चारित्ररथी

अब वे सामान्य संत नहीं हैं, हैं वे अतिविशेष, क्योंकि उनका 'पद' महामंत्र णमोकार मंत्र की तीसरी पंक्ति में सुशोभित हो चुका है, वे बन चुके हैं—आचार्य परमेष्ठि। आचार्य भगवंत। अन्य संज्ञाएँ या विशेषण गौण हो गए। यों भी पंडिताचार्य, प्रतिष्ठाचार्य, बालाचार्य, ऐलाचार्य, गणधराचार्य, शंकराचार्य आदि शब्द महामंत्र की हर पंक्ति से दूर हैं। अस्तु।

परमपूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज को मैं इस लेखनी

के धरातल पर 'चारित्ररथी' कहना चाहता था, जो इस 'महापद' के बाद स-गौरव हो गए हैं—चारित्ररथी। अतः 'चारित्र चक्रवर्ती' के देश में नूतन 'चारित्ररथी' का जयघोष करता हूँ, लेखनी को धन्य करता हूँ।

जब लेखनी किसी 'धर्मग्रन्थ' की रचनार्थ चलती है तो वह चलते समय धर्मग्रन्थ से ऊपर हो जाती है, ग्रंथ उसके नीचे रहता है—तब तक। यह पृथक बात है कि ग्रंथ के लोकार्पण के बाद, लेखनी टेबिल तक सीमित रह जाती है और 'ग्रंथ' दर्शन, ज्ञान, चारित्र के आकाश को स्पर्श कर लेता है। हो जाता है विराट, महान और लोकोपयोगी। हाँ, बिल्कुल संत की भाँति, संत घाँईं, संत सा।

सुनें, वे अब जिनवाणी से आमूलचूल भरे हुए आगम हैं। आगमचक्खु हैं। उनके नेत्र अनेकान्त से सजे हुए हैं, वाणी स्याद्वाद से रची-पची है, कदमों के नीचे केवल चारित्र की धात्री है। सो हैं वे 'चारित्ररथी'। उनकी चर्या को नमन।

3. कथा के सोपान

लेखनी ने सायास कथा को छः खण्डों में विभाजित किया है। प्रथम खण्ड—'बालवाटिका की सुगंध' में आचार्यश्री के गर्भकाल से लेकर युवावस्था तक का वर्णन है जिसमें 'जतारा' नगर का संक्षिप्त परिचय उसके भूगोल, इतिहास और संस्कृति को आत्मसात कर लिखा है। बालकत्व का कलरव इसी खण्ड में समाहित है।

द्वितीय खण्ड—'गृहत्यागी का आकिंचन्य, जिसमें आचार्यश्री के युवक-स्वरूप का चित्रण करते हुए, राकेश नामक युवक ने किस तरह गृह त्यागकर वैराग्य पथ पर कदम बढ़ाये, का चित्रण है। फिर ऐलक दीक्षा के हृदय स्पर्शी दृश्य संजोये गए हैं। देश के भू-भाग पर उन्होंने गुरु के साथ किस तरह चर्या की साधना की है, आदि प्रसंग श्लाघनीय हैं। सम्पूर्ण पृष्ठों में, उनके भीतर आकिंचन्य धर्म की आराधना के परोक्ष दृश्य भी अवलोकनीय हैं। फिर मुनि दीक्षा के दृश्य।

तृतीय खण्ड—"संयम का क्षितिज : दिगम्बरत्त्व में" दिगम्बरत्त्व की सिद्धान्त यात्रा, मुनिदीक्षा के बाद की गई साधना तथा प्रभावना की विस्तृत चर्या है। मुनि, पल-पल सिद्धान्तों की रक्षा में अपने तन को खपाते हैं और आत्मा का उच्च संतुलन बनाते हैं, आदि दृश्य इस खण्ड की धरोहर हैं।

कथा के मूलनायक का अपने गुरुदेव के साथ संघ में रहने का श्लाघनीय ढंग इसी खण्ड में है। फिर गुरु-आशीष से संघ से पृथक विहारों का वर्णन। अपने संघस्थ लघु गुरुभाईयों के साथ उनके वात्सल्य प्रधान दिनों-पलों का वर्णन। जनसमूह के मध्य धर्म-प्रभावना का गुर और वसतिका में धर्म-साधना

की प्रज्ञा के दर्शन भी उपस्थित किए हैं इस कलम ने। वे एक श्रेष्ठ कवि और शायर हैं, अतः प्रभु प्रसाद के रूप में, उनकी काव्य पंक्तियों का योजनाबद्ध किन्तु स्वाभाविक प्रयोग पठनीय बन पड़ा है।

'आचार्य; आगमिक सूत्रों का महायात्री' के नाम से है चतुर्थ खण्ड, जिसमें उनके जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय का वर्णन है। किस तरह उन्होंने आचार्य पद अंगीकार किया, यह वर्णन अति विशिष्ट, रोचक और शिक्षाप्रद है। आचार्य स्वरूप धारण कर लेने के बाद, देश-दुनिया के समक्ष वे किस तरह चल रहे हैं, यह इसी खण्ड में पढ़ने मिलता है।

'आचार्य संघ' का विवरण और संघस्थ सदस्यों का परिचय इसकी विशेषता है। आचार्य बन जाने के बाद, प्रथम दो वर्ष के समय का चित्रण प्रभावनाकारी है।

पाँचवें खण्ड–''विशिष्टताएं एक झलक'' में पू. आचार्यश्री की जन्मकुण्डली और भावी-जीवन की घोषणा, गृहस्थकाल का पारिवारिक विवरण, बस्ती और पड़ोसियों का उल्लेख, विमर्श लिपि के दस्तावेज, के साथ वह विशेष कविता जिसे मध्यप्रदेश शासन ने प्रदेश की ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को शालाओं की पाठ्य-पुस्तक सामान्य हिन्दी में शामिल किया है।

छठवें खण्ड में गुरुदेव के वे चित्र संजोये गए हैं जो शुरू के समय से आज के समय तक दर्शनीय हैं। बाल्यावस्था, तरुणावस्था, ऐलकजी, मुनिजी, आचार्य जी आदि रूपों के चित्र। साथ में बहुत कुछ भी।

पाठकगण सदा की तरह धैर्यपूर्वक हर खण्ड को पढ़ें और अपने इष्ट-संत के पारदर्शी स्वरूप को समझें, यह भावना है। कोई पुरुषार्थी श्रावक उन जैसा बने, है यह कामना भी।

आभार के क्षण

आभार मानने की बात भी अंत में आवश्यक है। इस महाकथा के लेखन की प्रेरणा चूँकि मुझे किसी अन्य व्यक्ति से नहीं मिली, मिली अपनी ही अंतःप्रेरणा से, अतः सबसे पहले इस देह में स्थित निर्मल-आत्मा का आभारी हूँ, जो आज साथ है, कल किसी दिशा में उड़ जाएगी।

आभार मानता हूँ इस कथानक के मूलनायक का, जिन्होंने मुस्कानों के माध्यम से लेखन की न केवल स्वीकृति दी, संतों की गाथाओं की सराहना भी की। आभारी हूँ मुनिश्री विचिन्त्य सागर जी का जो अपनी ब्र. अवस्था से वर्तमान बाना तक, मुझे प्रेरकसूत्र देते रहे। आभारी हूँ बहिन/बेटी ब्र. श्वेता

दीदी, नमिता दीदी, आँचल दीदी का जो कथा से संबंधित सामग्री प्रदान करने और कराने में सूत्रधार बनीं, उनके साथ शेष सभी दीदियों का भी। एक मायने में पूरे श्रीसंघ का।

प्रस्तुत जीवनी को ग्रंथित करते समय शताधिक यतियों, आर्यिकाओं, श्रावकों, श्राविकाओं और लेखकों कवियों के नाम इस लेखनी ने सादर स्पर्श किए हैं, उन सभी सज्ञाओं का आभारी हूँ। आभार के साथ शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ उस नरपुंगव परिवार का, जिन्होंने अपने श्रम से अर्जित 'श्री' को पवित्र भावनाओं के साथ ग्रन्थ प्रकाशन में उपयोगित की है। आभारी हूँ 'धरती के देवता' के पारिवारिक जीवन की 'माताजी' श्रद्धेय भगवती जी जैन जतारा का, जिनका 'सपूत' तपःपूत बनकर हमारे समक्ष आया और हम जुट सके उसके गुणगान करने।

यह भूमिका यहाँ पू. मुनि विचिन्त्य सागर जी के काव्य से पूर्ण करना चाहता हूँ। उन्होंने प.पू. आचार्य विमर्शसागर जी महाराज की 'जीवनगाथा' पर कलम चलाते हुए लिखा है–

यह कथा नहीं, है महाकथा, जग के दुख हरनेवाली है,
शुभ आस्रव से यह भव्यों की हर झोली भरनेवाली है।
यह नायक नहीं, महानायक विधि का नायक बननेवाला,
संकल्पित हो संयम द्वारा, भावी-भगवन बननेवाला।।

405 सरल कुटी, गढाफाटक, जबलपुर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड

बाल-वाटिका की सुगंध

द्वितीय खण्ड

गृहत्यागी का आकिंचन्य

तृतीय खण्ड

संयम का क्षितिज : दिगम्बरत्व

चतुर्थ खण्ड

आचार्य : आगमिक सूत्रों का महायात्री

पंचम खण्ड

विशिष्टताएँ : एक झलक

षष्ठ खण्ड

चित्रावली



प्रथम खण्ड

बाल-वाटिका की सुगंध

कथा प्रारंभ

चिन्तन के गवाक्ष से : जतारा

1. ग्राम का नाम अनेक ध्वनियाँ प्रदान कर रहा है काश कोई सुन-समझ पाता। मगर मेरे पाठकगण कुछ-कुछ जान चुके हैं। 'जतारा' शब्द का पहले 'ज' अक्षर लें जो हिन्दी वर्णमाला का आठवाँ व्यजन है। इसका अर्थ है—मृत्युंजय, जन्म, पिता, विष्णु, विष, मुक्ति। छंदशास्त्र के अनुसार एक गण। जब यह 'ज' विशेषण रूप में प्रयोग किया जाता है तब इसका अर्थ हो जाता है जीतनेवाला या वेगवान।

2. 'ता' का अर्थ है—पर्यन्त। जैसे हम कभी कहते हैं ताउम्र। 'ता' के बाद 'रा' है। 'रा' के मायने हैं राआ। राआ माने राजा।

3. अब 'जतारा' के दो-दो अक्षर जोड़ कर अर्थ निकालें। 'जता' माने जताना, अवगत कराना, आगाह करना। फिर 'तारा' माने नक्षत्र, आँख की पुतली, भाग्य, ताला। यह महाविद्याओं में से एक विद्या का नाम भी है। तारा को सज्ञा रूप में देखें तो याद आयेगा कि महाराज बाली की पत्नी का नाम तारा था तो बृहस्पति की भार्या का नाम भी तारा था।

4. अब 'जतारा' के 'ज' और 'रा' को जोड़कर देखें, तो बनता है शब्द 'जरा'। जरा माने बुढ़ापा, वृद्धावस्था, थोड़ा सा, कम। यों जतारा का 'ज' सर्वाधिक महत्वपूर्ण अक्षर है। क्योंकि 'ज' से जप, जपतप आदि शब्द निकलते हैं 'ज' से जय और जयमाला भी।

जिन अर्थों को खोजा है, चलो अब उन पर ध्यान दें। पहली कंडिका (पैरा) पर पुनः विचार करें—'ज' माने मृत्युंजय। जतारा का यह शिशु मृत्युंजय तुल्य संसार के समक्ष आएगा। 'ज' माने जन्म, इसका जन्म धर्म का पिता (रक्षक, पालक) बनने हुआ है। यह विष पी लेनेवाले शंकरजी की तरह विषपायी होगा। कड़वी बातें पचा लेनेवाला वीर। यह मुक्ति के प्रशस्त पथ पर चलेगा। 'ज' माने

जीतनेवाला, यह कर्मों पर विजय पायेगा। विजय पाने में वेगवान सिद्ध होगा।

देखें अब द्वितीय कंडिका (पैरा), 'ता' का अर्थ जहाँ पर्यन्त बतलाया है। जतारा का 'ता' कह रहा है कि शिशु ताउम्र बालब्रह्मचारी रहेगा। इसी पैरा में 'रा' का अर्थ राजा बतलाया है। शिशु अपने आप में राजा से कम महत्त्व नहीं पाएगा। उसके आगे तो राजा भी नतमस्तक होंगे क्योंकि वह राजा से ऊपर 'महाराज' की पर्याय धारण करेगा।

तीसरी कंडिका में दो-दो अक्षरों को जोड़कर अर्थ निकाला गया है। 'जता' का योग बतलाता है कि यह शिशु जिनवाणी का मर्म जतलाने आया है। जीवन का रहस्य समझाने आया है कि वह 'पानी की बूँद' से अधिक शास्वत नहीं है। फिर बात आती है 'तारा' की। तो सच, यह एक महान नक्षत्र की तरह देश में देखा जाएगा। समाज की आँख की पुतली बनकर रहेगा। जन-जन को भाग्य सुधार लेने के सूत्र देगा और कर्म के आस्रव पर ताला जड़ देने की कला सिखलाएगा। नारियों में महान नारी 'तारा' के आदर्श गुण, स्थापित करने का मार्ग बतलाएगा।

आईये, चौथी कंडिका का रहस्य जानें, जहाँ 'जरा'का अर्थ समझाया गया है। बालक 'जरा' ही नहीं, जन्म, जरा, मृत्यु के भय को दूर करने का प्रकाश देगा। जरा सा भी शिथिलाचार पसंद न करेगा। महान कितना भी हो जाए पर अपने आप को 'कम' ही कहता रहेगा। जीवन भर जप, जपतप और जपमाला से वास्ता रखेगा। तीर्थंकरों की जयमाला में वर्णित गुणों को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करेगा और अंत में समाधि का वरण कर मृत्यु से भी जयमाला पहनेगा।

भूगोल के गवाक्ष से : जतारा

यों तो हुआ जतारा की ध्वनियों से शिशु का परिचय, अब जतारा के परिचय को भी जानना चाहिए, हाँ, जतारा का भौगोलिक परिचय। जतारा के समीप से कोई नदी भले ही न बहती हो, पर वहाँ स्थित विशाल 'मदनसागर' नामक सरोवर, नदियों के अभाव को पूर्ण करता रहा है। सदियों से जतारा का आम-आदमी सरोवर की गोद का सुख पा रहा है। सरोवर के कारण जतारा की श्रीशोभा बढ़ती ही जा रही है।

ग्राम्यांचल की नारी को अपने सौन्दर्य और सौम्यभाव को बढ़ाने के लिए कोई शृंगार (मेकअप) पृथक से नहीं करना पड़ता, वह नहा-धोकर गीले बदन जब अपने सिर का जूड़ा बाँधती लपेटती है तो उसके प्राकृतिक सौन्दर्य पर फिल्मी नायिकाएँ भी खीजकर रह जायेंगी। उसका अनछुआ तन, और मिट्टी से धुला मुखमंडल, उसे सुंदरता की देवांगना बना डालता है। फिर वह जल से

भरा कलश शीश पर धरकर जब लजाती सकुचाती सी चलती है तो गाँव के मार्ग अपने को धन्य धन्य कह उठते हैं एक शीलवंती के पदचाप का स्पर्श पाकर। सच, जतारा नगरी भी इतनी ही सुंदर है, वह वर्षाकाल में कई माहों तक रह-रह कर स्नान करती है, तन-बदन का प्रक्षालन करती है। सिर के पीछे जूड़े के स्थान पर एक नन्हीं पहाड़ी को सम्हाल कर रखती है फिर शीश पर विशाल कलश की तरह पूरे मदनसागर को धारण करती है तो उस रम्यता के समक्ष अन्य-अन्य सौन्दर्य पीछे रह जाते हैं।

नगरी के पश्चिम में दो पहाड़ियाँ हैं एक तो मदनसागर के पास ही जहाँ से नारी के सिर से कढ़नेवाली चोटियों की तरह, दो नहरें (जलमार्ग) निकाले गए हैं। मदनसागर के विराट बंधान का स्वरूप धारण किया है जहाँ इसका जल पहाड़ी के गालों को छूता हुआ लहराता है, वहाँ ही एक फाल (जल प्रपात) बन गया है। पानी करीब 15-20 फुट रहता है दिन-रात। गाँव के लोगों और जिला प्रशासन ने मिलकर उस पानी का सदुपयोग किया। दो नहरें निर्मित कर। फाल से एक नहर सीधी पूर्व दिशा की ओर जाती है जो छोटी नहर बोली जाती है, यह आगे बहकर उस रास्ते को काटती है, जिससे जैन मंदिर एवं बस-स्टैंड जुड़े हुए हैं, तो दूसरी नहर फाल से दक्षिण दिशा की ओर दौड़ती रहती है, जिसे बड़ी नहर कहा जाता है। दोनों का शीतल ओर पावन जल सहस्रों खेतों की प्यास बुझाता रहता है तब लगा कि मदनसागर और नहरें गाँव के लिए वरदान बन चुके हैं।

छोटी नहर के पास पूर्वी किनारे पर दिगम्बर जैन-मंदिर स्थित है जो वर्तमान में निवास कर रहे 130 घर के जैन समाज के गले का हार है मंदिर के पट पश्चिम-मुखी हैं। मंदिर के दरवाजे पर खड़े हो जावें तो पश्चिम की ओर वह भवन स्थापित मिलता है जिसमें श्रमणाचार्य जी का जन्म 15 नवम्बर 1973 को हुआ था। मंदिर के तीन तरफ उत्तम स्वभाव और उच्च शिष्टाचार से सम्पन्न कुछ मुस्लिम परिवारों के घर हैं। मंदिर के समीप ही एक कुआँ है, जिसका जल प्रतिदिन श्रीजी के अभिषेक में लग कर धन्य हो रहा है, तो वहाँ शांतिनाथ पाठशाला भी है जो बालकों में संस्कारों का वपन कर रही है।

मंदिर से दक्षिण की ओर जानेवाले रास्ते पर अनेक भवनादि स्थापित हैं, यदि प्रमुख वस्तुओं के नाम लिए जावें तो पहले छोटी नहर पार करनी पड़ती है, है वहाँ पक्का पुल। फिर दाहिनी ओर मीठे जल का कुआँ, उसी से लगा हुआ है बस स्टैंण्ड, जिसके सामने सड़क पार पुराना थाना है। इसी सड़क पर आगे, टीकमगढ़ की ओर बढ़ने पर दाईं तरफ अस्पताल एवं बाईं तरफ उच्चतर माध्यमिक शाला है। फिर आगे दाईं ओर तहसील कार्यालय और नूतन-पुलिस थाना बनाया गया है।

मंदिर से पश्चिम की ओर जानेवाली सड़क पर, कहें—श्रमणाचार्य जी के गृहधाम के आगे नगाइच का कुआँ, कन्याशाला और मुख्य बाजार है। बाजार वाला मार्ग मोड़ बनाता है, यदि उत्तर की ओर जाओ तो मउरानीपुर को जोड़ता है और उत्तर की ओर पहाड़ के किनारे से चलना होता है।

मंदिर से नीचेवाला उत्तर दिशा की ओर जानेवाला मार्ग 'बाहर दरवाजा' (बार दरवाजा) से होकर कृषि उपज मंडी में से आगे बढ़ जाता है। पूर्व दिशा में बस्ती के अनेक भवन हँस रहे हैं चालीस हजार से अधिक जनसंख्या वाली यह नगरी अपने हर नागरिक का उचित लालन-पालन कर रही है, जहाँ जैनों के साथ-साथ साहू, गुप्ता, ब्राह्मण, मुस्लिम आदि विभिन्न जातियाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से निवास कर रही हैं। वर्तमान (सन् 2012) में नगर पालिकाध्यक्ष पं. श्री जगदीश शरण नायक नगर प्रमुख हैं तो अन्य मुख्यों में श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, श्री हरिबाबू शर्मा, श्रीसुरेश दुबे, श्री कपूरचंद बंसल श्री महेश व्या (पूर्व अध्यक्ष) श्री सुभाष सिंघई, श्री राजेश माते आदि के नाम प्रमुख हैं।

व्यक्तियों से अधिक प्रसिद्ध है जतारा का हनुमान मंदिर और कुण्ड। कुण्ड के पास की पहाड़ी कुंड पहाड़ी कहलाती है। जहाँ सन् 1995 में विशाल पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ था। तभी से राकेश जी के मस्तिष्क में नव-चिंतन जागा था।

श्रीमंत स्व. सनतकुमार जी का मकान उत्तरमुखी है, जिसके सामने की ओर चौक है, यह चौक घरों से घिरा हुआ है, समीप ही शंकरजी का मंदिर सुबह-शाम अपने घंटे, घंटियों और शंखनाद के माध्यम से समग्र हिन्दू परिवारों को संस्कारों का स्मरण कराता है। श्री सनतकुमार के पड़ोस में पहला घर सोनी परिवार का है, जो वर्षों से अपनत्व और प्रेम के धागे से बँधा हुआ है।

नगर में तीन स्कूल हैं, प्रथम—प्राथमिक शाला मदनसागर, द्वितीय—कन्याशाला और तृतीय—उच्चतर माध्यमिक शाला। द्वितीय को छोड़, प्रथम और तृतीय राकेश जी के अध्ययन के साक्षी हैं। इन्हीं के कक्षा में वे पढ़े हैं ओर इन्हीं के मैदानों में वे खेले हैं, फिर महाविद्यालयीन शिक्षार्थ टीकमगढ़ गए थे।

नगर में बह रही बड़ी नहर के पास रेस्टहाउस बनाया गया है जहाँ शासकीय अधिकारी और नेतागण आते-जाते ठहरते रहते हैं जतारा कृषि प्रधान नगर है, पहाड़ियों का स्थान छोड़कर शेष पूरा स्थान मीलों तक खेतों से भरा पड़ा है। हरियाली की चादर वर्ष भर बिछी रहती है, ग्रीष्मकाल छोड़कर। यहाँ की मिट्टी काली और उपजाऊ है, फलतः कृषकगण सभी प्रकार की फसलों की उपज प्राप्त करते रहते हैं। सिंचाई के भरपूर साधन उपलब्ध हैं।

शिशुत्व का कलरव

नवम्बर के माह से ठंड बढ़ने लगती है, अतः शिशु की दादीजी एवं माताजी उसे गर्म कपड़े (ऊनी वस्त्र) पहनाकर पालने पर लिटा देते थे। सुबह उसकी मालिश अक्सर घर के प्रांगण में, मीठी-मीठी धूप का सुख प्रदान कराते हुए, की जाती थी। कभी दादी तो कभी माँ यह कार्य करती थीं, किन्तु मालिश रोज होती थी। जब कभी आँगन में केवल माता और शिशु रहते तो माँ हाथों में तेल लेकर रोज की तरह हाथ फिराती थीं किन्तु साथ-साथ गुनगुनाती भी थीं। जैसे प्यारे बेटा को कोई लोरी सुना रही हों। वे अक्सर वही गीत गाती थीं जो गर्भ अवस्था में गर्भस्थ शिशु को सुनाती थीं। वे कीमती शब्द आज भी याद हैं उन्हें। वे स्वतः को सम्बोधित कर शिशु तक आवाज पहुँचाना चाहती थीं, अतः गीत गातीं–

संसार का सितारा, स्वामी मुझे बनाना।
अकलंक वीर जैसा, नामी मुझे बनाना।

लेखक का आशय यह है कि जिस शिशु ने गर्भ में, फिर माँ की गोद में, उक्त प्रशस्त गान सुना हो, वह भला बड़ा होकर वीर अकलंक क्यों न बनेगा? संस्कृति और संस्कार ही शिशु को उच्च और आदर्श जीवन जीने की दिशा प्रदान करते हैं। बाद में शिक्षा-दीक्षा से जीवन की दशा सुंदरतम हो पड़ती है।

नगर 'जतारा' कहाँ है, कैसा है, आदि जिज्ञासाओं पर कुछ समय बाद विचार करेंगे, पहले यह तो जान लीजिए कि जतारा में हुआ क्या था? जतारा वह लघु नगरी है जहाँ राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य गुरुदेव प.पू. 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज का जन्म हुआ था। धरती पर आने के पूर्व, उन्होंने माता श्रीमती भगवती देवी की पावन कुक्षि स्वीकार की थी।

गर्भावतरण महिमा

सन् 1973 का फरवरी माह भगवती जी के देहतत्व के साथ-साथ, सम्पूर्ण जतारा में परिवर्तन की लहर लेकर आया था। लोग अपने संतापों को कम होता देख रहे थे, मानवीय मैत्री में प्रगाढ़ता पा रहे थे और घर-दोर की रौनक बदलती हुई अनुभूत कर रहे थे। जिनके मन में कोई भला कार्य करने की भावना वर्षों से सुप्त पड़ी थी, उनके मन और तन सक्रिय हो पड़े थे। कोई मकान निर्माण का कार्य शुरू कर रहा था तो कोई अपनी दुकान का विकास कर रहा था। कोई खेतों की मेढ़ पर मिट्टी चढ़ा रहा था तो कोई अनबोई भूमि को बोने योग्य बना रहा था।

मार्च, अप्रैल, मई के माह भी जतारा वालों को आनंदसिक्त कर रहे थे।

फसलें मुस्कुराकर घर चलने उतावली थीं, खेत पुत्री-विदा के सुखाकांक्षी प्रतीत हो रहे थे। सच, जब फसलें दानों के आकार में अपने पिता (खेत) से विदा हुईं तो कृषक उन्हें सम्हाल नहीं पा रहे थे। हर साल से अधिक अनाज दिया जो था दानवीर खेतों ने। न किसी ने बोली लगाई थी, न किसी ने अनुरोध किया था, फिर भी खेत अपनी गाँठ का दाना-दाना परोपकारार्थ भेंट कर रहे थे। कृषकों के घर ही नहीं, दासे और प्रांगण भी भिन्न-भिन्न अनाजों से भर गए थे। कहीं गेहूँ सोने की तरह बिखरा पड़ा था, कहीं चने साधु की तरह मौन साधे ढेर में शोभा पा रहे थे। कहीं अरहर तो कहीं मूंग के दाने युवतियो के दंतों की तरह स्वयमेव चमक रहे थे। कुछ घरों में तिली, तितली की तरह उड़ती बैठती प्रतीत हो रही थी तो कहीं अलसी, आलसी बालकों को चिढ़ा रही थी। गो यह कि सर्व प्रकार के धान्य जतारा की गोद में मुस्कुरा रहे थे।

जून-जुलाई की तरफ मौसम खिसका तो ठंडी/आर्द्र हवाओं ने ग्रामीण ललनाओं के गाल चूमना शुरू कर दिए। कभी-कभी पानी की बौछार बादलों का साथ छोड़ ग्रामवासियों के सिर पर सवार हो जाती। वैसी ही भींगी रात में एकबार श्रीमती भगवती जी ने मनोहर स्वप्न देखा कि शिशु, जो जन्मजात नग्न होता है, दौड़कर आया, मुनियों की तरह गोद को अपनी नन्हीं-नन्हीं अंगुलियों की पीछी से बुहारा और फिर बैठ गया पाल्थी लेकर। हाँ, पद्‌मासन में। जैसे, जाप दे रहा हो। भगवती की निद्रा टूटी तो विस्मित हो गई। मुस्कराई। कोई देख न ले, इस भाव से अपने पेट पर हाथ रखा। लगा—वह शिशु तो पूर्व से ही यहाँ बैठा है।

प्रातःकाल की सामायिक के पश्चात जब भगवती जी की दृष्टि अपने पति (श्रीमंत सनतकुमार) पर पडी तो सकुचाकर झेंप सी गई। सनत जी को ताड़ते हुए विलम्ब न लगा, पूछ बैठे—क्या हो गया भाग्यवान्, नजरें क्यों चुरा रही हो? तब खुलना पड़ा भगवती जी को। उम्र की अल्हड़ता को विसर्जित करते हुए, धीरे से बोली—'आज स्वप्न देखा है।'

—क्या देखा है?

गालों की लाली छुपाते हुए भगवती जी ने मृदु स्वर में कहा—'अरे! एक शिशु मुनियों की तरह आसन लगाकर मेरी गोद में बैठकर जाप दे रहा था।'

—तो?

—तभी से मुझे अद्‌भुत-आनंदानुभूति हो रही है।

सनतकुमार ज्ञानी थे, अतः पत्नि का मानवर्धन करते हुए बोले—अरे, भगवती! तेरे गर्भ में जो है, वह ही अपना रंग रूप दिखा रहा होगा? नहा-धोले, फिर मंदिर जा और श्रीजी के समक्ष उसके और अपने सुस्वास्थ्य की

कामना कर।

पत्नि ने दृढ़ निश्चय के साथ पति को देखा तो पतिदेव ने गृह-सदस्यों की दूरी भाँप लेने के बाद, प्यार की एक मोहर पत्नि के कपोल पर लगा दी। वह छुई-मुई सी भाग गई अन्य कमरे की ओर।

अगस्त और सितम्बर माह पानी बरसाते रहे। जैसे जतारा में जन्में उस शिशु सहित सम्पूर्ण जतारा नगर का अभिषेक कर रहे हों, इंद्रों के संकेत पर गर्भ-कल्याणक-महोत्सव मना रहे हों। तभी वर्षाधिक्य से नगर के बाजार में फलों का आना बंद हो गया। न कहीं सेव देखने मिलते, न अनार, न अन्य फल। भगवती जी तो गर्भ के प्रारंभ से ही रोज समुचित फलों का उपयोग कर रहीं थीं। जब वे नगर में न मिले तो सनतकुमार ने अपनी जुगत भिड़ाई, उन्होंने परिवार को परामर्श दिया कि जब फल न रहा करें तब दिन में दो-तीन बार पेयजल में ग्लूकोज (पाउडर) घोल कर पिलाया करें भगवती जी को। स्थिति यह बनी कि अगस्त में चार दिन और सितम्बर में तीन दिन फलाभाव के कारण भगवती जी को भर-भर गिलास ग्लूकोस का पानी पीना पड़ा।

उसी दौरान नगर की एक गुणी महिला भगवती का हालचाल पूछने चली आईं, वे वयोवृद्ध थीं और अनेक अनुभवों से परिपूर्ण। जब उन्हें पता चला कि सातवें और आठवें माह के चलते बहु ने ग्लूकोस का पानी पिया है तो बड़ा अफसोस जाहिर किया। बेनीबाई, भगवती आदि को सम्बोधित करते हुए बतलाया कि शिशु को शरदी हो सकती है उसके बड़े हो जाने पर वह शरदी को सहन नहीं कर पायेगा। फलतः हर मौसम में उसे शरदी-जुकाम होते रहेंगे। बरस में 4-6 बार तो पक्का समझो।

उस वृद्ध महिला का कथन सही निकला। गुरुदेव को वर्तमान में चाहे जब शरदी-खाँसी हो जाती है। अतः योग्य पाठक-पाठिकाएँ इस परामर्श को याद रखें और अपने तथा आनेवाली पीढ़ी के स्वास्थ्य को खतरों से बचाने का ध्यान रखें।

इस लेखनी को श्रद्धेय माँ भगवती देवी के और-और प्रसंग चाहिए थे, अतः मैंने बहिन ब्र. श्वेतादीदी से अनुरोध किया कि वे माताजी से मिलें और बातों ही बातों में उनकी गर्भावस्था के अनुभव सुनें, फिर लिखकर मेरे पास भेजें। साधनाशील बहिन ने वैसा ही किया और माता से वार्ताकर, सूत्र मुझे भेजे, जो इसतरह हैं-

माताजी को गर्भावस्था में 9 माह तक अनेक शुभ-शुभ स्वप्न आए थे। जिनमें से कुछ ये हैं—एक रात उन्हें फलों से लदा हुआ वृक्ष दिखा जिसमें एक डालपर सेव लटक रहे थे तो दूसरी पर केला के गुच्छे, तीसरी पर अनार उगे

थे तो चौथी पर अंगूर के गुच्छे। वृक्ष के चारों ओर फल ही फल, एक साथ लटकते प्रतीत हो रहे थे। स्वप्न उन्हें सुन्दर और शुभ लगा था।

एक रात मनोहारी चित्रकारी से चित्रित चाँदी के कलश दिखे, एक में केशर मिला दूध रखा था और दूसरे में दही।

किसी माह, रात में उन्हें बड़ी-बड़ी रजत-परातें (चाँदी की थालियाँ) एक पंक्ति में रखी दिखीं, जो चाँदी के सिक्कों से भरी हुई थीं। जैसे ढेर लगा हो। फिर एक रात दो विशाल गज दिखे जो अपनी सुण्ड में मालाएँ लेकर चल रहे थे।

रात्रि में ऐसा नहीं कि सिर्फ स्वप्न ही देखती थीं, भरपूर निद्रा भी लेती थीं, उम्र भी नई-नई थी। रात्रि के दृश्य आँखों में अँज जाते थे जो अपने आप याद रहे आते थे। यह पृथक बात है कि हर स्वप्न की चर्चा प्रातःकाल उठते ही वे अपने प्राण प्यारे पति से अवश्य करती थीं। एक निशा में उन्होंने बहुत विशाल सरोवर देखा, जिसमें अनेक सुन्दर-सुन्दर कमल खिले हुए थे और कमल के पत्ते जल सतह पर तैर रहे थे।

हर निशा कोई न कोई दृश्य दिखाती हो ऐसा नहीं था, स्वप्न तो कभी-कभी ही आते थे। एक रात उन्हें दिखा कि वे गेहूँ की फसल से झूमते खेत में दौड़ रही हैं, तो दूसरी रात एक कृषिफार्म की मेड़ पर खड़ी हैं, खेत में पानी भरा है और धान लहलहा रही है।

दीदी ने पूछा कि उस समय (काल) में आप मंदिर जी में कौन-कौन से पूजन-पाठ या विनयपाठ पढ़ती थीं? तब माताजी ने सहज भाव से बतलाया था—'दीदी जी, भक्तामर पढ़ने की विशेष रुचि थी। कभी संस्कृत का तो कभी हिन्दी का पाठन करती थी। रोज पूजा-पाठ अनिवार्य था। सुबह-शाम स्तुतियाँ और विनतियाँ करते हुए समय बीतता था।

अक्टूबर ने मीठी-मीठी ठंड प्रदान की जतारावासियों को। उस गुलाबी ठंड में अनेक बहू-बेटियों ने मीठे स्वप्न देखें होंगे, किन्तु भगवती जी के स्वप्न तो सरासर मिश्री ही थे। उन्हें 'बालमुनि' विभिन्न मुद्राओं में दिखता रहता था। मगर नवम्बर माह तो कमाल कर गया, जितनी ठंड बढ़ी, उतनी ही मिठास बढ़ी। माता देखतीं हैं कि 'शिशु मुनि' बड़ा हो गया है और वे उसका पड़गाहन कर रही हैं। फिर एक रात वे स्वप्न में उसे निरन्तराय आहार भी दे देती हैं।

गृह सदस्य, जो वरिष्ठ थे, उन्हें भगवतीजी के पेट का भूगोल समझने में देर नहीं लगी। चर्चा होने लगी—'भये-भये दिन हैं, किसी भी क्षण प्रसव हो सकता है। अगली सुबह भगवती जी ने सासुमाता को पेट के दर्द की सूचना दी। गाँव का अस्पताल सेवार्थ तत्पर था।

सासुजी (श्रीमती बेनीबाई) ने विलम्ब नहीं लगाया। उस काल में आटो टेम्पो जीपों का चलन जतारा में नहीं था कि 100 200 रु. दो और बैठकर चल दो। सासूजी ने बहु भगवती के स्वास्थ्य की जानकारी की परख की कि वह आधा-एक किलोमीटर पैदल चली सकती है या नहीं? जब उन्हें विश्वास हो गया तो भारी स्नेहपूर्वक बोलीं-'बहुरानी, चलो हमारे साथ अस्पताल।' बहू पीछे, सास आगे, यात्रा पैदल शुरू।

कुछ ही दूर पहुँचीं तो श्री रतनचंद व्या (मौसिया ससुर) की नजर उन पर पड़ गई। अतः चुप न रह सके, पूछ बैठे-'ये सास बहु कहाँ जा रहीं हैं?' बेनीबाई ने उन्हें मंतव्य बतला दिया। तब वे बोले-'अरे पैदल न जाओ, हमारी बैलगाड़ी पर चलो। मैं बैल लगाकर पास ही एक गाँव भेजनेवाला था, अब पहले आप लोग उससे अस्पताल जाओ, फिर देखा जाएगा।' सास-बहु दोनों, गाड़ी पर बैठ गईं। कुछ ही समय में अस्पताल पहुँच गईं।

गाँवों की अस्पतालों में प्रसुति के कार्य मुख्य रूप से नर्सें ही निपटा देती थीं, डॉक्टर उपस्थित होतीं तो थोड़ा बहुत झाँक लेतीं थीं। बेनीबाई को अस्पताल में नर्स (श्रीमती मुन्नीबाई) मिली। उसने तुरन्त प्रसुता को एक कक्ष में प्रवेश कराया। समुचित उपचार किया। सास-बहू सुबह 8 बजे अस्पताल पहुँची थीं और मात्र डेढ़ घंटे बाद प्रसव हो गया। नर्स ने लगन पूर्वक माता और शिशु की व्यवस्था की। शीघ्र ही शिशु को अन्य कक्ष में ले जाकर उसकी साफ-सफाई की, फिर एक कपड़े में लपेटकर, माता के पास ले आई। बेनीबाई और भगवती देवी, नर्स की प्रतीक्षा कर रही थीं जो तुरन्त पूर्ण हो गई। बेनीबाई फुर्ती से शिशु की ओर बढ़ीं उसका मुख देखने। तब नर्स ने शिशु को पुनः उठा लिया और हँसकर बोली-'आप दोई को बधाई, भैया भव है।' नर्स की घरेलू बोली से दोनों की आत्मा जुड़ा गई। तब तक बाहर सनतकुमार आ चुके थे। जानकारी उन्हें भी दी गई, वहाँ भी खुशी का सागर उमड़ गया हृदय प्रदेश में। सनतजी के पीछे मामीजी (गजराबाई) खड़ी थीं, शुभ-समाचार उन्होंने सुना और हर्ष मनाया।

सभी को आश्चर्य हो रहा था कि शिशु के जनम के समय माँ को अधिक पीड़ा नहीं हुई, न पूर्व माहों में आकुलता। जरूर किसी पुण्यात्मा ने जन्म लिया है जो अपनी प्यारी माँ को किसी कष्ट में नहीं डालना चाहता। नर्स ने अस्पताल के रजिस्टर में शिशु जन्म का समय और तिथि लिखी। 15 नवम्बर 1973, सुबह 9.32 पर। सभी ने जनम के उस पावन क्षण को नमन किया मन ही मन।

समय अपनी गति से चल रहा था। डॉक्टर के.सी. जैन के अवलोकन के बाद, तीसरे दिन जच्चा और बच्चा की विदाई कर दी गई अस्पताल से। बेनी बाई इस बार तैयारी से आई थीं, वे अपनी पुत्रवधू और पौत्र को बैलगाड़ी से

ले गईं। घर पहुँचते ही जैसा कि उस समय-काल में होता था, जच्चा-बच्चा को नीम के गरम पानी से नहलाया गया। ताजे वस्त्र पहिनाये गये और कक्ष प्रवेश कराया गया।

नहाने के बाद भी-नये वस्त्र नहीं पहिनाये गये थे—दोनों को, शोर- सूतक का ध्यान रखते हुए, पुराने किन्तु धुले वस्त्र दिये गये थे। दादी की पुरानी- धुली साड़ी फाड़कर, एक चादर सा बनाया और शिशु को उसमें लपेट दिया गया। यही ढंग था उस समय का। फिर धूनी का धुआँ। जलते उपलों पर लोभान का धूम्र उठाकर शिशु की सिकाई। कभी राई की धूम्र की भी सिकाई। शुरू था शिशु का समुचित लालन-पालन और पोषण। वह भाग्यवान था कि उसे अपने शरीर पर, माता, दादी और मामी आदि का स्पर्श मिला था प्रथम दिन से, जो सारी गृहस्थ-अवस्था तक लाड़-प्यार बनकर बरसता रहा। उस दिन वे तमाम धनाढ्य लोगों के नवजात शिशु जो देश के किसी भी क्षेत्र में जन्मे थे, परन्तु नौकरों, आया और नौकरानियों के भरोसे थे, आंतरिक विह्वलता अनुभूत कर रहे होंगे। सच, माँ का प्रथम स्पर्श जिस शिशु को सहजोपलब्ध हो जाता है, वह करुणा- वात्सल्य-सदाचार-परोपकार-जीवदया के पंच तत्वों से सहज ही स्नान कर लेता है। ये पाँचों तत्व जीवन भर उसकी चर्या से निःसृत होते रहते हैं।

सन् 1973 अपने भाग्य पर मुस्करा उठा, उसे विश्वास हो गया कि भारत के लोग '15 नवम्बर 1973' को हर वर्ष उल्लास से याद करेंगे और पर्व जैसा आनंद मनायेंगे।

जन्म का सही समय था-9 बजकर 31 मिनट।था वह इष्टकाल। दिन था गुरुवार। बहुत स्पष्ट था कि 'गुरुवार' को 'गुरुवर' ही तो जन्म लेंगे। मगर उसदिन, उस क्षण, देश में सैकड़ों शिशुओं का जन्म हुआ होगा। वे क्यों नहीं गुरु बने? यहाँ हमारा जैनधर्म उत्तर बतलाता है—'पिछले जन्म के पुण्य ही कारण बनते हैं।' काश अन्य शिशुओं ने भी पुण्यार्जित किया होता। पुण्य की ही तो बलिहारी है कि जब जतारा में पुण्यात्मा शिशु का अवतरण हुआ तो घर आँगन नई धान की फसल से भर गए थे। चावल रूपी रजत कणों से भरे हुए जूट के वेग (बोरे) ग्रामवासियों के लिए आश्चर्य बन गए थे, हर कृषक की उपज, पूर्व वर्षों की तुलना में दो गुनी जो थी। लेकिन जो 'उपज' श्री सनतकुमार के घर हुई थी, उसके समक्ष सोने और चाँदी के ढेर बौने थे।

जन्म समय परिवार का दायित्व

सनतकुमारजी का घर लम्बाई-चौड़ाई में कम नहीं है। सड़क से लगा हुआ उसका सिंहपौर सड़क की शोभा है। सिंहपौर माने वह द्वार जिसमें से गृह के अंदर प्रवेश किया जाता है। सिंहपौर के दोनों तरफ एक-एक कक्ष थे जो

आजकल सिमेन्ट की छत के नीचे शोभा पा रहे हैं। हैं वे पक्की छत वाले। दोनों कमरों के पीछे की ओर एक बड़ा सा प्रांगण है। जिसमें बाईं तरफ स्नानघर बना हुआ है। स्नानघर और कमरे के बीच, खुली जगह में दो चमत्कारी वनस्पतियाँ फली फूली हुई हैं—एक है नागदौन, दूसरी ग्वारपाठा। दोनों आरोग्यवर्धन में सहायक। आँगन में कुछ कदम चलने पर बायीं ओर पुनः एक दरवाजा मिलता है, जिसके बाहर चबूतरा शोभा पाता है। चबूतरा की पक्की दीवाल पर सरस्वती जी, सुभाषचंद जी बोस की तस्वीरों के साथ-साथ 'ओम' की मनोरम पेंटिंग देखने मिलती है। तो आँगन की दायीं दीवाल पर एक स्वस्थ-सुंदर, देहयष्टि-सम्पन्न तारिका का चित्र दिखता है, जिसकी सराहना स्थानीय चित्रकार, पेन्टर श्री पाठकजी भी कर चुके हैं। तो ये चित्र बनाए किसने? उत्तर कुछ पंक्तियों के बाद मिल जाएगा, क्योंकि चित्र बनानेवाले का जन्म अभी-अभी हुआ है। आप उसका वर्णन ही तो पढ़ रहे हैं।

प्रांगण की सीमा जहाँ समाप्त होती है, वहीं से दो कमरे शुरू होते हैं। बायें हाथ के कमरे में रसोई तैयार होती है, दायें हाथ वाला 'बेडरूम' कहलाता है। ये आज पक्के हैं, सिमेन्टेड हैं, किन्तु जब शिशु का जन्म हुआ था, उस समय खपरैल थे, हाँ कच्ची भीत के थे। तो ये दायीं तरफ का बेडरूम आज भी अपने ऊपर गौरव करता है क्योंकि इसी ने पुण्यात्मा शिशु का उद्भव देखा था। इसी कक्ष में, पालना रखा गया था और यही कक्ष बना था, हलचल का केन्द्र।

अस्पताल का समय पूर्ण कर जब माता और शिशु घर लाए गए तो घर वालों के साथ-साथ पुरा-पड़ोस में भी खुशी ही खुशी दिखाई दे रही थी। सनत जी के मकान से सटकर निकलने वाली सड़क पूर्व से पश्चिम तक समाचार के सूत्र बहा रही थी। सड़कपार चौगान के चारों ओर बसे हुए पड़ोसी और पड़ोसिनें शिशु को एक झलक देख लेने को बेचैन हो रहे थे। यदि एक सिरे से गिनना शुरू करें, तो श्री पन्नालाल मनोहरलाल सोनी, श्री ज्ञानचंद जैन, श्री रामगोपाल सोनी, श्री दयाराम सोनी, श्री शीलचंद संतोष कुमार भोपाली, श्री हजारीलाल जैन आदि के गृहसदस्य, क्या छोटे, क्या बड़े, सभी शिशु से तुरन्त मिलना चाहते थे।

उधर घर में जच्चा और बच्चा को रोज नीम के गर्म जल से स्नान करा रही थीं गृह सदस्यायें।

हँसते-गाते दस दिन बीते तो जतारा स्थित सनतजी के मकान में उत्सव मनाया गया, जिसे 'दसटोन' कहते हैं। चूँकि शिशु छोटा था और बार बार नजर लग जाती थी, इसलिए दादी जी ने अधिक लोगों तक निमंत्रण नहीं दिए, जो घर-मुहल्ला में खास-खास जैन परिवार थे, उन्हें बुलाया ओर सबने मिल

जुलकर दसटोन मनाया।

शिशु के गले में काले धागे में गूँथा हुआ 'हाय चन्द्रमा' पहनाया गया। टीका काजल किया गया। नए वस्त्रों से लपेटा गया। ध्यान रहे उस समय छोटे बच्चों को सिले हुए कपड़े नहीं पहनाए जाते थे, फिर भी साफ सफेद चद्दर जैसे वस्त्र उपयोग में लाए जाते थे। महिलाओं ने सोहरे गाए, पुरुषों ने बाहर वाले कक्ष में बैठकर मुँह मीठा किया, इस बीच दादी ने सजी हुई पुत्रवधु भगवतीजी को चौक में बिठाकर शिशु उसकी गोद में डाल दिया। महिलाएँ बारी-बारी से कभी शिशु की, तो कभी भगवती की छवि निहारती रहीं। जब लोग जाने लगे तो दादी ने सबको बतासे वितरित किए। सबने खुशियाँ अपने घर तक पहुँचाईं।

शिशु का नामकरण दादीजी ने स्वेच्छा से 'बल्लु' कर दिया था। फलतः सभी पारिवारिक जन बल्लु-बल्लु करके खिलाते रहते थे।

एक बार जब बल्लु 8 माह के थे तब उन्हें अचानक बुखार आ गया और शाम को उल्टी-दस्त भी हुए। माता-पिता चिंता में पड़ गए। फलतः सोचा वैधराज जी को दिखा देंगे। मगर जब सुबह हुई तो बल्लु आपो-आप ठीक हो गए। दवा और वैद्य की जरूरत ही न पड़ी। बतलाया जाता है कि चार साल की उम्र तक बल्लु को कभी दवा खाने की आवश्यकता नहीं आई, फिर भी एक बार ग्रीष्मकाल के समय बल्लु जी के सिर पर फोड़ा हो आया था। लगा कि ग्रीष्मकालीन वाचना की अवधि, मतलब दो माह लग जायेंगे ठीक होने में, किन्तु 6-7 दिन बाद ही पड़ोस में निवास करनेवाली, दादीजी की छोटी बहिन ने देखा तो बल्लु को लेकर गोद में बैठ गईं फिर फोड़े की स्थिति समझी, उसे जोर से दबाया तो उसमें से एक कील (मवाद की कील) निकली और बल्लु के मुँह से चीत्कार। फिर क्या था, पूरा घर इकट्ठा हो गया जैसे मौसीजी ने कोई जुर्म कर दिया हो, मगर मौसीजी प्रसन्न थीं, उन्होंने गर्म घी में रुई का टुकड़ा (फाआ) गीलाकर फोड़े पर थोप दिया और बल्लु को थपकी देती रहीं। धीरे-धीरे बल्लु को नींद आ गई। तीसरे दिन तक फोड़ा बिल्कुल ठीक हो गया। सभी ने मौसी जी को कहा 'आप तो पूरी डॉक्टर हैं'।

बल्लु दस माह के हुए तो तोता की तरह मीठी आवाज में कुछ शब्द बोलने लगे, कभी दादा-दादा कहते, कभी अम्मा-अम्मा बोलते। सब लोग दौड़कर उसकी आवाज सुनने चले आते। सच, जब वह बोलता था तो ऐसा लगता था कि कोई प्रसिद्ध संगीतकार हारमोनियम बजा रहा है। मीठी आवाज और मीठी लय सुनते ही बनती थी।

जब शिशु को पालने में लिटाया जाता तो देखनेवालों को प्रतीत होता कि 'रुई का गुड्डा' मुस्कुरा रहा है। शिशु का मन अंगूठा चूसने में जब तब लग

जाता था किंतु कटोरी से दूध पिलाते समय मुँह घुमा लेता था, तब माताजी उसके साथ शरारत करतीं और उसकी नाक दबाकर दूध पिला देती थीं। कभी-कभी पीने के बाद लगभग पूरा दूध वमन कर देता था। बात शिशु के नानाजी श्रीरामप्रसाद जी पहाड़ी वालों के पास तक पहुँच गई। फलतः उन्होंने एक स्वस्थ बकरी खरीदी और बल्लु के घर पहुँचा दी। यह जानते हुए कि जैन लोग बकरी का दूध मुश्किल से पीते हैं, पर उन्होंने सोचा बल्लु शिशु है, पियेगा तो अभी स्वस्थ रहेगा।

बल्लु एक वर्ष की उम्र पार कर चुके थे और अपने पैरों के बल चलने लगे थे, मगर बीच-बीच में गिर जाते थे। अतः पिताजी ने उस समय, जो चलन में थी, वह लकड़ी की गाड़ी खरीद दी, जिसे पकड़कर बल्लु चलने लगे। उस समय वे नग्न ही रहते थे, अतः लगता था छोटे से मुनिराज आँगन में फुदक रहे हैं। उसे गाड़ी से अधिक झुनझुना पसंद था और एक प्लास्टिक का गुड्डा, जिसका रूप-रंग सिपाही जैसा था। इस तरह परिग्रह की तीन चीजें उनके पास आ चुकी थीं।

अब, जब बढते-बढ़ते बल्लु तीन वर्ष के हो गए तब भी वे दादी की पीठ पर बैठक ही मंदिर जाते थे और वहाँ झूम-झूमकर आरती करते थे। क्रम ऐसा बना कि जब वे दस वर्ष के हो गए तब भी पीठ पर ही बैठकर जाते। तब दादी ने रास्ता निकाला आदत छुड़ाने का, वे कह देती 'बेटा आगे लल्लू मास्टर साहब का मकान है कहीं उन्होंने देख लिया तो हँसेंगे और कहेंगे इतना बड़ा लड़का पीठ पर बैठकर जाता है। बल्लु, मास्टर के भय से तब शीघ्र पीठ से उतरकर पैदल चलने लगते थे।

एक छिद्रान्वेषी ऐसा भी

बल्लु के तीन वर्ष की उम्र का प्रसंग है, वे माँ के साथ नानाजी के घर गए थे। नानाजी श्री रामप्रसाद जैन किराने के व्यापारी थे। साथ ही वैद्यगिरी भी करते थे। सर्दी, जुखाम के अवसर पर रोगियों को इंजेक्शन भी लगा देते थे। उनका गुण उनके पुत्र सुन्दर जैन और शिखर जैन ने भी अपना लिए थे। उन लोगों को डॉक्टर बना हुआ देखकर बल्लु सोचते 'मैं भी डाक्टर बनूँगा।' नाना जी की दुकान की सीलिग में बीचोंबीच, एक तीन इंच चौड़ा छिद्र था, जिसके माध्यम से रसोई घर में से भी दुकान का हालचाल जाना जा सकता था। सबसे बड़ा लाभ यह था कि नानीजी को रसोईघर से उतरकर नीचे नहीं जाना पड़ता था, जब भोजन बना लेती थीं तब उसी छेद के समीप से नाना को पुकारती थी—'काय सुन्दर हरो, भोजन कर लो।' वे बड़े बेटे का नाम लेती थीं और नाना जी भोजन के लिए चल देते थे। एक दिन दुकान में कोई नहीं था, दरवाजे खुले

हुए थे, तब बल्लु ने छेद में से झाँककर देखा, वहाँ एक व्यक्ति रुपयों की गोलक से रुपए निकाल रहा था। बल्लु दौड़कर नीचे आए और उससे पूछने लगे 'जो का कर रहे हो तुम?'

—कछु नई भैया।

—तो फिर गोलक क्यों खोली?

—भैया हम तो सौ रुपए के नोट की चिल्लर लेवे आय थे। तब तक नाना जी पहुँच गए। अतः बल्लु उनसे बोले—'नानाजी, जो गोलक खोल रहो थो।

-दादाजी हम चोरी नई कर रहे थे, हम तो खुल्ला (चिल्लर) पैसे ले रहे थे सौ रुपए के।

नानाजी ने उसे डाँटकर भगा दिया फिर बल्लु को गोदी में उठाकर बोले—'आज तो बल्लु ने लुटने से बचा लिया।' बल्लु मुस्कराते रहे। नानाजी ने शक्कर में पागी हुई मूंगफली खाने दे दी। बल्लु खुश, जैसे पुरस्कार पा गए हों।

इस प्रसंग से लगा कि बल्लु ने 'छिद्रान्वेषी' शब्द को एक नया रूप दे दिया था और उस दृष्टि से वे 'बड़ाई योग्य छिद्रान्वेषी' बन गए।

कुछ समय बाद राजेश और बल्लु को लेने पिताजी आ गए। वे साइकिल से पहाड़ी गाँव से टीकमगढ़ होते हुए बस से जतारा जा रहे थे। टीकमगढ़ में दोनों पुत्रों के लिए जूते-मोजे खरीदकर पहनाए तो दोनों को भारी खुशी हुई। बल्लु को इतनी खुशी हुई कि वे जूता-मोजा पहनकर पैदल ही चलना चाहते थे, गाँव तक जाने के लिए जैसे बस जरूरी न हो।

लौटे तो सीधे अपने मित्र लोकेश खरे के घर पहुँचे जूता-मोजा पहने हुए। लोकेश जिसे बचपन में 'लिलि' कहकर पुकारते थे, श्री विनोद खरे (शिक्षक) के सुपुत्र थे। उनकी माँ श्रीमती रेखा जी भी शिक्षिका थीं। दोनों परिवारों में प्रगाढ़ मैत्री थी, अतः लिलि और बल्लु को ठीक-ठीक पता नहीं कि वे कब दोस्त बन गए थे।

गोरा पेट : बता दे सेठ

राकेश मोहल्ले भर में आना-जाना रखते थे, एक -दो परिवार के लोग, कभी-कभी उनसे विनोद करते थे, उनका छोटा सा पेट बड़ा सुन्दर लगता था। अतः पड़ोसी लोग उनकी शर्ट ऊपर उठाते हुए कहते—गोरे सेठ दिखाओ पेट।' तब बल्लु शर्ट को जोर से पकड़कर नीचे खींचते थे।

मोहल्ला भर के लोग जानते थे कि बल्लु को मीठा पसंद नहीं है, मगर मगद ओर तिल के लड्डू खा लेते थे, वे यह भी जानते थे कि घर में भी इसकी पसंद की चीजें चावल और आटा के खींचला, बबरा, खाजा, गुनी और पुआ हैं।

श्वेता दीदी ने माताजी से कई बातें पूछी थीं, वे जानना चाहती थीं कि बल्लु का बचपन कैसा था? तब माताजी ने बतलाया था, यह बचपन से ही शांत और सरल था। परम आज्ञाकारी था। जहाँ बैठाल दो वहीं बैठा रहता था, चलाफिरी नहीं करता था। था शांतप्रिय। कभी किसी वस्तु के लिए जिद नहीं की। न ही कोई वस्तु माँगकर ली। फिर भी एक बार मेरे हाथ से थप्पड़ खा गया था। हुआ क्या, कि एक दिन बिना बतलाए, तालाब की ओर चला गया और राजेश के साथ लौट आया। जैसे ही मुझे जानकारी मिली तो मैंने डाँटा–अभी बीता भर के हो, तैरते बनता नहीं है फिर तालाब क्यों गए? बस प्रश्न के बाद हाथ उठ गया जो उसके गाल पर ही पड़ा। बल्लु क्षणभर रोया फिर बोला बड़े भैया के साथ गए थे। मैंने कहा–अब नहीं जाना। वह हाँ कहकर यहाँ–वहाँ चला गया।

दसटोन

बल्लु भैया दो वर्ष के हो गए थे। उन्हें नजर बहुत लगती थी अतः माँ और दादी ने साल भर पहले से ही उनके गले में काला धागा पहना रखा था। उसके बीचों–बीच छोटा सोने का ताबीज था जिससे बल्लु और अधिक सुन्दर प्रतीत होते थे। मजना में छोटी मामी के दसटोन का कार्यक्रम था। अतः भगवतीजी मजना गईं। साथ ही बल्लु, राजेश एवं कमला भी गईं।

दूसरे दिन माँ ने बल्लु की कंघी करके नया पेंट और शर्ट पहनाया तो वे सीपी में मोती की तरह चमक उठे, फिर बाहर खेलने चले गए। बाहर अनेक लोगों ने बल्लु की तरफ देखा अतः उन्हें जोर से नजर लग गई। देखते ही देखते बुखार हो गया। बड़ी मामी को पता चला तो उन्होंने शीघ्रता से नजर उतारी। फिर मामी ने प्यार भरी शिक्षा देते हुए अपनी नंद (भगवती देवी) से कहा, दीदी! जब भैया को बार–बार नजर लगती है तो उसे ठिटोना क्यों नहीं लगातीं। फिर मामी ने रोज बल्लु को ठिटोना लगाने की रस्म शुरू की। शाम को धूमधाम से छोटी मामी का दशटोन मनाया गया जिसमें गाँव भर की महिलाओं ने सोहरे गाए। कार्यक्रम आधी रात तक चला। आनेवालों को खूब बतासे बाँटे गए। कुछ दिनों बाद भगवती जी बच्चों सहित जतारा आ गईं।

अनुज का जन्म

बल्लु को तीन वर्ष का होने में मात्र बारह दिन शेष थे, तभी 3 नवम्बर 1976 को उनके घर अनुज का जन्म हुआ। नाम रखा गया चक्रेश। बल्लु दिन भर उसे देखते और हँसते फिर प्रसन्न होकर कहते -छोता भैया आया''। अनुज का नाम माता-पिता ने चक्रेश रखा और खूब लाड़प्यार दिया। किंतु दस माह की उम्र में ही उसके एक पैर में पोलियो हो गया। पिताजी अनेक स्थानों पर इलाज कराने ले गए किन्तु लाभ नहीं हुआ। वह कष्ट आज भी उपस्थित है।

घर में बच्चों को अपने साथ सुलाने के लिए सभी उत्सुक रहते थे, अतः दादी (बैनीबाई) ने बड़े पुत्र राजेश को अपने साथ सुलाना शुरू कर दिया। सनतजी ने राकेश को और भगवती देवी ने चक्रेश को अपना बिस्तर दिया।

जब बल्लु पाँचवें वर्ष में चल रहे थे, तो वे कमला दीदी के साथ बैडमिंटन खेलने लगे। मोटे पुट्ठे का बैंडमिंटन तैयार किया जाता और गैंदा के फूल को कॉक की तरह उछाला जाता। बहिन-भाई घंटे आधे घंटे का समय हँसते-गाते निकाल देते थे। जब कभी बगिया में अधिक फूल होते तो माँ उन्हें तोड़कर माला बनातीं और राकेश को पहना देतीं। वे फूलों का हार पहनकर घूमने निकल पड़ते। लोग देखकर विनोद करते 'मुख्य अतिथि महोदय सम्मान कराकर लौट रहे हैं।'

कन्या की कसर पूरी कर दी

यह प्रसंग बल्लु की तीन वर्ष की उम्र का है, उस समय उनके बाल बच्चियों की तरह लम्बे-लम्बे और चमकदार थे। अतः माता जी रोज उनकी चोटी कर देती थीं, तब बल्लु तीन वर्ष की कन्या की तरह दिखते थे। गोरे तो थे ही, चेहरा सुन्दर था अतः बाहर से आनेवाले लोग बच्ची ही मानते थे। उनका अत्यंत कोमल शरीर उन्हें बच्ची ही घोषित करता था। कभी-कभी परिवार में भी चर्चा चलती थी कि राजेश के जन्म के बाद हम सबकी इच्छा बेटी की थी, सो ये बल्लु तो बेटी ही बन गया है। कुछ समय बाद सनतकुमार जी सपरिवार पपौरा जी गए, वहाँ मन हुआ कि बल्लु का मुंडन करा दिया जावे ताकि वह बच्ची न दिखे। क्षेत्र पर मुंडन संस्कार कराया गया।

बाल हट के दृश्य

जब भी सनतकुमार जी यात्रा पर जाने अटैची तैयार करते, तो बल्लु समझ जाते कि दादा कहीं जाने वाले हैं जो मुझे साथ में नहीं ले जायेंगे अतः वे चुपचाप घर से बाहर निकलते और दरवाजा बंद कर देते और एक तरफ बैठे रहते।ऐसी स्थिति में भीतर से पिताजी आक्रोश दिखाते, जब बल्लु नहीं खोलते तो मनुहारे करने लगते–'हमारा बल्लु तो राजा है, जल्दी से दरवाजा खोलेगा' मगर बल्लु टिड़मे रहते। तब कोई पड़ोसी कृपा करके दरवाजा खोलता था और सनतकुमार निकल पाते थे।

गोरे चिट्टे बल्लु भैया चार वर्ष के हो गए। कभी दादी के साथ तो कभी मम्मी के साथ मंदिर जाने आने लगे। एक मायने में घर की दो सदस्याएँ उनमें संस्कारों का वपन कर रही थीं। एक दिन बल्लु भैया अकेले ही मंदिर चले गए फलतः मम्मी और दादी ही नहीं सनतकुमार भी प्रसन्न हुए। जब बल्लु मंदिर से लौटे तो मम्मीजी ने एक दो सवाल किए–मेरे बल्लु ने आज मंदिर में

क्या-क्या किया था? तब बल्लु अपनी किंचित् तोतली किंतु अत्यंत मीठी आवाज में बोले "मंदिल में पूजन किया था।" माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा, गालों को दुलराया, फिर पूछा—कौन सी पूजा की थी बेटे? बल्लु पहले कुछ सोचने लगे फिर जो पंक्तियाँ मंदिर में सुनी थीं, उन्हें दोहरा कर बोले-'जय-जय नाथ पलम गुरु होय'। माँ उनकी मीठी आवाज पर रीझ गई। तुरंत गले से लगा लिया। फिर बोली तुम तो पक्के श्रावक बन गए। अब रोज मंदिर जाया करना। बल्लु ने स्वीकृति तो दे दी, किंतु एक प्रश्न भी रख दिया—मंदिल जाने से क्या होता है? माँ—बेटे ! श्री जी की वैराग्यवर्धक शांत मुद्रा देखने से मन को शांति मिलती है।

—पल, माँ भगवान तो कुछ बोलते ही नहीं, फिल क्या फायदा?

—वे वीतरागी हैं, किसी से कुछ बोलते नहीं, कुछ लेते-देते नहीं, इसलिए उनके दर्शनों से पापों का क्षय होता है।

—मगल वहाँ तो मूल्ति (मूर्ति) भर है, भगवान कहाँ हैं?

—बेटे, वही मूर्ति तो भगवान हैं, जिन्हें ज्ञान है, वे जानते हैं कि भगवान का निवास हर हृदय में होता है।

वाक्य सुनकर बल्लु भैया बहुत हँसे, फिर अपनी चतुराई बतलाते हुए पूछ बैठे-'जब भगवान सबके मन में हैं, तो मंदिल क्यों जाते हैं?

प्रश्न सुनकर माता परेशान हो गई। झुंझलाहट को छुपाते हुए बोली—कितने प्रश्न करने लगा है, सीधी सी बात है कि मंदिर में भगवान के दर्शन करने से भक्तों को अपने हृदय में विराजित भगवान का बोध हो जाता है।

बल्लु कोई नया प्रश्न पूछे, उसके पहले मम्मी जी ने वहाँ से नौ-दो-ग्यारह होना ही उचित समझा, फलतः बोलीं—'बेटा! मंदिर हो आये हो, तो अब गर्म-गर्म भोजन कर लो। बातों में समय व्यर्थ मत करो।'

बल्लु भैया का पाँचवाँ वर्ष चल रहा था। वे बड़े भाई राजेश एवं बड़ी दीदी कमला को पढ़ते देखकर खुद भी पढ़ना चाहते थे। कभी किसी की किताब उठा लेते तो किसी की स्लेट पेंसिल और पढ़ने का अभिनय करने लगते। पिताजी ने देखा तो वे स्वतः उसे पढाने आगे बढ़े। अपने पास बैठाया, फिर पाटी पर चाक से अ आ इ ई लिखा और उसे लिखने की आदत डलवाई। 2-3 दिनों में ही बल्लु की कुशाग्रबुद्धि ने अपनी महिमा दिखाई और वे अक्षर ज्ञान पा गए। पिताजी का ढंग भी कुछ ऐसा था कि बालक को सीखने में विलम्ब नहीं लगा।

उसे 6 साल की उम्र तक बल्लु ही पुकारा जाता था, बाद में जब शाला में नाम लिखा गया तब वे बने राकेश।

एक बार पिताजी तैयार होकर कहीं जा रहे थे, चप्पल पहनकर निकल गए। बल्लु ने प्रारंभ से देखा सुना था कि घर और बाहर के लोग उनके पिताजी को 'दादा' शब्द से पुकारते थे, अतः वे पिता को पापा या डेडी नहीं, दादा कहते थे। तो जब दादा चप्पल पहनकर चले गए, बल्लु को नहीं ले गए तब बल्लु भैया ने नेत्र गीले करते हुए माँ से कहा—"अम्मा दादा चपला पेन के चले गए, हमें नईं लुवा गय" मीठी वाणी में कहा गया उनका वाक्य शीतलता तो देता ही था, शहद की तरह मधुर भी लगता था। तब माँ उन्हें धैर्य बँधाती हुई कहती"-बल्लु बेटा, अबई काम काज करकें हम ले चलहें।" बल्लु उत्तर सुनकर संतुष्ट हो जाते थे।

एक दिन कमला दीदी के साथ शाम को पाठशाला गए। दोनों छोटे-छोटे थे, फिर भी संस्कारों के लिए जागृत थे। पाठशाला से लौटे तो मंदिर चले गए। वहाँ भगवान नेमिनाथ की वेदी की ओर जाते समय किसी बिच्छू ने बल्लु के पैर में डंक मार दिया। उसे दर्द हुआ, साथ ही खुजलाहट भी अतः अपना पैर जोर-जोर से देहरी पर रगड़ने लगा किंतु दर्द बढ़ता ही गया। तभी पंडित धनीराम जी आए, उन्होंने देखा—बल्लु तड़फ रहा है ओर बिच्छू दीवाल की ओर जा रहा है। वे बोल पड़े "बल्लु खों बिच्छू ने काट खाओ है।" फिर उन्होंने णमोकार मंत्र पढ़कर झाड़ दिया और बल्लु से घर जाने को कहा। जब बल्लु घर पहुँचे तो माँ के अलावा पुष्पा भाभी को भी सूचना मिल गई, वे दौड़ी आईं और उन्होंने पुनः मंत्र से झाड़कर काटे हुए स्थान पर दही मल दिया।

छोटे से बल्लु को हर एक दो माह के अंतर से कोई न कोई छोटी-बड़ी परेशानी स्पर्श कर लेती थी, एक बार वे अपनी प्रिय दादी (बैनीबाई) के साथ तालाब गए, वहाँ बुआ की बेटी ढुल्लो मिल गई, दोनों बच्चे तालाब में (अंदर) जाकर नहाने लगे। तालाब कोई छोटा-मोटा जलाशय नहीं था, मदनसागर था, जो लम्बाई चौड़ाई के साथ में गहराई के लिए भी जाना जाता है। बल्लु अचानक डूबने लगे। समीप खड़े व्यक्ति ने शीघ्रता से बढ़कर उसे पानी से बाहर खींच लिया। मगर तब तक पेट में पानी भर गया था। फिर क्या, दो लोगों ने बल्लु के पैर पकड़कर उल्टा लटकाया तो पानी निकल गया। उसके बाद कई दिनों तक स्वास्थ्य खराब रहा फलतः पिताजी ने बल्लु के तालाब जाने पर पाबंदी लगा दी।

बचपन की अनोखी झलक

कभी कभी पिताजी पुत्रद्वय राजेश और राकेश को अपने साथ मंदिर ले जाते थे, तब रास्ते में जान-पहचान वाले मुस्कुराकर कहते—दशरथ महाराज के साथ राम-लक्ष्मण कहाँ जा रहे हैं तब उत्तर देते—'मंदिल'। कभी-कभी पड़ोसी

लोग बल्लु को पंडितजी कहकर पुकारते थे। वे इतने प्यारे लगते थे कि उन्हें नजर लग जाती थी, कभी कभी बुखार आ जाता था, या वमन हो जाता था। तब माताजी भगवती देवी शाम को उनकी नजर उतारती थीं वे ठीक हो जाते थे। एक दिन भगवतीजी ने सनतजी से विनोदपूर्वक कहा–आप राजू और बल्लु को सजा-धजा कर साथ-साथ मत ले जाया करो, उन्हें नजर लग जाती है। तब दोनों बच्चों को अलग-अलग ले जाने की व्यवस्था की गई।

करुणा के बीज

जैन मंदिर जतारा में एक माली परिवार था, माली का नाम कूरे था। वे कभी-कभी दोपहर में जैनों के घर नेवजी (रोटी/भोजन) लेने जाते थे और लोग सहर्ष देते थे। कूरे जी जब बल्लु के घर जाते तो माँ भोजन की थाली तैयार कर बल्लु को देती, बल्लु भारी अपनत्व के साथ थाली लेकर जाते और आदर से कहते-'माली कक्का बैठो, भोजन ले लो।' और थाली दे देते। बल्लु को कुछ देने की भावना तभी से हृदय में समा गई। फलतः वे तब से आज तक केवल दे रहे हैं।

सनतजी का मकान लम्बा-चौड़ा तो था ही, अतः बरसात के दिनों में मकान कम, फार्म हाउस अधिक नजर आता था। उनके लम्बे-चौड़े प्रांगण में मक्के के भुट्टे उगाए जाते थे। एक तरफ गिलकी, तुरई, लौकी, टमाटर, भिण्डी, मिर्ची, धनिया, कद्दू (काशीफल) और परोड़ा आदि सब्जियाँ फलती थीं। एक तरफ पपीता के कई पेड़ थे तो एक पेड़ कपास का भी था, एक अरण्डी का भी। आँगन में किनारे की ओर गेंदा के पौधे लगाए गए थे, जिनमें सुन्दर पुष्प खिलते थे। लाल, नारंगी और पीले फूल आने-जाने वालों का मनमोह लेते थे। सर्दी के दिनों में गिलकी, तुरई, कद्दू के पीले फूलों की ओर तितलियाँ और भौंरे आकर्षित हो मँडराते थे। उनका गुंजन सुनने में अच्छा लगता था। कभी-कभी नेवला के दर्शन भी हो जाते थे। मगर ग्रीष्मकाल में एक-दो बार सर्प भी आते-जाते देखे गए थे। कहने का मतलब, वहाँ आदमियों के साथ वनस्पतियाँ और विभिन्न जीव सुख से रहते थे। ऐसा लगता था कि ये सब महावीर के सिद्धांत को जी रहे हैं-'जिओ और जीने दो'।

पहले पूरे मकान के समक्ष प्रांगण फैला था, बल्लु के जन्म के बाद प्रांगण के आगे की ओर दो पक्के कमरों का निर्माण कराया गया था, इनमें से एक कमरा बाद में बल्लु का अध्ययन कक्ष बन गया था। घर के सामने जो कच्ची गली थी उस पर पत्थर की सड़क का निर्माण भी बल्लु के जन्म के बाद ही हुआ था।

शाला जाने का अभिनय

बल्लु की दीदी कमला और भैया राजेश रोज स्कूल जाते थे, नहर के पास वाले प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। बल्लु पाँच-साल पार कर चुके थे, अतः एक दिन वे राजेश भैया के पीछे-पीछे चलकर स्कूल पहुँच गए। वहाँ सैन सर कक्षा ले रहे थे, उन्होंने राजेश से पूछा —ये कौन है? तब राजेश ने बतलाया —ये हमारा छोटा भाई है, आज शौकवश पीछे-पीछे आ गया। सैन सर बल्लु की ओर मुँह करके पूछने लगे क्या नाम है? बल्लु कुछ नहीं बोले। सर ने पुनः पूछा—रोज आओगे? तब बल्लु ने स्वीकृति में सिर हिलाया और वहीं रुका रहा। घंटे दो घंटे बाद, माँ परेशान हो गई कि बल्लु न जाने कहाँ चला गया? सारा दिन आकुलता से बीता। शाम को जब दोनों भाई साथ-साथ लौटे तो माँ को समझने में विलम्ब नहीं लगा। फिर उन्होंने बल्लु को समझाया—'स्कूल ऐसे नहीं जाते, दादा के साथ जाना, बस्ता ले जाना और वहाँ नाम लिखवाना। तब स्कूल जाना उचित होता है।'

इसी घटना के बाद से सनतजी ने बल्लु को घर में सिखाना शुरू कर दिया था।

छूटी आदत पीछा करने की

कोई घर से कहीं जाने निकलता तो बल्लु भैया उसके पीछे-पीछे चल पड़ते, तब लोग बहला-फुसला कर उन्हें घर में छोड़ जाते थे और खुद निकल लेते थे। एक दिन सनतकुमार के भीतर पिता का हृदय कसमसाया अतः उन्होंने अपनी साइकिल पर, आगे की ओर (डंडे पर) एक बेबी शीट लगवा ली। अब क्या था, बल्लु भैया प्रायः रोज ठाठ से बैठकर पिताजी के साथ घूमकर आने लगे। हर किसी का पीछा करने की आदत समाप्त हो गई।

नवरात्र का प्रभाव

हिन्दुओं के पावन-पर्व नवरात्र के समय हर मुहल्ले में मंदिरों या उनके समक्ष बनाए गए चबूतरों पर लड़कियों की टोलियाँ 'नौरता' खेलती थीं। जतारा की यह पुरानी रश्म है, जिसमें सभी जातियों के बच्चे धर्म के धरातल पर मनोविनोद करते रहते थे। बल्लु के मोहल्ले की लड़कियाँ गीतादीदी के ग्रुप में रहकर शंकरजी के मंदिर के समीप स्थित चबूतरे पर 'नौरता का चौक (रंगोली) बनाती थीं तो पास के मोहल्ले की लड़कियाँ रामलला मंदिर के चबूतरे पर खेलती थीं। क्रम अष्टमी तक रोज शाम को चलता था। समापन के अवसर पर सभी बहिनें मोहल्ले की किसी भी संभ्रांत महिला का नाम लेकर अटपटे बोल बोलती थीं और फिर सब उसे दुहराती थीं जैसे 'सागर वाली टाल है घी शक्कर का माल

है।' वे बहिनें देहरी पर बैठे राजू, बल्लु और कमला से भी दोहराने को कहतीं किंतु वे तीनों शरमा जाते थे। फिर वे कटोरी में नमकीन, सेव, मटरी आदि रखकर बल्लु को देतीं और कहती–'अब बोलो'। तब बल्लु खाते जाते और बोलते जाते–'मनोज की मम्मी को पेट पिरानो, नौआ बाबा कहाँ हिरानो।'

मीठी आवाज में कहे गए व्यंग्य वाक्य सुननेवालों को अच्छे लगते थे अतः उनका घर बैठा मनोरंजन हो जाता था।

बैलगाड़ी की सवारी

कभी-कभी घर के सामने से किसी की बैलगाड़ी निकलती तो बल्लु भैया चुपके से जाकर उसके पिछले पटिए पर पधार जाते थे। ज्यों-ज्यों गाड़ी हिचकोले लेती त्यों-त्यों बल्लु भैया झूलते से नजर आते थे। 40-50 कदम चलने के बाद गाड़ीवान पीछे देखता तो झूठा आक्रोश बतलाकर कहता–बैठे रहो बल्लु, हम तुम्हें जंगल में छोड़ आयेंगे फिर वहाँ शेर मिलेगा। बल्लु भैया घबरा जाते अतः चुपचाप उतरकर घर का रास्ता पकड़ लेते।

पिल्लों के लिए घर

कुत्ते के छोटे-छोटे बच्चे कूँ-कूँ करते बल्लु की तरफ दौड़ आते तब वे उन्हें भगाते नहीं थे। समझ जाते थे कि इन्हें ठंड लग रही है। अतः उन्हें पानी और ठंडी हवा से बचाने के लिए गीली बालू और टाटपट्टी के सहयोग से छोटे-छोटे घरघूले बना देते थे और उसमें पिल्लों को रख देते थे। उनकी यह करुणा ही वर्तमान भारत में अनेक संतों के माध्यम से गौशाला निर्माण के क्षेत्र में देखी जा सकती है। पैरों पर बालू रखकर बनाए जानेवाले छोटे-छोटे घर पिल्लों के लिए थे तो वर्तमान में टीन और खपरों के घर गौशालाओं को भी प्राप्त हो रहे हैं।

मौसम के अनुसार खेल

छोटे से बल्लु मौसम के अनुकूल खेल खेला करते थे। बरसात में जब आँगन में छोटे-छोटे तालाब निकल आते थे तो बल्लु भैया कागज की नाव बनाकर उसमें तैराते रहते थे। इसीतरह ठंड एवं ग्रीष्मकाल में सप्ताह में एक-दो बार कागज का हवाई जहाज बनाकर उड़ाते थे। जब वे नाव या जहाज हाथ में लेते तब कोई नहीं जानता था कि 'बालक भविष्य में श्रमणाचार्य बनकर नाव और जहाज की तरह खुद भी तरेगा और दूसरों को तरने का पथ प्रशस्त करेगा।'

माँ का आज्ञाकारी

घर के प्रांगण में फलती फूलती सब्जियों पर नजर डालकर सभी खुश होते थे। जब कभी माँ बल्लु भैया से कहती कि तोरई तोड़ दो तो वे भारी पुरुषार्थ

से दीवाल पर चढ़कर बेल में लगी तोरईयाँ तोड़ते ओर माँ को देते जाते। माँ खुश होती कि बेटा बहुत आज्ञाकारी है इस बीच किसी पत्ते पर बैठी तितली को बल्लु भैया पकड़ लेते तब माँ डाँटकर कहती–छोड़ उसे, मर जावेगी। बल्लु भैया तुरंत छोड़ देते।

आज्ञाकारी तो थे ही अतः घर के काम करने में आनंद लेते थे। माँ कभी गेहूँ बीनने बैठती तो वे भी थाली में थोड़े से गेहूँ लेकर बीनने लग जाते थे फिर जब माँ मना करती तब मानते थे। इसी तरह दादी के साथ पापड़ बेलने में बल्लु भैया का बहुत मन लगता था। दादी कभी भगाती नहीं थी वे एक छोटा पटा और बेलन उनके लिए खोजकर रखतीं थीं। बल्लु भैया दादी के साथ जब-जब मंदिर जाते तो बैठकर चंदन घिसते थे फिर माथे पर लगाते थे और जब दादी जाप देती थी तो वे भी पाल्थी मारकर आँखें बंदकर जाप देने का अभिनय करते रहते थे। सीधी-साधी दादी नहीं जानती थीं कि छोटा सा बल्लु भविष्य में धर्मक्षेत्र को जप और जाप से भर देगा।

बल्लु की दोस्ती दादी से अधिक ही जमती थी। शीतऋतु में जब दादी गुर्सी (मिट्‌टी की सिगड़ी) में आग जलाकर तापती थीं तो बल्लु भैया एक-एक घंटे उनके पास बैठकर आग तापते रहते थे और कहानी सुनाने की फरमाईश करते थे। दादी को 8-10 कहानियाँ याद थीं अतः वे कोई न कोई कहानी अवश्य सुनाती थीं, बल्लु का मन बहल जाता था।

सर्दियों का क्रम शाम को गुर्सी के साथ तो सुबह धूप के साथ बीतता था। अक्सर तेज ठंड के समय चारों भाई-बहिन राजेश, राकेश, चक्रेश और कमला आँगन की धूप में बैठते थे फिर खेलने लगते थे। कभी-कभी पड़ोस में फिर रहे बकरी के बच्चे बल्लु के आँगन में घुस आते थे तब वे उनसे दोस्ताना व्यवहार करते थे। उनके ऊपर हाथ फेरते और खिलाते रहते थे। विश्वास नहीं था लोगों को कि बकरी पर करुणा करनेवाला बालक भविष्य में जीवमात्र को करुणा प्रदान करेगा।

बच्चे सुबह की धूप में घंटे आधा घंटे ही खेल पाते थे तब तक पिताजी भी आ जाते थे, वे सबको एक पंक्ति में बैठाकर पढ़ाते थे। सबका मन पढ़ने में खूब लगता था।

पढ़ने गया होनहार बालक

राकेशकुमार परिवार में ही नहीं मोहल्ला, ग्राम और विभिन्न रिश्तेदारों के मध्य बल्लु नाम से प्रसिद्धि पा चुके थे। यहाँ तक कि सनतकुमार भी लम्बे नाम राकेश की जगह बल्लु कहकर काम चलाते थे। एक दिन सनतजी की माताजी बैनीबाई बोल पड़ी काय भैया, अपनो बल्लु पाँच साल से ऊपर को हो गवो, अब

ऊखों स्कूल नईं भेजने? माँ की बुन्देली बोली में जितना अधिकार था उतना ही अपनत्व था और फिर वे घर में सर्वाधिक वरिष्ठ महिला सदस्य थीं अतः सबके कान उनकी आवाज के समक्ष खुल जाते थे। सनतजी ने धैर्यपूर्वक बतलाया—जुलाई माह आने दो, नाम लिखा देंगे।

—तो अबै कौन सो महिना चल रवो है?

—माताजी अभी यह अप्रैल है, एक जुलाई के लिए समय है।

—तब तक तो वो छः को हो जे।

—माताजी, तिथि भूल गईं का? 15 नवम्बर 73 को जन्म आए। 1 मई खों साढ़े पाँच को हो पे।

माताजी को धैर्य बँध गया। फिर प्रेम से बोलीं—ओई तो आए, हमने तो याद आ करा दई। वाक्य सुनकर सनतकुमार हँसने लगे।

आ गई जुलाई। वे चिरंजीव राकेश को नए पेंट कमीज और जूते पहनाकर प्राथमिक पाठशाला मदनसागर ले गए। उनके घर से कुछ ही मिनट का रास्ता है। ज्यों ही पिता-पुत्र प्रधानाध्यापक श्री हरप्रसाद खरे के कक्ष में गए तो प्रधानाध्यापक महोदय उत्सुकता से बोले—आइए जैन साहब। सनतजी अभिवादन कर उनके सामने की कुर्सी पर बैठ गए, फिर बोले—मास्साब यह बालक 6 साल का होनेवाला है अतः कृपया इसको पहली कक्षा में प्रवेश दीजिए। खरे साहब ने स्वीकृति प्रदान कर दी। फिर आवश्यक कार्यवाही की तब तक पहली कक्षा के अध्यापक श्रीआदित्यनारायण श्रीवास्तव भी आ पहुँचे। उन्हें देखकर खरे साहब ने सनतजी को बतलाया—ये श्रीवास्तव जी हैं इन्हें हम सब लल्लू मास्साब कहते हैं, ये राकेश को पढ़ायेंगे। सनतकुमार उनके साथ पहली कक्षा तक गए फिर अपने 'बल्लु' को 'लल्लू' के हवाले किया और निश्चिंत होकर चले आए।वह 7 जुलाई 1979 का दिन था।

पढ़े लिखे संस्कार प्रधान-परिवार से होने के कारण राकेश को पढ़ाई में कोई दिक्कत नहीं आई। कुछ ही माहों में कक्षा के सर्वाधिक योग्य छात्र मान लिए गए।

स्थिति यह हो गई कि लल्लू मास्साब प्रिय छात्र राकेश पर भारी विश्वास करने लगे। खुद तो श्रमपूर्वक पढ़ाते ही थे, किन्तु वे अक्सर राकेश को बोलते थे कि तुम खड़े होकर गिनती रटवाना।

राकेश माने बल्लु भैया तो पहली कक्षा में ही टीचर बन गए, उन्हें गिनती और पहाड़े ठीक-ठीक याद रहते थे, उच्चारण भी स्पष्ट करते थे अतः बच्चों का मन उनके साथ खूब लगता था। वे कहते—इकनी एक। तब सभी बच्चे पूरी

ताकत से दोहराते—इकनी एक। फिर कहते-दूनी दो। बच्चे ससमूह बोलते-दूनी दो।

इसतरह एक से लेकर सौ तक की गिनती राकेश रटाते थे और बच्चे हँसते-गाते सीख जाते थे। लल्लू मास्साब राकेश की मीठी आवाज फिर बच्चों के सम्यक् स्वर सुनते तो गद्‌गद् हो जाते।

देखते ही देखते वर्ष निकल गया। राकेश ने प्रथम कक्षा उत्तीर्णकर द्वितीय में प्रवेश पा लिया। इस कक्षा में भी लल्लू मास्साब ही कक्षा शिक्षक थे अतः उनका क्रम वैसा ही रहा-वे अक्सर राकेश को पढ़ाने कह देते। वह भी पूरे टीचर थे सो आए दिन बच्चों को अपने मास्साब की तरह पढ़ाते रहते। कभी शुद्ध लेख बोलकर बच्चों को लिखने कहते, कभी किसी पाठ की प्रथम दस पंक्तियाँ नकल करने कहते। उनकी लिपि बहुत सुन्दर थी फलतः इबारत (इमला) सही और शुद्ध लिखते थे। पुस्तकों को भी फटाफट पढ़ लेते थे। पहाड़े तो उन्हें 20 तक कंठस्थ थे।

जबकि अन्य छात्र 17, 18 और 19 के पहाड़े याद नहीं कर पाते थे। तब राकेश उन्हें मेहनत करके याद कराते थे।

शाम को शाला की छुट्टी हो जाने के बाद अक्सर राकेश अपने मित्र लोकेश के साथ घर की ओर लौटते थे। गली में सुट्टर कक्कू का मकान उनका ध्यान खींच लेता था, उनके दरवाजे पर तीव्र ढाल वाली सीमेंट का रास्ता था जिस पर से स्कूटर आदि चढ़ाने की सुविधा थी। एकमायने में वह बच्चों के लिए घिसल-पट्‌टी बन गई थी फलतः दोनों दोस्त पहले उस पर से फिसलते, पुनः ऊपर जाते, फिसलते, आनंद लेते फिर घर जाते थे। उनका यह बिन पैसे का खेल कई दिनों तक चला।

सन् 1980 में द्वितीय कक्षा पास कर जुलाई 81 में तृतीय कक्षा में पहुँच गए। इस कक्षा में लल्लू मास्साब के साथ-साथ एक और शिक्षक उसके समक्ष आए वे थे श्रीचंद जैन।

1982-83 में चतुर्थ कक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णकर पाँचवीं में गए। चौथी में श्री विश्वकर्मा जी, श्री पन्नालाल साहू ने भी पढ़ाया। पाँचवीं में बोर्ड की परीक्षा होती थी जिसे मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की परीक्षा कहा जाता था। उसमें भी उन्होंने 73 प्रतिशत अंकों से प्रथम श्रेणी में स्थान बनाया। सभी शिक्षकों ने राकेश की भूरि-भूरि सराहना की और बतलाया कि यह छात्र शालायी दौड़ प्रतियोगिता में भी भाग ले चुका है, पढ़ने, लिखने, खेलने में श्रेष्ठ।

जमींदार के खानदान का बालक-मुनिपथ पर

बल्लु के परदादा श्री पंचमलाल जैन चौधरी अपने जमाने के जमींदार थे।

उनके सुपुत्र श्री नाथूराम जैन थे, उनने अपना जीवनकाल पंचमलाल जी की सम्पत्ति के सहारे प्रारंभ किया। श्री नाथूराम जी के सुपुत्र श्री सनतकुमार जी के जन्म के समय उनके परिवार में पूर्ण सम्पन्नता थी। लगनशील सनतकुमार जी ने बचपन से पढ़ाई पर ध्यान दिया और गौरवपूर्वक मैट्रिक तक पढ़ाई की।

उनके अध्ययन और लगन के आधार पर उन्हें सन् 1960 में पटवारी की शासकीय सर्विस मिल गई। शासन के आदेशानुसार उन्हें पन्ना जिला स्थित ग्राम अजयगढ़ में उपस्थित रहकर सेवा करनी थी जो उनकी प्यारी माँ बैनीबाई को तनिक भी पसंद नहीं आया। उन्होंने सनत जी को अजयगढ़ नहीं जाने दिया। उनका मोह जीत गया मगर एक दिन जब सनत जी उदास दिखे, तो माँ ने समझाया—जमींदार को नाती होकर नौकरी करे, जो ठीक नईंया। फिर भी सनतजी ने स्थानीय शाला में शिक्षक की नौकरी कर ली। वे शिक्षा अधिकारियों से प्रताणना पा रहे थे, उनका तबादला अन्य गाँव कर दिया गया, तब माँ ने फिर समझाया—अपन खों नौकरी नईं करने, काँ विदेश में मारे-मारे फिरें। सीधे-साधे सनतजी ने वह नौकरी भी छोड़ दी।

जतारा में ही उनके एक रिश्तेदार सेठ विन्द्रावन जी की कपड़े की दुकान अच्छी चल रही थी अतः उन्होंने संकेत किया कि सनत भाई चाहें तो हमारी दुकान पर बैठ सकते हैं। उस समय बल्लु भाई सात साल के हो चुके थे अतः गृहभार देखते हुए सनत जी उस दुकान पर बैठने लगे। वहाँ एक सिलाई मशीन रखी थी अतः खाली समय में कपड़े भी सिलते रहते थे। उसी दुकान के पास में सनत जी की माता जी भी एक दुकान लगाती थी, इस तरह दो लोगों के पुरुषार्थ से गृहस्थी की गाड़ी चलती थी। यों पुस्तैनी खेती-बाड़ी का आधार सदा बना रहा। नहीं थी किसी वस्तु की कमी।

कभी-कभी बल्लु भी उस दुकान पर थोड़ी देर के लिए पहुँच जाते। उन्हें वहाँ कैसिट सुनने में आनंद आता था। क्योंकि उस समय के प्रसिद्ध संगीतकार देशराज पटेरिया की आवाज में हरदौल चरित्र सुनने मिलता था। बल्लु को तो आधे से अधिक गीत याद हो गया था।

जब कभी व्या-परिवार में उनके बुढ़े मामा जी आया करते थे, तब वे छोटे बच्चों को पैसे अवश्य देते थे, उस क्रम में बल्लु को भी कभी पच्चीस तो कभी दस पैसे प्राप्त होते थे जिससे उन्हें अनोखा आनंद महसूस होता था।

शाला परिवर्तन

प्राथमिक शाला की पाँच कक्षाओं से सन् 84 में निवृत्त हो जाने के बाद राकेश ने छठवीं कक्षा हेतु कदम बढ़ाए—शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जतारा की ओर। वहाँ सन् 84 85 में छठवीं कक्षा उत्त्तीर्ण की परीक्षा के कुछ

समय पूर्व ही, पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के आकस्मिक निधन के समाचार से विद्यालय का शिक्षक परिवार सन्न रह गया। शिक्षा से सम्बन्धित अधिकारी वर्ग भी अन्य मनस्क रह गया था, फलतः उस वर्ष सभी छात्रों को परीक्षा के बिना ही उत्तीर्ण कर दिया गया।

राकेश भैया मेधावी छात्र थे। उनको कभी परीक्षाओं से भय नहीं हुआ। देखते ही देखते सातवीं कक्षा पास कर आठवीं कक्षा में जा पहुँचे। समय था सन् 1986-87 का। उस वर्ष राकेश ने विद्यालय स्तर पर स्वयंसेवक (स्काउट) की शिक्षा भी ग्रहण की फलतः कभी-कभी बस स्टेंड स्थित थाने के पास सभी स्वयं सेवक नागरिकों को सड़क पर चलने के नियमों का अभ्यास कराते थे। राकेश ने आठवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की, फलतः उसकी योग्यता देखते हुए शाला ने उनको छात्रवृत्ति प्रदान की जो तीन वर्ष तक मिलती रही।

सन् 87-88 में नवमीं कक्षा पास की और 88-89 में दसवीं। नवमी में एन. सी.सी. की ट्रेनिंग भी ली किन्तु दसवीं में छोड़ दी और अध्ययन को प्रमुखता दी। इस बीच उन्होंने बैडमिंटन का खेल भी अतुल नगाइच से सीखा और शतरंज लोकेश खरे तथा नगाइच से। जब वह ग्यारवहीं कक्षा में गया तो उम्र के सोलह वर्ष पूर्ण कर चुका था। चेहरे पर उम्र के निशान परिवर्तन ला रहे थे कल तक किशोर दिखनेवाला राकेश अब युवा दिखने लगा था। उसकी मूंछें नहीं उगीं थीं, फिर भी उस स्थान पर रोंये (नरम बाल) झलक देने लगे थे। ग्यारहवीं में बायलॉजी विषय लेने के लिए राकेश ने आवश्यक प्रपत्र (फार्म) भरकर प्रस्तुत किया किंतु संबंधित शिक्षक श्री एच.एस. चौहान ने किसी कारण से वापस कर दिया। राकेश धुन का पक्का था। अतः पुनः फार्म जमा किया मगर वह भी वापिस किया गया। कहें कि चौहान साहब ने तीन बार फार्म वापिस किया किन्तु राकेश धैर्य बनाए रहे और चौथी बार पुनः फार्म भरकर बायलॉजी विषय में प्रवेश पा लिया। कारण यह था कि उस समय शाला में गणित का कोई लैक्चरर (व्याख्याता) नहीं था। अतः राकेश बायलॉजी लेना चाहते थे। और प्रिय मित्र लोकेश के साथ कक्षा में अध्ययन करना चाह रहे थे।

जब वे बारहवीं कक्षा में गए तो वहाँ कतिपय प्रतियोगिताओं में भाग लिया। आश्चर्य की बात, कि जिस मित्र से बैडमिंटन सीखा था, चैम्पियन-प्रतियोगिता के समय वह मित्र राकेश से हार गया। इसी तरह जिस मित्र से शतरंज सीखा था, चैंपियन प्रतियोगिता में वह मित्र भी हार गया। दोनों खेलों में राकेश को भारी सराहना और ख्याति मिली। दी फिर बोर्ड की परीक्षा, सदा की तरह इस बार भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

विद्यालय की पढ़ाई पूर्ण कर सन् 89 में राकेश ने विद्यालयी शिक्षा को छोड़कर महाविद्यालय में प्रवेश लिया। इस बीच उनकी मेधा देखते हुए अखिल

भारतीय विद्यार्थी परिषद् जतारा जिला टीकमगढ़ ने उन्हें 'मेधावी छात्र' के रूप में सम्मानित किया, क्योंकि वे मैट्रिक की परीक्षा में प्रवीण्य सूची (मेरिट लिस्ट) में गौरव प्रधान स्थान प्राप्त कर सके थे, जिले में।

आगामी तीन वर्षों में महाविद्यालय की शिक्षा पूर्ण की एवं सन् 1994 में अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के अंतर्गत बी.एस.सी. (नवीन पाठ्यक्रम) की डिग्री प्राप्त की। 51.6 प्रतिशत अंक पाकर द्वितीय श्रेणी में स्थान बनाया।

युवक राकेश जो अब युवा-पंडित से कम नहीं थे, एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाने दे रहे थे। उन्होंने कुछ समय के लिए सरस्वती शिशु मंदिर जतारा में आचार्य पद से सेवाएं दीं, समय था 4 जुलाई 94 से 6 फरवरी 95 तक।

बैंड के सदस्य

कहने को राकेश 19 वर्ष के युवक हो गए थे किन्तु वे अपनी कद-काठी और सरल-स्वभाव के कारण किशोर ही दिखते थे, नाजुक शरीर, गोरा बदन मगर आँखों में पूर्ण विश्वास। वे अपने समवयस्क साथियों के साथ कुछ न कुछ सामाजिक कार्य करते रहते थे। संगीत के शौकीन थे, सो मंदिर के जैन नवयुवक संघ के बैंड दल में शामिल हो गए और धार्मिक कार्यों के समय मधुर संगीत की धुनें सुनाने लगे। तभी समीपस्थ तीर्थ क्षेत्र श्री द्रोणगिरि (छतरपुर) में मुनि विरागसागर जी ससंघ के चातुर्मास समापन समारोह के उपलक्ष्य में तीर्थ कमेटी ने श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान आयोजित करना चाहा, जिसमें जैन नवयुवक संघ, जतारा को जैन बैंड प्रतियोगिता में भाग लेने आमंत्रित किया गया। विधान के दौरान संगीत के अनेक कार्यक्रम हुए। फिर हुई जैन बैंड प्रतियोगिता जिसमें श्री राकेश बाबू को विशेष सम्मान देते हुए दिनांक 8 नवम्बर 1992 को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया, जो उनके उत्तम गायक होने का साक्षी है। यह 8 नवंबर का दिन जैन जगत के लिए स्मरणीय हो गया, क्योंकि इसी दिन मुनि विरागसागर जी को आचार्य पद प्रदान किया गया। राकेश को पता नहीं था कि जिन गुरुदेव के सानिध्य में वह बैंड वादन हेतु आए हैं वही पूज्य आचार्य विरागसागर जी एक दिन उन्हें मुक्तिवधू का वर बनाकर पुरुष्कृत करेंगे।

इस तरह देखा जाए तो नन्हीं अवस्था से ही राकेश में अनेक गुण परिलक्षित किए गए थे। वे संगीतज्ञ थे तो उत्तम कवि भी थे, दमदार गजलगो थे, तो युवा भजन-गायक भी। मंदिर के स्वाध्याय कक्ष में वे एक योग्य पंडित प्रतीत होते थे तो गर्भालय में व्रती श्रावक। पूजा प्रच्छाल का पाठ करते तो लोग आकर्षित हो पड़ते।

खेल संसार में भी वे हरफनमौला थे। कभी ताश खेलते, तो कभी कबड्डी, कभी कैमरे से फोटो उतारते तो कभी मैदान में क्रिकेट अथवा बैडमिंटन खेलते।

शतरंज तो उनसे चाहे जब समय प्राप्त कर लेता था।

जब प्राथमिक शाला और माध्यमिक शाला के छात्र रहे तब लुकाछिपी, गिल्ली डंडा, चोर-सिपाही, कंचा, चंगला, चपेटा, साँप-सीढ़ी, लूडो और व्यापार जैसे खेल खेलते रहते थे। अंताक्षरी में खूब मन लगता था। भाँति-भाँति के गाने कहकर सामनेवाले दल को हरा देना उनके बायें हाथ का काम था। शाला में शाम को जब खेल का पीरियड होता तो विभिन्न खेलों के साथ, रस्सीकूद का आनंद भी लेते थे।

शौक तो शौक होता है, 15 से 19 वर्ष की उम्र तक टाकीजों में जाकर कभी-कभी फिल्म भी देख आते थे, बलिहारी दोस्तों की। उनके जीवन की प्रथम फिल्म थी 'प्यार झुकता नहीं'। फिर अनेक पिक्चर/मूवी देखे गए। थी वह कॉलेज लाईफ। साथ में अक्सर उनके तीन मित्रों कमलेश भाई, लोकेश भाई और पवन भाई में से कोई एक या दो बने ही रहते थे।

यदि राकेश के गृह त्याग से पहले 21 वर्षों के जीवन पर दृष्टि डाली जावे तो उनके अनेक प्रेरक प्रसंग आपको बार-बार याद आयेंगे। कुछ घटनाएँ यहाँ दी जा रही हैं।

अग्रज की रुचि में सहयोगी

14 वर्षीय बालक राकेश स्वतः कभी पतंग नहीं उड़ाते थे किंतु बड़े भाई राजेश को उड़ाते देखकर खुश होते थे, अतः जब कभी बड़े भाई की अनुपस्थिति में मोहल्ले पड़ोस के किसी लडके की पतंग कटती तो राकेश दौडकर लूट लेते थे ओर मंजा संभाल कर रख लेते थे। जब भाई आता तो उसे देकर खुश होते थे, फिर राजेश पतंग उड़ाते और राकेश गिररी (चकरी) पकड़े रहते थे। भाईयों का परस्पर स्नेह देखकर पड़ोसी खुश होते थे।

माता की प्रेरणा

पंद्रह वर्षीय राकेश भैया मीठी आवाज में गाते रहते थे, माँ को उसकी आवाज अच्छी लगती थी अतः एक दिन बोली—'यह पूजन संग्रह देखो, इसमें पंचपरमेष्ठी की पूजा है, जरा उसे सुनाओ तो। राकेश ने मीठी लय से पूजा पढ़ी। माँ बीच-बीच में अर्थ समझाती जाती थी। राकेश को पूजा का काव्य अच्छा लगा अतः वे खाली समय में उसे पढ़ने लगे। इस बीच उन्हें याद हो आया कि पाठशाला में पंडित राजेन्द्र कुमार पंच परमेष्ठी के विषय में बतलाते थे जो इसमें उपलब्ध है। किंतु ब्र. रविन्द्र जी आत्मा की बात करते हैं।

राकेश ने प्रति शाम खटिया पर बैठकर पूजा पढ़ने का क्रम जारी रखा। वे पढ़ते-'मैं तो अनादि से रोगी हूँ उपचार कराने आया हूँ।' तब घर तो घर राह चलते लोग भी सुनने लगते थे।

एकाशन से डरने वाला : उपवासों का राजा बना

पर्युषण पर्व के अवसर पर दादीजी ने राकेश से कहा—'बेटा व्रतों में उपवास न सही, तो एकासन जरूर करो।' राकेश ने बात मान ली और सुगंध-दशमी के दिन एकाशन किया, मगर शाम को भूख लग आई। किसी से कह न सका और भूख भी न सह सका। अतः अंधेरा होते ही बाजार की ओर निकल गए और फलाहार खरीद कर खा लिया। सोचने लगे ये लोग उपवास कैसे कर लेते हैं, मैं तो एकाशन भी नहीं कर पा रहा हूँ। कुछ देर बाद जब मंदिर गए तो भगवान के समक्ष प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु! मुझमें ऐसी शक्ति हो कि मैं भी व्रतोपवास कर सकूँ।

उनकी प्रार्थना में दम था अतः वे भविष्य में व्रतों और उपवासों के राजा सिद्ध हुए।

जिनवाणी को पकड़ा

बालक राकेश शाम को मंदिरजी जाता तो वचनिका सुनता रहता, मगर जब स्वाध्याय कराया जाता तो अनेक बातें समझ से परे रहतीं। जब जिनवाणी स्तुति गाई जाती तो वे खुश हो जाते और सुरों में सुर मिलाकर गाते-'वीर हिमाचल तै निकसी, गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।'

कहने का मतलब यह कि बालोचित उम्र में स्वाध्याय और वचनिका से पूर्व उसे जिनवाणी की स्तुति रुचिकर लगी।

बचपन में ही वात्सल्य का समुद्र बना

राकेश तेरह साल के थे, उन्हें अपनी छोटी बहिन प्रियंका से बहुत स्नेह था, सो उसे घंटों खिलाते, कभी साबूदाने की खीर देते और कभी झूला झुलाते। उसका नामकरण भी राकेश ने ही किया था। यह पृथक बात है कि कमला दीदी ने उसका नाम महिमा रख दिया था। बहिन की देखभाल करते समय वे माँ बन जाया करते थे—तेल, पाउडर, क्रीम लगाते, कंघी करते, चोटी बनाते, कपड़े पहनाते और काजल भी लगा देते। कभी घुमाने ले जाते तो कभी पास ही सुला देते। तब पारिवारिक सदस्य कहते-'इस लड़के के कलेजे में वात्सल्य का समुद्र भरा है।'

परीक्षा देनेवाला खुद परीक्षक बन गया

बालक राकेश एकाद कक्षा को छोड़कर हर कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास होता रहा है। एक बार 8वीं कक्षा की अंक सूची लेकर लौट रहे थे, तब नगर के परिचित पुरुष श्री जीवन कोठादार ने वह अंक सूची देखी। प्रथम श्रेणी

देखकर बोल पड़े 'बेटे तुम आगे बढ़ोगे।' राकेश खुशी-खुशी घर आ गए, उस समय वे नहीं जानते थे कि भविष्य में हर वर्ष शिविर में आनेवाले हजारों भक्तों की लिखित परीक्षा भी वे लेंगे।

चित्रकार बने तो पारिश्रमिक भी पाया

जतारा में एक पेंटर थे-श्री पाठक जी। वे विभिन्न चित्र और पेंटिंग का कार्य करते रहते थे। राकेश खड़े होकर उनका कार्य देखते रहते थे। एक दिन राकेश ने घर पर सरस्वती का चित्र देखकर कागज पर आड़ी और खड़ी पंक्तियों के स्क्वेयर बनाए और उनके सहयोग से दीवाल पर पेंसिल से सरस्वती का चित्र बना दिया। लोग देखकर चकित थे, क्योंकि राकेश के पास न तो ब्रश थे और न ही कलर। उसने बांस की लकड़ी के विभिन्न आकार वाले ब्रश बनाए थे और बाजार से महावर खरीदकर रंग तैयार किया था अतः उसकी कला अधिक मूल्यवान मानी गई। माता, पिता, दादी, भाईयों और बहिनों ने तो तारीफ की ही, पड़ोसी भी सराहना करने लगे।

राकेश ने दूसरा चित्र सुभाषचंद बोस का बनाया था। एक दिन उन्हें फिल्मी नायिका मीनाक्षी शेषाद्रि का फोटो मिल गया, अतः उन्होंने घर की बाहरी दीवार पर उसका सुन्दर चित्र बना डाला। इसी तरह पेंटर पाठक जी को किसी दुकान का बोर्ड बनाते देखा, तो राकेश बोर्ड पर सुडौल अक्षर लिखने का प्रयास करने लगे। घर की दीवार पर 'जय' और ओम्' लिखा। पड़ोसी की दीवार पर राम, हनुमान आदि लिखा। लिखते समय उनके हाथ में मात्र गेरू ओर कोयला होता था।

एक दिन पेंटर श्री पाठक वहाँ से निकले तो उन्होंने गेरू वाले अक्षर और महावर वाले चित्र देखकर भारी सराहना की। फिर राकेश से पूछा-यह सब किससे सीखा? राकेश प्रेम से बोले-आपको लिखते देखकर सीखा है। पाठक जी को समझते हुए देर नहीं लगी, वे पीठ थपथपाकर चले गए। राकेश को चित्रकारी करते तीन साल हो गए। एक दिन एक सज्जन कपड़े का वैनर बनवाने आए, राकेश से पूछा तो उसने हाँ कर दी और दो घंटे में बैनर बनाकर दे दिया। सज्जन ने जाते-जाते राकेश को 60 रुपए दिए। राकेश ने पुरस्कार समझकर रख लिए, बाद में उसे अनुभव हुआ कि यह मेहनत की कमाई कहलाती है।

पदयात्री स्कूटर क्यों सीखेगा?

राकेश के एक मित्र अजित धनगोल स्कूटर चला लेते थे, एकदिन राकेश से बोले-'चल घूमने चलें, वहाँ तुझे स्कूटर चलाना सिखाऊँगा।' राकेश चले गए, वहाँ अजित ने राकेश को स्कूटर पर बैठाकर चलाने का तरीका समझाया फिर बोला-चला। राकेश ने चलाया मगर एक्सीलेटर अधिक घुमा दिया अतः स्कूटर

तेजी से बढ़ गया। राकेश ने घबराकर ब्रेक लगा दिया तो रुक गया मगर तिरछा हो गया, किसी ने देख लिया अतः उसकी शिकायत अजित के बड़े भाई रमेशजी से कर दी। उन्होंने दूसरे दिन ही राकेश को आड़े हाथों ले लिया, तब राकेश को दुख हुआ, अतः मन ही मन संकल्प ले लिया कि अब मैं भविष्य में कभी कोई स्कूटर या मोटर-साइकिल या कार नहीं चलाऊँगा। उससमय राकेश नहीं जानते थे कि भविष्य में उन्हें 'पदयात्री' बनना है और हजारों मील तक पैरों पैर चलना है।

लक्ष्य पाने किया त्याग

राकेश पहली कक्षा से नवमीं कक्षा तक प्रतिभावान छात्र रहे, सदा प्रथम श्रेणी के अंक पाए, किन्तु जब दसवीं कक्षा में गए तो खेलने और घूमने में मन लग गया, फलतः परिणाम द्वितीय श्रेणी रहा। राकेश को दुख हुआ, उन्होंने प्रण किया, खेलना-घूमना और दुकानदारी करना बंद रखूँगा। अधिक से अधिक समय अध्ययन में दूँगा। उनका संकल्प रंग लाया, वे अगले वर्ष पुनः प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

पाया आहारचर्या का पुण्य

राकेश भैया उस समय 17 वर्ष के थे, एक मुनिराज श्री श्रुतसागर जी का नगर में आगमन हुआ, काफी वृद्ध थे, जतारा में साधु-संत कम ही आते थे अतः समाज में उत्साह बढ़ गया। राकेश उनकी आहारचर्या के समय जाते थे और दर्शन कर लौट आते थे।

एक बार ऐलक दयासागर जी का आगमन हुआ। वे आचार्य शिरोमणि श्री विद्यासागर जी के शिष्य थे। राकेश का मन पढ़ाई में रहता था अतः कम ही जा पाते थे। एक दिन माँ ने कहा-'बेटा महाराज के लिए घर पर चौका लगाना है अतः तुम पड़गाहन के लिए खड़े होना।' दूसरे दिन सनतजी और राजेशजी के साथ-साथ राकेश भैया भी धवल-धोती-दुपट्टा पहनकर हाथों में मांगलिक द्रव्य ले पड़गाहन करने पहुँचे। करीब चार दिन बाद ऐलक जी का पड़गाहन हो सका। ऐलकजी का आहार उसी कक्ष में हुआ जिसमें राकेश अध्ययन करते थे। सभी के साथ राकेश ने भी आहार दिया और निरंतराय आहार की भावना भाते रहे, मगर तभी किसी ने जल दिया और ऐलक जी का अंतराय हो गया। राकेश दुखी हो पड़े, फिर ऐलक जी को पहुँचाने उनका कमंडलु लेकर वसतिका तक गए।

लौटे तो माँ ने भोजन परोसा। राकेश दुखी तो थे ही, अतः भोजन लेने का प्रगाढ़ भाव नहीं हुआ, फिर भी माँ का मन रखने थोड़ा सा भोजन ले लिया। मगर पारिवारिक सदस्य समझे यह आलू की सब्जी के बगैर भोजन नहीं करता,

अतः लौकी की सब्जी पसंद नहीं आ रही होगी। राकेश के मन में तो कुछ और ही था तभी तो ऐलक जी वाला बिना नमक का भोजन शांतिपूर्वक ग्रहण कर लिया और उनके त्याग की अनुमोदना की।

बचपन से ही व्यसन त्याग

समीप ही एक तिवारी जी रहते थे घर दोर अच्छा था किन्तु लकड़ी में घुन की तरह उन्हें पीने का व्यसन लग गया था, अतः धीरे-धीरे उनकी सम्पत्ति नष्ट हो गई। वे तो वे, उनके बच्चे पारिवारिक सदस्य भी फटे-पुराने कपड़े पहनने लगे। उनकी करुण कथा समझ लेने के बाद, राकेश ने बचपन में ही व्यसनों से दूर रहने का मन बना लिया। उनके तनिक से त्याग ने उन्हें बाद में 'महान-त्यागी' बना दिया। बने वे राष्ट्रयोगी।

कायोत्सर्ग की प्यास

राकेश भैया जब नाटक मंचन करते थे और बैंड वादन करते थे, तब एक बार दमोह जाने का अवसर आया। वहाँ ऐलक दयासागर जी के सान्निध्य में चल रहे कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। राकेश और उनके दल के, मैनासुंदरी नाटक मंचन एवं बैंडवादन दोनों कार्य भारी सराहे गए। सुबह राकेश अपने मित्रों अरविन्द माते, स्वतंत्र सिंघई आदि के साथ कुंडलपुर की वंदना करने निकले। पूरा पहाड़ न चढ़ पाए कि अचानक तेज वर्षा होने लगी सभी युवक दौड़कर झाड़ियों की शरण में पहुँचे। पानी से किंचित रक्षा हुई, तब तक राकेश भैया का मन जाप देने का हुआ, उन्होंने शर्ट उतार दी और करने लगे कायोत्सर्ग। उन्हें देखकर अन्य मित्रों ने भी शर्ट उतारकर जाप देना शुरू कर दिया। एक मित्र के पास कैमरा था अतः उसने चित्र उतार लिया। वह नहीं जानता था कि राकेश भैया उस समय प्रदर्शन के लिए कायोत्सर्ग नहीं कर रहे थे, उनके जीवन में तो निरंतर, दिन में कई बार कायोत्सर्ग का दृश्य रहनेवाला है।

बाद में इन युवकों का दल पठा, (महरौनी) भी गया था, जहाँ 'राजुल-नेमि-नाटक' का मंचन कर सबका दिल जीत लिया था।

आज की मेंहदी : कल का चंदन

राकेश भैया पूर्ण युवक हो चुके थे, 18वाँ वर्ष पार कर चुके थे, तब का संस्मरण है उन्हें मेंहदी का बेहद शौक था, फलतः बायीं हथेली पर अपने हाथ से ही मेंहदी लिख लेते थे और उस हाथ के नाखूनों पर मेंहदी कलर की नेल पॉलिश लगा लेते थे। क्रम बना रहा। जब बी.एस.सी का कोर्स करने टीकमगढ़ गए तो वहाँ भी शौक जीवंत रखा। एक दिन वे लोकेश के रूम पर गए, दरवाजे

पर खड़े होकर बातें करने लगे। उनका शरीर दरवाजे की ओट में था किंतु मेंहदीवाला हाथ बाहर झाँक रहा था। उसी समय मकान मालिक कपूरचंद जी निकले तो हाथ देखकर उन्हें शंका हुई कि कोई लड़की लोकेश से मिलने आई है। उन्होंने सभी छात्रों से पूर्व में ही कह रखा था कि किसी के कमरे में कोई लड़की मिलने-जुलने ना आवे अतः भिनभिनाते हुए दरवाजे के पास पहुँचे और जोर से बोले 'क्या हो रहा है लोकेश भैया?' आवाज सुनते ही दोनों युवक सामने आ गए। कपूरचंद जी उन्हें देखकर अपने सोच पर लजा गए फलतः सीधे अपनी श्रीमती के पास पहुँचे और बतलाने लगे–'अरे ये राकेश का हाथ तो बिल्कुल लड़कियों जैसा लगता है, मेंहदी चमकती रहती है।' श्रीमती सुनकर चुप रह गईं, फिर समझाया-'बच्चे हैं अभी शौक के दिन हैं।'

जिन्हें दूर रखा अब वे हृदय में हैं

एक बार सोनागिर जी में आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की 76वीं जन्मजयंती मनाई जा रही थी। जैन-नवयुवक संघ जतारा को आमंत्रित किया गया था, फलतः बैंड दल और स्वयं सेवक दल के साथ राकेश भैया भी गए। जब राकेश क्षेत्र की वंदना कर रहे थे, तब आचार्यश्री के दर्शन करने का सुयोग बना। वे दूर से ही देखते रहे, उन पर बुदेलखंड क्षेत्र के संस्कार सवार थे। अतः सोचने लगे कि आचार्यश्री तो 20 पंथियों के संत हैं अतः मेरा समीप जाना उचित होगा या नहीं? यद्यपि वे 13 पंथ और 20 पंथ के दर्शन को नहीं जानते थे, न ही किसी पंथ को अच्छा बुरा मानते थे, वे तो सिर्फ कार्यक्रम के महत्व को कूतते थे।

कालांतर में राकेश भैया आचार्य विमलसागरजी के सुयोग्य शिष्य आचार्य विरागसागरजी के शिष्य बने और विमलसागर जी को –'दादा गुरु' के रूप में हृदय में बसा लिया।

खेल-खेल में त्याग

राकेश भैया जब टीकमगढ़ में बी.एससी. कर रहे थे, तब वहाँ की हिमांचल गली में एक कमरा किराए से ले रखा था। कुछ दूरी पर लोकेश थे, वहाँ और भी मित्र बन गए। कमलेश बसंत, पवन, श्रोत्रिय, निरंजन, पदम, संतोष आदि। एक दिन शाम को सभी मित्रों ने 'गुजिया पार्टी' का मन बनाया और टीकमगढ़ की प्रसिद्ध गुजिया मँगाई। जब मित्रगण गुजिया खाने लगे तो एक गुजिया में मरा हुआ झींगुर (काकरोच) पाया। फलतः घिनयाकर गुजिया फेंक दी गई, उसी क्षण राकेश ने संकल्प किया कि कभी बाजार की गुजिया नहीं खायेंगे। अन्य मित्रों ने भी वैसा ही मन बनाया।

बच्चों से प्यार : आत्मा का प्रथम संस्कार

जैसा कि पूर्व में आपने पढ़ा कि राकेश भैया जब तेरह साल के थे तब वे अपनी छोटी बहिन से अपार स्नेह करते थे। वह क्रम आगे भी बना रहा। जब वे 'सरस्वती-शिशु मंदिर जतारा' में आचार्य पद पर सेवाएँ दे रहे थे, तब भी बच्चों के प्रति वैसे ही रहे। एक बच्चा तीन वर्ष का ही था कि उसके माता-पिता ने उसे सरस्वती शिशु मंदिर में भेजना शुरू कर दिया। भोजन के समय जब सभी बच्चे कतार में बैठकर भोजन मंत्र पढ़ते और अपना टिफिन खोलकर भोजन लेते, तब वह छोटा बच्चा चुपचाप बैठा रहता, फलतः राकेश भैया उसे दुलार देते और अपने हाथों से भोजन कराते।

एक दिन राकेश भैया को घर पर किसी ने रोरी का टीका लगा दिया, वे वैसा ही माथे पर लाल रंग चमकाते हुए शिशु मंदिर जा पहुँचे। वहाँ देखते हैं कि वही बालक विमला दीदी की कक्षा में बैठा-बैठा रो रहा हैं दीदी के समझाने के बाद भी वह चुप नहीं हुआ। तब तक मंजू दीदी पहुँची, उन्होंने भी दुलारा और पुचकारा, फिर भी बालक ने रोना बंद नहीं किया। फिर तो प्रधानाचार्य रमेश चौरसिया जा पहुँचे, उन्होंने बच्चे को गोद में उठा लिया और चुप कराने का भारी प्रयास किया, मगर बालक चुप न हो सका। तब उन्होंने उससे प्रेम से पूछा–'बेटा कहाँ जाना है?' बालक ने कहा–'लाल टीका वाले आचार्य जी के पास'। तब चौरसिया जी उसे राकेश जी के पास लाए, जैसे ही राकेश जी ने उसे गोद में लिया, बालक चुप हो गया। जाते-जाते चौरसिया जी ने कहा–'इस बच्चे को दीदियाँ तक चुप नहीं करा पाईं किन्तु आपके पास आते ही सामान्य हो गया। आप तो दीदियों से भी अधिक प्रिय हैं इसे।

चलें, कथा पर आवें।

सागर में विरागसागर का दर्शन

जतारा में चौबीसी जिनालय का निर्माण हुआ। 144 वर्षों बाद पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आयोजन निश्चित हुआ। सागर में विराजे पू. आचार्य विरागसागर जी से निवेदन करने समाज के प्रतिनिधियों के साथ जैन नवयुवक संघ के मंत्री राकेश भी पहुँचे। पू. आचार्यश्री ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

सभी लोग हर्षित होते हुए जतारा वापिस होने की तैयारी करने लगे। इससे पूर्व रात्रि में वैयावृत्य हेतु पू. आचार्यश्री के कक्ष में पहुँचे। राकेश भी द्वार के पार्श्व में खड़े होकर वैयावृत्ति का दृश्य देख रहे थे। सोचने लगे– अहो! साधुजनों का यह सेवाभाव कितना आनंददायक है। आचार्यश्री का वात्सल्य तो देखते ही बनता है। आचार्यश्री के वात्सल्य ने राकेश को अंदर तक प्रभावित किया। साधु की गंभीरता के साथ वात्सल्य का यह संगम राकेश के मन को अतीव आनंद

की अनुभूति करा रहा था।

राकेश जब आचार्यश्री के कक्ष से बाहर आए, तो मन आचार्यश्री के पास और तन जतारा की ओर था। सोच रहे थे, लोग पूछेंगे, कैसा लगा आचार्यश्री का दर्शनकर? तो कह दूँगा—

तुम्हें क्या बतायें, वहाँ रात थी
नई जिंदगी से मुलाकात थी।।

पू. विरागसागर की आज्ञा से मुनि विशुद्धसागर, ऐलक विज्ञानसागर का जतारा आगमन हुआ। जैसे प्रधानमंत्री के आगमन से पूर्व प्रशासन मुआयना करने उपस्थित हुआ हो। भावभीनी आगवानी की जतारा जैन समाज ने।

आचार्य विरागसागर का ससंघ आगमन

6 फरवरी 1995 को जतारा नगरी में अभूतपूर्व उत्साह था। क्यों न हो, आचार्य विरागसागर जी और मुनि विशुद्धसागर जी का वात्सल्य मिलन देखने तथा संघ की अगवानी करने हर कोई लालायित जो था। हुए सभी के नैन तृप्त, शाम 5.00 बजे। जब पू. विरागसागरजी ससंघ पधारे।

आचार्यश्री ने संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया—'भरना है तो खाली होना पड़ेगा। यदि आपको अच्छाइयों से भरना है तो बुराईयों से खाली होना पड़ेगा। भरा घट भरा नहीं जा सकता, खाली घट को ही भरना संभव है।'

राकेश ने प्रथमबार जैन साधु के प्रवचन सुने थे। आचार्यश्री के धर्मोपदेश ने राकेश को अंदर तक स्पर्शित किया था। बस यही आगमन राकेश भैया के जीवन में हृदय परिवर्तन की लहर लेकर आया। राकेश भैया ने विभिन्न कार्यकर्ताओं के साथ आचार्य संघ की आगवानी की।

कुछ ही दिनों में राकेश भैया पूरे संघ को चाहने लगे। उस समय संघ में मुनिश्री विशुद्ध सागर जी (अब आचार्य), क्षु. विमद सागर जी (अब आचार्य) एवं क्षु. विमुक्त सागर जी (अब मुनि) से किंचित वार्ताएं भी हो सकीं थीं।

गजरथ महोत्सव का कार्यक्रम 8 फरवरी से 13 फरवरी 1995 तक चला, अनेक लघु एवं विशाल प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की गईं, प्रतिष्ठाचार्य थे—प्रतिष्ठाशिरोमणि पं. विमलकुमार जी सौंरया। जो वर्ष 2013 में 'प्रज्ञपुरुष' के अलंकरण से अलंकृत किए गए हैं।



द्वितीय खण्ड

गृहत्यागी का आकिंचन्य

जागे संस्कार

आचार्य विरागसागरजी के आगमन का लाभ उठाने के भाव से राकेश के मित्र श्री प्रकाश जैन विचार ही कर रहे थे कि इतने में राकेश घूमते-घूमते उनकी दुकान पर आ पहुँचे। सहजता से बोले—प्रकाश भाई! रात हो गई अभी तक दुकान बंद नहीं की? चलो घंटाभर ताश (प्लेइंग कार्ड) खेलने चलते हैं। राकेश ने यह बात रोज-रोज की तरह की थी। वे चाहे जब प्रकाश आदि के साथ घंटे दो घंटे ताश खेलते थे। यह खेल उनकी आदत में शामिल हो गया था।

मगर प्रकाश तो कुछ ओर ही सोच रहे थे, अतः अपने सोच को आकार देते हुए राकेश से बोले—भाई! आज पहले आचार्यश्री की वैयावृत्ति करने चलो, फिर ताश खेलने चलेंगे।

राकेश को सागर वैयावृत्ति का दृश्य स्मरण हो आया। सोचने लगे, उस दिन देखने का अवसर मिला था, आज वैयावृत्ति का पूरा आनंद लूँगा।

प्रकाश का अनुरोध स्वीकार कर राकेश बोले—चल, जैसा तू कहे। राकेश अपने मित्र प्रकाश, अरविंद, स्वतंत्र एवं अशोक के साथ आचार्यश्री की वसतिका में पहुँच गए। वे तख्त पर विराजमान थे। अनेक युवक वैयावृत्ति कर रहे थे कुछ इस अवसर का इंतजार करते हुए प्रसन्नचित्त गुरुदेव का चेहरा देखकर मुस्कुरा रहे थे।

प्रकाश ने राकेश को संकेत से बुलाया और आचार्यश्री की वैयावृत्ति को कहा। राकेश ने अपने सुकोमल हाथ गुरुचरणों की ओर बढ़ा दिए। तभी प्रकाश ने राकेश के प्रति विनोद करते हुए आचार्यश्री से कहा—आचार्यश्री! ये आलू-प्याज खाते हैं। महाराज ने राकेश के बढ़े हुए हाथों को रोकते हुए संकेत से कहा—वहाँ क्षुल्लक जी की सेवा करो।

बढते हाथों को रोक देने से राकेश को मन ही मन खुद पर ग्लानि हो आई। वे आचार्यश्री के चेहरे को देखते हुए सोच रहे थे, सेवा करूँगा तो आपकी। आचार्यश्री समझ गए अतः हाथों से संकेत दिया, चार माह का त्याग कर दो। राकेश समझदारी का भाव प्रदर्शित करते हुए विनयपूर्वक बोले—महाराज जीवनपर्यन्त आलू, प्याज का त्याग। वाक्य सुनकर गुरुदेव मुस्कुराए। राकेश समझे अब हरी झंडी मिल गई है सेवा करने की। अतः पुनः हाथ बढ़ा दिए। तब तक प्रकाश ने पुनः महाराज के समक्ष एक बात कही-ये रात्रि भोजन भी करते हैं।

प्रकाश का वाक्य सुनकर राकेश सोचने लगे—आज तो मित्र भी शत्रु जैसा व्यवहार कर बारी-बारी से पोल खोल रहा है। तब तक उनकी प्रज्ञा ने बोध कराया, सच्चे मित्र ऐसे ही होते हैं। इधर आचार्यश्री ने वैयावृत्ति से रोक दिया,

और चार माह त्याग का संकेत दिया। अपनी पगड़ी खिसकती देख राकेश ने मीठे स्वर में कहा–आजीवन रात्रि भोजन का त्याग करता हूँ। वाक्य सुनकर महाराज पुनः प्रसन्न हो गए। पास खड़े लोगों ने दृढ़ता की प्रशसा की। राकेश के हाथ महाराज के पैर सहलाने लगे। इस बार आचार्यश्री ने मना नहीं किया। राकेश मन ही मन सोच रहे थे 'सात्विक संगति और योग्य मित्र के प्रभाव से ही यह कीमती समय मिल सका और त्याग भाव हुए।

वैराग्य की धारणा

राकेश घर आ गए किन्तु मन साथ में नहीं था, वह आचार्यश्री के पास रह गया था। स्थिति यह बनी कि जैसे कोई व्यक्ति गुमी हुई वस्तु तलाशने के लिए बार-बार रास्ते के एक छोर से दूसरे छोर तक आता जाता है ठीक वैसे ही राकेशजी दिन में तीन बार कुछ तलाशते से आचार्यश्री के पास आते-जाते रहे। सात दिन में ही उनके पिताजी ने अंदाजा लगा लिया कि कहीं यह लड़का महाराज से व्रत आदि न ग्रहण कर ले। उनका सोचना सही था क्योंकि राकेश के चेहरे पर कुछ दिनों से जो चिंतन दिखाई दे रहा था वह भ्रम नहीं था। एक दिन राकेश सोचने लगे—क्यों न आचार्यश्री से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया जावे और वैराग्य पथ का अनुसरण किया जावे। अतः वे आचार्यश्री के साथ-साथ विहार कर गए। सिद्धक्षेत्र आहार जी पहुँच कर दूसरे दिन ही परिवार को संदेश भेजते हैं कि मैं व्रत अंगीकार कर रहा हूँ। संघ के साथ रहूँगा, मेरी चिंता नहीं करना।

सनतकुमार जी को अपने सोच का सत्य दिखने लगा। वे सोचते हैं कि जतारा में सभी की नजरों में मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई थी परंतु यथार्थ के धरातल पर विचार किया जावे तो उस महोत्सव में राकेश की 'आत्म प्रतिष्ठा' सम्पन्न हुई थी, क्योंकि समारोह के बाद राकेश को घर परिवार में रुकना अच्छा नहीं लगता था। उसे तो अच्छा लगता था आचार्य संघ। इसलिए वह सुबह-शाम-दोपहर आचार्य संघ के आसपास बना रहता था और कार्यक्रम पूर्ण हो जाने के बाद, जब आचार्यश्री 14 फरवरी को विहार करने लगे तो वह पहुँचाने के भाव से पीछे लग गया।

महाराज और संघ के साथ उसने रात्रि-विश्राम माँची में किया, मगर सुबह घर नहीं लौटा। तीन दिन पुनः चलकर संघ को 17 फरवरी 95 को सिद्धक्षेत्र आहार जी पहुँचाया।

परिवार की तड़पन

राकेश के चले जाने से सम्पूर्ण परिवार दुख के अगाध सागर में डूब गया। किसी को दो-तीन दिन तक समय पर भोजन-पानी लेने की सुधि नहीं रही। सभी के मस्तक में राकेश झूल रहे थे यदि उनके मस्तिष्क के विचार पढ़ने की

कोई मशीन होती तो वह बतलाती कि कौन सदस्य क्या सोच रहा है। मेरी लेखनी उनके विचार लिखने उद्यत है।

पिताजी दृश्य देख रहे हैं कि राकेश अपने छोटे भाई चक्रेश के पास बैठा है। दस वर्ष के राकेश 7 वर्ष के चक्रेश। चक्रेश का पैर पोलियो के कारण कमजोर हो गया है, चल फिर नहीं सकता, अतः राकेश चिंतित है कि मेरा भाई घूमने और खेलने में असमर्थ हो गया है, वह सारे दिन घर में ही रहता है, कभी-कभी घर के बाहर चबूतरे पर बैठ जाता है। बेचारा अपने बल से मंदिर तक नहीं जा पाता। एक दिन स्थानीय मंदिर में विराजित भगवान चन्द्रप्रभु जी का जन्म-कल्याणक मनाया जा रहा था, लोग सुबह-सुबह तैयार होकर मंदिर की ओर भाग रहे थे, राकेश भी जाने की तैयारी में था किंतु वह चक्रेश (मंटू) को बैठा देखकर रुक गया, फिर पिता से बोला–'जब चन्द्रप्रभु भगवान का इतना अतिशय है तो चलो उनसे प्रार्थना करें कि मंटू भैया का पैर ठीक कर दें। पिताजी उसका बाल सुलभ परामर्श सुन गद्‌गद्‌ हो गए थे किन्तु उचित उत्तर न दे सके थे, उन्होंने अपने पुत्र का वात्सल्य और परहित का भाव परख लिया था।

माताजी भी दृश्य देख रही थीं, उन्हें अनुभव होता है कि व्या जी के परिवार में भक्तामर पाठ चल रहा है, राकेश भैया शामिल हैं, संस्कृत पाठ के उच्चारण सुनकर समीप बैठे पंडित धनीराम जी चकित हैं-'इतना छोटा बच्चा और इतना शुद्ध उच्चारण।' पाठ के बाद वे राकेश की सराहना करते हैं, राकेश को कुछ समझ नहीं आता कि ये किस बात पर सराहना कर रहे हैं।

दादीजी को राकेश ही दिख रहे थे। वे सोचती हैं–मेरा बेटा तो बचपन से ही उदारवृत्ति का था। दुकान पर जब कोई निर्धन ग्राहक मूँगफली आदि खाने की सामग्री खरीदने आता तो राकेश मूल्य से अधिक सामग्री उसे पकड़ा देता था फिर कहता–बैठ कर खा लो फिर हम पानी पिला देंगें।

छोटा सा मंटू (चक्रेश) सोच रहा है कि जब राकेश भैया पाँचवीं कक्षा में थे तो दौड़ प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया था, जबकि उसके साथ दौडनेवाले सभी लड़के हृष्ट, पुष्ट और बड़े थे। वह सोचता हुआ अपने पोलियो-ग्रस्त पैर पर हाथ फेरने लगता है।

राकेश के बड़े भाई राजेश का चित्त भी विकल था, उन्हें भी राकेश ही राकेश दिख रहा था। वे देखते हैं कि ग्रीष्मकाल में कुएँ में पानी कम हो गया है, तपती धूप में कुएँ से पानी लाना भी एक समस्या है, तब भी राकेश प्यासे-व्यक्तियों को दिन में चार-छह बार पानी पिला देता था। दादी ने मेहनत से लाए हुए पानी का अपव्यय रोकने की दृष्टि से राकेश को मना कर दिया था कि पानी सभी को न पिलाए, लाने में परेशानी होती है। राकेश चुप रह गए,

मगर जब फिर एक किसान ने पानी माँगा, तो वे रुक न सके, और नहाने का पानी लाकर किसान को पिला दिया। वह बालक को आशीषता हुआ चला गया। तब दादी ने राकेश के सिर पर हाथ फेरा और बोल पड़ी—'जो मोड़ा (बालक) बड़ो उपकारी है।' राजेश दृश्य देख रहे थे और मग्न थे।

तब तक कमला दीदी विचार सागर में डूब गईं वे दृश्य देखती हैं कि जून 85 में संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी ससंघ आहार जी में विराजमान थे, उनके निर्देशन में ब्रह्मचारी दीपचंद जी की समाधि चल रही थी। समीपस्थ ग्रामों के लोग देखने पहुँच रहे थे। तभी जतारा से राकेश को भी सम्पूर्ण परिवार के साथ जाने का अवसर मिला, वहाँ राकेश ने भगवान शांतिनाथ के दर्शन कर आचार्यश्री को प्रथम बार देखा था। वे बहुत देर तक देखते रहे, जैसे मन को शांति मिल रही हो, फिर उन्होंने मुनि समयसागर सहित सभी संतों के दर्शन किए। उसी दिन 18 जून को ब्रह्मचारी जी की समाधि पूर्ण हो गई, उनकी संस्कार विधि पंचपहाड़ी पर की गई। राकेश देखते रहे। लौटते समय पुनः आचार्यश्री के चरण स्पर्श किए, फिर मुझसे धीरे से बोला—मैं भी साधु बनूँगा। दीदी को उसके शब्द याद हो आए अतः बुदबुदाई—'साधु बनने गया है।'

छोटी बहिन प्रियंका तो 6-7 वर्ष की थी, वह भी अपने भाई को अपने विचारों के विवर्त में देख रही थी, वह देखती है कि एक भिखारी चिमटा बजाता और भजन गाता हुआ घर के दरवाजे पर खड़ा है, राकेश भैया दौड़कर जाते हैं उसे कुछ देना चाहते हैं। पर उस समय जेब में पैसे नहीं थे अतः वे भिखारी को रुकने के लिए बोलते हैं और भीतर जाते हैं। अपनी गोलक से पैसे निकालते हैं और जाकर भिखारी को दे देते हैं। बोध होता है कि अपने अर्जित धन का दान करने से उन्हें खुशी होती थी।

तब तक दादीजी का दृश्य पुनः तैयार हो जाता है वे देखती हैं कि यह लड़का बचपन से ही कुशाग्र था, दसलक्षण पर्व में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेता था, तो कुछ न कुछ जीतकर आता था। एक बार काव्यपूर्ति प्रतियोगिता में दीवार घड़ी जीती थी, जो अब भी घर की शोभा बढ़ा रही है। जब कभी नाटक होते तो राकेश की सुन्दरता देखते हुए कार्यकर्तागण उसे महिला पात्र का अभिनय करने को कहते थे। शुरू-शुरू में एक दो वर्ष तक मना करता रहा, बाद में 'मैना सुन्दरी' और 'राजुल' का सुंदर अभिनय किया था। उनके नाटक जमने लगे अतः श्रीमती जयश्री मोदी खुद राकेश का शृंगार कर मैना-सुन्दरी का रूप देती थीं। उनके साथ अन्य बच्चे अरविन्द माते, स्वतंत्र सिंघई, प्रकाश जैन मुन्नू, अशोक वैद्यपुर आदि भी विभिन्न पात्रों का अभिनय करते थे। जतारा के अलावा टोड़ी-फतेहपुर, दमोह, पठा, महरौनी आदि स्थानों पर भी नाटक का प्रदर्शन करने जाते थे। एक दिन राकेश लौटे तो उन्होंने मुझे एक सुन्दर स्त्री

का चित्र दिखाया। मैं उसकी सुंदरता देखकर चकित हो गई थी, फलतः पूछ बैठी–'खूब अच्छी है, ये कौन है?' तब राकेश के साथ साथ सभी मित्र जोर-जोर से हँसे थे, फिर मित्रों ने बतलाया था–'दादी जी ये तुम्हारा राकेश है, जिसे तुम बल्लु कहती हो। चेहरा पहचान लेने के बाद मैं भी खूब हँसी थी। अब वह बल्लु हमसे दूर हो गया है।

तब तक माताजी का दृश्य पुनः तैयार हो गया, वे देखती हैं एक बार नगर में क्षुल्लक जी आए थे। राकेश अकेला ही अस्पताल के पास से उन्हें लेकर आया था। तब वह उन्हें गायत्री मंदिर, शंकरजी के मंदिर से घुमाता हुआ जैन मंदिर ले गया था। फिर आकर मुझसे पूछा था–अम्मा! जब अपने महाराज नग्न होते हैं तो लंगोटी-दुपट्टा वाले जैन महाराज कैसे होते हैं? तब हमने कहा था–बेटा! जो बड़ा त्याग कर मुनि नहीं बन सकते, वे छोटा त्यागकर पहले क्षुल्लक जी बन जाते है। कोई लंगोटी मात्र धारणकर ऐलक जी बनते हैं फिर कोई-कोई पुण्यशाली जीव मुनि बनता है। तब राकेश दुःखी होता हुआ बोला–अम्मा! फिर तो हमसे गलती हो गई। हमने सोचा हमारे मुनि तो नग्न रहते हैं अतः मैं क्षुल्लकजी को अजैन साधू समझकर पहले गायत्री मंदिर फिर शंकरजी के मंदिर ले गया। तब क्षुल्लकजी के कहने पर मैं उन्हें जैन मंदिर लाया। यह सुनकर मैंने उसे समझाया–बेटा! महाराज से क्षमा माँगकर आना और उन जैसे बनने के भाव करना। तब राकेश तुरंत दौड़कर गया और क्षुल्लक जी से क्षमा माँग ली। फिर एक महीने का रात्रिभोजन का त्याग लेकर आया था। मैंने हँसी में साधु बनने का भाव बनाने की कही थी, शायद उसने तभी संकल्प कर लिया होगा।

तब तक पिताजी भी पुनः दृश्य देखने लगे–जब राकेश नौ वर्ष का था, तब स्वास्थ्य खराब हो गया। तभी मैं पैतृक गाँव सकरार गया था। वहाँ से चचेरे भाई शर्मनलाल 'सरस' की 'घरवाली' पुस्तक लाकर राकेश को मन बहलाने के लिए दे दी। जब राकेश का स्वास्थ्य ठीक हो गया, तो वही पुस्तक जोर-जोर से मीठे स्वर में पढ़ता रहता था, जिसे सुनकर घर के सदस्यों के साथ मोहल्ला-पड़ोस के लोग भी खूब हँसते थे–

मैं कब से नाथ पुकार रहा, मेरे जीवन में लाली दो।
गोरी दो अथवा काली दो, भगवान मुझे घरवाली दो।।
सुनते हैं आप बड़े दयालु, दुनिया के संकट टारे हैं।
क्यों हम पर दया नहीं करते, क्या हम दुनिया से न्यारे हैं।।
है माँग हमारी छोटी सी, साधारण कोई खास नहीं।
मैं वही माँगने आया हूँ, जो आज हमारे पास नहीं।

मेरी अँधियारी कुटिया पर, बस तुमको यही सोचना है।
शादी के चक्कर में मेरी, यह छट्टी पंचयोजना है।।

तब उसकी माँ भगवती ने मुझसे कहा–'राकेश खों जा पुस्तक दे दइ, वो जाँ चाय पढ़त रैत है' तब मैंने पुस्तक छुपाकर कह दिया था–जब बड़े हो जाओगे तब घरवाली लाकर दे देंगे। लेकिन राकेश तो स्वयं मुक्तिवधु को वरने की सोच रहा है।

सभी की आँखों में दृश्य मूवी की तरह चल रहे थे, तभी याद आया कि हम लोग तो घर में बैठे हैं किंतु हमारा राकेश आहार जी पहुँच गया है। दो दिन बाद ही 18 फरवरी को राकेश का संदेश पिताजी को मिला कि वह गुरुदेव के पास सकुशल है।

पारिवारिक जन गए मनाने

सनतकुमार सपरिवार अहारजी जा पहुँचे और पुत्र को एक कक्ष में बिठाकर समझाया, पिताजी अकेले नहीं थे भगवती जी, दादी बेनीबाई जी, मौसा दीपचंद जी एवं अग्रज राजेश आदि साथ थे। सनतकुमार ने प्रेमपूर्वक राकेश से कहा–बेटे जो संदेश आपने भेजा है, वह कार्य मेरी दृष्टि में आवश्यक नहीं है। तब राकेश ने विनयपूर्वक उत्तर दिया–लेकिन मेरे लिए तो वह परमावश्यक है।

–बेटे परिवार में रहकर धर्म करो और उत्तम श्रावक बनो।

–मगर पिताजी मैंने तो दृढ़ निश्चय कर लिया है।

सनत कुमार जी किंचित झुंझलाते हुए बोले–कोई निश्चय नहीं चलेगा, घर चलो।

–पिताजी मुझे क्षमा करें, मैं घर जाना नहीं चाहता।

–मेरी आज्ञा के बगैर व्रत का निर्णय नहीं लेना।

यदि नहीं मानोगे तो इस पिता के स्वाभिमान को चोट लगेगी।

–मगर पिताजी मेरे व्रत से मेरा ही नहीं आपका भी गौरव बढेगा।

–बेटे गौरव नहीं बढ़ेगा, लोग कहेंगे घर में काम धंधा नहीं होगा सो पुत्र को इस पथ पर छोड़ दिया।

पिताजी जब आचार्यश्री ने व्रत लिया होगा तो उनके परिवार ने क्या आपकी तरह हल्ला किया होगा?

सनतकुमार कुछ बोल पाएँ उसके पहले ही दादीजी चीख पड़ीं–बल्लु! तू जतारा नहीं चलेगा तो यहीं प्राण अर्पण कर दूँगी। पड़े लिखे राकेश को दादी के वाक्य से हँसी आ गई फिर विनोद करते हुए बोले–सिद्धक्षेत्र में जो प्राण

तजता है उसका तो कल्याण ही हो जाता है। फिर समझाते हुए बोले–दादीजी आपका यह नाती आत्मकल्याण के मार्ग पर जा रहा है, यहाँ वहाँ नहीं। दादीजी उत्तर देते हुए हार गईं अतः मोर्चा माताजी ने सम्हाल लिया–बेटे जो माँ नौ माह तक पुत्र को गर्भ में रखती है वह पुत्र माँ को छोड़कर चला जाए यह उचित नहीं है। इस बार राकेश विद्वान पंडित की तरह बोले–माँ यदि मेरा जन्म आपके घर में नहीं होता तो आपके तीन नहीं दो पुत्र ही होते। दो आपके साथ हैं, इसलिए धैर्य रखा जा सकता है।

माताजी भी उत्तर देने में असमर्थ हो गईं तब मौसाजी ने बात आगे बढ़ाई–राकेश बेटा अभी धर्म के क्षेत्र में तुम पूर्ण परिपक्व नहीं हो अतः कुछ माह घर पर रहकर साधना करो फिर मिलकर विचार करेंगे। तब राकेश ने उत्तर दिया–मौसाजी यह प्राणरूपी पक्षी कब उड़ जाए, कोई जानता है? मौसा जी भी आगे बोलने में असफल हो गए तब पुनः पिताजी ने बात सँभाली–राकेश तुम सहजता से घर नहीं चलोगे तो तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे महाराज की भी रिपोर्ट थाने में लिखा दूँगा कि ये महाराज मेरे बेटे को जबरन ले जा रहे हैं। पिता के क्रोध में विलाप शामिल था। गुणी राकेश समझ चुके थे। अतः वार्ता को वहाँ ही छोड़कर सीधे मंदिर में जा पहुँचे भगवान शांतिनाथ के सामने। हाथ जोड़कर भगवान के समक्ष बुदबुदाए–हे प्रभु मैं तो संकल्प कर चुका हूँ व्रत लेने का। अब क्या करूँ? परिवार के लोग विचलित है अतः आपके दर्शनों से ही उनके मन में समर्थन की भावना आएगी।

व्रत हेतु निवेदन

18 फरवरी 95 को समय पाकर राकेश ने आचार्यश्री से ब्रह्मचर्य व्रत देने की प्रार्थना की थी किंतु आचार्यश्री केवल मुस्काए थे। बाद में पारिवारिक सदस्यों ने पहुँचकर राकेश के साथ वैचारिक युद्ध छेड़ दिया था।

26 फरवरी को आचार्यश्री ने सात बहिनों को आर्यिका दीक्षा प्रदान की। वह देखकर राकेश के हृदय में आत्मगौरव ने जन्म लिया, इतना ही नहीं रुठे हुए परिवार ने भी वैराग्य पथ का महत्व समझा, शायद यही था भगवान शांतिनाथ के दरबार का चमत्कार। पारिवारिक विरोध शांत होते देखकर 27 फरवरी को पुनः आचार्यश्री से अनुरोध किया। उन्होंने लगन और समर्पण के साथ-साथ राकेश की प्रज्ञा भी देख ली थी और देख लिया था परिवार का मन, सो उन्होंने राकेशजी को दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान कर दिया।

ब्रह्मचारी राकेश भैया संघ में रहकर साधना करने लगे, परिवार जतारा वापिस होने लगा, तभी माताजी ने राकेश को कुछ समझाया–तुम जैसा त्यागी बेटा पाकर मैं धन्य हो गई। अब मेरी कुछ बातें सदा मन में रखना–पहली यह

कि आज से आचार्यश्री तुम्हारे गुरु ही नहीं माता-पिता भी हो गए अतः सदा उनकी आज्ञा से चलना। दूसरी यह किसी प्रलोभन या गर्दिश में पड़कर साधना से विचलित नहीं होना अन्यथा इस माँ की कुक्षि के साथ-साथ बुदेलखण्ड की माटी पर भी अंगुली उठेगी, गुरु पर तो उठेगी ही। तीसरी बात यह कि एकदम से कड़ी साधना नहीं करना, धीरे-धीरे कदम बढ़ाना।

माँ के वचन सुनकर राकेश जी गद्‌गद् हो गए, उन्हें पहली बार अनुभव हुआ कि उनकी माँ साधारण गृहिणी नहीं हैं, विदुषि रत्न हैं। उन्होंने माँ को विश्वास दिलाया—तीनों बातें याद रखूँगा और कभी ऐसा कार्य नहीं करूँगा जिससे गुरु या गृह परिवार को क्लेश पहुँचे। पूरा परिवार राकेशजी को भर नजर देखकर जतारा की ओर चल दिया।

संघ चर्या का शुभारंभ

आचार्यश्री ने संघ सदस्यों की रत्नकण्डक श्रावकाचार की कक्षा शुरू कर दी, पश्चात् परीक्षा भी ली। कुछ दिन संघ पपौरा जी में रुका फिर विहार करता हुआ टीकमगढ़ गया और ग्रीष्मकालीन वाचना शुरू हुई। 12 अप्रैल 95 को संघ और श्रावकों ने मिलकर आचार्यश्री की जन्म जयती मनाई। इस अवसर पर ब्रह्मचारी राकेश भैया ने एक सुंदर रचना तैयार कर मीठे स्वर में प्रस्तुत की।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की माटी जिसे उगाती है।
वह माटी ही इक भव्य जीव की जन्मभूमि कहलाती है।।
ऐसे ही इक भव्य जीव जो हैं गुरुवर विरागसिंधु।।
इनके बारे में कहने से पहले चरणारविंद वंदूँ।।

दूसरे दिन से कातत्रव्याकरण की कक्षा शुरू हो गई। एक दिन ब्रह्मचारी राकेश ने मझार मंदिर में ऐलक विशदसागर जी को पृथक केशलुंचन करते हुए देखा, तो वे अपने विषय में भी सोचने लगे, तिथि थी 15 मई 95।

एकदिन आचार्यश्री ने सभी ब्रह्मचारियों को कड़ेदार बाल्टी का प्रयोग करने का रहस्य समझाया। फिर एक दिन सभी ब्रह्मचारियों से पूछा कि आप सबमें प्रथम नाम किसका होना चाहिए। सभी भाई राकेश भैया की योग्यता और विद्वता से परिचित थे अतः सहज ही बोले—राकेश भैया को। उस दिन से आचार्यश्री ने वरिष्ठता क्रम में राकेश भैया को पहला स्थान दे दिया।

कुछ दिन बाद मुनिश्री 'हेमंतसागर' जी का आगमन एवं विहार हुआ तब ब्रह्मचारी राकेश सभी भाईयों सहित उनके साथ रहे। इस बीच आचार्यश्री ने ब्रह्मचारी भाईयों को शिक्षा दी कि ग्रीष्मकालीन में साधुओं की सेवा भी सामायिक जितना पुण्यकार्य है। रात्रि से ही ब्रह्मचारी राकेश, विनोद आचार्य संघ

की सेवा में समय देने लगे और काफी रात्रि तक जागकर वहीं उपस्थित रहने लगे।

एक दिन पिताजी का संदेश आया कि कॉलेज में आपकी छात्रवृत्ति की राशि पड़ी है अतः आकर निकालो। तब राकेश जी ने विनयपूर्वक उत्तर दिया अब हम राशि के लिए कॉलेज नहीं जाएंगे। टीकमगढ़ प्रवास सभी ब्रह्मचारी भाईयों को ज्ञान का सवेरा लेकर आया था क्योंकि वहाँ आचार्यश्री ने रत्नकण्डक श्रावकाचार, कांतत्रव्याकरण एवं प्रथम भाग की परीक्षा ली थी।

एक दिन राकेश का सिर भारी था, दर्द अधिक हो रहा था अतः वे स्वाध्याय की कक्षा में नहीं जा पाए। आचार्यश्री को दर्द के विषय में सूचना नहीं थी, अतः जब राकेश सायंकाल में आचार्यभक्ति के लिए उपस्थित हुए तो गुरुदेव ने उनके वापिस होते समय टोक दिया–आज स्वाध्याय में नहीं आए? प्रश्न सुनकर राकेश जी ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया, हाथ जोड़कर बैठे रहे तब परम्परानुसार गुरुदेव ने उन्हें एक छोटा सा प्रायश्चित दे दिया। राकेश जी उस क्षण को मन शुद्धि का निर्मल निमित्त मानते हुए गुरुदेव के आगे पुनः नतमस्तक हो गए। लौटकर उन्होंने प्रायश्चित निवारण के लिए उचित क्रियाएं की।

संघ टीकमगढ़ में काफी प्रभावना कर चुका था अतः एक दिन संतों के चरण ललितपुर की ओर उठ गए। रास्ते में बानपुर क्षेत्र के दर्शन किए राकेश जी का वह प्रथम अवसर था। दूसरे दिन चरण पुनः चल पड़े एवं ललितपुर स्थित क्षेत्रपाल जी मंदिर में रुके।

चातुर्मास 1995

ललितपुर के भक्तों ने संघ से प्रार्थना की, उनकी प्रार्थना स्वीकार की गई एवं उचित तिथि पर वर्षायोग की स्थापना की। राकेशजी को इस वर्षायोग में गुरुदेव से तत्वार्थसूत्र, कांतत्रव्याकरण एवं द्रव्यसंग्रह आदि ग्रंथों की कक्षा एवं उपदेश प्राप्त हुए, कक्षाएँ कई माह तक चलीं। गुरुजी ने सभी ब्रह्मचारियों को रात्रि में चारित्र चक्रवर्ती के स्वाध्याय की आज्ञा दी थी। उन्होंने ये निर्देश भी दिए कि जिस तरह संत लोग पीछी से बुहार लेने के बाद कदम धरते हैं उसी तरह आप लोग भी रात्रि के समय एक कपड़े से अपने पथ का मार्जन करते हुए चलने की आदत डालें।

सामायिक प्रतिमा

गुरुजी सभी ब्रह्मचारियों का अंकन करते हुए चल रहे थे अतः उन्होंने श्रावण शुक्ल सप्तमी, गुरुवार संवत् 2051 तदनुकूल 3 अगस्त 1995 को ब्रह्मचारी राकेश सहित कुछ भाईयों को सामायिक प्रतिमा के व्रत प्रदान किए।

गुरुदेव राकेश की प्रज्ञा से भली विधि परिचित हो चुके थे। अतः जब उनके विशेष ग्रंथ ''आगम चक्खू साहू'' की टाइपिंग जरूरी हो गई तब उन्होंने राकेश जी को ही चुना। संघ में कातंत्रव्याकरण की कक्षा चल रही थी। राकेश उसमें उपस्थित नहीं रह पाते थे। जब परीक्षा का समय आया, तो राकेश भैया ने आचार्यश्री को अवगत कराया। गुरुजी अनुशासन के पक्के थे अतः जब कातंत्रव्याकरण की परीक्षा ली तो राकेश भैया के प्रति ढील नहीं दी। राकेश भैया ने भी रातभर मेहनत कर परीक्षा दी तथा श्रेष्ठ अक प्राप्त किए। आचार्यश्री कातंत्रव्याकरण की परीक्षा के बहाने राकेश भैया की योग्यता और अनुशासन की परीक्षा में सफलता देखकर मन ही मन अति प्रसन्न हुए।

बीना बारहा दर्शन

ब्र. राकेश भैया एवं ब्र. अरुण भैया 'आगम चक्खु साहु' का प्रूफ लेकर बीना बारहा गए। वहाँ पू. आचार्यश्री विद्यासागर जी का सविनय दर्शन वंदन किया। आचार्यश्री ने प्रसन्नचित्त हो आशीर्वाद दिया। ब्र. भैया दो दिन आचार्यश्री की अनुमति से संघ में रुके। फिर आचार्यश्री की आज्ञा से पुस्तक का प्रूफ मुनि अभयसागर जी तक पहुँचाकर वापिस ललितपुर आ गए।

समाधान शिष्य का

धीरे-धीरे निर्वाण दिवस सामने आ गया, तब दीवाली के दिन राकेश जी ने शंका समाधान हेतु अपनी समस्या बतलाई। बोले—मुझे स्वप्न में सर्प ही सर्प दिखते हैं, दस-पाँच नहीं, सैकड़ों की तादात में। मुझे पैर रखने की जगह नहीं बचती फलतः मैं डरकर यहाँ-वहाँ भागने लगता हूँ, इसी बीच घबराहट में नींद खुल जाती है। गुरुदेव ने शिष्य की समस्या पर गंभीरता से ध्यान दिया बोले—दीपावली को सुबह भगवान के पास जाना, श्रीफल भेंटकर हाथ जोड़कर बोलना 'हे भगवन्! अब मैं पूरी श्रद्धा से आपको ही पूजता हूँ। मेरे मन में किसी के भी प्रति रागद्वेष नहीं है।' राकेश भैया ने ऐसा ही किया। उस दिन के बाद राकेश भैया को कभी स्वप्न नहीं आया।

दीक्षा हेतु श्रीफल

ब्रह्मचारी भाईयों ने उचित अवसर देखकर गुरुदेव के समक्ष श्रीफल अर्पित किया और प्रार्थना की—हे गुरुदेव ! आपकी शिक्षा एवं आशीर्वाद से हम लोग समुचित साधना कर सके हैं, यदि आपकी दृष्टि में उचित हो तो हमें दीक्षा प्रदान कीजिए। गुरुदेव ने सभी को आशीर्वाद दिया फिर बतलाया—दीक्षा का कार्यक्रम देवेन्द्रनगर में उचित रहेगा।

वर्षायोग पूर्ण हो चुका था, शीतकालीन वाचना के लिए अटामंदिर के

श्रावकों का विशेष अनुरोध था अतः संघ ने शीतकालीन वाचना की दृष्टि से अटा मंदिर को ही समय दिया। वहाँ भी अच्छी प्रभावना हुई नित्यप्रति 80-90 चौके लगाए जाते थे। श्रावक लोग राकेश जी से इतने अधिक प्रभावित थे कि वे चौका लगाने से पहले ही उन्हें आमंत्रित करने पहुँचते थे, फलतः वे उसी चौके पर आहार लेते थे। कभी-कभी जब आचार्यश्री पड़गाहे जाते थे तो श्रावकगण सोचते कि राकेश भैया साथ रहे इसलिए गुरुदेव आ गए, जबकि वे अपनी विधि के अनुसार ही चौकों को उपकृत करते थे। एक बार एक श्रावक ने राकेश भैया को पीछे से स्पर्श कर लिया, तब उन्होंने उचित मार्गदर्शन देते हुए समझाया।

शीतऋतु चरम पर थी, तभी आचार्यश्री ने दीक्षार्थियों को आज्ञा दी कि दीक्षा ग्रहण करने के पूर्व तीर्थराज सम्मेदशिखर जी की वंदना करना उचित है, अतः आप लोग योग्य साधन से प्रस्थान करें। दो चार दिनों के अंदर सभी भाईयों ने तैयारी कर ली, साधन जुटा लिए और ट्रेन से शिखर जी की ओर कूच किया। समूह में ब्र. राकेश, ब्र. विनोद ब्र. अजय, ब्र. अरुण, ब्र. लक्ष्मी आदि 11 ब्रह्मचारी शामिल थे। सभी ने तीर्थराज पहुँचकर भाव सहित वंदना की एवं उसके बाद पुनः गुरुदेव की ओर लौट आए। अटा मंदिर में शीतकालीन वाचना पूर्ण हो चुकी थी अतः गुरुदेव ने स्थानीय श्रावकों को दीक्षार्थियों की गोद भराई का आयोजन शुरू करने को कहा। श्रावकों ने निश्चित समय पर आयोजन सम्पन्न किया और हर दीक्षार्थी की गोद भराई अत्यधिक वात्सल्य से की।

कदम द्रोणगिरि की ओर

पहले आचार्य संघ विहार कर चांदपुर जहाजपुर होते हुए देवगढ़ गया, वहाँ विशाल संख्या में स्थापित जिन-प्रतिमाओं की वंदना की, साथ में सभी ब्रह्मचारी भाई भी गए थे। लौटकर पुनः संघ ललितपुर आया और अल्पप्रवास के बाद पंचकल्याणक महोत्सव के लिए सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि की ओर विहार कर गया। जाते-जाते गुरुदेव ने सभी भाईयों को विनौली कार्यक्रम में उपस्थित होने अपने-अपने गृहनगर पहुँचने की आज्ञा दी।

भाईयों की बिनोली

सभी भाई पहले बीना नगर पहुँचे, रास्ते के आधार पर उसका क्रम प्रथम था और ब्र. विनोद भैया का गृहनगर था। वहाँ जैन समाज बीना ने बड़ी बजरिया से बिनौली यात्रा शुरू की। तीन हाथियों पर राजकुमार बने ब्रह्मचारियों को सवार कराया और दोपहर में धूमधाम से विनौली निकाली गई। सैकड़ों लोगों ने उत्साहपूर्वक भाईयों की गोद भराई की। दूसरे दिन ब्र. अजय भैया के स्थान छोटी बजरिया से कार्यक्रम हुआ, वहाँ दोपहर में वरिष्ठ ब्रह्मचारी श्री संदीप सरल ने अनेकांत श्रुत संवर्धन संस्थान में ब्र. राकेश भैया का प्रवचन कराकर सभी

भाईयों को सम्मान दिया, पश्चात् सभी का गोद भराई का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्र. अरुण भैया पथरिया के थे किंतु वे बीना में सभी के साथ उपस्थित रहे, बाद में सभी भाईयों को साथ लेकर पथरिया गए। वहाँ दोपहर में जैन समाज ने भाईयों को सजी हुई हथनी पर बैठाकर शोभायात्रा निकाली। पश्चात् बारी-बारी से सभी के प्रवचन हुए।

पथरिया से चलकर सभी भाई तिगोड़ा पहुँचे जो ब्रह्मचारी सदीप का गृहनगर है। वहाँ रात्रि में गोद भराई का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि में ही सभी भाई घुवारा पहुँचे जहाँ उनके गुरुदेव ससंघ विहार करते हुए पहुँच चुके थे। सभी ने उन्हें नमन किया और यात्रा विवरण सुनाया। ब्र. लक्ष्मी भैया घुवारा के थे, अतः रात्रि में (दूसरे दिन) समाज ने बिनौली निकाली। सभी भाईयों को राजकुमार के रूप में सजाया, फिर एक सुसज्जित जीप में बैठाकर शोभायात्रा निकाली। बिनौली के उपरांत सभी भाई संघस्थ ब्रह्मचारिणी चमेलीबाई के परिवार से मिले। उनके साथ ललितपुर के अनेक युवक चल रहे थे, वे भारी उत्साहित थे और हर कार्यक्रम के लिए सूत्रधार सिद्ध होते थे।

आचार्य संघ घुवारा से भगवाँ गया, भैया लोग भी संघ के साथ वहाँ पहुँचे। 6-7 दिनों में काफी थकान आ चुकी थी, सो वे सब रात्रि में जल्दी सो गए। तब तक ललितपुर के युवक भगवाँ समाज को साथ लेकर आशीर्वाद लेने गुरुदेव के पास पहुँचे। आशीर्वाद मिल गया, फलतः सम्पूर्ण समूह हर्षित हो गया और बिनौली निकालने भाईयों के स्थान पर पहुँचा, वे सो रहे थे। युवकों ने जगाना चाहा तो राकेश भैया ने अनजाने ही मना कर दिया। तब युवकों ने बतलाया कि आचार्यश्री ने बिनौली निकालने की आज्ञा दी है। ललितपुर के युवकों ने उत्साहपूर्वक राकेश भैया को सजाया, तब तक अन्य ब्रह्मचारियों को भी तैयार कर लिया गया। वहाँ हाथी, घोड़े, जीप जैसे साधन तुरत उपलब्ध नहीं थे, फिर भी युवकों ने हिम्मत नहीं हारी, उन्होंने राकेश भैया सहित अन्य ब्रह्मचारी भाईयों को अपने कंधों पर बैठा लिया और विशाल जनसमूह के साथ बिनौली निकाली। नगर के परिवार गोद भराई के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे उन सभी ने ब्र. भाईयों की उदार हृदय से गोद-भराई सम्पन्न की।

सन् 95 विदा होकर जा चुका था, 96 का दूसरा माह शुरू हो चुका था। संघ ने भगवाँ से लगातार विहार किया एवं सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी पहुँचा। सभी ब्रह्मचारी साथ थे ही।

द्रोणागिरी पंचकल्याणक

क्षेत्र पर 4 फरवरी से 10 फरवरी 96 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया गया। वहाँ ही 8 फरवरी 96 को ऐलक विशदसागर जी और ब्र.

मेरूचंद जी की मुनिदीक्षा हुई। सभी कार्यक्रम प्रभावनापूर्ण रहे। ब्र. गण हर कार्यक्रम के साक्षी बने।

संघ द्रोणागिरी से विहार करता हुआ बड़ामलहरा पहुँचा। वहाँ, आहारचर्या के पश्चात् पुनः देवेन्द्रनगर के लिए विहार शुरू होनेवाला था, तभी जतारा समाज के प्रतिनिधि गुरुदेव के समक्ष पहुँचे और निवेदन किया कि सभी दीक्षार्थी भाईयों को बिनौली और गोद भराई हेतु जतारा ले जाना चाहते हैं। गुरुदेव ने आज्ञा दे दी। फिर क्या था, जतारा वाले लोग 12 फरवरी 96 को वहाँ से भाईयों के साथ जतारा चले गए।

जतारा का गौरव

घर पहुँचकर राकेशजी ने सभी भाईयों को अपने घर ही आहार कराये फिर सामायिक की। तब तक कार्यकर्तागण आ गए, उन्होंने उसी दिन, 13 फरवरी 96 को, बिनोली निकालने का अनुरोध किया। पहले वे सभी भाईयों को शृंगार कराने ले गए, मेंहदी लगाई, राजकुमारों की पोशाक पहनाई, फिर स्थानीय मंदिर के मूलनायक भगवान नेमिनाथ जिन्हें भक्तगण 'बड़े बाबा' कहते हैं के दर्शन कराने ले गए, निकाली फिर शोभायात्रा। ब्रह्मचारियों में वरिष्ठ राकेश भैया अकेले घोड़े पर नहीं बैठे, वहाँ सजावट के साथ अनेक घोड़े लाए गए थे। हर ब्रह्मचारी को एक-एक घोड़े पर सवार कराया गया, फिर वाद्ययंत्रों के साथ बिनौली निकाली गई। जिसे लोग शोभायात्रा कह रहे थे। जतारा बड़ी बस्ती है, अतः बिनौली काफी देर तक घूमती रही। जतारा के मुख्यमार्ग में एक को नीची गली कहा जाता है, वहाँ से होते हुए शोभायात्रा आरा मशीन पहुँची, फिर घटिया पारकर मेन मार्केट से निकली। हजारों लोग दर्शन लाभ ले रहे थे। वे अपने राकेश भैया को देखकर विचार करने लगे 'हमारे नगर के राजकुमार प्रजा को दर्शन देने नगर-भ्रमण कर रहे हैं।?' बड़ी बात तो यह कि भीड़ का हर व्यक्ति, चाहे वह जैन हो या अजैन, दौड़-दौड़कर उनका अभिनन्दन कर रहा था।

ब्र. राकेश भैया शोभायात्रा के साथ बस स्टैंड होते हुए, जब सरस्वती शिशु मंदिर के समीप पहुँचे तो संस्था के सभी आचार्यगण अपने भूतपूर्व आचार्य का अभिनन्दन करने मुख्य द्वार तक चले आए। अपने ही बीच के राकेश भैया को संयम मार्ग पर जाते देख आनंदित हो उठे। समीप आए सभी ने राकेश भैया को तिलक लगाया, माला पहनाई और अपना बहुमूल्य वात्सल्य उन पर लुटाया। बोले 'आपने हमारी संस्था को धन्य कर दिया, क्योंकि हमारे बीच रहते रहते ही आपने सर्वश्रेष्ठ मार्ग को अपनाया है।' राकेश भैया उनकी बातों से किंचित हँसे और फिर मौन रहते हुए ही उन्हें धन्यवाद दिया।

भैया का सम्मान करते हुए आचार्यों को उस समय का पल याद आ गया, जब राकेश भैया संस्था में अध्ययन कराते थे। एक दिन पंडित प्रेमनारायण मिश्रा आचार्य ने कहा था—'राकेशजी ! कहीं आप भी मुनिमहाराज न बन जाना क्योंकि आप लोगों के मुनि महाराज आनेवाले हैं गाँव में। कौन जानता था कि मिश्राजी का विनोद यथार्थ बन जायेगा। फलतः मिश्राजी कुछ अधिक ही गदगद् थे। उनका चेहरा देखते हुए ब्र. राकेश को संस्था के सभी आचार्य याद हो आए—श्री रमेश प्रसाद चौरसिया (प्रधानाचार्य) श्री परमानन्द वर्मा (लेखा लिपिक) एवं एक दर्जन आचार्यश्री बिहारीलाल पाल, श्रीमति मंजूलता श्रीवास्तव, श्री गजराज सिंह राजपूत, श्री पुष्पराज सिंह, श्री मनोज कुमार उपाध्याय, श्री मधुसूदन रावत, श्री रामलोचन चक्रवर्ती, श्रीमति विमला शर्मा, श्री ओमप्रकाश दीक्षित, श्री नारायण दास शर्मा, श्री प्रेमनारायण मिश्रा एवं श्री राकेश आमने-सामने ही थे।

जतारा में एक स्थान पर जैन समाज ने स्थायी रूप से पाण्डुक शिला का निर्माण भी किया है, जब उस मैदान में प्रतिष्ठा कल्याणक सम्पन्न हुआ था, अतः समाज सेवीगण बिनौली को संस्था से सीधा गंज मोहल्ला ले गए, फिर पहुँचे पाण्डुक शिला जहाँ युवकों ने मधुर संगीत पर सुंदर नृत्य किया, फिर नहर मार्ग होते हुए नीचे के मोहल्ला गए। वहाँ से वापिस मंदिरजी आ गए। उस दिन सहस्रों नर-नारियों ने अलग-अलग मौहल्लों में अलग-अलग गलियों में, अपने नगर के लाड़ले सपूत को गर्व से देखा, बार-बार आँखें गड़ाई और स्वीकार किया कि यह है हमारे नगर का गौरव। शोभायात्रा की विशेषता यह रही, जिस जैन नवयुवक संघ के बैंडदल के सम्माननीय सदस्य थे राकेश, वह बैंड दल पूरे समय तक शोभायात्रा के आगे-आगे चलकर संगीत की फुहारें सींचता रहा। साथ ही अनेक युवक और युवतियाँ रह-रहकर नृत्य करते रहे। अभिप्राय यह कि वह विराट बिनौली सानंद सम्पन्न हुई।

अभी तो पहला आयोजन हुआ था, शाम को दूसरा आयोजन ''सामूहिक गोद भराई'' का। मैन मार्केट में साहूजी की दुकान के पास, समाज सेवियों ने सुंदर मंच तैयार किया था, जिस पर प्रकाश और माईक की व्यवस्था सुन्दर थी। वहाँ पहले भारी जनसमुदाय के समक्ष श्री सुभाष सिंघई, श्री प्रकाश कोठादार एवं कवि श्री कपूरचंद बंसल ने राकेश भैया के प्रति सुन्दर उदगार प्रस्तुत किए, जिनका आशय था—'हमारे नगर का सुपुत्र वैराग्य पथ पर जा रहा है और नगर को नूतन इतिहास प्रदान कर रहा है। उसने आज समग्र समाज का ही नहीं, समस्त नगर का सिर गौरव से ऊँचा कर दिया है। मंच पर नौ ब्रह्मचारी भाई मुख्य अतिथि की हैसियत से विराजमान किए गए थे, जिनके नाम इस तरह हैं—बाल ब्रह्मचारी राकेश भैया, बा. ब्र. विनोद भैया, बा. ब्र. अरुण भैया, बा.

ब्र. अजय भैया, बा. ब्र. लक्ष्मीचंद भैया, बा. ब्र. वीरेन्द्र भैया, बा. ब्र. अरविन्द भैया, बा. ब्र. विनीत भैया एवं बा. ब्र. संदीप भैया। नगर श्रेष्ठी श्रावक श्रीमान् सनतकुमार श्रीमती भगवती देवी (माता-पिता) दादी बैनीबाई, भैया राजेश, चक्रेश, बहिन कमला, प्रियंका एवं मौसा दीपचंद, बाबूलाल, बुआ शीला देवी सहित जतारा के समस्त सैकड़ों जैनाजैन सज्जनों एवं माताओं बहिनों ने अपने प्यारे भाईयों की गोद भराई की रस्म उत्साह से सम्पन्न की। कार्यक्रम में 2 घंटे से अधिक का समय लगा। सारे नगर में दीपोत्सव जैसा दृश्य दिख रहा था। बालाबाल नर-नारी आनंदित थे।

दूसरे दिन 14 फरवरी को सभी ब्रह्मचारी भाई टीकमगढ चले गए। ब्र. बीरेन्द्र भैया टीकमगढ़ के थे, अतः वहाँ भी दोपहर में भारी सजधज के साथ भाईयों को जीप पर बैठाकर धूमधाम से बिनौली निकाली गई।

इस बीच आचार्य संघ पन्ना आ चुका था, अतः ब्रह्मचारी गण गुरुदेव के दर्शन करने पन्ना जा पहुँचे। पन्नावालों ने जब सुना कि कुछ ही दिनों बाद आचार्यश्री देवेन्द्रनगर पहुँचकर इन भाईयों को दीक्षा देंगे तो पन्ना-समाज, कुछ करने के लिए रुक नहीं सका। समाज ने गुरुदेव से आज्ञा लेकर शहर में शानदार बिनौली निकाली। पूरे पन्ना में उस दिन सभी आदमी मात्र आदमी ही लग रहे थे किंतु 'नौ ब्रह्मचारी भाई' दमकते हुए 'पन्ने' प्रतीत हो रहे थे।

दीक्षा समारोह : देवेन्द्रनगर

आचार्य संघ पन्ना से विहार कर देवेन्द्रनगर पहुँच गया। ब्र. भाई साथ थे। पंचकल्याणक समारोह की तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थीं। लोगों में अतिशय उत्साह प्रदीप्त हो रहा था। प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित बाबूलाल जी पठा। समारोह के दौरान आचार्यश्री के सान्निध्य में पंडित देवेन्द्र कुमार सौरई पं. नरेन्दकुमार खड्गापुर और पं. उदयचंद सतना को 'प्रतिष्ठाचार्य' की पदवी से सम्मानित कर पगड़ी पहनाई गई। कार्यक्रम स्थल देवेन्द्रनगर से करीब नौ किमी. दूर था अतः संघ को रुकने की व्यवस्था पंडाल के समीप ही कर दी गई थी। इसी तरह चौकों के लिए भी अस्थाई रूप से चद्दर बाँस बल्ली और कनात लगाकर सुन्दर व्यवस्था बनाई गई थी। सभी दीक्षार्थियों के पारिवारिक जन भी चौके लेकर उपस्थित हुए थे। उन्होंने कई दिनों तक आहार दान का पुण्य लाभ लिया था।

22 फरवरी 96 को आचार्यश्री का आहार सम्पन्न हो जाने के पश्चात् उनके द्वारा सभी दीक्षार्थियों को क्रम से आहार विधि का अभ्यास कराया गया। आचार्यश्री का मार्गदर्शन दर्शकों में उत्साह उत्पन्न कर रहा था। ब्र. राकेशजी ने थाली या कटोरे में आहार नहीं लिया, उन्होंने बैठकर अंजुली में आहार लिया किन्तु किसी कारण से अंतराय हो गया। अन्य भाईयों का आहार निरतंराय

हुआ था। दोपहर में सभी दीक्षार्थियों के द्वारा गणधर वलय-विधान कराया गया जो शाम तक चला, उसके प्रतिष्ठाचार्य थे पं. उदयचंद जी शास्त्री।

रात्रि में आचार्यश्री के संकेतानुसार माताओं बहिनों ने दीक्षार्थियों को 'मेंहदी रचाई' का आयोजन किया, तब ललितपुर से आई ब्र. सीमा दीदी (शिष्या आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज) ने ब्र. राकेश को मेंहदी रचाई वे उनकी बुआ की लड़की हैं। बहिन होने के नाते ही मेंहदी का सौभाग्य पाया था। उसी समय दीदी ने भैया से विनयपूर्वक कहा–संसार में वधु' को वरने से पूर्व मेंहदी रचाई जाती है, किन्तु आज की यह मेंहदी आपको 'मुक्तिवधू' के वरण का कारण बने, यही भावना है। राकेश भैया ने मुस्काते हुए सीमा दीदी के विचारों को प्रतिसाद दिया। धीरे-धीरे सभी भाईयों की 'मेंहदी रचाई' पूर्ण हो गई।

केशलुंचन एवं बिनोली

फरवरी 23, सन् 1996 को आचार्यश्री के संकेतानुसार दीक्षार्थी भाईयों ने केशलुंचन शुरू कर दिया, वह वैराग्यमय दृश्य अपूर्व था। युवक लोग, जिनके काले-काले बाल चेहरे की शोभा के प्रतीक बने थे, वे निकाल-निकाल फेंक रहे थे। ब्र. राकेश भैया की दृढ़ता अद्‌भुत थी। केशलौंच करते समय जो पीड़ा होती है, वह उनके मुखमण्डल पर नहीं आ पाई, वे प्रसन्नता के चिन्ह ही प्रदर्शित करते रहे, जो 'युवा वैरागी' के अनुकूल थे। लगभग एक घंटे बाद लुंचन कर्म पूर्ण हुआ। फिर गुरुदेव के संकेतानुसार पारिवारिक जनों ने दीक्षार्थियों के मंगल स्नान कराए। यह कार्यक्रम भी एक ही स्थल पर पूर्ण हुआ। दीक्षार्थियों ने श्री जी का अभिषेक और पूजन किया। गुरुदेव के आहार सहित सर्वसंघ को आहार दिया। जब सभी साधु अपनी-अपनी वसतिका को गए तो ब्रह्मचारीगण उन्हें पहुँचाने भी गए। पश्चात् सभी ने दोपहर की सामायिक की, थे सभी उपासे। मध्यान्ह बेला में दीक्षार्थियों का श्रृंगार किया गया। सभी को राजकीय पोषाकें पहनाई गईं, पगड़ी बाँधी गईं फिर हाथियों पर विराजमान कर शोभायात्रा निकाली गई। उन्हें दीक्षास्थल तक ले जाया गया।

दीक्षार्थी मंच पर

जब सभी भाई मंच पर पहुँचे तो वे देखते हैं कि उनके पूज्य गुरुदेव ससंघ, पूर्व से ही विराजमान हैं। गुरु-संकेत के बाद दीक्षार्थीगण मंच पर बैठे तो मंच की शोभा और अधिक बढ़ गई, लगा कि चंद्रमा के साथ गगन में सितारे भी चमक रहे हैं। खासतौर से राकेश भैया जो नाम और देह से 'चंद्रवत्' ही हैं, पृथक् ही दिख रहे थे। उनकी कमसिन देह लोगों का ध्यान खींच रही थी। गौरवर्ण, धवल वस्त्रों पर नीला कछौटा और पीली पगड़ी के साथ मुकुट माथे पर तिलक ओर गले में चंद्रहार, हर दर्शक के नेत्र चकित कर रहा था, जो भी

देखता, अनुभव करता कि भगवान महावीर जब राजकुमार अवस्था में रहे होंगे तो ऐसे ही रहे होंगे। माताएँ बहिनें ऐसे अद्भुत राजकुमार को वैराग्य पथ पर जाते देख आँखें गीली कर रही थीं।

इस बीच आचार्यश्री ने तीन क्षुल्लकों एवं एक ब्रह्मचारी को भी दीक्षा हेतु आज्ञा दे दी थी, सो वे भी मंच पर पहुँचे और राजकुमार श्री राकेश भैया के निकट विराज गए। लोग गिनने लगे कि कितने दीक्षार्थी हैं, वे तेरह हो गए थे। कार्यक्रम के अनुसार पहले तीनों क्षुल्लक महाराजों ने पृथक्-पृथक खड़े होकर आचार्यश्री से दीक्षा देने की प्रार्थना की। ब्रह्मचारियों में प्रथम निवेदन का अवसर प्राप्त हुआ राकेश भैया को, वे हाथ जोड़कर गुरुदेव के समीप खड़े हो गए, फिर चरणों पर मस्तक रखकर नमन किया, पुनः खड़े होकर विनय की–

'हे गुरुदेव! मैं अब तक रागी था, सत्य है कि अनादिकाल से राग का अनुभव करता रहा हूँ, कभी वैराग्य पथ के विषय में सोचा ही नहीं था, किन्तु जब विराग गुरुदेव के दर्शन किए तो अपने आप आत्मा से वैराग्य की निर्झरणी बह पड़ी, आपके आशीर्वाद से आज जिस पथ पर बढ़ना चाह रहा हूँ उसका श्रेय केवल आपके श्रीचरणों को है। आपके आशीष से सतत साधनारत रहूँगा और आपके अनुकूल चर्या गढ़कर आनंदित होऊँगा। उसके बाद राकेश भैया पुनः नमन कर बैठ गए। उनके बाद अन्य-अन्य ब्र. भाईयों ने खड़े होकर बारी-बारी से अपने अपने विनीत शब्द प्रस्तुत किए।

गुरुदेव के संकेतानुसार सभी ब्रह्मचारी भाईयों ने खड़े रहकर संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं, ब्रह्मचारी भाईयों, ब्रह्मचारिणी दीदीयों से क्षमा याचना की। फिर माता-पिता, परिवार, रिश्तेदार, मित्रों, पुरजन, परिजन एवं उपस्थित सहस्रों दर्शकों से भी क्षमा याचना की। उस समय सभी के चेहरे तेजमय थे किंतु उपस्थित श्रोतागण अश्रुवर्षा कर रहे थे। ज्यों ही दर्शकों ने गुरुदेव को मुस्काते हुए देखा त्यों ही वे सम्वेत स्वर में आचार्य एवं आचार्य संघ का जयघोष करने लगे। विशाल पंडाल जयघोषों से भर गया था।

आचार्यश्री ने मुहुर्त साधते हुए दीक्षा विधि प्रारंभ की। फलतः दीक्षार्थियों ने खड़े-खड़े अपने वस्त्राभूषण हार, मुकुट आदि उतारकर जनता की ओर फेंक दिए और वस्त्र त्याग का दृश्य उपस्थित कर दिया। गुरुदेव ने बारी-बारी से, उनके मस्तिष्क पर लवंग के सहारे चंदन से 'श्री' अंकित किया और विधि-विधान पूर्ण करते हुए सबको मंगल आशीर्वाद दिया। फिर सभी के नूतन नाम घोषित किए–

1. बा.ब्र. राकेश भैया, जतारा –ऐलक 105 श्री विमर्शसागर जी
2. बा.ब्र. विनोद भैया, बीना –ऐलक 105 श्री विहर्षसागर जी

3. बा.ब्र. अरुण भैया, पथरिया —ऐलक 105 श्री विनिश्चयसागर जी
4. बा.ब्र. वीरन्द्र भैया, टीकमगढ़ —क्षुल्लक 105 श्री विभद्रसागर जी
5. बा.ब्र. लक्ष्मीभैया, घुवारा —क्षुल्लक, 105 श्री विमार्गणसागर जी
6. बा.ब्र. विवेक भैया, सुनवाहा —क्षुल्लक 105 श्री विनयसागर जी
7. बा.ब्र. विनीत भैया, हरदुआ —क्षुल्लक 105 श्री विनिश्चलसागर जी
8. बा.ब्र. अजय भैया, बीना —क्षुल्लक 105 श्री विजय सागर जी
9. बा.ब्र. अरविंद बहरौल —क्षुल्लक 105 श्री विलोचनसागर जी
10. बा.ब्र. संदीप भैया, तिगोड़ा —क्षुल्लक 105 श्री विनिर्भय सागर जी

संघस्थ क्षुल्लक विमुक्तसागर जी, क्षुल्लक विशल्य सागर जी, एवं क्षुल्लक विभवसागर जी को ऐलक दीक्षा प्रदान कर उन्हीं नामों के साथ घोषणा की गई थी, इस तरह देखते-देखते विशाल जन समुदाय के समक्ष तेरह दीक्षाएं सम्पन्न हुई और स्वर्गोपम दृश्य देखने को मिला। धन्य हुआ दिवस 23 फरवरी 1996।

वैराग्य पथ का दूसरा दिन

दूसरे दिन 24 फरवरी 96, को प्रभात बेला में आचार्य संघ के सानिध्य में दसों नवीन साधकों की मुखशुद्धि क्रिया सम्पन्न हुई । फिर क्रम आया त्याग का। ऐलक विमर्शसागर जी (पूर्वनाम राकेश भैया) ने तेल का आजीवन त्याग किया। उसी क्रम में णमोकार व्रत, तप के रूप में धारण किए तथा 6 माह का मौन व्रत लिया। इस अवसर पर वहाँ उपस्थित उनके माता-पिता ने भी आचार्यश्री के समक्ष जीवन पर्यन्त के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। इसी तरह अन्य साधकों ने भी कुछ न कुछ त्याग किया और कुछ व्रत लिए।

कार्यक्रम के बाद निश्चित समय पर आचार्य संघ आहारचर्या को उठा, क्रम आने पर नूतन साधु ऐलक विमर्शसागर जी आहारचर्या को उठे। उन्हें आहार करते हुए जतारा का हर श्रावक देखना चाहता था एवं उपस्थित दर्शक भी। अभी तक जो राकेश अन्य-अन्य साधुओं को आहार देकर सुख मनाता रहा था, आज उसे आहार ग्रहण करने थे। विमर्शसागर जी का पड़गाहन जतारा के श्रेष्ठीश्रावक (पिताश्री) श्रीमान सनतकुमार जी के चौके में हुआ। सभी जन विनयपूर्वक चारों ओर बैठकर आहार देने लगे, किंतु समयरूपी सम्राट ने अपना प्रभाव दिखा दिया, किसी कारण से अंतराय हो गया। ऐलक जी मुस्काते हुए उठ गए। माता-पितादि रोते रह गए। जीवन में जिस क्षण की सम्पूर्ण पवित्रताओं के साथ प्रतीक्षा की थी, वह क्षण धोखा दे गया, धार्मिक माता-पिता कलपते रह गए। फिर पीछे-पीछे दौड़े नव-साधु के। आहार देनेवाले के साथ साथ आहार लेनेवाले की धारणा और पारणा अंतराय को समर्पित हो

गई।

अन्य साधुओं के आहार यथोचित विधि से सम्पन्न हुए। आचार्यश्री ने लौट रहे साधुओं को आशीष सिंचन से शीतलता प्रदान की।

गुरु की शिक्षा

दोपहर में स्वाध्याय के बाद गुरुजी ने नवीन साधुओं को कुछ आवश्यक निर्देश दिए–

1. हर साधु जो ऐलक हैं वे अपने कमडल मात्र के जल से लंगोटी अपने ही हाथों से धोएँ, अन्य पर न छोड़ें।
2. सभी को प्रतिक्रमण का अर्थ शुद्ध उच्चारण करके बतलाया। कुछ और-और सूचनाएँ भी दीं।

दीक्षा के बाद सहकर्मियों के विचार

जब जतारा नगर के लोगों ने सुना-''अपनों राकेश तो मुनि हो गओ।'' तो सभी के हृदय में छुपा हुआ प्रेम उमड़ पड़ा। फिर एक जैन सज्जन ने बताया 'भैया, मुनि नहीं अभी ऐलक बनो है।' तब वे विजातीय शुभचिंतक बोल पड़े 'मुनि बनौ कै ऐलक, हम नई जानै, हम तौ एई जानत हैं कि ऊने गृह त्याग कर दओ है और दिगम्बर संतों के साथ हो गओ है। नगर में वार्ताएँ चलती रहीं सारे दिन। क्या जैन, क्या अजैन, सभी अपने-अपने मन की श्रद्धा ज्ञापित कर रहे थे।

जिन्होंने राकेश भैया को कक्षा 9वीं में पढ़ाया था, वे सेवा निवृत्त प्राचार्य श्री अवधविहारी श्रीवास्तव बोले–'राकेश भैया, मेरे प्रिय शिष्यों में रहे हैं और अब वे एक अद्भुत स्वप्न की तरह मेरी आँखों में समा गए हैं। उनमें शिक्षा के के प्रति भारी लगाव था और गुरुओं के प्रति समय पर सम्मान प्रगट करने की जागरुकता थी। वे स्वभाव से सरल रहे हैं। मेरे मन में था कि दीक्षा लेने के पहले यदि राकेश जी जतारा आवेंगे तो मैं उन्हें समझा-बुझाकर रोक लूँगा और मैंने उनके आने पर समझाया भी था तथा शासकीय सर्विस दिलाने की बात भी की किंतु वे मेरे एक भी संकेत को स्वीकार नहीं कर सके। स्पष्ट था कि मैं लौकिक-शिक्षा का शिक्षक था, और वे वैराग्य पथ के साधक थे अतः क्यों मानते मेरी बात? मैं धन्य हूँ कि मुझे स्कूल में उन्हें पढ़ाने का सौभाग्य मिला था। अब वे अपने घर को छोड़कर सारे संसार को ही अपना घर बना लेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है एक दिन वे जगतगुरु बनकर आचार्य विमर्शसागर के रूप में हम सब का, जतारा का और देश का, गौरववर्धन करेंगे। उस समय उनके चरणों में मेरा प्रथम नमन होगा।

इसी तरह के विचार अन्य ग्रामीण लोगों के भी थे। खासतौर से राकेश

भैया के मोहल्ले के लोग कुछ ज्यादा ही द्रवित हो रहे थे, जिनमें श्री पन्नालाल सोनी, श्री ज्ञानचंद जैन, श्री मनोहर सोनी, श्री दयाराम सोनी, श्री शीलचंद भोपाली, श्री हजारीलाल जैन, श्री रामगोपाल सोनी, श्री काशी सोनी, सहित वरिष्ठ साहित्यकार श्री कपूरचंद जी बंसल के नाम प्रमुख हैं।

श्रेयांसगिरि 1996

कुछ समय बाद आचार्य संघ देवेन्द्रनगर से समीप स्थित अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरि पहुँचा। वह पूरी मनोरम पहाड़ी मंदिरों और मूर्तियों के कारण गरिमा और सौंदर्य का प्रतीक दिखती थी। ऐलक विमर्शसागर जी इस तीर्थ के दर्शन प्रथमबार कर रहे थे, अतः उनका आत्मानद सबसे पृथक था। सघ ने कुछ दिन का समय सलेहा, गुनौर और पवई को दिया, प्रभावना की और कटनी समाज का आमंत्रण स्वीकार करते हुए, उसी नगर की ओर चरण बढ़ा दिए।

कटनी 1996

भव्य आगवानी के साथ संघ का नगर प्रवेश हुआ बोर्डिंग के कक्षों में ठहराया गया। उस समय भी आचार्य विरागसागर के साथ अनेक साधु संघस्थ थे। कटनी का सामाजिक वातावरण एवं श्रद्धा समर्पण भाव सभी संतों को बहुत अच्छा लगा। प्रतीत हो रहा था कि लोगों के हृदय, कटनी के प्रसिद्ध चूने की तरह धवल हैं, किन्तु वे चूने की तरह काटते नहीं हैं, फिर भी कर्म-संयोग से ऐलक विमर्शसागर जी को सप्ताह में एक-दो अंतराय होने लगे, किन्तु वे निश्चिंत रहते थे।

ग्रीष्मकालीन वाचना : कटनी 1996

श्रावकों के अनुरोध पर आचार्यश्री ने वाचना का शुभारंभ कर दिया, समय निकालकर वे धवला जी की वाचना एवं प्रवचन में रत्नकरण्डक श्रावकाचार को प्रतिपादित करते थे। इस बीच संघ को पढाने एक घंटा की कक्षा भी लेते थे और आलाप पद्धति का अध्ययन कराते थे।

ऐलक विमर्शसागर जी के अंतराय रुक नहीं रहे थे अतः गुरु-संकेत पर संघस्थ दीदी चौके में पहुँचकर आहार शोधन करने लगीं, कटनी निवासी धीरज जैन भी विशेष ध्यान रखते थे। लोग कहते हैं कि आचार्य संघ की कटनी में श्री सुनीत कुमार जैन ने उत्कृष्ट सेवा की।

वाचना में जबलपुर निवासी गणित के राष्ट्रीय विद्वान डॉ. एल.सी.जैन (सराफा) ने जैन गणित को प्रतिपादित किया। तब तक जबलपुर जैनसमाज के लोग कटनी जा पहुँचे और उन्होंने आचार्यश्री से जबलपुर बिहार के लिए श्रीफल अर्पित कर, विनय की। उन्होंने स्वीकार भी कर ली।

विहार जबलपुर की ओर

बाद में जब संघ कटनी से जबलपुर की ओर बढ़ा तो पहले अतिशय तीर्थक्षेत्र बहोरीवंद के दर्शनार्थ पहुँचा। वहाँ पहले दिन ऐलक विमर्शसागर जी, विहर्षसागर जी एवं विनिश्चयसागर जी का एक ही चौके में आहार का शुभयोग बना। किसी श्रावक ने नमक के धोखे में फिटकरी का उपयोग कर दिया। फलतः ऐलक विमर्शसागर जी ने मात्र थोड़ा-सा चावल लिया। दूसरे दिन प्रारंभ में ही अंतराय हो गया। अंतरायों ने पीछा नहीं छोड़ा, जब संघ वहाँ से बाकल गया तो वहाँ भी ऐलक जी का अंतराय हुआ। एक मायने में इधर विहार चलता रहा, उधर अंतराय। चलते-चलते शाम को सिहोरा पहुँचने से पूर्व सभी शिष्यों ने जंगली परिक्षेत्र का लाभ लिया और आचार्यश्री को एक समतल शिला पर विराजमान कराकर खुद जमीन पर विराज गए। तभी अचानक पानी बरसने लगा। साथ चल रहे दो-एक कार्यकर्ताओं ने चटाईयाँ निकालकर साधकों के ऊपर फैला दीं, किन्तु वर्षा का पानी चंचल बच्चों की तरह यहाँ-वहाँ से देह स्पर्श करता रहा। ऐलक विमर्शसागर जी निरंतर अंतरायों के कारण दैहिक रूप से कमजोर हो चुके थे अतः उन्हें ग्रीष्मऋतु में भी तीव्र ठंड लग रही थी। दो ऐलकों ने उन्हें चटाई में बंडल की तरह लपेट दिया। वे चुपचाप पड़े रहे, किंचित भीगते भी रहे। तब तक सिहोरा के कार्यकर्ता ब्र. अजित भैया के साथ आ पहुँचे। उन्होंने तिरपाल आदि की उत्तम व्यवस्था कर दी। संघ ने सुरक्षित रहते हुए रात्रियापन किया। यह बतलाते हुए हर्ष होता है कि सेवाभावी ब्र. अजित भैया सिहोरा के गौरव पुत्र हैं और वर्तमान में तेजस्वी संत मुनि प्रसादसागर जी के नाम से शिरोमणि संत आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के संघ में विराजित हैं।

दूसरे दिन प्रातः संघ ने भव्य शोभायात्रा के साथ सिहोरा नगर में प्रवेश किया। समाज ने चौकों की उत्तम व्यवस्था बनाई थी, फिर भी श्री अंतरायसागर का, मेरा मतलब ऐलक विमर्शसागर का, अंतराय हो गया। विनोद में उन्हें अंतराय सागर कहा जाने लगा। ब्र. अजित भैया ने ऐलक जी का वह उपचार किया जो एक दिन पूर्व रास्ते में किया था। मिट्टी की पट्टी बनाकर कुछ मिनटों के लिए पेट पर रखी थी।

सिहोरा से राजमार्ग सीधा जबलपुर आता है, किंतु संघ ने उस तरफ कदम नहीं बढ़ाए, दूसरे दिन अन्य दिशा से तेवरी होते हुए सिलिमनाबाद गया। वहाँ सुबह-सुबह एक महाराज वृक्ष के नीचे शौच के लिए बैठ गए। निवृत्त होने पर जब संघ में पहुँचे तो आचार्यश्री ने सभी साधुओं को मूलाचार का स्मरण कराते हुए कहा—हमें खुले आकाश के नीचे ही शौच आदि की क्रियाएँ करना चाहिए,

हमारा आगम वृक्ष के नीचे बैठने का आदेश नहीं देता।

आनंदपूर्वक संघ आनंदपुर पहुँचा, वहाँ ही रात्रि विश्राम किया। सारी रात मच्छरों ने प्रीतिभोज के आयोजन का आनंद लिया।

आनंदपुर में आनंद का शमनकर संघ जबलपुर की ओर लौटा और कुछ ही दिनों में लार्डगंज स्थित पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर परिसर में अवस्थित हो गया। जबलपुर में ही मुनि विशुद्धसागर एवं आचार्य विरागसागर का वात्सल्य मिलन हुआ था। लार्डगंज के मंदिर में आचार्यश्री की चर्या चल रही थी, तभी एक दिन इन पंक्तियों के लेखक (सुरेश जैन 'सरल') सपत्नी उनके दर्शनार्थ पहुँचे। था वह आचार्यश्री और लेखक का प्रथम मिलन।

संघ लार्डगंज से जबलपुर स्थित पुरानी बजाजी मंदिर भी गया, फिर कुछ दिन ही बाद पिसनहारी की मढिया के इतिहास सिद्ध प्रांगण में जा पहुँचा। इस बीच करीब पंद्रह दिन का समय खिसक चुका था। मढ़िया जी में संघ ने वर्षायोग की स्थापना की। इस वर्षाकाल में संघस्थ साधुओं को गोम्मटसार कर्मकाण्ड, तत्त्वार्थवृत्ति, कातंत्रव्याकरण आदि ग्रंथों की नियमित कक्षाओं का लाभ मिला। यहाँ कषायपाहुड़ की वाचना भी चली। यशोधर चरित्र की व्याख्या पंडित पन्नालाल जी साहित्याचार्य करते थे। इसी पावन क्षेत्र से इस लेखक की लेखनी ने आचार्य विरागसागर जी की जीवनी का शुभारंभ किया था। पर्युषण पर्व में श्रावक साधना शिविर का आयोजन महत्वपूर्ण रहा। आचार्यश्री के संकेत पर ऐलक विमर्शसागर जी महाराज ने शिविरार्थियों के लिए छहढाला की कक्षा शुरु की थी, यद्यपि यह उनका प्रथम अवसर था, फिर भी शिविरार्थी उन्हें सुनकर रोज प्रसन्न होते थे, फलतः आचार्यश्री का ऐलकश्री पर वात्सल्य प्रगाढ़ होता गया और शिष्य भी सीखते-सिखाते हुए दिनों-दिन ज्ञान पथ पर आगे बढ़ते गए।

इतना ही नहीं, चातुर्मास सम्पन्न हो जाने के बाद जब पिच्छिका परिवर्तन समारोह का समय आया तो आचार्यश्री ने ऐलक विमर्शसागर जी से ही कार्यक्रम का संचालन कराया, उनके सहयोगी क्षुल्लक विनयसागर जी थे। संचालन से श्रावक, श्राविकाओं के साथ-साथ सम्पूर्ण संघ भाव-विभोर हो गया था। कुछ लोगों ने उत्साहपूर्वक कैसिट भी बनाए थे, फलतः बाद में भी श्रावकगण कैसिट से आनंद लेते रहे।

चूँकि देश में सभी जगह चातुर्मास पूर्ण हो चुके थे, अतः साधुगण अपने-अपने गुरु-आदेश के अनुकूल विहार कर रहे थे। पिसनहारी मढ़िया से आचार्य संघ विहार करता हुआ जबलपुर के संजीवनी नगर, शिवनगर होते हुए अतिशय तीर्थक्षेत्र कोनी जी (पाटन) पहुँचा। फिर कच्चे मार्ग से चलकर कटंगी नगर में प्रवेश किया। वहाँ मुनि विशदसागर, क्षुल्लक विनिश्चल सागर, क्षुल्लक

विनिर्भय सागर (वर्तमान में आचार्य सुनील सागर जी) ने श्रावकों के साथ आचार्य संघ की अगवानी की। वहाँ कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कटंगी निवासी ब्र. संजीव भैया ने ऐलक विमर्शसागर जी से विशेष प्रेमभाव स्थापित किया।

कुण्डलपुर की ओर

संघ ने कटंगी से विहार कर दिया, सिंग्रामपुर होते हुए जबेरा, बाँदकपुर और फिर पटेरा। कुछ ही दिन रास्ते में बीते और संघ कुण्डलपुर जा पहुँचा, वहाँ मुनि निर्णयसागर जी, क्षु. विश्वशील सागर जी, क्षु. विपुलसागर जी, क्षु. विशंकसागर जी ने श्रावकों सहित संघ की अगवानी की। तब तक सन् 96 पूर्ण हो गया। सन् 97 का सूर्य संघ ने कुण्डलपुर में ही देखा था। वहाँ संघ को भक्तिपाठ की कक्षा का लाभ मिला जिसमें गुरुदेव ने अर्थ एवं शुद्धि पर प्रकाश डाला था।

पुनः विहार

शीतकाल कुण्डलपुर में पूर्णकर संघ ने विहार कर दिया एवं पटेरा होते हुए दमोह जा पहुँचा। अगवानी के पश्चात् बड़े मंदिर की धर्मशाला में संघ को ठहराया गया। चारों ओर के भक्त आते जाते रहते थे, जबलपुर के भक्तों का तो तांता लगा रहता था। एक दिन प्रमोद जैन जबलपुर से पहुँचे। ऐलक जी की निर्बल काया देखी तो करुणा हो आई, तुरंत वैद्यराज को ले आए और दिखाया। वैद्यराज जी ने स्पष्ट कर दिया कि टी.बी. के प्रारंभिक लक्षण शुरू हो चुके हैं। तभी ऐलक जी ने नमक, दूध और मीठा का त्याग कर दिया एक माह के लिए। आचार्यश्री बोले आपका त्याग शीघ्र ही रोग का शमन करेगा लेकिन आहार में छैना लेते रहिए। ऐलक जी ने मुस्कुराकर नमन किया। ब्र. अंजना दीदी एवं ब्र. किरण दीदी गुरुदेव की आज्ञानुसार ऐलक जी की आहार व्यवस्था देखने लगीं।

दूबरे पर दो आषाढ़

यह शब्दावली श्रावकगण उपयोग में ला रहे थे क्योंकि अत्यंत कृशकाय ऐलक विमर्शसागर जी केशलुंचन कर रहे थे, यह पृथक बात है कि मुनि निर्णयसागर जी ने केशलौंच क्रिया पूर्ण कर दी।

नैनागिर विहार

दमोह से विहार कर संघ पथरिया पहुँचा, तब लगा 'पथरिया' का लाल पथरिया की सुधि लेने आया है। पथरिया गुरुदेव आचार्य विरागसागर जी की जन्मभूमि जो है। दिए तीन दिन वहाँ भक्तों को, फिर केरबना गाँव होते हुए

संघ नैनागिरी जा पहुँचा, भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर मनाया आत्मा ने आनंद। कुछ दिन पश्चात् वहाँ से बम्होरी होते हुए संघ घुवारा पहुँचा।

घुवारा विधान

घुवारा में संघ के सान्निध्य में सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया, संयोग से वहाँ कहानपथी विदुषी विमला बैन जबलपुर से आई हुई थीं, सभी की भक्ति सरस रही। संघ सान्निध्य में भव्य आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ।

चूँकि इस कथा के मूलनायक आचार्य विमर्शसागर जी उस समय ऐलक थे और अपने गुरु के साथ चल रहे थे, अतः वे संघ के साथ जहाँ-तहाँ गए, उसका संक्षिप्त चित्रण तो करना ही होगा। संघ घुवारा से बड़ागाँव (धसान) पहुँचा, वहाँ भी समाज ने श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान संघ सान्निध्य में सम्पन्न कराया। स्थानीय श्री फणीस जी, हुकमचंद आदि लोग व्यवस्था में आगे बने रहे।

दादागुरु के प्रथम दर्शन

वहाँ ही आचार्यश्री को संदेश प्राप्त हुआ कि तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी अतिशय क्षेत्र करगुवाँ जी में विराजित हैं और अपने शिष्य को समीप चाहते हैं। संदेश सुनते ही आचार्यश्री ने उसे गुरुआज्ञा मानी ओर तुरंत विहार कर दिया। लगभग 20 दिन लगातार विहार किया और अनेक नगरों और ग्रामों की धूलि को स्पर्श दिया। सिमरिया, टीकमगढ़, दिगौड़ा, बंधा जी, पृथ्वीपुर, ओरछा होते हुए झांसी स्थित तीर्थक्षेत्र करगुवाँ जी पहुँचे। तब वहाँ आचार्य सिद्धांतसागर जी, आचार्य कुमुदनंदी जी सहित समस्त आचार्य संघों और श्रावकों ने आचार्य विरागसागर जी ससंघ का शाम 4.30 बजे भव्य आगवानी से स्वागत किया। फिर सभी संघ एक साथ तपस्वी सम्राट के चरणों में गए। किया गुरु का चरण वंदन।

ऐलक विमर्शसागर जी ने गुरुनाम गुरु (दादा गुरु) के प्रथम बार दर्शन किए थे। मन में अपार श्रद्धा थी, लगा जो बालक अब तक तालाब में खेल रहा था, वह सागर में खेलने आया है। वहाँ ऐलक जी ने एक-एक कर सभी आचार्यों और मुनियों के दर्शन किए और की समाचारी।

आचार्य विरागसागर जी ने अपने गुरुदेव के दर्शन सोलह वर्ष बाद किए थे अतः वे तो वे उनके हर साधु प्रमुदित थे।

गणिनी जी का प्रवेश

दूसरे दिन देश की विख्यात गणिनी आर्यिका विजयमति माताजी ससंघ वहाँ पहुँची और आचार्य संघ के साथ-साथ क्षेत्र के दर्शन किए। तीसरे दिन तपस्वी सम्राट जी ने सुबह का स्वाध्याय आचार्य विरागसागर जी से करने को कहा।

उन्होंने सफलता पूर्वक आज्ञा का निर्वाह किया। संध्याकाल में भक्ति पाठ के समय आचार्य विरागसागर जी के संघस्थ साधुगण जोर जोर से उच्चारण कर भक्ति पाठ बाले रहे थे। तपस्वी सम्राट मधुर कंठ से लयबद्ध भक्तिपाठ सुन अत्यंत प्रसन्न हुए। अगले दिन साधुओं को सम्बोधते हुए बतलाया—विरागसागर जी के संघ के साधु शुद्ध उच्चारण सहित, जोर-जोर से, भक्ति पाठ करते हैं जिससे शरीर की नसें तनती सिकुड़ती हैं और शरीर के परमाणुओं को शुद्ध करती हैं।

सराहना का मंत्र सुनाकर तपस्वी सम्राट ने समस्त कनिष्ठ संतों का मन चुरा लिया था। दूसरे दिन समस्त साधु-संतों ने और भक्तों ने मिलकर 'आचार्य आदिसागर अकलीकर महाराज की 53वीं पुण्यतिथि' धूमधाम से मनाई। तपस्वी सम्राट के सान्निध्य में वह महान कार्यक्रम भारी प्रभावनाकारी सिद्ध हुआ।

पुनः टीकमगढ़

आचार्य विरागसागर ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु संघसहित टीकमगढ़ पहुँचे, जहाँ बाजार मंदिर में 17 जुलाई से 24 जून 97 तक ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक वाचना एवं शिविर का कल्याणकारी कार्यक्रम शुरू हुआ। जिससे लगभग डेढ़माह तक घर-घर धर्म की चर्चा के साथ-साथ, ऐलक विमर्शसागर जी की सरलता की चर्चा भी होती रही।

वहाँ शुद्धोपयोग ग्रंथ पर त्रिदिवसीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिससे पूज्य विमर्शसागर जी को विद्वानों और वैदुष्य का ठोस अनुभव हुआ। तभी एक दिन गणिनी आर्यिका विजयमति माताजी ससंघ दर्शनार्थ आईं, दोनों संघों का वात्सल्य पूर्ण मिलन हुआ। हुई आगम प्रधान चर्चायें। इस बीच ऐलक विमर्शसागर जी का अंतराय कर्म तीव्रता से उदय हुआ, फलतः 21 दिनों तक लगातार कुछ न कुछ कष्ट आते रहे। किसी दिन अंतराय हो जाता तो किसी दिन वमन। वमन भी अंतराय का कारण बन जाता था। तब आचार्यश्री को चिता हो आई, उन्होंने ब्र. अंजना दीदी एवं ब्र. किरण दीदी को निर्देश देकर ऐलक जी की आहारचर्या के लिए तैयार किया। जाने क्यों फिर भी स्वास्थ्य गिरता गया, कभी-कभी प्रतिष्ठाचार्य जय निशांत भी आहारचर्या के समय उपस्थित रहते थे।

दवा नहीं : मनोबल

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन पठा साधु संघ की सेवार्थ हमेशा तत्पर रहते थे, उन्होंनें ऐलक जी का बी.पी. देखा, जो अत्यंत लो (नीचे) हो चुका था। फलतः उस दिन तीन बार चैक किया परंतु वह ज्यों का त्यों रहा। डॉ. साहब दवा तो खिला नहीं सकते थे अतः चुपचाप चले गए। दूसरे दिन ऐलक जी का आहार

निरंतराय हुआ और उसके बाद भी निरंतराय ही रहा, फलतः चौथे दिन तक बी.पी. (रक्तचाप) सामान्य हो गया।

कुछ दिनों बाद संघ का विहार भिण्ड की ओर होना था, अतः डॉ. साहब ने पुनः एक बार बी.पी. चैक किया, सामान्य था। उस दिन डॉ. साहब ऐलक जी से बोले—'महाराज श्री, लगातार रक्तचाप लो होते हुए भी आप सामान्य रहे आए, यह आश्चर्य की बात है। यहाँ विज्ञान हार गया और संयम जीत गया। आपका मनोबल अच्छा है।'

विहार भिण्ड की ओर : 1997

जब भिण्ड समाज के कार्यकर्ता आचार्यश्री विरागसागर जी से अनुनय-विनय कर वापिस हो चुके, तब उन्होंने ससघ टीकमगढ़ से विहार किया। ऐलक जी उनके साथ-साथ चले, दिगौड़ा, पृथ्वीपुर ओरछा होते हुए झांसी स्थित करगुवाँ जी पहुँचे, वहाँ संघ ने सावलिया पार्श्वनाथ भगवान की भव्य एवं सातिशय प्रतिमा के दर्शन वंदन किए फिर दतिया होते हुए श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर पहुँचे। भिण्ड समाज के प्रतिनिधि साथ-साथ चल रहे थे।

सोनागिर जी की वंदनाकर संतगण डबरा होते हुए, ग्वालियर स्थित नया मंदिर पहुँचे। वहाँ समिति ने भव्य अगवानी की। पुनः विहार। गोहद, मेहगाँव होते हुए संघ भिण्ड पहुँच गया। अगवानी के समय तीव्र वर्षा हुई, मगर भक्तों का जोश बना रहा।

चातुर्मास भिण्ड

19 जुलाई 97 को सदर बाजार स्थित सभा भवन में वर्षायोग स्थापना का आयोजन सम्पन्न हुआ और शुरू हो गई धर्म की वर्षा। दोपहर में नित समयसार की वाचना सुनकर ऐलक जी ने अध्यात्मपथ प्रशस्त किया। काफी दिनों तक कक्षा चली।

वहाँ भी ऐलक विमर्शसागर जी अंतरायों से छुटकारा नहीं पा सके, फलतः स्वास्थ्य प्रतिकूल बना रहा। श्री प्रवीण जैन लालू, विकास जैन, विमल जैन समय निकालकर आहारचर्या में उपस्थित होते थे। प्रभात बेला में आचार्यश्री ससंघ शौच क्रिया हेतु नसिया जी की ओर जाते थे, किन्तु ऐलक जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था अतः वे समीप ही स्थित धनवंतरी-धर्मशाला के परिसर में जाते थे।

जीवन है पानी की बूँद : सुप्रसिद्ध रचना

बात इसी भिण्ड चातुर्मास की है—

सूरज गुनगुनी धूप लेकर क्षितिज पर चमकने लगा। परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज अपने विशाल संघ के साथ प्रभातकालीन

आवश्यक भक्ति क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिदिन की भाँति परमपूज्य गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ नित्य क्रिया हेतु नसियाँ जी की ओर बढ़ते चले जा रहे थे।

पूज्य गुरुदेव के साथ ऐलक विमर्शसागर जी भी यथाक्रम ईर्यासमिति से चल रहे थे, और काव्य में रुचि होने के कारण अपने चिंतन को आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्नान करा रहे थे। तभी अचानक उनके चिंतन की गर्भस्थली से एक पंक्ति 'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे' का प्रसव हुआ, और वो इस प्रसव की परमानंद अनुभूति का बारम्बार अनुभव करते हुए स्मृति के दिव्य द्वार तक पहुँच गए। उन्होंने कभी 'होनी-अनहोनी' सीरियल देखा था, अतः होनी-अनहोनी शब्द को अपने काव्य में स्थान देने का विचार करते रहते थे तभी अचानक नित्य क्रिया से लौटते समय चिंतन की गर्भस्थली से जुड़वाँ पंक्ति 'होनी-अनहोनी, हो-हो, कब क्या घट जाये रे' का प्रसव हुआ। ऐलक जी दोनों जुड़वाँ पंक्तियों का अनुभव करते हुए अंतरंग में गुरु आशीष की श्रद्धा से भर गये। अतः इस आध्यात्मिक भजन को पूर्ण करने में उपयोग लगाया। भजन की पूर्णता होते ही पुनः पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचे और विनयपूर्वक अपना चिंतन मधुर स्वर से गुरु चरणों में समर्पित किया। सच कहूँ, गुरुदेव ने अत्यंत आह्लाद से भरकर उन्हें शुभाशीष दिया। गुरु का वह मंगल आशीष ही है कि इस आध्यात्मिक भजन ने सभी के कंठ को स्पर्शित किया, और इस समय का बहुचर्चित भजन कहलाया। जैन हों या अजैन सभी ने इसे समभाव से स्वीकारा, और लोग उन्हें अब अत्यंत श्रद्धा और प्यार से 'जीवन है पानी की बूँद' चिंतन के प्रणेता, इस नाम से पुकारने लगे।

यद्यपि इस भजन को जब अन्य साधु, विद्वान, गीतकार, गायक, अपनी प्रशंसा के लिए अपनी रचना कहकर बोलने लगे, तब पूज्य गुरुदेव विरागसागर जी को यह कहना पड़ा, कि 'जीवन है पानी की बूँद' भजन तो विमर्शसागर की मूल गाथाएँ हैं जिस पर अन्य साधु, विद्वान, गायक तो मात्र टीकाएँ लिख रहे हैं।

श्रावक शिविर

7 सितम्बर 97 से पर्युषण पर्व प्रारंभ हुए। 'श्रावक साधना शिविर' में वहाँ 600 लोगों ने भाग लिया, नसिया जी की गोद भरी रहती थी। ऐलक विमर्शसागर जी ने एक प्रश्नपत्र तैयार किया था जिसके समाधान खोजने में श्रावक और श्राविकाएँ रात दिन व्यस्त रहते थे। इस अवसर पर गुरु आशीष से ऐलक जी के द्वारा रत्नत्रय का तेला किया गया। पारणा निरंतराय हुई फलतः ऐलक जी से जुड़े हुए विमल जैन एवं उनके पारिवारिक सदस्यों ने कुछ अधिक

ही हर्ष मनाया और तेला के उद्यापन के समय मंदिरों में द्रव्य सहित चाँदी के छत्र एवं बर्तन आदि भेंट किए गए।

पिच्छी परिवर्तन

31 अक्टूबर 97 को चातुर्मास समाप्त हुआ। सात दिन बाद 8 नवम्बर को आचार्यश्री का 6वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाया और पिच्छिका परिवर्तन समारोह का सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन ऐलक विमर्शसागर जी ने भारी तन्मयता से किया। लोग सुबह 8 बजे से मध्यान्ह 3.30 बजे तक जमे रहे। किसी को भूख-प्यास की सुधि नहीं रही। कार्यक्रम के पश्चात् आहार-चर्या सम्पन्न हुई।

पिच्छिका परिवर्तन के अवसर पर ऐलक विमर्शसागर जी के गृहस्थ अवस्था के माता-पिता और दादी (श्री सनतकुमार जी, श्रीमती भगवती जी और श्रीमती बैनीबाई जी) ने दो प्रतिमा के व्रत ग्रहण किए। कुछ उत्साही जनों ने चातुर्मास में समर्पित होकर सेवाएँ दी थीं जिनके नाम इस तरह हैं—श्री उग्रसेन जैन, श्री रविसेन जैन, श्री प्रभात जैन, श्री रतनलाल जैन, श्री इन्द्रसेन जैन, श्री सुरेन्द्र जैन शक्कर, श्री वीरेन्द्र जैन, श्री सुखानंद जैन आदि।

चातुर्मास हो जाने के बाद, भिण्डवासी नित्य-नित्य संघ को घेर रहे थे, किन्तु आचार्यश्री को ब्र. धर्मचंद जी दिख रहे थे जो संलेखना के भाव से नौगाँव से आए थे। उनका प्रसंग कुछ पहले से शुरू होता है। जब आचार्यश्री पपौरा जी में थे, तब भी धर्मचंद जी केशलुंच और समधि की भावना से उनके पास आए थे किन्तु उस समय आचार्यश्री ने उन्हें मना करते हुए परामर्श दिया था कि एक बार और उपयुक्त डॉक्टर से परामर्श लो। फलतः उन्होंने वैसा ही किया और कालांतर में स्वस्थ भी हो गए थे। उनका परिवार प्रसन्न था। मगर इस बार धर्मचंद जी धर्मपत्नी के साथ आचार्यश्री के आगमन से पूर्व, भिण्ड आ चुके थे और वर्षायोग की अवधि में संलेखना-व्रत प्राप्त कर साधना कर रहे थे। उनका शरीर चार-पाँच माह में अत्यत जर्जर हो चुका था, अतः आचार्यश्री ने उनकी समाधि होने तक भिण्ड रुकना ही उचित समझा और शीतकालीन वाचना शुरू कर दी। ऐलक विमर्शसागर जी हर प्रसंग से अनुभव प्राप्त कर रहे थे।

क्षुल्लक विग्रहसागर जी की समाधि

धर्मचंद जी की प्रार्थना पर 4 जनवरी 1998 को दीक्षा देने की चर्चा की एवं निर्देश दिए कि पारिवारिक जनों को बुला लें। नौगाँव से धर्मचंद के छोटे पुत्र जयकुमार सहित पूरा परिवार आ गया। नियत तिथि पर आचार्यश्री ने चैत्यालय मंदिर की छत पर दीक्षा सम्पन्न की और उनका नामकरण किया 'क्षुल्लक 105

श्री विग्रहसागर जी।'

उनकी दिनचर्या की व्यवस्था हेतु ऐलक विमर्शसागर जी सहित चार महाराजों को दायित्व सौंपा। 7 जनवरी की बात, सुबह शौच के लिए ऐलक विमर्शसागर जी एवं ऐलक विनिश्चयसागर जी ने समाधिरत् क्षुल्लक को शौच के लिए उठाया और ले गए। लौटते वक्त जयकुमार ने क्षुल्लक जी का हाथ पकड़ा तो उनकी चमड़ी खिसक गई। आचार्यश्री को जानकारी मिली तो उन्होंने सभी को आक्रोश दिखाया और क्षुल्लक जी से क्षमा प्रार्थना की तब वे बोले—'गुरुदेव, इस देह रूपी कारागार की दीवारें टूट रही हैं, सो टूटने दीजिए क्योंकि मैं आजाद हो रहा हूँ।

10 जनवरी को क्षुल्लक जी के लिए मुनिदीक्षा प्रदान कर दी। कुछ समय बाद उनकी समाधि हो गई। उनका संस्कार ग्वालियर रोड स्थित कीर्तिस्तम्भ के समीप किया गया। शीतकालीन वाचना चलती रही। धीरे-धीरे ग्रीष्मकाल आ गया।

इटावा की ओर : 1998

6 मई 1998 को शाम के समय आचार्यश्री ने ससंघ इटावा के लिए विहार कर दिया, उसी दिन ऐलक विमर्शसागर जी का अंतराय हो गया था। संघ फूप ग्राम पहुँचा, वहाँ भी ऐलकजी का अंतराय हो गया। दूसरे दिन आहार के समय ऐलक जी के साथ ऐलक विहर्षसागर जी को भेजा, फिर भी अंतराय हो गया। तीन अंतराय झेलने के कारण विमर्शसागर जी आचार्यश्री को दुर्बल दीखने लगे, फलतः अगले दिन पू. आचार्य विरागसागरजी स्वतः ऐलक जी के साथ चौके तक गए। उस दिन आहार निरंतराय हो गया। पुनः विहार कर बरही होते हुए इटावा के समीप संघ नसिया जी में रुका। दूसरे दिन 13 मई 98 को संघ ने इटावा प्रवेश किया और लालपुर स्थित जैन मंदिर के परिसर में रुका। वहाँ समाज में भारी उत्साह था। श्री पी.डी. पत्रकार, वैद्य वज्रसेन, डॉ. भूपेन्द्र, श्री आनंदबाबा, श्री ऋषभकुमार, श्री अनिल जैन, श्री वीरेन्द्र पेंटर आदि बहुत सक्रिय रहे। 18 से 30 मई तक भक्तामर शिविर का आयोजन अति विशेष रहा। ग्रीष्मकाल पूर्ण कर संघ ने विहार कर दिया।

सिरसागंज प्रवेश

जब संघ सिरसागंज पहुँचा तो ऐलक जी को फिर अंतराय हो गया फलतः आचार्यश्री ने आज्ञा दी कि ऐलक जी, आज हमारे साथ नहीं, कल आहार के बाद श्रावकों के साथ तीर्थक्षेत्र बटेश्वर के लिए विहार करेंगे। ऐसा कहकर वे ससंघ उसी दिन विहार गए गए। ब्र. संजय भैया ऐलक जी के पास रुके रहे, मगर दूसरे दिन भी अंतराय हो गया, ऐलक जी वसतिका में आ गए। वहाँ बंदर

निर्भीक होकर भीतर-बाहर आ जा रहे थे अतः ऐलक जी उन्हीं के विषय में सोचने लगे कि आदमी का यह मन भी तो बंदर की तरह ही चंचल है। संयमन इसी का किया जाता जो एक तप है। तीसरे दिन निरंतराय आहार के पश्चात् ऐलक जी ने बटेश्वर के लिए विहार किया। रास्ते में रात्रि विश्राम हेतु शिकोहाबाद स्थित पुलिस थाने की जगह धन्य की। सुबह बटेश्वर प्रवेश।

वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री स्वरूपचंद जैन मार्शन्स आगरा, भोलानाथ जैन आगरा आदि संघ के दर्शनार्थ आए और बटेश्वर में ही ऐलक दीक्षा के आयोजन सम्पन्न करने की प्रार्थना की।

क्षुल्लक विश्वलोकसागर का वियोग

बटेश्वर की वह रात्रि कोई कैसे भूलेगा जब विश्वलोकसागर रात्रि में अचानक गिर पड़े उन्हें डायरिया हो गया था। भारी स्वास्थ्य के चलते हुए भी, उन्होंने सुबह मुनि-दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की। आचार्यश्री ने सिद्धक्षेत्र पर दीक्षा दी। मध्यान्ह बाद उनकी उत्तम समाधि सम्पन्न हुई। तीर्थयात्री की 'तीर्थयात्रा' सफल हो गई।

भिण्ड चातुर्मास - 1998

कुछ दिन बाद 25 जून 1998 को बटेश्वर में ऐलक दीक्षा का भव्य आयोजन किया गया जिसका कुशल संचालन ऐलक विमर्शसागर जी ने किया। कुछ दिन बाद जब संघ समीपस्थ क्षेत्र शौरीपुर में था तब उस प्राचीन जिनालय में आचार्यश्री ने ऐलक विमर्शसागर जी से उनका सदाबहार भजन 'जीवन है पानी की बूँद' सुना और अपने प्रिय शिष्य की सराहना तो की ही, उनकी वाणी की भी सराहना की। उसी दिन इटावा और भिण्ड के लोग सन् 1998 के वर्षायोग के लिए प्रार्थना करने पहुँचे। आशीष मिला-भिण्ड को। संघ ने समय पर विहार किया और रास्ते में ग्राम वॉह, जैतपुर, अटेर होते हुए विशालता की प्रतीक चबलनदी को नाव से पार किया, फिर पहुँचे भिण्ड। स्वागत, अगवानी। परेड मंदिर में स्थापना। श्री विजय जैन, श्री डालचंद जैन, श्री रज्जू भैया, श्री नरेन्द्र दादा, श्री धर्मेन्द्र जैन आदि व्यवस्था में समर्पित रहे। 8 नवंबर 98 को आचार्य पदारोहण-दिवस एवं पिच्छिका परिवर्तन समारोह सानंद सम्पन्न हुआ। आचार्य संघ दर्शनार्थ तीर्थ बरासौ पहुँचा।

पूज्य ऐलक विमर्शसागर जी की मुनिदीक्षा

बरासों प्रवास के समय ऐलक विमर्शसागर जी ने अपने गुरु आचार्य विरागसागर जी के चरणों में श्रीफल समर्पित करते हुए मुनिदीक्षा प्रदान किए जाने हेतु प्रार्थना की। उनके साथ संघ के बारह सदस्य भी प्रार्थना कर रहे थे।

उनकी पात्रता देखते हुए आचार्यश्री ने उन्हें आशीर्वाद दे दिया और बोले—'बस कुछ दिन बाद'।

आचार्यश्री जानते थे कि विमर्शसागर जी गत 22 माहों से कठोर संयम पूर्वक साधना कर रहे हैं। आचार्यश्री का संकेत क्षेत्र कमेटी को मिला कि 14 दिसम्बर को 13 दीक्षाएँ होंगी। कमेटी ने तदनुरूप उत्तम व्यवस्था की।

14 दिसम्बर 1998 को विराट मंच पर आचार्यश्री विरागसागर जी विराजित थे ससंघ। पंडित नीरज जैन सतना मंच संचालन कर रहे थे। उनहोंने माइक पर कहा—'मुक्ति पंथ के आकांक्षी, तेरह पथिक, दिगम्बरत्व भेष धारण करने तैयार है, आचार्यश्री से निवेदन है कि वह अपने करकमलों से साधकों को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान करें। फिर उन्होंने दीक्षार्थियों से निवेदन किया—'आप लोग भी बारी-बारी से प्रार्थना कीजिए। ऐलक विमर्शसागर जी उपस्थित हुए, उन्होंने करबद्ध कर पिच्छिका सँभालते हुए कहा—'हे आचार्यश्री, नमोस्तु, आज का यह क्षण किसी भेष के अर्जन का नहीं है, अपितु संसार के सारे भेषों के विसर्जन का है। हे गुरुदेव हमें जिनदीक्षा प्रदान कर हमारी पर्याय पर उपकार कीजिए।

विमर्शसागर जी ने पुनः गुरु के चरण सविनय स्पर्श किए। उन्हीं की तरह शेष बारह दीक्षार्थियों ने भी निवेदन किया और प्रार्थना के दो शब्द कहे।

गुरुदेव ने विधिपूर्वक सभी दीक्षार्थियों को दीक्षा प्रदान की। फिर अपने श्रीमुख से सभी के नाम घोषित किए।

1.	ऐलक विशल्यसागर	मुनि 108 श्री विशल्यसागर
2.	ऐलक विभवसागर	मुनि 108 श्री विभवसागर
3.	ऐलक विमर्शसागर	मुनि 108 श्री विमर्शसागर
4.	ऐलक विहर्षसागर	मुनि 108 श्री विहर्षसागर
5.	ऐलक विनिश्चयसागर	मुनि 108 श्री विनिश्चयसागर
6.	क्षुल्लक विश्वशीलसागर	मुनि 108 श्री विश्वशीलसागर
7.	क्षुल्लक विश्वयशसागर	मुनि 108 श्री विश्वयशसागर
8.	क्षुल्लक विश्वभूतिसागर	मुनि 108 श्री विश्वभूतिसागर
9.	क्षुल्लक विमदसागर	मुनि 108 श्री विमदसागर
10.	क्षुल्लक विहितसागर	मुनि 108 श्री विहितसागर
11.	क्षुल्लक विश्वलोचनसागर	मुनि 108 श्री विश्वलोचनसागर
12.	क्षुल्लक संयमसागर	मुनि 108 श्री विश्वधर्मसागर
13.	ब्रह्मचारी रमेश भैया	मुनि 108 श्री विश्ववीरसागर

समारोह की भूरि-भूरि सराहना की दर्शकों ने। आचार्यश्री के जयघोष के साथ सभी नूतन साधकों का भी जयघोष किया जनसमूह ने।

पाठको आपने भी कभी पुस्तक में पढ़ा होगा कि एक समय-काल ऐसा भी था जब आकाशवाणी हुआ करती थी। दूर क्षितिज से कोई आवाज आती प्रतीत होती थी जिसमें किसी नृप या साधु के विषय में सुभाषित बोल सुनाई पड़ते थे। लगा 14 दिसम्बर 98 की शुभबेला ऐसी ही थी। दिशाओं से ये स्वर स्फुटित हो रहे थे हर दर्शक के विजन (मनःआकाश) में—

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जाएगा।

भले ही पूज्य विमर्शसागर जी ने ये पंक्तियाँ कभी जग को सुनाने के लिए लिखी होंगी, किन्तु दीक्षा के समय तो सभी भक्तों के कानों में वे प्राकृतिक रूप से गूँजती प्रतीत हो रही थीं। यही तो है—यथार्थ-काव्य, जो मनों में घुला-मिला रहे और समय पर आंतरिक उद्‌घोष करे।

आचार्य संघ के सभी सदस्य गहन चर्चा में लीन हो गए। धीरे-धीरे दिसम्बर माह पूर्ण हो गया। संघ ने एक जनवरी 1999 का प्रथम दिवस का सूर्य बरासों में ही देखा।



तृतीय खण्ड

संयम का क्षितिज : दिगम्बरत्व

भिण्ड प्रवास

तब तक भिण्ड समाज के लोग पुनः बरासों पहुँचे और आचार्यश्री विरागसागरजी से भिण्ड विहार का निवेदन किया। मगर संघ ने समय कम दिया। भिण्ड पहुँचकर किला रोड मंदिर में संघ केवल 7 दिन रुका, फिर विहार करते हुए अम्बाह जा पहुँचा। श्री जिनेश जैन स्कूल संचालक ने अपने शाला भवन में ही संघ को रोका एवं भव्य-पडाल और मंच स्थापित किया। कुछ दिन बाद संघ वहीं से तीर्थक्षेत्र सिहोंनिया जी वंदनार्थ गया एवं वहाँ से विहार कर पुनः भिण्ड नगर में प्रवेश किया।

पुष्पदंत उवाच

भिण्ड में शीतकालीन वाचना शुरू हो गई। यहाँ ही पूज्य मुनिवर श्री विमर्शसागर जी के पत्राचार के आधार पर आचार्य पुष्पदंतसागर ससंघ का वात्सल्य-मिलन आचार्य विरागसागर जी ससंघ से हुआ था। 30 जनवरी 99 को धार्मिक कवि-सम्मेलन दोपहर की बेला में सम्पन्न हुआ, जिसमें अनेक साधुओं के साथ-साथ मुनि विमर्शसागर जी ने भी काव्यपाठ किया था। उनके काव्यपाठ से प्रभावित आचार्य पुष्पदंतसागर जी चाहे जब विमर्शसागरजी की सराहना कर देते थे। एक दिन दोपहर स्वाध्याय के समय आचार्य पुष्पदंत सागर जी विमर्शसागर जी के विषय में बोले–'विरागसागर जी! आपके ये जो साधु महाराज बैठे हैं ये प्रभावना की दृष्टि से अच्छे हैं आपके संघ के सिरमौर हैं। आप इन पर थोड़ा और ध्यान देना। लोगों को लगा कि वे विरागसागर जी से विमर्शसागर जी को माँगकर अपने साथ ले जा रहे हैं। किन्तु वह सब कपोल-कल्पित रहा, हर साधु अपने-अपने संघ में दृढ़ता से साधना कर रहे थे। कुछ समय बाद आचार्य पुष्पदंत जी का संघ विहार कर गया। आचार्यश्री विरागसागरजी भी कुछ समय भिण्ड को देकर फिर ससंघ विहारकर रूर गाँव पहुँचे।

जिस तरह पथरिया ने गणाचार्य विरागसागर को जन्म देकर अपना भाग्य सराहा, जतारा ने चारित्ररथी श्रमणाचार्य विमर्शसागर को जन्म देकर अपना गौरववर्धन किया, उसी तरह भिण्ड के समीप स्थित रूर ने आदर्श श्रमण विशुद्धसागर जी को जन्म देकर आचार्यों की जन्म स्थली की सूची में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों से अंकित किया है। संघ रुक गया और कुछ समय दिया। फिर ऊमरी पहुँचा, वहाँ झांसी करगुवाँ की समिति आचार्य संघ से चातुर्मास करने का निवेदन करने आई थी किन्तु भिण्ड में कीर्तिस्तम्भ का निर्माण कार्य चल रहा था, अतः चातुर्मास का आशीष जैन समाज भिण्ड को मिला।

भिण्ड चातुर्मास : 1999

मुनि विमर्शसागरजी आचार्य संघ के साथ-साथ उचित समय पर भिण्ड पहुँचे जहाँ संघ ने 27 जुलाई मंगलवार को चैत्यालय मंदिर में स्थापना समारोह सम्पन्न किया। मुनि पर्याय में आने के बाद पूज्य विमर्शसागर जी का यह प्रथम चातुर्मास था। वे प्रवचन और मंच संचालन में संघ में सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित कर चुके थे, अतः जब 18 अगस्त मुकुट सप्तमी पर सात दीक्षाओं का आयोजन कीर्तिस्तम्भ पर रखा गया तो कुशल संचालन की बागडोर मुनि विमर्शसागर जी के कर कमलों में ही सौंपी गई। किया उन्होंने काव्यात्मक सुरों में संचालन। उस दिन क्षुल्लक विनयसागर जी, ब्र. अरविंद, ब्र. फूलचंद, ब्र. दीपक, ब्र. पंकज, ब्र. हीरालाल एवं ब्र. आशीष को ऐलक दीक्षा दी गई। अनेक कार्यक्रमों के साथ वर्षायोग पूर्ण हुआ। 28 नवम्बर 99 को निष्ठापना कर दी गई। पूरे वर्षायोग में विभिन्न ग्रंथों का स्वाध्याय संघस्थ साधुओं ने गुरु मुख से प्राप्त किया। विशेष तौर से त्रिलोकसार एवं मूलाचार का गहन अध्ययन किया गया।

पंचकल्याणक महोत्सव : 2000

26 जनवरी 2000 से सात दिन तक कीर्तिस्तम्भ परिसर में संघ-सान्निध्य में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव सम्पन्न किया गया, जिसके प्रतिष्ठाचार्य थे—पं. विमल कुमारजी सौंरया। कार्यक्रम में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह, गृहमंत्री श्री गोविन्द सिंह एवं विधायक श्री राकेश चौधरी आदि पहुँचे थे।

झाँसी विहार : 2000

जब यहाँ भिण्ड में पंचकल्याणक चल रहा था तब मुनिश्री विशुद्धसागर जी झाँसी में साधना कर रहे थे। एकदिन आचार्य विरागसागर जी ने भिण्ड से ससंघ विहार कर दिया और मेहगाँव, गोहद, ग्वालियर, सोनागिर जी होते हुए तीर्थक्षेत्र करगुवाँ (झांसी) पहुँचे।

एक दिन सभी संघस्थ साधु अपने गुरुदेव के साथ झाँसी का किला एवं अजायबघर (म्यूजियम) का अवलोकन करने गए। सभी को एक नया अनुभव मिला।

करगुवाँ पंचकल्याणक : 2000

12 मार्च से 19 मार्च 2000 तक संघ के सान्निध्य में भव्य पंचकल्याण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न किया गया, जिसमें दीक्षा कल्याणक के अवसर पर ब्र. बाबूलाल (मड़ावरा) को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई और नामकरण किया गया-क्षुल्लक 105 श्री विश्वज्योति सागर जी। इस आयोजन में मूर्धन्य साहित्यकार श्री सुरेश जैन 'सरल' भी आमंत्रित थे। उनका नागरिक अभिनंदन

किया गया।

आचार्य संघ से आचार्यश्री वरदत्तसागर जी का मिलन भी यहीं (झांसी) में हुआ था।

मुनि विमर्शसागर बने उपसंघ प्रमुख

आचार्य विरागसागर जी का ससंघ श्री सम्मेदशिखर जी की वंदना करने का भाव था। किन्तु मुनि विमर्शसागर जी वमन आदि की तकलीफों से घिरे हुए थे, देह में लम्बी यात्रा करने की शक्ति नहीं दिख रही थी, अतः विरागसागर जी ने अच्छे मन से विमर्शसागर जी का पृथक् उपसघ बनाते हुए उनके साथ मुनि विश्वपूज्य सागर जी को कर दिया और वे खुद शिखरजी की ओर विहार कर गए। वह 26 मार्च 2000 का दिन था, जब आचार्य विरागसागर ससंघ एवं मुनि विशुद्धसागर जी ससंघ दोपहर में तीर्थराज की ओर बढ़ रहे थे। तीन लघुसंघ करगुवाँ जी में रुक गए थे—मुनिश्री विशदसागर जी ससंघ, मुनिश्री विमर्शसागर जी ससंघ, एवं मुनिश्री विमदसागर जी ससंघ।

मुनिवर झाँसी में

29 मार्च 2000 को झांसी समाज के अनुरोध पर मुनि विशदसागर जी ससंघ एवं मुनि विमर्शसागर जी ससंघ झांसी स्थित बड़े मंदिर पहुँचे, वहाँ दोपहर में प्रवचन सभा हुई जिसमें प्रथम संघ के मुखिया मुनिश्री विमर्शसागर जी ने प्रथमबार, गुरु के बिना प्रवचन शुरू किए। प्रबुद्धजन बतलाते हैं कि उनके प्रवचन प्रभावशाली थे और वाणी अत्यंत मधुर थी। समस्त श्रोताओं ने भूरि-भूरि प्रशसा की थी।

सायंकाल दोनों मुनिसंघ बबीना नगर की ओर चल पड़े, वहाँ से समीप ही स्थित तीर्थक्षेत्र पवा पहुँचे। इस यात्रा में भिण्ड के भक्तगण श्री धर्मेन्द्र जैन, श्री विकास जैन, श्री लालू जैन, श्री पवन जैन, श्रीराजकुमार जैन आदि व्यवस्था बना रहे थे। बबीना से पहले उन्होंने साधुओं को रात्रि विराम के लिए भेल (बी. एच.ई.एल.) में रोका था, फलतः वहाँ मंदिर-निर्माण की चर्चा हुई। बबीना के जिनेश्वरदास ने पवा क्षेत्र पर चौका लगा पुन्यार्जित किया था।

तालबेहट : 2000

पवा क्षेत्र से विहार कर दोनों संघ तालबेहट पहुँचे। उनकी भव्य अगवानी की गई। वह 5 अप्रैल का दिवस था। दूसरे दिन मुनि विशदसागर ससंघ आगे विहार कर गए किन्तु मुनि विमर्शसागरजी और संघस्थ मुनि विश्वपूज्यसागर जी ने तालबेहट को समय दिया। समाज ने 16 अप्रैल 2000 दिन रविवार को महावीर जयंती मनाई फलतः दिन में पूज्य विमर्शसागर जी ससंघ के सान्निध्य

में विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जो पूरे नगर में घूमी। हर चौराहे पर मुनिवर का पादप्रच्छालन एवं आरती के दृश्य निर्मित हुए। मध्यान्ह बेला में धर्मशाला के 'सभाभवन' में प्रवचन सम्पन्न हुए। उसी समय समाज ने ग्रीष्मकालीन वाचना का विनयपूर्वक अनुरोध करते हुए श्रीफल समर्पित किया। अनुरोध करने वालों में अध्यक्ष विजय कृष्ण जैन, मंत्री संतकुमार जैन, कोषाध्यक्ष सुमत चौधरी, नरेन्द्र चौधरी एवं अरुण कुमार आदि प्रबुद्धजन शामिल थे। मिल गया उन्हें आशीष।

सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर

तालबेहट की धरती पर ज्ञान की गंगा बह रही थी क्योंकि वहाँ 27 अप्रैल से 27 मई 2000 तक सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन पूज्य मुनि विमर्शसागर जी के सान्निध्य में किया गया था। प्रातः भक्तामर एवं शाम को बाल विज्ञान की कक्षाएँ चलती थी साथ ही प्रतिदिन गुरुवंदना होती थी।

27 मई को शिविर समाप्त हुआ तो मुनिवर ने सक्रियता दिखलाते हुए 28 मई को सभी शिविरार्थियों की परीक्षा भी ली।

दिए शिविर में नियम

शिविर की पूर्णता पर मुनिवर ने श्रावकों को खाली हाथ नहीं जाने दिया, सभी को जीवन पर्यंत चलने वाली धरोहरें दीं, जो हमारी आपकी भाषा में 'नियम' या 'संकल्प' कहलाता है–

1. नित्य प्रति देवदर्शन करना।
2. रात्रि भोजन का त्याग।
3. चमड़े की वस्तुओं का त्याग।
4. बाजार की रौनक-आइसक्रीम, लिम्का, कोका कोला आदि पदार्थों का त्याग।
5. तीन मकार–मद्य, मांस, मधु का त्याग।
6. सिगरेट, बीड़ी, गुटका, तम्बाखू, गांजा, भांग, अफीम आदि का त्याग।
7. नियमित पूजन करने का संकल्प।
8. नित्य स्वाध्याय का संकल्प।
9. घर–बाहर पानी छानकर पीने का संकल्प।
10. भक्तामर जी का पाठ करना।

सभी भक्त श्रेष्ठ धरोहर लेकर अपने नीड़ों की ओर चले गए। मुनिवर ने तब तक तीर्थक्षेत्र की वंदना हेतु विचार बना लिया।

तीर्थक्षेत्र सेरोन की वंदना

कार्यकर्ताओं से किए गए विमर्श के अनुसार मुनिवर विमर्शसागर जी 31 मई 2000 को तालबेहट से सेरोनजी के लिए विहार कर गए ससंघ। रास्ते में ग्राम जखौरा को समय दिया, वहाँ का समाज मुनिवर की चर्या से इतना प्रभावित हुआ कि प्रार्थना करने लगा–'हे गुरुदेव हमारे सौभाग्य से आपका आगमन हुआ है अतः हमें श्रुतपंचमी-पर्व मनाने की आज्ञा दें और सान्निध्य भी प्रदान करें।' पर्व के लिए 3 दिन शेष थे, अतः मुनिवर बोले–'पहले तो तीर्थ-वंदना करूँगा, लौटकर पर्व मना लूँगा। श्री कुलदीप जैन आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ, मुनिद्वय वंदनार्थ चल पड़े। हर्षपूर्वक क्षेत्र की वंदना की। मंदिरों जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, की दशा पर ध्यान दिया, उपस्थित लोगों को मार्गदर्शन दिया फिर वापिस हो पड़े। 6 जून 2000 को जखौरा समाज को सान्निध्य देते हुए श्रुतपंचमी पर्व की प्रभावना की। उसी दिन पाँच बजे के बाद वापिस तालबेहट की ओर विहार कर दिया। वहाँ 8 जून से 17 जून 2000 तक श्री सिद्धचक्र विधान के आयोजन को सान्निध्य दिया। संयोग से उसी अवधि में मुनिश्री श्रुतनंदी जी, मुनिश्री मार्दवनंदी जी, क्षुल्लक श्री अमरनंदी जी एवं क्षुल्लक वीरसम्राट जी का आगमन हुआ फलतः दोनों संघों का भव्य मिलन भी हुआ। वात्सल्य की वर्षा से तालबेहट नहा गया। उस मिलन का वर्णन पंडित नरेन्द्र कुमार खरगापुर की आँखों में वर्षों तक झूलता रहेगा, क्योंकि वे आयोजन के विधानाचार्य थे।

पुनः जखोरा समाज के लोग मुनिवर के चरणों में पहुँचे और जखौरा विहार करने की प्रार्थना करने लगे। मुनिवर ने उन्हें निराश नहीं किया और वे मुनि विश्वपूज्यसागर के साथ जखौरा की ओर विहार कर गए।

27वाँ जन्मदिवस समारोह

जखौरा जाते हुए बेलई ग्राम के स्कूल में समाज ने चौका-व्यवस्था की थी। हुआ वहाँ निरंतराय आहार। शाम को जखौरा प्रवेश किया। विशाल जनसमूह आरती लिए स्वागत के लिए खड़ा था। सभी ने पहले पादप्रच्छालन किया, फिर घुमाई मुनि के समक्ष नीरांजना। दूसरे दिन से जखौरा में नवजागृति आ गई, तभी लोगों को पता चला कि 26 जून 2000 (शासकीय) को मुनिवर की देह 27 वर्ष की हो जाएगी। अतः भक्तगण जन्मदिवस मनाने की तैयारी करने लगे। मुनिवर 17 जून को जखोरा पहुँचे थे, समाज ने 26 को धूमधाम के साथ जन्म महोत्सव मनाया। इतना ही नहीं शुद्ध घी का मिष्ठान्न बनाकर सारे गाँव में वितरित किया। मुख्य बाजार के वक्ष पर पंडाल हँस रहा था, मंच किलकारी भर रहा था, क्योंकि वहाँ जखौरा के अलावा भिण्ड, तालबेहट, बबीना, झांसी

और जतारा के भक्तगण भी उपस्थित हुए थे। कार्यक्रम के पूर्व जब पादप्रच्छालन की बोली लगाई जा रही थी तब पंडाल में बैठे मुनिवर विमर्शसागर जी की गृहस्थ अवस्था के लघुभ्राता श्री चक्रेश जैन ने बोली प्राप्त कर ली और नगरवासियों के साथ पादप्रच्छालन किया, किया अपना और परिवार का गौरववर्धन।

मुनिवर जखौरा तो 17 जून को पहुँचे थे किन्तु उन्होंने विलम्ब नहीं किया और 18 जून से मंदिरजी में विविध कक्षाएँ शुरू कर दीं, जिनके माध्यम से बालाबाल वृद्ध नरनारी पूजनविधि का यथार्थ ज्ञान पा सके। इसी दरमियान पूज्य विमर्शसागर जी के तीन गुरुभाई मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर, ऐलक श्री विनम्रसागर एवं क्षुल्लक श्री विनिश्चलसागर का आगमन हुआ था, जिससे सभी गुरुभाईयों में अपार हर्ष हो आया था। वे चार दिन साथ-साथ रहे और पाँचवें दिन विहार कर गए।

बानपुर की ओर

मुनिवर विमर्शसागर एवं मुनिश्री विश्वपूज्यसागर भी 28 जून को शाम साढ़े 5 बजे अतिशय तीर्थक्षेत्र बानपुर की ओर विहार कर गए। वह जखौरा से दूर है, अतः रात्रि विश्राम रामपुर में किया। 28 जून को प्रातः 9 किलोमीटर चल बांसी ग्राम पहुँचे, जहाँ सुबह-सुबह 7.30 बजे पूरा गाँव जमा होकर अगवानी करने लगा। वहाँ ग्यारह घर जैनों के हैं। जिनसे पूरे परिवार उपस्थित हुए थे। मंदिर में तीन वेदी है। धर्मशाला का कार्य चल रहा था, समीप ही सुन्दर बगिया है जिसका कुआँ शुद्ध जल प्रदाय करता है। समाज में संगठन और सद्गुरु के प्रति समर्पण अनुकरणीय रहा।

सुबह 9 बजे प्रवचनसभा के बाद बाँसी समाज ने पाठशाला खोलने के लिए मुनिवर से आशीर्वाद माँगा। मुनिवर ने उन्हें आशीष तो दिया ही, समुचित निर्देश भी दिए। फलतः शाम को ही गाँव के दो-दो व्यक्ति मिलकर आसपास के अनेक ग्रामों में आमंत्रण दे आए। 30 जून को मध्यान्ह बेला में गुरुवर के सान्निध्य में सभा की गई, जिसमें जखौरा, तालबेहट, वार, देवराज आदि ग्रामों के श्रावक उपस्थित हुए। सभी की उपस्थिति में 'श्री विराग सम्यग्ज्ञान पाठशाला' का शुभारंभ किया गया। वहाँ बासी के साथ-साथ जखौरा समाज का योगदान विशेष माना गया।

उसी दिन शाम को मुनिवर ने बाँसी से विहार कर दिया, 11 किमी. चले, अंधेरा घिर आया, अतः श्रावकों के साथ एक खेत में विश्राम किया। धन्य हो गया वह खेत। सुबह पुनः विहार। पहुँचे चिगलौआ। हुआ वहाँ निरंतराय आहार। वह 1 जुलाई का दिन था। शाम को पुनः चल दिए, रात्रि-विराम लिया

सूरी गाँव के स्कूल में। 2 जुलाई की प्रभातबेला में 6 कि.मी. चलकर वानपुर में दर्शन वंदन किए। आहारोपरांत श्री क्षेत्रपाल वानपुर मंदिर पहुँचे, जहाँ भगवान शांतिनाथ की 18 फुट उतंग मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शनकर आत्मसुख लिया। वहाँ कुछ स्थानों पर निर्माण कार्य चल रहा था।

चरण महरौनी की ओर

उसी दिन महरौनी के श्रावक पहुँचे गुरु चरणों में। उन्होंने महरौनी विहार करने की प्रार्थना की। मुनिवर तो निरंतर विहार कर रहे थे अतः शाम को बानपुर से भी विहार कर गए और रात्रि विश्राम पडवां में किया। वहाँ दो घर जैन के हैं ओर एक जिनालय। कहें, धर्म का दीपक जल रहा है। पड़वां में पुनः महरौनी वालों ने प्रार्थना की अतः 3 जुलाई की सुबह मुनि विमर्शसागर जी एवं मुनि विश्वपूज्यसागर जी महरौनी के भक्तों के साथ 6 किमी. चलकर महरौनी पहुँचे। भव्य अगवानी के साथ मनिवर ने महरौनी स्थित बड़े मंदिर जी में प्रवेश किया। वहाँ 4 दिन रहे। इस बीच 8 नगरों के भक्त चातुर्मास हेतु प्रार्थना करने पहुँचे। जिनमें तालबेहट, जखौरा, महरौनी, मड़ावरा, बांसी ओर वानपुर आदि प्रमुख थे। मुनिवर सभी को आशीष देते रहे किन्तु स्वीकृति नहीं। 7 जुलाई को महरौनी से विहार किया अतिशय तीर्थक्षेत्र गिरारजी के लिए। 15 किमी. चलकर सैदपुर। किया वहाँ रात्रिविश्राम। 8 जुलाई को सैदपुर से चलकर साढूमल संस्कृत विद्यालय पहुँचे। आहार चर्या, स्वाध्याय, प्रवचन। फिर उठे चरण तो मड़ावरा में रुके। जहाँ 11 भव्य जिनालय रत्नत्रय धर्म का गुणगान कर रहे हैं। जैन समाज के 200 से अधिक परिवार निवास करते हैं। 9 जुलाई को वहाँ भी विराट प्रवचनसभा सम्पन्न की। पुनः विहार कर भीकमपुर जैन मंदिर में रात्रि विश्राम लिया। फिर गिरारजी जहाँ तीर्थंकर आदिनाथ जी की मनोरम प्रतिमा सैकड़ों वर्ष से मौन धारण किए खड़ी है वहाँ चार वेदियाँ है अतः मुनिवर ने क्षेत्र के मंत्री श्री राकेश जैन मड़ावरा को पाँचवीं वेदी का औचित्य समझाते हुए निर्माण का संकेत दिया। दोपहर में प्रवचन सभा सम्पन्न हुई तब विभिन्न स्थानों से आए भक्तों ने पुनः श्रीफल अर्पित कर वर्षायोग हेतु निवेदन किया। इस बार आशीष मिला महरौनी समाज को।

10 जुलाई को ही शाम 5.30 बजे मुनिवर विहार कर गिदवाहा पहुँचे और रात्रि विश्राम स्कूल भवन में किया। 11 जुलाई को प्रातः बेला में मड़ावरा प्रवेश हुआ। भव्य अगवानी। शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश। दो दिन का समय दिया मड़ावरा को। बाजार स्थित मैदान में 11 और 12 जुलाई को विशाल धर्मशाला आयोजित की गई। दोनों दिन युवा मुनि के प्रवचनों की भारी सराहना हुई, वहाँ के प्रबुद्धजन मुनिवर की प्रवचन कला से चकित थे। समाज के लोगों ने श्री रमेश जी बिजनौर श्री अशोक जी लाड़नू एवं श्री लक्ष्मण प्रसाद सहित श्रीफल

अर्पित कर चातुर्मास के लिए प्रार्थना की। संतवर मुस्काते रहे, किसी को स्वीकृति न दे सके। प्रवचनोपरांत 12 जुलाई की शाम को विहार कर साढूमल जा पहुँचे। दूसरे दिन वहाँ से भी चल पड़े और 14 किमी. की दूरी पारकर छायनगाँव के शालाभवन में रात्रि विश्राम हेतु रुके। दूसरे दिन चंद्रप्रभु कॉलोनी मंदिर के लोगों को समय दिया। वहीं श्री मनोज पठा, विमलेश दीदी के साथ पहुँचे। पठा-समाज के लोगों ने निवेदन किया कि पठा में विधान चल रहा है, आप चलने की कृपा करें किंतु मुनिवर समय देने तैयार नहीं हुए। तब पठा-वासियों ने कहा—'हे महाराज यहाँ से ही आशीर्वाद प्रदान कीजिए कि विधान के सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होवें।' दिया उन्होंने सुखद आशीष।

महरौनी प्रवेश

महारौनी के कार्यकर्ताओं ने अपनी बस्ती को राजकुमारी की तरह सजाया था। मुनिवर को सीमा पर आते देख, विशाल जनसमूह अगवानी करने गया। पाद प्रच्छालन और आरती के बाद मुनिसंघ ने महरौनी प्रवेश किया। जुलूस के आगे-आगे धर्म पताकाएँ लिए युवक और वाद्ययंत्र बजाते हुए लोग शान से चल रहे थे। कुछ ही समय में भव्य-प्रवेश सम्पन्न हुआ। मुनिवर महरौनी स्थित बड़े मंदिर जी में पहुँच गए।

महरौनी चातुर्मास-2000

दूसरे दिन ही 15 जुलाई को हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में मुनिवर विमर्शसागर जी ने विशेष समारोह के अंतर्गत 'चातुर्मास स्थापना' का कार्यक्रम सम्पन्न किया। विधि-विधान हेतु प्राचार्य पं. जयकुमार जैन साढूमल उपस्थित थे। उस दिन विशाल जन समुदाय के मध्य कार्यकर्ताओं ने एस.डी.एम. महरौनी को मुख्य अतिथि बनाया। वे जितनी देर रुके मुनिवर की ओर एकटक देखते रहे, हुए थे बहुत प्रभावित। प्रवचन सुनने के बाद अतिथि महोदय भारी संतुष्टि अनुभूत करते हुए विदा हुए।

16 जुलाई को विशाल स्तर पर गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। सभा-स्थल श्रोताओं से खचाखच भरा था। अनेक भक्तों ने पूज्य मुनिवर के पादप्रच्छालन कर शास्त्र भेंट किए, फिर मुनिवर ने गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर उत्तम उपदेश प्रदान किए।

17 जुलाई को मुनिवर के सान्निध्य में महरौनी समाज ने वीर शासन जयंती पर्व मनाया, उस दिन पूज्य विमर्शसागर जी ने वीरशासन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला जिससे श्रोताओं के नेत्र खुल गए।

वर्षायोग के कार्यक्रमों के साथ साथ मुनिसंघ की साधना और चर्या भी

सात्विकता पूर्ण चली। तभी 'भक्तामर-शिक्षण-शिविर' के आयोजन की चर्चा हुई, गुरुवर ने सान्निध्य देने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी।

भक्तामर शिक्षण शिविर

7 अगस्त 2000 को शिविर प्रारंभ किया गया जिसमें गुरुवर के सान्निध्य में भक्तामर कलश स्थापना का गौरव श्री शिखरचंद चौधरी एवं उनके परिवार को मिला। गुरुवर के मुख से जब भक्तामर का श्लोक मुखरित हुआ तो लगा कि एक हरे भरे विशाल वृक्ष से सुगंधित पुष्प झर रहे हैं चारों ओर आनंद।

उसी दिन मुकुट सप्तमी का भव्य आयोजन भी सम्पन्न किया गया, ससमूह भगवान पार्श्वनाथ का पूजन-वंदन।

रक्षाबंधन

कभी-कभी एक तिथि दो पर्वों का सुख प्रदान करती है, उस समय भी ऐसा ही हुआ, 15 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व मनाया गया तो स्वतंत्रता दिवस समारोह को भी याद किया गया। मुनिवर ने दोनों पर्वों पर आवश्यक जानकारियाँ प्रदान कीं। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भक्तों ने रक्षाबंधन के अवसर पर मुनिवर के करकमलों से 'ब्रह्मसूत्र' धारण किया। सम्पूर्ण समाज में आनंद की तरंगे लहरा रही थीं।

पर्युषण पर्व

महरौनी में हर साल पर्युषण पर्व सम्पन्न होता रहा है किन्तु इस बार का पर्व कुछ विशिष्ट बन गया था क्योंकि सौभाग्यवती नारी की गोद की तरह महरौनी की गोद में मुनिवर विराजे हुए थे। 3 सितम्बर से 12 सितम्बर तक श्रमणों के साथ-साथ श्रावकों ने भी भारी साधनापूर्वक पर्युषण पर्व मनाया। मुनिवर नित्य एक धर्म पर प्रभावनाकारी ऐसा प्रवचन देते थे कि भक्तगण दूसरे दिन समय के पहले खिंचे चले आते थे। अपने प्रिय की वाणी सुनने। एक मायने में पर्युषण पर्व की अवधि में पूरा नगर ही मंदिर जैसा पावन हो गया था। लोग मंदिर में हों या घर में, चर्चा केवल व्रतों पर और दसलक्षण धर्म पर होती थी।

14 सितम्बर को मुनिवर के चरण-सान्निध्य में क्षमावाणी पर्व मनाया गया जो उनके उपदेश के कारण ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। पहले बड़े मंदिर जी से विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें ललितपुर के चाचड़ खेलने वाले खिलाड़ी विशेष रहे। शोभायात्रा नगर भ्रमण करती हुई क्षेत्रपाल जी पहुँची, वहाँ समाज की ओर से शोधपूर्ण भोजन की व्यवस्था की गई थी, फलतः सभी लोगों ने लाभ लिया और घरों को आ गए। मध्यान्ह में क्षमावाणी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर मुनिवर ने प्रवचन को करुणा के रंग में घोलते हुए सम्बोधित

किया—'अरे श्रावको, तुम क्षमापर्व पर भी मात्र अपने मित्र या रिश्तेदार से क्षमायाचना करते हो, यह किंचित् सभ्यता है, पूर्ण सभ्यता तब पनपेगी जब आप अपने दुश्मन के सामने जाकर उससे क्षमायाचना करेंगें। यदि सभ्यता से धर्माचरण किया जावे तो जीवन में कोई किसी का वैरी नहीं बन सकता। अभी यहाँ जिन-जिन का आपस में वैर है, वे लपककर एक-दूसरे के समक्ष जावें क्षमा याचना करें और गले मिलें। तभी क्षमाधर्म का निर्वाह होगा।

मुनिवर की वाणी सुनकर लोगों के चेहरे विद्युत की तरह चमक पड़े, वे अपने-अपने वैर को समाप्त करने, वैरियों से घुलमिल गए। अनेक लोगों की आँखें गीली हो गई। सभी की जिह्वा मुनिवर के गुण गा रही थी। वर्षों का वैर क्षणभर में धुल गया था।

अहिंसा दिवस

महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर पर मुनिवर के सान्निध्य में अहिंसा रैली निकाली गई और महात्माजी के जन्मदिन को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में, नगर के सार्वजनिक स्थल पर मनाया गया। हजारों जैनों और अजैनों के मध्य मुनिवर ने भगवान महावीर की अहिंसा पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को बतलाया कि जैनसमाज ही नहीं हर समाज का कर्तव्य है कि अहिंसा धर्म का निर्वाह करे। मांसाहार का त्याग करे, शाकाहार को अपनाए। पशुओं की सुरक्षाहेतु गौशाला स्थापित करे। इसी तरह सरकारें भी पशु वध करनेवाले कर (हाथ) और कत्लखानों को रोकें। मांस निर्यात बंद करे। सभी लोग मांस, मदिरा तथा मधु का त्याग करें और सदाचारी बनें।

समूचे कार्यक्रम की श्रोताओं द्वारा भारी सराहना की गई। सभी ने स्वीकार किया कि मुनिवर धर्म की बातें भर नहीं सुनाते, धर्माचरण के लिए प्रेरित भी करते हैं।

डायमंड जुबली

मुनिवर श्री विमर्शसागर जी के आगमन से महरौनी का हरपल हीरा जैसा कीमती हो गया था। लोग अपने मुनि को पलभर भी छोड़ने को तैयार नहीं होते थे। ऐसी मनोहर स्थिति देखकर जैन-समाज महरौनी ने मुनिवर के वर्षायोग के 100 दिन पूर्ण होने के उपलक्ष्य में युवावर्ग, महिलावर्ग और छात्रवर्ग के सहयोग से भव्य 'डायमंड जुबली' का आयोजन किया, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम हर वर्ग के द्वारा मुनिवर के सम्मान में प्रदर्शित किए गए। श्री सतीश सिंघई ने मुनिवर श्री विमर्शसागर जी के जीवन पर आधारित अनेक प्रश्नों का एक क्विज आयोजित किया और हर उम्र के लोगों से एक-एक प्रश्न के उत्तर पूछे। सभी के उत्तर आनंददायक होते थे। कुल मिलाकर उस दिन एक

सांस्कृतिक कार्यक्रम की विशाल आयोजना दर्शकों के समक्ष रखी गई थी।

मेन मार्केट

महरौनी के मुख्य बाजार में मुनिवर के पंचदिवसीय सार्वजनिक प्रवचनों का गौरवपूर्ण आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिदिन मुनिवर धर्म के साथ साथ, समाज से जुड़े विषयों पर धारावाहिक प्रवचन करते थे। नगर के कोने-कोने से श्रोतागण उपस्थित होते थे। इस कार्यक्रम की सराहना जैनों के साथ-साथ अजैनों के मुख से भी सुनी गई।

निष्ठापन

मुनिवर ने ससंघ 27 अक्टूबर को प्रातःकाल विधि-विधानपूर्वक चातुर्मास की निष्ठापना की। उसी दिन निष्ठापना के पूर्व, प्रभात बेला में भगवान महावीर के परिनिर्वाण को याद किया गया, श्रद्धापूर्वक पूजा की गई एवं मोक्ष लाड्डू चढ़ाए गए।

महरौनी में चंद्रप्रभु जिनालय जो मड़ावरा रोड पर स्थित है, में वेदी की आवश्यकता अनुभूत की जा रही थी, इस विषय पर वहाँ के कार्यकर्ताओं ने मुनिवर से सान्निध्य प्रदान करने की प्रार्थना की। दूसरे दिन मुनिवर विशाल जनसमूह के साथ चन्द्रप्रभु जिनालय पहुँचे, वहाँ वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम शिक्षक कॉलोनी परिसर में 6 नवम्बर 2000 को मुनिवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास की कतिपय विशेष झलकियाँ यहाँ देना उचित होगा।

नवयुवकों को कर्तव्यबोध

एक दिन मुनि विमर्शसागर जी की विधि नहीं मिली। वे लौटकर वसतिका में आ मौन हो गए। नगर में चर्चा का विषय हो गया।

दूसरे दिन जब मुनिवर आहारचर्या के लिए निकले तो श्रावकों का समूह विधि ज्ञात करने चल रहा था। संयोग से विधि मिल गई। मुनिवर का आहार निरंतराय हुआ। सुधी श्रावक वसतिका तक साथ आए। उत्सुकतावश मुनिवर से विधि के विषय में पूछा। मुनिवर ने सरल भाव से बताया, तीन पुरुषों की विधि थी। जो पड़गाहन के लिए एक साथ खड़े थे।

अगले दिन युवाओं की टोली साथ चल रही थी। विधि न मिलते देख कुछ युवा श्रावक के परिधान में शीघ्र उपस्थित हुए यह सोचकर कि कहीं मुनिवर ने पाँच पुरुषों की विधि न ले ली हो। उनकी सोच सही रही, मुनिवर की विधि मिल गई। निरंतराय आहार होते ही जय-जयकार होने लगी।

मुनिवर की विधि का यह क्रम नित्य बढ़ता ही गया। उधर युवाओं को भी यह ज्ञात हो गया कि मुनिवर पुरुषों की विधि लेकर निकल रहे हैं। अतः श्रावक के परिधान में पूर्व से ही तैयार रहने लगे।

मुनिवर ने 3 पुरुषों से लेकर 51 पुरुषों की विधि तक ली। जिससे सैकड़ों नवयुवक स्वयमेव मुनिचर्या हेतु खड़े दिखाई देने लगे। जैन तो जैन अजैन भी कौतूहल से आहारचर्या देखने चले आते। 10 बजे तक द्वार-द्वार गली-गली पीत वस्त्र धारण किए युवाओं का पंक्तिबद्ध समूह दिखाई देने लगा। समाज के कुछ प्रबुद्ध लोग तो कहने लगे, जिन बच्चों को हम मंदिर जाने की मनुहार करते थे, वे मुनिवर के प्रभाव से स्वयमेव मंदिर आने लगे हैं।

मुनि विमर्शसागर जी ने नवयुवकों को आचार-विचार की शिक्षा देकर कर्तव्यबोध कराया। मुनिवर के प्रभाव से आबाल-वृद्ध धर्म के रंग में रंग गया।

मिलन संतों से

वर्षायोग समाप्त होने के कुछ ही दिन बाद पूज्य विमर्शसागर जी को संदेश प्राप्त हुआ कि आचार्य पद्मनंदी जी महाराज ससंघ महरौनी पधार रहे हैं। निश्चित समय पर मुनि विमर्शसागर जी एवं मुनि विश्वपूज्यसागर जी विशाल जनसमूह के साथ करीब एक किमी. दूर तक आचार्यश्री को लेने गए। समाज ने मुनि संघ के सान्निध्य में आचार्य संघ की सोत्साह अगवानी की। दोनों संघ विशाल शोभायात्रा के साथ नगर में आए। प्रभु दर्शन के बाद प्रवचन सभा की आयोजना की गई। दोनों संघों के प्रमुखों ने प्रवचन किए, पहले मुनि विमर्शसागर जी के हुए। उन्हें सुनकर आचार्य पद्मनंदी जी को भारी वात्सल्य हो आया। बाद में उन्होंने अपने प्रवचन में मुनिवर की शैली की सराहना की।

पद्मनंदी जी सिगड़ी पर तैयार किया गया आहार लेते थे अतः कार्यकर्ताओं ने चौकावाले घरों में फटाफट सिगड़ियाँ पहुँचाई। सभी के निरंतराय आहार हुए। दोपहर में संतों के मध्य धार्मिक चर्चाएं होती रही। मुख्य चर्चा यही थी कि साधुगण संघ में प्रतिमा लेकर चलें या नहीं। चर्चा मात्र चर्चा ही रही, निष्कर्ष किसी ने स्पष्ट नहीं किया।

दोपहर पश्चात् आचार्य पद्मनन्दी जी ससंघ विहार कर गए, जाते-जाते संदेश दिया कि दो एक दिन में श्री श्रुतनंदी जी ससंघ इसी रास्ते से आ रहे हैं, वे शायद कुछ समय तक रुक सकेंगे। हुआ भी ऐसा ही। दो दिन बाद मुनि श्रुतनंदी जी, मुनि मार्दवनंदी जी, मुनि अमरनंदी जी एवं क्षुल्लक पद्मसागर जी का आगमन हुआ। दोनों संघों का वात्सल्यपूर्ण मिलन। दोनों संघ करीब दो माह तक महरौनी में रहे, दोनों के साथ-साथ प्रवचन होते थे। एकदिन श्रुतनंदीजी ने विमर्शसागर जी की साधना से अभिभूत होकर कहा 'ये तो साक्षात् सुकुमाल

मुनि हैं।' श्रोतागण सुनकर गद्‌गद् हो गए। कुछ ही दिन बाद मुनि विश्वकीर्तिसागर, ऐलक विनम्रसागर एवं क्षुल्लक विनिश्चल सागर का भी आगमन हुआ। तीनों संघों का मिलन देखकर सारा नगर आनंदित था।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह

पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार सभी साधुओं और श्रावकों की उपस्थिति में 14 दिसम्बर को मुनि विमर्शसागर जी ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह महरौनी के मुख्य बाजार (मेन मार्केट) में किया गया। जिसका संचालन विमर्शसागर जी के संकेतानुसार ऐलक विनम्रसागर जी ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। मुनि विमर्शसागर जी की पीछी श्री शिखरचंद जी कठरया ''दाऊ'' को प्राप्त हुई, जिसे वे शोभायात्रा के साथ अपने घर ले गए।

उसी माह में मुनि विमर्शसागर जी और ऐलक विनम्रसागर जी के सान्निध्य में पूजन प्रशिक्षण शिविर का सार्थक आयोजन रखा गया, जिसमें उपस्थित श्रावक श्राविकाओं, युवक-युवतियों और छात्रों को मंदिर जी में अभिषेक एवं पूजन करने की प्रशस्त शैली समझाई गई। शीतकाल की सम्पूर्ण अवधि धर्मानंद से आच्छादित रही। भक्तों को कड़क ठंड का समय नहीं सता पाया। शिविर पूर्ण होने पर ऐलक विनम्रसागर जी ने टीकमगढ़ की ओर विहार किया।

मुनि श्रुतनंदी जी का विहार

ऐलक श्री के विहार के कुछ ही दिन बाद मुनिश्री श्रुतनंदी जी का विहार हुआ, जाते-जाते उन्होंने प्रवचनों में स्पष्ट किया—'मुनि विमर्शसागर जी मेरे साथ पुत्र की तरह पेश आए, मुझे पिता की तरह सम्मान दिया, खूब सेवा की, शायद इतनी तो वर्तमान के पुत्रगण भी अपने पिता की नहीं करते हों उनका वात्सल्य और आदरभाव देखकर मेरी भावना हो रही है कि भविष्य में भी किसी नगर में इसी तरह पावन मिलन हो सकेगा।'

महरौनी चातुर्मास अभूतपूर्व ढंग से सम्पन्न हुआ था तो शीतकाल भी अत्यंत प्रभावक और आनंददायक रहा। जिसमें समाज ने उत्तम व्यवस्था तो बनाई ही, साधु-सेवा भी खूब की। खासतौर से श्रीकपूरचंद लौड़ुआ, श्री शिखरचंद चौधरी, श्री शिखरचंद कठरया, श्री राजकुमार सतभैया, डॉ. के.सी. जैन, श्री महेन्द्र बाबा, श्री धन्यकुमार पवैया, श्री सतीश सिंघई, श्री प्रशांत सिंघई, श्री अनिल मिठया, श्री प्रशांत चौधरी, श्री जैन बांदरी, श्री ऋषभ कठरया, श्री कोमलचंद सिंघई, श्री अरविंद रेडियो आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उपदेश ने कार्ड बदला

19 जनवरी 2001 को मुनिश्री ने नित्य की तरह अत्यंत महत्वपूर्ण धर्मोपदेश दिया जिसका मुख्य उद्देश्य था—

दिन में शादी, दिन में भोज।
मात-पिता की, सेवा रोज।।

मुनिवर की वाणी ने ऐसा चमत्कार किया कि हर श्रोता संकल्प लेने बाध्य हो गया। इस अवसर पर श्री केवलचंद जैन (भैयाजी परिवार) में शादी के कार्ड छापे जा चुके थे, किंतु जब मुनिवर का प्रवचन सुना तो वे तुरंत प्रेस की ओर गए और कार्ड पर एक पंक्ति और मुद्रित कराई—'पूज्य मुनि 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज के उपदेशानुसार सभी वैवाहिक कार्यक्रम दिन में सम्पन्न होंगे। उनके इस श्रेष्ठ परिवर्तन ने सारे गाँव में परिवर्तन की लहर को दिशा दी और मुनिवर के संकेतानुसार सभी भक्तों ने दृढ़तापूर्वक दिन में कार्यक्रम करने का संकल्प लिया।

धर्म की विदाई

मानव जीवन से यदि धर्म विदा हो जावे तो शेष जो बचेगा, उसमें 'मानवता' कम अधकचरापन अधिक रहेगा, अतः उत्तम लोग कभी अपने हृदय से धर्म को विदा नहीं करते। वे उसे धारण किए रहते हैं। 20 जनवरी को मुनिवर के विहार की भनक समाज को लग गई अतः धीरे-धीरे समस्त भक्तगण दोपहर की सभा में समय से पहले उपस्थित हो गए। थे वे उदास क्योंकि मुनि विमर्शसागर के रूप में 'धर्मावतार्' विदा हो रहे थे। उन्होंने मुनिवर को धर्म की तरह हृदय में अंगीकार कर लिया था, अतः वे विदा करने तैयार नहीं थे। कुछ भाईयों और बहिनों की अश्रुधारा शुरू हो गई थी, जैसे बेटी को विदा कर रहे हों। तब मुनिवर ने कहा—'बेटी विदा होती है तो भी आती-जाती रहती है, वह घर से विदा होती है, हृदय से नहीं।'

लोगों को समझते हुए विलम्ब नहीं लगा कि मुनिवर तो धर्म की तरह मन में बसे थे, फलतः विदा होंगे भी तो मुनि के रूप में होंगे, जो धर्म उन्होंने बतलाया है वह हृदय में तरंगित होता रहेगा। अतः हम उन्हें विदाकर अभी से उनके आगमन की प्रतीक्षा करें और आनंद पावें।

भक्तों के अनेक अनुरोधों के बाद भी मुनिवर विमर्शसागर जी ने ससंघ मड़ावरा की ओर विहार कर दिया।

मुनिवर सैदपुर और फिर साढूमल होते हुए मड़ावरा पहुँचे रुके बारह दिन। गए फिर अतिशय क्षेत्र सीरोंज जी। फिर गोना बस्ती होते हुए तीर्थ क्षेत्र नवागढ़

पहुँचे। वंदन अर्चन किया फिर गए बड़ागाँव, वहाँ सात दिन का समय दिया और भारी धर्मप्रभावना की।

मुनि विमदसागर से मिलन

विमर्शसागरजी ने बड़ागाँव से विहारकर घुवारा की दिशा पकड़ी। वहाँ मुनि 108 श्री विमदसागरजी, क्षुल्लक कुंदकुंदसागरजी एवं क्षुल्लक विश्वमूर्तिसागर जी विशाल जनसमूह के साथ अगवानी करने पहुँचे। साधु संघ का मनोहारी मिलन देखकर घुवारा निवासी जैन तो जैन, अजैन लोग भी आत्म-विभोर हो उठे। शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश किया फिर दोनों संघ बड़े मंदिर की धर्मशाला में ठहरे। सभी साधुओं की चर्या साथ-साथ होने लगी।

दोपहर में मुनि विमर्शसागरजी मूलाचार जी पर प्रवचन करते थे। जिन्हें सभी साधुगण एवं श्रावकगण ध्यान से सुनते थे।

मिली-जुली चर्या लोगों को निर्मल आनंद दे रही थी, वे देखते कि सुबह दोनों मुनिराज साथ-साथ शौच के लिए किले की ओर जाते हैं, फिर घंटा भर बैठकर वहीं ध्यान साधना करते हैं। 9.30 बजे लौटकर प्रवचन-गंगा बहाते हैं, उसके बाद आहार चर्या को समय देते हैं। क्रम कुछ दिन तक अनवरत चलता रहा तब तक भारतीय त्यौहार होलिकोत्सव का समय आ गया। गाँव के लोग होली के आनंद में भी धर्म के आनंद को बनाए हुए थे, किंतु ठीक होली के दिन चर्या को जाते मुनि विमर्शसागर जी को किसी अपात्र व्यक्ति ने अज्ञानवश छू लिया। अतः जाने क्यों उस दिन मुनिवर आहार को नहीं उठे। कर लिया उपवास।

सिद्धचक्र महामंडल विधान घुवारा : 2001

समाज के आत्मीय आग्रह पर मुनि विमर्शसागरजी ने 2 मार्च से 11 मार्च तक सम्पन्न होनेवाले सिद्धचक्र महामण्डल विधान को सान्निध्य दिया फलतः वहाँ कुछ अधिक ही धर्मप्रभावना परिलक्षित की गई। विधानाचार्य थे पं. रमेशचंद जैन। मार्च 11 को रथयात्रा का आयोजन किया गया। हाथियों पर बैठे इन्द्र-इन्द्राणियों के साथ दोनों संघों के सान्निध्य में विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जो नगर-भ्रमण करती हुई वर्णी कॉलेज प्रांगण में पहुँची। अपार जन-समूह के मध्य मुनि विमर्शसागर जी और मुनि विमदसागर जी के प्रभावशाली प्रवचन सम्पन्न हुए। उस दिन मुनिभक्त व समाजसेवी श्री कपूरचंदजी घुवारा विधायक ने भी सभा को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के उपरांत मुनि विमदसागरजी ससंघ ने विहार कर दिया, जिन्हें छोड़ने मुनि विमर्शसागरजी ससंघ कुछ दूर तक गए। मगर यह क्या, कुछ समय बाद मुनि विमर्शसागरजी ने भी ससंघ विहार कर दिया और रामटोरिया की ओर

कदम बढ़ा दिए। वहाँ 14 मार्च 2001 से 23 मार्च 2001 तक णमोकार महामंत्र का अखण्ड पाठ सम्पन्न किया गया। इस बीच नित्य मुनिवर के प्रवचन भी होते रहे। बाद में मुनिवर ने शाहगढ़ की ओर विहार किया।

शाहगढ़ में महावीर जयंती : 2001

नगर शाहगढ़ में पूर्व से ही मुनिश्री विशुद्धसागर जी, मुनिश्री विशल्यसागर जी एवं मुनिश्री विश्ववीर सागर जी अवस्थित थे। जब उन्हें समाचार मिला कि अनुज तुल्य मुनि विमर्शसागर जी ससंघ पधार रहे हैं तो उनके वात्सल्य भाव ने उन्हें रुकने नहीं दिया, वे विशाल जनसमूह के साथ कनिष्ठ मुनि की अगवानी करने पहुँचे। साधुओं का वह मिलन अनोखा था। देखनेवालों की आत्मा का आनंद आँखों से छलक-छलक पड़ रहा था। दोनों संघ शोभायात्रा के साथ बड़े मंदिर जी पहुँचे। वहाँ दोनों प्रमुख मुनियों के आल्हादकारी प्रवचन हुए, जनसमूह को लगा कि वे कानों से शब्द नहीं, अमृत पी रहे हैं। प्रतिदिन दोपहर में श्रेष्ठग्रंथ श्री पंचास्तिकाय का स्वाध्याय मुनिश्री विशुद्धसागर जी द्वारा किया जा रहा था। फलतः उस दिन मंच पर मुनि विशुद्धसागर जी ने मुनि विमर्शसागर जी को पंचास्तिकाय ग्रंथ भेंट किया और सवात्सल्य कहा–'इसका स्वाध्याय अवश्य करना।'

समय जाते देर नहीं लगती, धीरे-धीरे 16 अप्रैल 2001 का पावन दिन महावीर जयंती का आ गया, समाज सेवियों ने भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। उस दिन शाहगढ़ के मुख्य बाजार के विशाल-चौक पर विराट जनसमूह के मध्य धर्मसभा हुई थी। मगर लोग सदा की तरह महावीर जयंती की प्रातःकालीन शोभायात्रा निकालना नहीं भूले थे। पहले संतों के साथ भगवान महावीर को पालकी में विराजित कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई, फिर चौक के विशाल मंच पर हुए मुनिराजों के प्रवचन। पहले मुनिश्री विश्ववीरसागर जी, फिर मुनिश्री विमर्शसागर जी, मुनिश्री विशल्यसागर जी और अंत में मुनिश्री विशुद्धसागर जी ने सम्बोधित किया। उपस्थित सहस्रों जैनाजैन भक्त सुनकर अभिभूत हो गए।

हुआ फिर कुछ दिन बाद मुनिवर विमर्शसागर जी ससंघ का विहार। वे शाहगढ़ से नरवाँ, कारीटोरन एवं गिरार जी आदि क्षेत्रों की वंदना करते हुए बरायठा पहुँचे। वहाँ के प्रमुख बंधुगण मुनिसंघ की अगवानी हेतु नगर से 2 किमी. बाहर आकर पादप्रच्छालन और आरती का पुण्य पा सके। जिनमें पंडित राजकुमार जैन एवं श्री ऋषभकुमार जैन प्रमुख थे। शोभायात्रा के साथ मुनिसंघ को धर्मशाला में ठहराया गया। दूसरे दिन से नगर के लोग प्रवचनों का लाभ लेने लगे।

श्रुतपंचमी : 2001

बरायठा नगर का सौभाग्य था कि पूज्य विमर्शसागर जी उनके नगर में पधारे थे। अतः उन्होंने मुनिवर के सान्निध्य में 27 मई 2001 को श्रुतपंचमी पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया। मुनिवर ने श्रुत पंचमी पर्व के विषय में आगमिक जानकारी प्रदानकर, जनमानस को सद्ज्ञान प्रदान किया। मंच का संचालन पं. राजकुमार शास्त्री ने किया।

हाथ में 'मोहर' आ जाए तो आदमी अपने आप प्रशस्त विचारों में खो जाता है, बरायठा वालों के हाथ मे मोहर से बड़ी चीज आ गई थी, अतः उन्होंने विनयपूर्वक उसका लाभ लिया और मुनिवर के सान्निध्य में ग्रीष्मकालीन वाचना की लम्बी अवधि प्राप्त कर ली। इस बीच 21 मई से 31 मई तक पूजन प्रशिक्षण शिविर का रचनात्मक किंतु धार्मिक आयोजन किया गया। जिससे बाल-वृद्ध आदि सभी लाभान्वित हुए।

वाचना पूर्ण होने के बाद नगरवासियों ने एक धर्मसभा दोपहर में बाजार-क्षेत्र में कराई। मुनिवर ने धर्मवर्धक श्रेष्ठ प्रवचन किया, लोग सराहना कर रहे थे, तभी वे ससंघ बंडा नगर की ओर विहार कर गए। सारा-गाँव पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

बंडा नगर प्रवेश

4 जून 2001 को मुनिसंघ ने बंडा नगर में प्रवेश किया। समाज ने भव्य आगवानी की। शोभायात्रा बड़े मंदिर पहुँची, वहाँ ही आहारचर्या आदि सम्पन्न हुई।दूसरे दिन समाज ने मुनिवर से आज्ञा लेकर प्रवचन सभा का आयोजन किया, जिसमें लगभग समस्त ग्रामवासी उपस्थित हुए, साथ में विद्वत्वर्ग और समाजसेवी गण भी। अध्यक्ष, मंत्री आदि आदि। मुनिवर ने रत्नकण्डक श्रावकाचार पर प्रवचन शुरू किए, पहले अत्यंत मधुर लय में मंगलाचरण का श्लोक पढ़ा–

नमः श्री वर्धमानाय निर्द्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद् विद्या दर्पणायते।।

युवा किन्तु विद्वान मुनिश्री विमर्शसागर जी ने जब मंगलाचरण की व्याख्या शुरू की तो लोग ध्यानमग्न होकर सुनते रहे। उन्हें पता ही न चला और एक घंटा बीत गया। तब मुनिवर बोले–'आज इतना ही, शेष व्याख्या कल बतलायेंगे।'

लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब वह प्रवचन एक या दो दिन नहीं, चार दिन में पूरा हुआ। सभी श्रोता आनंदित थे तो आश्चर्य भी कर रहे

थे कि एक श्लोक पर चार दिन तक प्रवचन? सबका खूब मन लगा था, वे मन की गहराई से प्रभावित हुए थे। फिर उनकी दृष्टि मुनिवर की आहारचर्या पर भी गई, चार दिनों में ही उन्हें विश्वास हो गया कि मुनिवर की चर्या कठोर है, संयम दृढ़ है और स्वभाव अत्यंत सरल। छवि सौम्य है–'न काहू से लेना न काहू को देना, सदा प्रसन्न रहना।'

एकदिन दो समाज सेवी अध्यक्ष महोदय के साथ आए और मुनिवर से तेरा और बीस पंथ विषयक समाधान चाहने लगे। मुनिवर ने सरलता से उत्तर दिए जिससे वे संतुष्ट हुए। वहाँ ही संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज से संयम व्रत प्राप्त कुछ दीदीयाँ भी उपस्थित थीं, वे भी मुनिवर से प्रभावित हुई थीं, अतः अध्यक्ष के चले जाने के बाद उन्होंने सहज भाव से बोला–'महाराज आप व्यर्थ के प्रश्नों के समाधान करने में ऊर्जा नष्ट न किया करें।' तब मुनिवर ने आत्मीय वात्सल्य प्रदान करते हुए बतलाया–'जितना जान पाया हूँ उतना बतला देता हूँ, झंझटों में नहीं पड़ता।' चूंकि मुनिवर की तरह दीदियों का अभिप्राय भी सात्विक था अतः वे सहजता से अपने स्थान की ओर चली गईं।

उसी दिन अपरान्ह बेला में मुनिवर ने उस मंदिर से विहार कर दिया और श्री शांतिनगर मंदिर जा पहुँचे। कुछ ही मिनटों के बाद दीदियां भी पहुँच गईं और अपनत्व छलकाते हुए बोलीं–'महाराजश्री! आपको अभी विहार नहीं करना था, दो-एक दिन और रुकना चाहिए था।' मुनिवर उनके वात्सल्य से अभिभूत हो गए और आशीर्वाद देते हुए संकेत किया कि जो उचित लगा, वह कर दिया। तब विदुषी दीदियों ने संकोच प्रकट करते हुए पूछा 'आपने कभी पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी की आहारचर्या का अवलोकन किया है?' मुनिवर सहजता प्रकट करते हुए बोले–ऐसा सौभाग्य तो मुझे नहीं मिला, किंतु पूर्व में तीन बार उनके दर्शन अवश्य किए हैं। दीदियाँ मुनिवर के उत्तर से खुश हुईं। पुनः मुनिवर से बोलीं–'आपकी चर्या उनसे मिलती हुई लगती है।' मुनिवर ने उनकी ओर आशीष का हाथ उठाया, फिर संकेत किया–'प्रतिक्रमण का समय हो रहा है।' मुनिश्री मौन हो गए। दीदियाँ चली गईं।

नेमिगिरि बंडा

दूसरे दिन मुनिवर ने नवनिर्मित जिनालय नेमिगिरि की ससंघ वंदना की और बंडावासियों की लगन की सराहना भी की। उसी दिन वहाँ प्रवचन सभा को सान्निध्य दिया। शाम (8 जून 2001) को विहार कर दिया।

सागर प्रवेश : 2001

9 जून के सुबह मुनिवर ससंघ सागर नगर की सीमा पार कर रहे थे, तभी मकरोनिया (कॉलोनी) के भक्तों ने उनकी आगवानी की, फिर ले गए मंदिर

जी। वहाँ नवनिर्मित मध्यलोक के सभाभवन में प्रवचन सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक श्रोताओं के साथ पं. उदयचंद शास्त्री, श्री एस.के. जैन श्री एस.सी. जैन, श्री एम.सी. जैन, श्री एस. के जैन, श्री ए.के. जैन, श्री एन.सी. जैन एवं श्री लालचंद जैन आदि उपस्थित हुए। उक्त सभी लोगों ने प्रवचन से पूर्व मुनिवर के चरणों में श्रीफल अर्पित किए, साथ ही मुनिभक्ति प्रगट करते हुए उद्बोधन भी दिए।

12 जून 2001 को पूज्य मुनिवर विमर्शसागर जी ससंघ के सान्निध्य में धूमधाम से पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी का 34वाँ मुनिदीक्षा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुनिवर ने आचार्यश्री के संयमपूर्ण जीवन की गौरव के साथ चर्चा की।

कार्यक्रम के बाद समाज के लोगों को बहुत अच्छी अनुभूति हुई, कुछ लोगों ने स्वीकार किया कि मुनिवर में संघवाद की हल्की मानसिकता नहीं है, वे सरल स्वभावी हैं। दूसरे दिन श्री एस.के. जैन के साथ सामाजिक बंधुओं ने मुनिवर को श्रीफल अर्पित करते हुए वहीं, (मकरोनिया स्थित अंकुर कॉलोनी में) वर्षायोग करने का निवेदन किया। दोपहर में भक्तगण पुनः मुनिवर के पास पहुँचे, तब उन्होंने बतलाया कि मेरे गुरुवर पूज्य आचार्य विरागसागर जी गया नगर में विराजमान हैं, मेरा पत्र लेकर वहाँ जाना होगा और उनकी स्वीकृति लानी होगी। सभी सहमत हो गए और मुनिवर के पत्र की राह देखने लगे।

मुनिवर का 29वाँ जन्मोत्सव

अंकुर कॉलोनी स्थित सभी भक्तों ने 26 जून 2001 (शासकीय) को मुनिश्रेष्ठ का जन्म-महोत्सव मनाया, श्रोताओं का विशाल समूह उपस्थित रहा, जिसमें भिण्ड, महरौनी, बरायठा, तालबेहट, जतारा, जखौरा आदि विभिन्न स्थानों से अनेक भक्तगण भी थे। कॉलोनी का उत्साह देखते ही बनता था। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पुनः निवेदन किया कि मुनिवर पत्र दे दीजिए ताकि हम लोग गया जा सकें। मुनिवर ने उसी दिन शाम को पत्र दे दिया।

भक्तों को मिली सीख

कॉलोनी में स्थित मुनिवर की वसतिका को महरौनी और भिण्ड से आए भक्तों ने एक दिन पूर्व ही सजा दिया था, जिसमें गुब्बारे, थर्माकोल का केक आदि सजाकर रखे थे। जब मुनिवर दोपहर में आहारचर्या से लौटे और कक्ष की हालत देखी तो संकोच में पड़ गए, वहाँ नहीं बैठ सके, कुछ दूर दूसरे स्थान पर बैठ गए। भक्तगण भयभीत हो गए, पूछने लगे—'हे मुनिवर, हमसे क्या त्रुटि हो गई? आप कमरे में क्यों नहीं गए?' जब सभी लोग विनयपूर्वक बार-बार

पूछने लगे, तब मुनिवर ने स्पष्ट रूप से कहा–पहले कमरे से गुब्बारे, केक थर्माकोल की सजावट हटाओ, तब विचार करेंगे।

भक्तगण बोले महाराज केक असली नहीं है, वह थर्माकोल से बनाया गया है। तब मुनिवर ने समझाया–असली हो या नकली, आपकी भावना तो केक तक चली गई, यह संयम नहीं है। ऐसे उपक्रम से धर्म और धर्मात्मा की निंदा होती है। भक्तगण समझ गए, शीघ्र ही अनावश्यक वस्तुओं को कमरे से हटा दिया गया, तब कहीं मुनिवर ने प्रवेश किया।

सामाजिक कार्यकर्तागण अनेक निवेदनों के पश्चात् मुनिवर से पत्र प्राप्त करने में सफल तो हो गए थे किन्तु वे किसी कारण से उनके गुरुदेव के पास नहीं जा पाए। दूसरे दिन समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन आए और अपनी भूल पर क्षमा मांगते हुए वर्षायोग के लिए प्रार्थना करने लगे। अध्यक्ष बोले–'हे महाराज, आप सरल स्वभावी हैं, आप जैसी चर्या वाला साधु मिलना दुर्लभ है, अतः कृपया अपनी वर्षाकालीन उपस्थिति से हमारी कॉलोनी को गौरवान्वित कीजिए। राजकुमार ने आगे कहा–जो लोग पत्र लेकर नहीं गए, वे आप जानें आप तो एक पत्र मुझे दीजिए, मैं जाऊँगा और आज्ञा लेकर आऊँगा।

जहाँ उत्साह, वहाँ सफल राह। दो लोग गए और तीन दिन में अनुमति लेकर आ गए। मुनिवर विमर्शसागर जी ने अपने गुरुदेव का संदेश पढ़ने के बाद, अनुरोध करते हुए भक्तों से मुस्कराते हुए कहा–अब 99 प्रतिशत चातुर्मास की संभावना है। भक्तों ने तालियाँ पीटते हुए जयघोष किया और अपनी ओर से पुकारने लगे 99 नहीं, गुरुजी 100 प्रतिशत की बात कहिए।

दर्शनार्थ आईं आर्यिका गुणमति जी

वाणी में मृदुता, शब्दों में मिठास और स्वभाव में वात्सल्य की धनी आर्यिका गुणमतिजी ससंघ अंकुर कॉलोनी पधारीं। भक्तगण अगवानी कर उन्हें विमर्शसागर जी के समक्ष लाए। दोनों संघों में विधिपूर्वक समाचारी हुई। माताजी ने श्रद्धा सहित दर्शन किए। कुछ समय धार्मिक चर्चाएँ करती रहीं, फिर बतलाया कि उन्हें मोराजी विहार करना है। कुछ ही क्षणों बाद उनके साथ चल रहे कार्यकर्ता एवं अंकुर कॉलोनी के कार्यकर्ता माताजी को ससघ मोराजी ले गए। उस वर्ष सागर नगर धर्मनगरी बन गया था क्योंकि एक साथ कई कॉलोनियों में संतगण अवस्थित थे।

चातुर्मास स्थापना पूर्णिमा को

सागर नगर के वक्ष पर गोराबाई जैन मंदिर में आचार्य देवनंदी जी महाराज ससंघ उपस्थित थे, वे भी चातुर्मास की स्थापना चतुर्दशी को करने का मन बना चुके थे। तब पूज्य विमर्शसागरजी ने सभी क्षेत्रों के श्रावकों को वहाँ आने-जाने

की सुविधा देने के उद्देश्य से, खुद की वर्षायोग स्थापना उस दिन न कर, गुरुपूर्णिमा को करने की घोषणा की। लोग सुनकर गदगद हो गए।

उपेक्षा बनी वरदान

साधु संतों के हृदय जितने विशाल होते हैं उतने भक्तों के भी बनें, धर्म यही सिखलाता है, किन्तु कभी-कभी मन की ऊँचाईयों को समूह की कुटिलता कुचल देती है। प्रसंग शिक्षाप्रद है–

हुआ यह कि बालाचार्य बाहुबलीसागर जी मोराजी में थे, उन्हें कुछ लोग मना-मनाकर अंकुर कॉलोनी लाए और विद्याभवन में विराजमान कराकर चुपचाप चले गए। अध्यक्ष राजकुमार को ज्ञात हुआ तो वे छोड़कर जानेवालों के प्रति कुछ समय तक झुंझलाते रहे, उन्होंने बतलाया कि बाहुबलीसागर जी के चातुर्मास स्थापना की पत्रिका प्रकाशित होकर मंदिरों में पहुँच चुकी है, उसमें स्पष्ट तौर से लिखा है कि स्थापना मोराजी दिगम्बर जैन मंदिर में होगी। फिर उन्हें यहाँ क्यों छोड़ा गया? भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें चलती रहीं। कार्यकर्ताओं ने मुनिवर विमर्शसागर जी से पूछा तो उन्होंने भी स्पष्ट किया कि उनके विषय में वार्ता करने मेरे पास कोई नहीं आया। मुनिवर आहार कर ही चुके थे अतः समाचारी के लिए वात्सल्यपूर्वक विद्याभवन गए और बालाचार्य बाहुबलीसागर जी के दर्शन कर, नमोस्तु-प्रतिनमोस्तु की आगम प्रणीत विधिपूर्ण की। कुछ देर समीप बैठकर वार्ता भी की। तभी स्थानीय लोग आए और कहने लगे–'हम लोग आचार्य विरागसागरजी से मुनि विमर्शसागर संघ के चातुर्मास की अनुमति लेकर आए हैं।समाज मुनिसंघ का ही चातुर्मास चाहती है। वे आगे कुछ कह पाते, इसके पूर्व ही युवा मुनि ने वरिष्ठ मुनियों की तरह प्रज्ञा प्रधान वार्ता की। वे कार्यकर्ताओं से बोले–'भक्तो, अब स्थापना का समय सामने खड़ा है एक अकेला साधु कहाँ जाएगा? भैया हृदय बड़ा कीजिए, जिस जगह में दो बैठेंगे, वहाँ तीन बैठ जायेंगे और उन तीन की प्रेरणा से धर्म के तीन स्तम्भ याद किए जावेंगे–दर्शन, ज्ञान, चारित्र।' बहस कर रहे लोग विद्वान मुनि की वाणी के समक्ष कोई उत्तर न दे सके, मौन रह गए।

जब कार्यकर्तागण चले गए तो बालाचार्य बाहुबलीसागर जी ने अपने साथ किए गए छल को बतलाना चाहा। वे आत्मसंताप प्रकट करने के लिए कोई शब्द कहें, उसके पूर्व ही ज्ञान-दिवाकर की तरह मुनिवर विनयपूर्वक बोले–'महाराज आप विकल्प मत कीजिए। शायद हमारा आपका साथ वर्षायोग में जरूरी रहा होगा, इसलिए अब हम साथ रहते हुए साधना करेंगे।

सारे दिन कार्यकर्ताओं में और अन्य-अन्य लोगों में यही चर्चा होती रही कि तीसरे मुनि का वर्षायोग कहाँ होगा, कुछ लोग अपने आप को स्वेच्छा से अधिक

समझदार मानते हैं, ऐसे लोग चुपचाप अंकुर कॉलोनी से चलकर कुछ ही दूरी पर नेहानगर (सागर) पहुँचे और वहाँ के कार्यकर्ताओं से कहा कि तीसरे मुनि का वर्षायोग वे अपनी कॉलोनी में करा लें, चलें हमारे साथ श्रीफल भेंट करने। किन्तु समय की मजबूरी को देखते हुए कोई तैयार न हुआ, कहने लगे दो दिन बाद स्थापना होना है, हम लोगों की कोई तैयारी नहीं है, अतः क्षमा करें। समझदार लोग चुपचाप वापिस आ गए।

सागर वर्षायोग : 2001

जिस तिथि की सम्पूर्ण समाज को प्रतीक्षा थी, मुनि विमर्शसागर जी की कृपा से वह सामने आ गई। ठीक गुरुपूर्णिमा के दिन, 5 जुलाई, 2001 को मुनिवर ने ससंघ प्रातःकाल बेला में विधि-विधान पूर्वक वर्षायोग की स्थापना की। तीनों संत मुनि 108 श्री विमर्शसागर जी, मुनि विश्वपूज्य सागर जी एवं बालाचार्य बाहुबलीसागर जी को सविनय आमंत्रित करने सुबह-सुबह जो लोग श्रीफल लेकर उनकी वसतिका में गए, वे थे—अध्यक्ष राजकुमार जैन, श्री एस. के. जैन, श्री एस.सी. जैन, श्री एम.एल. जैन, श्री एन.एल. जैन श्री संतोष जैन, श्री अनूप जैन, श्री भागचंद जैन, श्री अरविंद जैन, श्री सुनील जैन, श्री विलानी जी, विद्वान श्री उदयचंद जी शास्त्री तथा लालचंद जैन।

मुनिवर विमर्शसागर जी ने सभी को आशीर्वाद दिया। फिर अध्यक्षजी को संकेत किया कि बाहुबलीसागर जी का कल उपवास हो गया था अतः उनकी आहारचर्या की व्यवस्था 8.30 बजे तक कर दें। लोगों ने वैसा ही किया।

चूँकि मंच पर तीन दिगम्बर मूर्तियाँ थीं अतः कार्यकर्ताओं ने स्थापना के लिए किसी का पृथक-पृथक नाम नहीं लिया था, उन्होंने मुनि विमर्शसागर जी को संघ प्रमुख मानते हुए, हर बार उन्हें ही पुकारा था। इस बीच बाहुबलीसागर जी ने विमर्शसागर जी से धीरे से कहा—'ये लोग मेरा नाम तो बोल ही नहीं रहे।' उनकी हार्दिक वेदना विमर्शसागर जी समझ चुके थे अतः उसे हटा देने की भावना से वात्सल्यपूर्वक समझाने लगे—'उन्होंने अब हम तीनों को अलग-अलग नहीं माना है, हमें एक समूह मानकर चल रहे हैं अतः कृपया आप विकल्प मत कीजिए, शांतचित्त से क्रियाएँ कीजिए।

मंगलकलश की स्थापना हेतु पं. उदयचंद शास्त्री ने बोली लगाई, सौभाग्य मिला श्रीविलानी जी और उनके परिवार को। मुनि विमर्शसागर जी ने तीनों संतों के नामों का उच्चारण करते हुए वर्षायोग की भक्तियाँ सम्पन्न कीं। कार्यक्रम शांतिपूर्वक सम्पन्न हो गया। लौटते हुए लोग विमर्शसागर जी की भूरि-भूरि सराहना कर रहे थे। बतला रहे थे कि संत भले ही युवा हैं किन्तु वात्सल्य के सागर हैं, अपने धर्मभाई को जिस वात्सल्य से उन्होंने अपनाया वह

श्लाघनीय है। ऐसे शांतस्वभाव के संत कम ही देखने को मिलते हैं।

वीरशासन जयंती

समारोहों का क्रम शुरू हो गया, कल स्थापना समारोह मनाया था तो 6 जुलाई को सम्पूर्ण भक्तों ने मुनिवर विमर्शसागर जी के वात्सल्य प्रधान सान्निध्य में वीरशासन जयंती समारोह भावपूर्वक मनाया। मुनिवर ने प्रभावनापूर्ण प्रवचन दिया और वीरशासन की महत्ता समझायी।

मुनिवर तो कार्यक्रमों को दिशा प्रदान करने में सिद्धहस्त हैं अतः भक्तों ने उनके निर्देशन के अनुसार 'विराट भक्तामर शिविर' की आयोजना की। प्रथम दिन से अंतिम दिन तक हर श्रावक सफेद परिधान में आता रहा। जब लोग सफेद धोती, कुर्त्ता और टोपी पहनकर सुनने बैठते तो वहाँ सामान्य जनों का नहीं, विद्वानों का विराट समूह दिखता था। शिविर में मुनिवर की विद्वत्ता शिखर स्पर्श कर रही थी।

भक्तामर पाठ मीठी लय से करते थे, हर शब्द का शुद्ध उच्चारण, हर शब्द का अर्थ, फिर पूरे श्लोक का अर्थ, भावार्थ और विशेषार्थ समझाते थे, तो लोग सुनने में ऐसे लीन हो जाते थे जैसे वे पुतले हों। प्रतिदिन छात्र, माताएँ, बहिनें और सभी उम्र के लोग रुचिपूर्वक सीख रहे थे। जिन्होंने कभी पूरा भक्तामर नहीं पढ़ा था वे मुनिवर की कृपा से पूरा भक्तामर याद करने में सफल हुए। शिविर की नित्य नई सफलताएँ जन-जन से सराहना प्राप्त कर रही थीं।

इसी क्रम में 'मुकुटसप्तमी' के दिन भगवान पार्श्वनाथ का ससमूह अभिषेक और पूजन मुनिवर के सान्निध्य में समतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आया फिर रक्षाबंधन पर्व। उस दिन मुनिवर के कथा प्रसंग से हर श्रोता अश्रु बहाने परवश हो गया। माताएँ बहिनें सिसक-सिसक कर रक्षाबंधन की कथा सुन रही थीं। मुनिवर की पीयूष वाणी से सबकी आत्मा जुड़ रही थी।

पर्युषणपर्व

अंकुर कॉलोनी में यह पर्व हर साल मनाया जाता रहा है किन्तु इस वर्ष मुनिवर का सान्निध्य पाकर लोग कुछ अधिक ही पूजा भक्ति और व्रत उपवास के लिए प्रेरित हुए। सम्पूर्ण देश ने 23 अगस्त से 1 सितम्बर 2001 तक पर्व मनाया, मगर ऐसा लगा कि सबसे अधिक आनंद कि अनुभूति अंकुर कॉलोनी वाले श्रावकों ने की है।

पर्व के पश्चात् 3 सितम्बर को मुनिवर के सान्निध्य में 'क्षमावाणी पर्व' मनाया गया। कॉलोनी के साथ साथ नगर के अनेक मोहल्लों से श्रावकगण पधारे, उनके बीच महरौनी, भिण्ड और बरायठा के भक्तों ने भी क्षमावाणी रूपी

गंगा में स्नान किया। उस दिन मुनिवर ने क्षमा का वास्तविक स्वरूप श्रोताओं के समक्ष रखा, छोटे से लेकर बड़े तक को क्षमा मांगने और क्षमा करने प्रेरित किया। उनकी वाणी से प्रभावित हो हर व्यक्ति एक-दूसरे से, वहीं पंडाल में खड़े होकर क्षमा-याचना कर रहा था। बच्चे बड़ों के, बहुएँ सासों और जिठानियों के तथा हल्के भैया बड़े भैया के चरण छू रहे थे। जिनके वर्षों से बैर ठने थे, वे नेत्रों से अश्रु बहाकर गले मिल रहे थे।

अद्भुत क्षमावाणी पर्व की चर्चा कई दिनों तक कॉलोनी में चली। लोगों को विश्वास हो गया कि वे अपना मान गलाकर, क्षमा मांगने में निपुण हो गए हैं। उस चातुर्मास की प्रभावना बातों और अखबारों तक सीमित नहीं रही, वह चर्या में ढलकर सामने भी आई, जब बरायठा निवासी आशीष जैन और भिण्ड निवासी जितेन्द्र जैन ने मुनिवर से ब्रह्मचर्य व्रत प्राप्त कर लिया। दोनों साधकों के परिधान बदल गए, वे ब्रह्मचारी बनकर मुनिश्री के चरणों में साधना करने लगे। पूरा सागर, अंकुर कॉलोनी में विमर्शसागर जी द्वारा प्रदत्त 'साधना का सागर' दीख रहा था। दोनों ब्रह्मचारी अब मुनिदीक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

आयोजनों की सफलता भर नहीं, सार्थकता देखते हुए, पूज्य विमर्शसागर जी के सान्निध्य में 'भव्य पूजन-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विशाल पांडाल में सैकड़ों शिविरार्थी प्रतिदिन प्रातःकाल से 9 बजे तक, अभिषेक और पूजन की आगम प्रणीत विधि मुनिवर के मुखारबिन्द से सीखते रहे। स्थिति यह हुई कि कॉलोनी के जैन समाज के छात्र-छात्राएँ, युवा-युवतियाँ और वृद्ध जन भी सही संदेश ग्रहण करने में सफल रहे। अनेक लोग जो पहले, साल में कुछ दिन ही पूजा-प्रच्छाल करते थे, उन्होंने भी भविष्य में नियमित रहने का प्रयास किया।

मुनिवर चौके से लौट आए

एकदिन एक मुनिभक्त परिवार मुनिवर को पड़गाहने में सफल हो गया। मुनिश्री श्रावक श्रेष्ठी के द्वार पहुँचे लकिन मन अंदर प्रवेश को नहीं हुआ। अन्य खड़े श्रावकों ने भी निवेदन किया किन्तु मुनिवर आत्मा की आवाज पर वहाँ से लौटकर अन्य चौके में चले गए। और जब आहारकर लौटे तो यह सोचकर मौन ले लिया कि उस श्रावक के पूछने पर क्या जवाब दूँगा।

जब मुनिवर वसतिका में पहुँचे, तो उपस्थित श्रावक श्रेष्ठी ने कहा—महाराजश्री! अच्छा रहा आप लौट गए। मुनिश्री ने इशारे से पूछा क्यों? उन्होंने कहा चौका कई दिनों से चल रहा था, आज हमें ऐसा लगा कि आपका पड़गाहन हमें मिलेगा, अतः लोभवश चौका लगा लिया, जबकि सुबह समाचार मिला कि भतीजे की एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। उस समय उपस्थित जिन लोगों ने सुना,

सभी ने कहा—धन्य है गुरुदेव की आत्मविशुद्धि।

कृति विमोचन

समाज का उत्साह तब समझने मिला जब उन्होंने मुनिवर की दो कृतियों का प्रकाशन कराया, एक थी 'हे वंदनीय गुरुवर' और दूसरी थी 'शंका की एक रात'। उसी तारतम्य में मुनिवर ने सश्रद्धा अपने गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागर जी का आचार्य पदारोहण दिवस धूमधाम से मनाया और अपने गुरु की विशेषताओं का स्मरण किया, गुणगान किया।

वर्षायोग निष्ठापना

देखते ही देखते चातुर्मास के महीने चम्पत हो गए, और आ गई तिथि निष्ठापना की। 15 नवम्बर 2001 को मुनिवर ने ससंघ भगवान महावीर की पूजा की और निर्वाण लाडू के साक्षी बने। की फिर निष्ठापना विधिपूर्ण। प्रवचन के बाद मुनिवर ने एक वाक्य ऐसा कहा कि सभी लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। वे बोले थे—'हो गया चातुर्मास, अब तुम भी स्वतंत्र और हम भी स्वतंत्र।'

पिच्छिका परिवर्तन समारोह

मुनिवर के निर्देशानुसार समाज ने धूमधाम से पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन किया। विशाल पंडाल में सुन्दर मंच की व्यवस्था की गई, जिस पर साधु त्रय विराजमान हुए। उस दिन मुनि विमर्शसागर जी एवं मुनि विश्वपूज्यसागर जी अत्यंत शांत भाव से पद्मासन पर बैठे थे, दृष्टि नासाग्र थी। लोग उन्हें देखते तो खुश होते। कार्यक्रम लगभग 3 घंटे तक चला। तीन समूहों ने साधुओं को बारी- बारी से नई पिच्छियाँ भेंट की। फिर तीन संयमी परिवारों को साधुओं की पुरानी पिच्छिकाएँ प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में संयम की प्रधानता पर मुनिवर के प्रवचन संग्रहणीय बन पड़े थे। बाद में सभी लोग गाजे-बाजे और शोभायात्रा के साथ पिच्छियों को अपने-अपने घर ले गए।

विवादों से दूर मुनिवर

सम्पूर्ण नगर में भारी चर्चाएँ थीं कि समीपस्थ अतिशय क्षेत्र मंगलगिरी के वक्ष पर आचार्यश्री देवनंदीजी महाराज के सान्निध्य में महोत्सव होने वाला है। पंचकल्याणक समिति के सदस्य श्रीफल लेकर मुनि विमर्शसागर जी को सविनय आमंत्रित करने आए। सभी ने स्पष्ट स्वीकृति सुनाने की प्रार्थना की, किंतु मुनिवर ने मुस्कराते हुए एक ही वाक्य कहा—देखते हैं, समय आने पर बतलाएँगे। सदस्यगण सोचते विचारते लौट गए। बाद में ज्ञान में आया कि सामाजिक विद्रूपताओं एवं उपद्रव के अंदेशे से मुनिवर ने स्पष्ट स्वीकारोक्ति नहीं

दी थी। लोग समझ गए कि मुनिश्री विवादों से दूर रहना चाहते हैं। हुआ भी ऐसा ही, मुनिवर ने शीघ्र ही अंकुर कॉलोनी छोड़ दी थी।

कॉलोनी से विहार

विवादों से परे रहनेवाले मुनिवर विमर्शसागर जी एवं मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी ने अंकुर कॉलोनी के वृहद् समाज के साथ विहार कर दिया। जाते-जाते उन्होंने बालाचार्य बाहुबली जी से क्षमा याचना की, जिससे बाहुबली सागर जी के साथ-साथ उपस्थित सैकड़ों भक्त भावुक हो उठे। मुनिवर की पवित्र भावना देखकर अनेक आँखें गीली हो गईं। बाहुबलीसागर ने आवाज को सँभालते हुए मुनिवर से करबद्ध क्षमा याचना की और बोले आपने मुझे बहुत सहन किया, कभी जवाब तक नहीं दिया। मैं आपके स्वभाव से अनेक प्रेरणाएँ प्राप्त कर सका हूँ। तब मुनिवर ने शब्दों के बजाए पवित्र मुस्कान से उत्तर दिया। थोड़ी देर बाद बोले—आप अपने स्वास्थ्य और रत्नत्रय का ध्यान रखना, सभी से वात्सल्यपूर्वक बोलना, आप अपनी साधना में सफल हों यही भाव है। मुनिद्वय भक्तों को रोता हुआ छोड़कर विहार कर गए। राह पकड़ी रहली पटनागंज क्षेत्र की।

रास्ते की प्रथम आहारचर्या ढाना ग्राम में हुई फिर वहीं बाजार के मैदान में प्रभावनाकारी प्रवचन हुए। दूसरे दिन पुनः विहार। 13 दिसम्बर 2001 को मुनिवर ने पटनाबुजुर्ग में प्रवेश किया वहाँ श्री महेन्द्रकुमार जैन (कृषि पंडित) ने समाज सहित भक्तिपूर्वक अगवानी की और नगर प्रवेश कराया।

दीक्षा दिवस समारोह

पटनाबुजुर्ग के लोगों ने 14 दिसम्बर को मुनिवर विमर्शसागर जी का 'चतुर्थ दीक्षा दिवस समारोह' उत्साहपूर्वक मनाया, विशाल पंडाल खचाखच भर गया। स्थानीय भक्तों के साथ मकरोनिया, अंकुर कॉलोनी, महरौनी, ललितपुर, बरायठा, भिण्ड आदि स्थानों से अनेक भक्त, गुरुभक्ति हेतु उपस्थित थे। अनेक व्यक्तियों ने मुनिवर का श्रेष्ठ गुणगान किया। अंत में मुनिवर ने सारगर्भित प्रवचन दिए। स्थानीय समाज ने शीतकालीन वाचना हेतु मुनिश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित करते हुए प्रार्थना की। मुनिवर ने स्वीकार कर ली, मगर स्पष्ट कहा कि पहले हमारे गुरुदेव से अनुमति लेकर आइए। वैसा ही किया गया और समाज दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से वाचना का शुभारंभ कराने में सफल हुआ।

वाचना का कलश विधिपूर्वक स्थापित किया गया। मुनिवर ने सुबह पंचास्तिकाय और मध्यान्ह छहढाला विषय पर विवेचना शुरू कर दी।

अनोखी वैयावृत्ति

गाँव के लोगों ने सिद्ध कर दिया कि वैयावृत्ति की धुन, भक्ति ही है, वे रात्रि

9 बजे पहुँचे और दोनों संतों की मनोयोग से वैयावृत्ति करते। उनकी संख्या बहुत अधिक रहती थी अतः मुनिवर ने कुछ लोगों का ध्यान भजन गायन की ओर मोड़ दिया, फलतः रोज आधे घंटे तक भजन भी चलते थे। भजन गानेवालों में श्री महेन्द्र जैन, श्री मुकेश, श्री पंकज, श्री देवेन्द्र और श्री संतोष जैन प्रमुख थे।

विकलांग सम्यग्दर्शन

मुनिवर जब दोपहर में छहढाला ग्रंथ पढ़ाते और समझाते थे जिसे भक्तगण तो सुनते ही थे, समीप ही स्थित स्कूल में बैठे लोग भी सुनते थे। उस स्कूल में एक शिक्षक जैन था, जिसे आगम का किंचित अध्ययन भी था, अतः वह मुनिवर के प्रवचन विशेष ध्यान से सुनता था। एक दिन मुनिवर सम्यग्दर्शन पर बोलते हुए उसका गुणगान कर रहे थे, उस क्रम में उन्होंने कहा—"ध्यान रखना मैं सम्यग्दर्शन की बात कर रहा हूँ, विकलांग सम्यग्दर्शन की नहीं, क्योंकि विकलांग सम्यग्दर्शन मुक्ति का दिलानेवाला और संसार का नाशक नहीं होता।" शिक्षक ने वाक्य सुना तो पशोपेश में पड़ गया। जब वह शाम को कुछ युवकों के साथ घूमने गया तो उनसे मुनिवर की चर्चा करते हुए बोला—महाराज ने अमुक वाक्य गलत बोला है। मैं कई वर्ष से स्वाध्याय कर रहा हूँ, सम्यग्दर्शन के भेद भी पढ़े हैं, मगर विकलांग सम्यग्दर्शन कहीं नहीं पढ़ने मिला। युवकों को शास्त्रीय ज्ञान की जानकारी नहीं थी अतः वे शिक्षक से बोले—'हम महाराज से पूछेंगे।'

युवक रात में ही मुनिवर के पास जा पहुँचे और शिक्षक के वाक्य दुहराए। तब उन्होंने संकेत किया कि अभी मौन हैं कल बतलाऊँगा।

दूसरे दिन सभी युवक सुबह-सुबह मुनिवर के समक्ष जा पहुँचे। तब मुनिवर ने उनसे पूछा—जिस व्यक्ति का अंगभंग हो जाता है, उसे क्या कहते हैं?

युवकों ने कहा—विकलांग।

मुनिश्री—सम्यग्दर्शन के आठ अंग होते हैं यदि उनमें से एक अंग कम हो जावे तो वह 'विकलांग सम्यग्दर्शन नहीं कहलाएगा?

—जी कहलाएगा।

—तो फिर मैंने क्या गलत कहा था?

—महाराज हम लोग समझ गए, वह शिक्षक ही गलत बोल रहा था, कभी मौका पड़ा तो उसे भी समझा देंगे।

तब मुनिवर ने कहा—समझाना क्या, उन महोदय को तो रत्नकण्डक श्रावकाचार की यह गाथा पढ़ने के लिए देना—

नांगहीन मलं छेत्तु दर्शनं जन्म संतितम्।
न हि मन्त्रक्षरन्यूनो निहंति विष वेदनाम्।।

इसका अर्थ हुआ अंगहीन सम्यग्दर्शन जन्म-मरण की परम्परा को छेदने में समर्थ नहीं है, जिस प्रकार अक्षरहीन मंत्र विष की वेदना को नष्ट करने में समर्थ नहीं होता।

युवकों ने प्रमाणित उत्तर प्राप्तकर अपने पास रख लिया और जब वह जैन शिक्षक मिला तो उसे पढ़ने के लिए दे दिया। प्रमाणित उत्तर पढ़कर शिक्षक के नेत्र खुल गए।

पटनाबुजुर्ग में भक्ति की गंगा बह रही थी तभी तो श्रावक जनवरी की तीव्र ठंड में सुबह 5 बजे मुनिवर के समक्ष उपस्थित होकर भक्ति और स्वाध्याय करते थे। उनकी रुचि श्लाघनीय थी। वे मुनिवर के समक्ष तत्वचर्या में समय देते थे तो घर में स्वाध्याय के लिए भी समय निकालते थे। पूरा नगर विमर्श भक्ति में रंग गया था।

पंडितों का आगमन

वाचना तो चल ही रही थी, विद्वान आते-जाते रहते थे। एक दिन पंडित सनतकुमार जैन, पं. विनोद कुमार जैन रजवाँस ने मुनिवर से प्रार्थना की, कि रजवास में हो रहे पंचकल्याणक महोत्सव को ससंघ सान्निध्य प्रदान कीजिए। मुनिवर ने सहज भावना से कह दिया—मेरे गुरुदेव से अनुमति ले आइए। पंडित द्वय चुप नहीं रहे, शीघ्र ही निवेदन किया—पत्र लिखकर दीजिए। मुनिवर को समय था अतः वे पत्र लिखने लगे तब तक पंडित सनतकुमार की दृष्टि मुनिवर के पैर के तलुए पर पड़ी। वे मुनिवर से निःसंकोच होकर बोले—महाराज श्री ! आपके चरणों की गजरेखा और पताका का चिन्ह घोषित कर रहा है कि आप देश में धर्मोत्थान की पताका फहराएंगे। मुनिवर ने सुना तो कुछ उत्तर न देकर मुस्कराते रहे और पत्र लिखते रहे। बाद में विद्वान द्वय पत्र लेकर चले गए।

जंगल का प्रसंग

मुनिश्री प्रतिदिन प्रातःकाल शौचक्रिया के लिए जंगल की ओर जाते थे उनके साथ चार-छह युवक चलते थे। एक वृक्ष के तने पर लाल-पीले झंडे बाँधे गए थे। मुनिश्री ने साथ चल रहे पंकज नामक युवक से पूछा—ये झंडे क्यों लगे हैं? तब पंकज पूरी कथा बतलाने लगे, बोले—हमारे गाँव में एक वृद्ध माँ थी, उसे खीर खाना बहुत पसंद था। जिस दिन उसका मरण हुआ था उस दिन भी उसने खीर खाना पसंद किया था। उसके परिवार ने इसी वृक्ष के नीचे अंतिम संस्कार किया और एक चबूतरा बना दिया। जिस पर कभी-कभी भजन-कीर्तन

होते रहते हैं, वर्ष में एक-दो बार झंडे भी चढ़ाए जाते हैं लोग चबूतरे को खीर माई माता का चबूतरा कहते हैं।

तब मुनिश्री ने समझाया कि यह कार्य उनकी दृष्टि में उचित होगा, जैनधर्म में तो हलुआ पूड़ी की नहीं तप, त्याग की साधना होती है। जैन आराधक की दृष्टि आगम पर होना चाहिए, मिथ्यात्व पर नहीं।

युवकों ने ली परीक्षा

मुनिवर जिस कक्ष में बसते थे उसके आगे भी एक कक्ष था। एक दिन कुछ युवकों ने मुनिवर से आगे के कक्ष में रात्रि विश्राम करने का अनुरोध किया। सरल स्वभावी मुनिवर उनका उद्देश्य नहीं समझ पाए फिर भी उन्होंने रुकने की स्वीकृति दे दी। रात्रि में नित्य की तरह वैयावृत्ति हेतु भक्तगण आए और अपने कार्य में लग गए। जब अपने मन भर सेवा कर ली तो मुनिवर के चरण स्पर्श कर वापिस हो गए। मुनिवर स्वाध्याय करने लगे। मध्यरात्रि में चार युवक मुनिवर को देखने आए तो वे चकित रह गए, मुनिवर तो स्वाध्याय में लीन थे वे मुनिवर को चुपचाप नमोस्तु कर चले गए।

उन्हीं युवकों की दूसरी टोली रात्रि साढ़े तीन बजे आई और मुनिवर को देखने लगी, यह टोली भी चकित थी कि मुनिवर तो सामायिक कर रहे हैं। टोली उल्टे पाँव लौट गई । रोज की तरह वे सभी युवक सुबह 8 बजे मंदिर पहुँचे तो पहले सभी ने मुनिवर के समक्ष जाकर क्षमा याचना की। तब मुनिश्री बोले–'किस त्रुटि की क्षमा मांग रहे हो?' युवक पश्चाताप करते हुए बोले–'हमने आप पर शंका की थी, इसलिए क्षमा मांग रहे हैं। हम एक व्यक्ति की सलाह मानकर यह गलत कदम उठा बैठे थे। उन्होंने मुनिवर को पूरी घटना विस्तार से बतलाई और पुनः क्षमा मांगी। मुनिवर ने सहजता से कहा–'मुझे कोई अंतर नहीं आता, रात्रि में कब विश्राम करना है–और कब सामायिक, इस पर हम विचार करते हुए ही चलते हैं, किसी को दिखाने या तुष्ट करने के लिए नहीं।'

मुनिश्री ने युवकों को समझाया–'अब भविष्य में किसी साधु के प्रति शंकायुक्त व्यवहार नहीं करना, उसके बदले स्वाध्याय में रमना।' उन्होंने आगे कहा–'आप लोग एक ग्रुप बना लीजिए, जो स्वाध्याय तो करे ही समाज के अन्य कार्य भी निपटाए।' युवकों ने गुरुदेव की वार्ता पर गंभीर मंथन किया। शाम को ही स्वाध्याय संघ बन गया, दूसरे दिन से सभी युवक कुर्ता-पैजामा, टोपी पहनकर स्वाध्याय करने लगे।

दूसरे दिन मुनिवर ने इच्छा व्यक्त करते हुए कहा– दो-चार दिन के लिए पटनागंज (रहली) जाना चाहता हूँ, वंदनाकर वापिस भी आना है। सभी युवक सोत्साह तैयार हो गए। मुनिवर की आज्ञा मिलते ही वे सभी लोग मुनिश्री

विमर्शसागर जी एवं मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी के साथ पटनागंज गए। तीन दिन सभी ने दर्शन अर्चन किए। लौटते समय मुनिद्वय से रहली में मुनिश्री वैराग्यनंदी जी एवं मुनिश्री तीर्थनंदी जी का मधुर मिलन हुआ। वहाँ एक आर्यिका संघ भी था, अतः संघस्थ सभी आर्यिकाएँ मुनिवर के दर्शनार्थ पधारीं।

बाद में मुनिद्वय पुनः विहार करते हुए वापिस पटनाबुजुर्ग पहुँचे। कुछ ही दिन बीते खबर मिली कि आचार्यश्री देवनंदी जी महाराज ससंघ इस गाँव से निकलेंगे। मुनि विमर्शसागर जी वाट जोहते रहे और जब आचार्यश्री आए तो मुनिद्वय समाज के साथ उनकी अगवानी करने गाँव के बाहर तक गए। दोनों संघों का परस्पर मिलन हुआ। नमोस्तु-प्रतिनमोस्तु हुआ। हुई समाचारी। फिर सभी संत शोभायात्रा के साथ बस्ती में पधारे।

आहारोपरांत आचार्यश्री ससंघ रहली की ओर विहार कर गए, पुनः मुनिद्वय समूह सहित उन्हें बस्ती के बाहर तक पहुँचाने गए।

रजवांस की पुकार, पंचकल्याणक

कुछ समय पहले रजवाँस से पंडित सनतकुमार एवं पंडित विनोद कुमार मुनिवर से प्रार्थना करने आए थे, इस बार वे मुनिवर के गुरु-महाराज से अनुमति पत्र लेकर आए थे। मुनिवर ने पत्र पढ़ लेने के बाद दोनों विद्वानों को स्वीकृति दे दी।

समय देखकर मुनि विमर्शसागरजी ने ससंघ पटनाबुजुर्ग से रजवांस के लिए विहार कर दिया। अनेक श्रावकों के साथ ढाना, सागर, बांदरी होते हुए संघ रजवास नगर की सीमा पर पहुँचा तो वहाँ भक्तगण अगवानी के लिए तैयार खड़े थे। सबने पादप्रच्छालन कर नीरांजना उतारी, फिर शोभायात्रा के साथ मुनिसंघ को जिनमंदिर पहुँचाया। दर्शन, वंदन के उपरांत प्रवचन सभा का आयोजन किया गया जिसमें मुनिवर ने संक्षिप्त किंतु महत्वपूर्ण प्रवचन किया, जिससे प्रेरित होकर समस्त कार्यकर्तागण पंचकल्याणक समारोह की तैयारियों में जुट गए।

मुनिवर विमर्शसागर जी के आशीर्वाद से सबसे पहले प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वजारोहण किया गया था। तभी मुनिवर ने इंगित किया कि एक-दो दिन बरसात भी हो सकती है और हुआ भी वैसा ही। बड़ी-बड़ी बूँदों वाला पानी तेज रफ्तार से बरसने लगा। झड़ी लग गई। वैसी ही स्थिति में आर्यिका 105 श्री आदर्शमति माता जी ससंघ रजवांस पहुँचीं, सभी आर्यिका माताएँ भीग गईं थीं। समाज ने उचित व्यवस्था की। आहारचर्या के पश्चात् आर्यिका श्री ससंघ मुनिवर के दर्शनार्थ पहुँची। रत्नत्रय एवं स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूछी, कुछ मिनटों तक चर्चा भी की। बाद में लौट पड़ीं। लौटते लौटते मुनिवर से बोलीं–'चर्चा तो कुछ

और भी करनी थी, किन्तु हम लोगों को बांदरी पहुँचना है, मौसम अनुकूल नहीं है, अतः हम लोग विहार कर रहे हैं। उन्होंने मुनिवर को नमोस्तु किया, मुनिवर ने भी भारी वात्सल्यपूर्वक आशीर्वाद दिया। आर्यिका संघ चला गया।

तीव्र वर्षा के कारण पंडाल गीला ही नहीं लथपथ हो चुका,था काली मिट्टी पानी का साथ पा सिर चढ़कर बोल रही थी। फलतः कार्यकर्ताओं ने पूरा पंडाल खुलवा दिया। प्रतिष्ठाचार्य थे—पं. गुलाबचंद जी पुष्प टीकमगढ़। वे मंत्र, जाप करते रहे, मुनिवर सामायिक करते रहे, तब तक नया पंडाल लगा दिया गया। संयोग ऐसा बना कि गर्भ कल्याणक से लेकर मोक्ष कल्याणक तक पूरी अवधि में मौसम अनुकूल रहा और गजरथ महोत्सव का आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

अग्रज मुनि विशद सागर से मिलन

एक समारोह पूरा नहीं हो पाया और दूसरे की प्रार्थना मुनिवर के समक्ष आ गई। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समिति बरौदिया के लोग प्रतिष्ठाचार्य श्री पं. राजकुमार शास्त्री के साथ मुनिवर से प्रार्थना करने पहुँचे। यद्यपि वह कार्यक्रम मुनिवर श्री विशदसागर जी (अब आचार्य) ससंघ के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहा था। किन्तु मुनिवर विमर्शसागर जी को समीपी ग्राम में पाकर, मुनिवर विशदसागर जी शांत न रह सके। उनकी आज्ञा से बरौदिया के लोग मुनि विमर्शसागर जी को लेने पहुँचे। मुनिवर बराबर बरौदिया गए, समारोह देखा, अपने गुरुभाई से मिलन किया और कार्यक्रम के बाद पुनः रजवांस आ गए।

रजवांस समाज मुनिवर का अधिक से अधिक समय चाहता था अतः वहाँ के दोनों विद्वान मुनिवर को नमोस्तु कर उनके गुरु से आज्ञा लेने सिलवानी गए, वहाँ आचार्य विरागसागर से अनुमति माँगी। किन्तु उन्होंने कुछ और ही आदेश सुना दिया। बोले—मुनिश्री विमर्शसागर जी मूलसंघ से करीब दो वर्ष से दूर हैं, अतः अभी यह संदेश ले जाइए कि वे सिलवानी की ओर विहार करें। आप सब लोग उनका विहार कराएँ।

दोनों विद्वान गुरु का संदेश लेकर रजवांस पहुँचे और मुनिवर को बतलाया। फिर हँसकर बोले—'रोकने की अनुमति लेने गए थे किन्तु विहार का आशीर्वाद लेकर आए हैं।' अगर हम नहीं जाते तो ज्यादा अच्छा होता, क्योंकि कुछ सप्ताह और आपका सान्निध्य मिल जाता।

जब हुआ अंतराय

गुरु के आदेश की चर्चा सुनकर मुनिवर उसी दिन विहार करने लगे, तब कार्यकर्ताओं ने अनुरोध किया हे महाराज आहारचर्या हो जाने दो। मुनिवर ने

आहार के लिए समय दिया, मगर जब चर्यार्थ निकले तो विधि नहीं मिल पाई। वे हर चौके पर दृष्टि दे रहे थे, जैन तो जैन अजैन भी विधि मिल जाने की सद्भावना कर रहे थे। मुनिवर अंजुलि बाँधे हुए बाजार क्षेत्र में लगाए गए चौकों की ओर गए। फल बेचनेवाले लोग, मुनिवर को आता देख, जैन-श्रावकों से बोल रहे थे—सेठजी ! आप तुरंत फल ले जाइए, महाराज आ रहे हैं, हिसाब बाद में कर लेंगे। श्रीफल बेचनेवाले व्यापारी ने श्रावक को श्रीफल देते हुए कहा—जल्दी जाओ, महाराज आ रहे हैं। उनकी बातों से मुनिवर के प्रति उनकी भक्ति और समर्पण जाहिर हो रहा था। एक चौके में विधि मिल गई, सारे बाजार क्षेत्र में हर्ष की लहर दौड़ गई, जो जहाँ था वहीं से जयघोष करने लगा। जिस परिवार ने पड़गाहा था उसके मुखिया आगे-आगे चलने लगे, उनके पैर हरी घास पर पड़ गए। मुनिवर ने देख लिया अतः वे लौट गए। अन्य चौकों की ओर गए किन्तु विधि न मिली, अंततः मुनिवर मंदिर जी गए और वहाँ आहार मुद्रा खोल दी, मौन ले लिया।

अंतराय के कारण जैन-अजैन सभी महाराज के पास दौड़े आए। भीड़ लग गई। तब कार्यकर्ताओं के साथ दोनों विद्वानों ने पुनः निवेदन किया—'हे मुनिवर, आज भी रुकने की कृपा कीजिए, कल आहार के बाद हम खुशी-खुशी आपके साथ विहार करेंगे। यदि आप न रुके तो हमारे अजैन मित्र विनोद करेंगे कि जैनी अपने मुनि को आहार नहीं करा पाए।' तब मुनिवर ने कुछ संकेत किया—'कल आहार हो जाएगा यह निश्चित नहीं है, साधुचर्या तो कर्माधीन है।' तब पंडित जी ने विनय की—हम लोगों को विश्वास है कि कल निरंतराय आहार होगा, यदि कर्मयोग से अंतराय भी हुआ तो भी आपको नहीं रोकेंगे।

समाज के बारंबार निवेदन पर मुनिश्री रुक गए। समाज और अधिक संकोच में पड़ गया कि कहीं कल भी अनहोनी हो गई तो हम संत को कैसे विदा करेंगे।

जिस क्षण का डर था वह दूसरे दिन सामने आ गया, जब मुनिवर आहारचर्या को निकले तो विधि शीघ्र मिल गई, लेकिन जब चौके में पहुँच गए तब प्रथम अंजुलि जल में ही अंतराय हो गया। मुनिवर वसतिका की ओर चल पड़े। पीछे-पीछे श्रावक।

सम्पूर्ण समाज में भारी क्षोभ व्याप्त हो गया कि भक्तों के चौकन्ने रहने पर भी अंतराय हो गया। मुनिवर के पेट में दो दिन से एक ग्रास भी नहीं गया था। कुछ कर्मठ लोग आगे बढ़कर मुनिवर से अनुरोध करने पहुँचे हे महाराज, हमारे असाता कर्म से दो बार अंतराय हुआ है, कृपया आप आज भी विहार न करें।' वे लोग पूरी बात न कह पाए, उसके पूर्व मुनिवर बोल पड़े—'नहीं-नहीं, गुरुदेव की आज्ञा हो चुकी है, मैं नहीं रुक सकता।' तब मुनि विश्वपूज्यसागर जी ने भी

अनुरोध किया कि ऐसी हालत में चलने से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, फिर कदम कैसे उठेंगे। मुनिवर तैयार नहीं हुए। तभी समाज के प्रमुख कार्यकर्तागण आ गए और कहने लगे–'महाराज न तुम्हारी–न हमारी, बीच की बात कर रहे हैं। आप भले ही आज विहार करें, मगर आगे रस्ते में सबसे पहले जो गाँव मिले, वहाँ कल आहारचर्या सम्पन्न कीजिए।'

मुनिवर उनकी बातें सुनकर मुस्करा दिए, बोले–'यह कोन सी नई बात है, विहार के समय ऐसा ही होता है।' मध्यान्ह विहार हो गया। मुनिसंघ मात्र दो किमी. चल पाया और ग्रंट गाँव आ गया। साथ चल रहे भक्त प्रबल अनुरोध करने लगे कि आपने प्रथम गाँव में आहार लेने का प्रस्ताव मान लिया था, अतः आज यहाँ ही रुकिए, कल आहारचर्या के उपरांत विहार कीजिए।

मुनिवर भक्तों की बातों का तानाबाना समझ गए। भक्त चाहते थे कि भूखे–पेट अधिक न चला जावे, अतः प्रथम गाँव का प्रस्ताव रखा था। वे मुस्कराए और वहाँ ही रुक गए। जब सामायिक करने बैठे तो भक्तों को लगा कि वे अपने गुरुदेव से कोई अंतरंग बात कर रहे हैं–

तुझे दिल में बसा लिया हमने,
सारी खुशियों को पा लिया हमने।
इससे पहले कि तन्हा कर दे कोई
तुमसे रिश्ता बना लिया हमने।
तेरी चौखट को पाने के खातिर
अपना सब कछ लुटा दिया हमने,
हर घड़ी होता रहे दीद तेरा
आँखों में ही छुपा लिया हमने।

मुनिवर तो सामायिक कर रहे थे भक्तगण इस प्रथम गाँव की सराहना कर रहे थे, जहाँ संत रुके थे। वह एक छोटा-सा गाँव था, जिसमें जैन समाज का एक भी परिवार नहीं था, रुकने के लिए भवन तो क्या स्कूल तक नहीं था। वह तो साथ चल रहे भक्तों ने एक हिन्दू व्यापारी से अनुरोध कर उसकी दुकान खाली करा ली थी और साफ शुद्ध कर विश्राम लायक बना ली थी। भक्तों ने ही आहारचर्या की सुन्दर व्यवस्था की थी।

आहारचर्या के बाद मुनिवर के प्रवचन हुए जिसमें साथ चल रहे भक्तों सहित गाँव के अनेक लोगों ने उपस्थिति दी और लाभ लिया। अब संघ छोटा नहीं था, मुनिवर विमर्शसागर जी के साथ मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी तो थे ही, दो भैया भी थे–ब्र. जितेन्द्र, ब्र. आशीष। संघ बांदरी, ईश्वरवारा (मुनि

सुधासागर जी की जन्म भूमि) सिहोरा, जैसीनगर होते हुए सिलवानी नगर की सीमा पर पहुँचा।

सिलवानी प्रवेश

गुरु आज्ञा के अनुरूप मुनिवर विमर्शसागर जी लगातार चले थे। उनकी अगवानी के लिए मुनि विशुद्धसागर जी (अब आचार्य) मुनि विशदसागर जी (अब आचार्य) विशाल साधुसंघ के साथ और नगर के समाज सहित पहुँचे। सभी गुरुभाईयों का परस्पर मिलन हुआ, हुआ नमोस्तु-प्रतिनमोस्तु, फिर विशाल यात्रा के साथ चलकर गुरुपादमूल में पहुँचे। मुनिवर विमर्शसागर जी ने गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की चरण-वंदना, त्रयभक्ति सहित कर, नमोस्तु किया। भक्तगण ध्यान से देख रहे थे, उन्हें अनुभूत हुआ कि विमर्शसागर जी अपने गुरु से यही कह रहे होंगे—

मिले हो हमसे मगर हम तेरी तलाश में हैं,
तू मेरे साथ रहे, बस हम इसी आस में हैं।
तेरी ही चाह में अब तक जिये हैं हे गुरुवर,
तू मेरा चाँद है सूरज है, तू उजास में है।

कुछ समय के बाद मुनिवर ने उपसंपतगुण का पालन करते हुए स्वतः को संघ सहित गुरु चरणों में समर्पण कर दिया, साथ ही दोनों ब्रह्मचारियों को भी गुरुचरणों में रहकर आत्म-कल्याण करने की भावना प्रकट की।

शिष्य के भक्ति-भाव और समर्पण भाव को गुरुदेव ने अपनी पैनी दृष्टि से देखा था। अतः उनहोंने विमर्शसागर जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बतलाने लगे—'हम सभी संघों को समय-समय पर इसी तरह वात्सल्य-मिलन का परिचय देते रहना चाहिए, क्योंकि समय पर मिलते रहने से मूलाचार का पालन भी होता है।'

सिलवानी में गुरुदेव और संघस्थ संतगण काफी समय से थे, अतः लोग उनका नाम जानने लगे थे। विमर्शसागर जी का नया-नया आगमन हुआ था अतः कुछ दिनों तक लोग उनका नाम नहीं जान पाए, सो वार्ता के दौरान कहते—'गोरे वाले महाराज, जो मंद-मंद मुस्कराते हैं' कभी कभी युवकगण आपस में बातें करते तो बतलाते कि गोरे-हाथवाले महाराज, गुलाबी होंठवाले महाराज।

सिलवानी से विहार

कुछ दिनों बाद गुरुदेव ने विशाल संघ सहित बिहार कर दिया, जिसमें विमर्शसागर जी का संघ भी शामिल था। विशाल संघ कुछ दिनों तक

आहारचर्या और स्वाध्याय सामायिक करते हुए टड़ा, पठा और केवलारी होते हुए सहजपुर की ओर चल पड़ा।

मार्गदर्शक का भ्रम

जब संघ सहजपुर की ओर बढ़ रहा था, तब एक सज्जन गुरुदेव से बोले–'आचार्यश्री यदि सामने वाले पहाड़ के रास्ते से चलकर नीचे उतर जाएँ तो सात किमी. का चक्कर बच सकता है। आचार्यश्री ने संघस्थ शिष्यों से पूछा सभी तैयार हो गए। फलतः सभी सदस्य सीधे पहाड़ चढ़कर नीचे उतरे, आगे-आगे वह सज्जन रास्ता भूल गए, फलतः संघ सहित वीरान जंगल में प्रवेश कर गए। आगे का रास्ता नहीं सूझ रहा था, तब उन्होंने आचार्यश्री से विनय करते हुए कहा–'मैं तो रास्ता भटक गया।' सांझ हो चली थी, आचार्यश्री ने विचार किया कि तमाच्छादन के पूर्व कुछ चल लेना चाहिए किन्तु जब उन्हें विश्वास हो गया कि दिन का प्रकाश समाप्त होनेवाला है, तब उन्होंने जंगल में ही रुकने का निर्णय कर लिया। रुक गए सभी साधु ओर साथ चले रहे भक्तगण।

कुछ देर बाद जंगल के उस पार बसे ग्रामवासियों को जानकारी मिली तो सैकड़ों की संख्या में संघ के समीप पहुँचे और गाँव चलने का आग्रह करने लगे, तब आचार्यश्री ने बतलाया–'हम दिगम्बर जैन साधु हैं, रात्रि में विहार नहीं करते अतः जंगल में ही विश्राम करेंगे।'

गाँव वाले–महाराज रात्रि में यहाँ जंगली जानवर निकलते हैं। कुछ देर बाद उनकी आवाजें भी आने लगेंगी अतः कृपया गाँव चलिए।

आचार्यश्री–भैया, अब वे आवें, चाहे उनकी आवाज आवे, हम साधु हैं, भगवान का ध्यान करेंगे और परिषह सहन करेंगे।

गाँव वाले–महाराज आप मजाक न समझें, स्थान खतरनाक है, आप नहीं चलेंगे तो हम लोग यहीं रुकेंगे। उनका वाक्य सुनकर गुरुदेव मुस्करा दिए अतः वे सब वहीं रुक गए। अधिकांश के हाथों में मजबूत लाठी थी। जब संतगण सामायिक करने लगे, तब वे सभी ग्रामीण उन्हें घेरकर चुपचाप बैठ गए। उन्होंने चारों कोनों पर आग जला ली और लाठी लिए धीरे-धीरे बतियाते रहे।

सभी साधुगण रातभर वहीं रुके। मच्छरों और अन्य हल्के जीवों का परिषह सहते रहे, मगर अपना आनंद कम न कर सके। सुबह सूर्य ने संघ के दर्शन किए, तब संघ ने सहजपुर के लिए विहार किया। उस दिन वह सहजपुर कठिनपुर हो गया था।

सहजपुर में समय देकर सभी महाराज लोग महाराजपुर पहुँचे, फिर वीनाबारहा के दर्शन करते हुए देवरी में विश्राम लिया। वहाँ से गौरझामर,

सुरखी, चितौरा होते हुए सागर नगर की सीमा पर पहुँच गए। चूँकि अंकुर कॉलोनी (मकरोनिया) में मुनिवर विमर्शसागर जी ने सन् 2001 का वर्षायोग सम्पन्न किया था, अतः वहाँ के भक्त कुछ अधिक ही उत्साहित थे। वे सब विशाल संघ की अगवानी हेतु सीमा पर जा पहुँचे और सभी ने भावभीनी भव्य अगवानी की। श्री एस.के. जैन, एस.सी. जैन, एम.सी. जैन, आर.के. जैन, लालचंद जैन, पंडित उदयचंद शास्त्री, सुनील जैन सहित अनेक भक्तों ने आचार्य संघ के चरणों में निवेदन किया और अंकुर कॉलोनी चलने की प्रार्थना की। गुरुदेव ने उनकी बात मान ली और सुबह शोभायात्रा के साथ अंकुर कॉलोनी में प्रवेश किया। समाज ने गुलजारीलालजी के स्कूल में संघ की व्यवस्था की। डॉ. अशोक बामोरया ने मित्रों सहित प्राशुक जल से पादप्रच्छालन कर आरती की। सभी भक्त गुरुदेव के साथ-साथ विमर्शसागर जी का भी जयघोष कर रहे थे। तब विमर्शसागर जी ने संकेत किया कि केवल गुरुदेव के नारे लगाएँ, मेरे नहीं। यह बात सुन सभी भक्तों को उनकी निष्पृहता पर हर्ष हो आया। हुई फिर प्रवचन सभा। आचार्यश्री के संकेत पर पहले विमर्शसागर जी ने प्रवचन किए, फिर किए आचार्यश्री ने।

भूमि पूजन एवं कलशारोहण

विमर्शसागर जी के वर्षायोग के समय ही वहाँ मंदिर के विस्तार की योजना बन गई थी और समीपस्थ जमीन भी क्रय कर ली थी। अब जब समाज ने गुरु-शिष्य का सुयोग पाया तो उनके ही सान्निध्य में अंकुर कॉलोनी के योजनाधीन मंदिर की भूमि का पूजन किया गया एवं वर्तमान मंदिर पर कलशारोहण किया गया। कार्यक्रम दो दिवसीय रहा। दो दिन में ही अंकुर कॉलोनी में धर्म की प्रभावना हुई।

महावीर जयंती : 2002

विशाल-संघ अंकुर कॉलोनी से चलकर मोराजी पहुँचा परंतु सागर समाज के प्रतिनिधियों ने पूर्व में ही महावीर जयंती महोत्सव को सान्निध्य देने का निवेदन कर लिया था अतः संघ ने उनका ध्यान रखा। जब समाज ने 'गौराबाई कटरा मंदिर' के बाहर विशाल धर्मसभा का आयोजन किया और महावीर जयंती मनाई तो संघ ने सहर्ष सान्निध्य दिया। पश्चात् पुनः मोराजी को प्रस्थान किया। वहाँ नियमित कार्यक्रम शुरू हो गए—सुबह भक्तामर पाठ फिर आचार्यश्री के प्रवचन, दोपहर में राजवार्तिक, सम्यग्दर्शन की वाचना। कार्यक्रम रुचिपूर्वक चला जिसका समापन श्रुतपंचमी पर हुआ।

एक दिन आचार्यश्री ने मुनि विमर्शसागर जी को तीर्थक्षेत्र श्रेयांसगिरि की ओर विहार करने की आज्ञा दी, इस बार उनके गुरुभाई मुनि विश्वपूज्यसागर

जी को रोक लिया और मुनिश्री विनर्घसागर जी को साथ कर दिया। दोनों यति चल पड़े मोराजी से।

सागर से विहार

गुरु आशीष से निर्मित नवीन संघ अंकुर कॉलोनी होते हुए, कर्रापुर और फिर बडा पहुँचा। वहाँ शांतिनगर मंदिर में रुका। वहाँ ही बालाचार्य श्री बाहुबली सागर जी से मिलन हुआ। पुनः विहार। मुनिद्वय दलपतपुर होते हुए नैनागिरी पहुँचे। यह तीर्थंकर पार्श्वनाथ की समवशरण भूमि है और श्रीवरदत्तादि मुनिराजों की निर्वाणभूमि है। मुनियों ने दो दिन वंदना की फिर किया विहार। बम्होरी, शाहगढ़, घुवारा, भगवाँ का सुदीर्घमार्ग तय कर मुनिद्वय सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी पहुँचे। यह श्री गुरुदत्तादि मुनिराजों की निर्वाण स्थली है। किए भावपूर्वक दर्शन। फिर बड़ामलहरा होते हुए गुलगंज को स्पर्श किया, पंडित भागचंदजी ने संघ के आगमन को समाज का सौभाग्य माना।

मुनिवर पुनः विहारकर छतरपुर नगर पहुँचे और बड़े मंदिर जी में पाँच दिन का समय दिया, सदा की तरह सुबह प्रवचन दोपहर में स्वाध्याय शाम को आचार्य वंदना का क्रम बनाए रहे। फिर बढ़े बमीठा की ओर, रास्ते में रात्रि विश्राम स्कूल में किया, तब पहुँचे बमीठा। यह ब्रह्मचारी विशल्यभारती (पूर्व में मुनि विशल्यसागर) का जन्म स्थान है। उनके परिवार ने मुनिवर विमर्शसागर जी की नवधाभक्तिपूर्वक पड़गाहन कर आहारचर्या सम्पन्न की। फिर बढ़े पन्ना की ओर।

पन्ना पूर्व : एक प्रसंग

रास्ते में पहाड़ चढ़कर मुनिद्वय पठार पर पहुँचे, बमीठा के श्रावक साथ चल रहे थे। पहाड़ पर रुकने का कोई उचित स्थान नहीं था और दिन डूबने का समय था अतः मुनिवर पहाड़ से उतरते हुए मेनरोड पर आ गए, वहाँ एक बड़ा होटल था जिसके चारों ओर 100-200 फुट तक खाली मैदान था, मगर पास में कोई गाँव नहीं था। मुनिद्वय वहीं जमीन पर बैठ गए और प्रतिक्रमण करने लगे। तब तक खबर गाँव तक पहुँच गई कि होटल के मैदान में नग्न साधु बैठे हैं, अतः बच्चे तो बच्चे, बड़े लोग भी दौड़े चले आए साधुओं को देखने। जब विमर्शसागर जी का प्रतिक्रमण पूर्ण हो गया, तो एक व्यक्ति बोला—'महाराज आप लोगों के साथ कोई व्यवस्था बनाने वाला नहीं है?' विमर्शसागर—भैया, हमारी व्यवस्था तो हमारी पीछी और कमंडलू से बन जाती है जो हमारे साथ हैं।

—मेरे कहने का मतलब यह कि आपके भोजन, पानी, चाय, दूध की व्यवस्था के लिए कौन है?

—बंधु, हम लोग 24 घंटे में एक बार आहारचर्या करते हैं। चाय कभी लेते नहीं, रात्रिभोजन करते नहीं।

—यदि आपको किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो हमें सेवा का अवसर दें।

-ऐसा, आपके यहाँ दो तख्त हों तो ला दीजिए।

—हाँ, हाँ, हैं महाराज, अभी लाए देते हैं

चार-छह बलिष्ठ लड़के तख्त लेने चले गए, शेष लोग खड़े रहे ओर टुकुर-टुकुर साधुओं को देखते रहे। थोड़ी देर के बाद लोग तख्त लेकर आ गए, सबने मिलकर मैदान में लगा दिए। फिर एक व्यक्ति ने मुनिवर से पूछा—'आप लोग यहाँ से कहाँ जायेंगे?'

—हम लोग कल सुबह 5.30 से 6 बजे के बीच पन्ना के लिए विहार करेंगे, आप लोग तख्त ले जाना।

—पन्ना के जैनियों को आपके आगमन की जानकारी है क्या?

—शायद नहीं।

—तो क्या हम लोग फोन कर दें, हमारे पास एक सेठजी का नम्बर है। मुनिवर ने हँसकर आशीर्वाद दिया, बोले—'जैसा आप लोग उचित समझें। अब हम लोग ध्यान (सामायिक) करेंगे। आप लोग अपने घरों को जा सकते हैं।

वे सब चले गए। अजैन होकर, जैन संतों के प्रति उनका लगाव 'सर्व धर्म समभाव' का परिचय दे रहा था। उनकी सेवाभक्ति और सहयोग भावना को देखते हुए—मुनिवर विमर्शसागर जी की कृति 'ज़ाहिद की ग़ज़लें' की कुछ पंक्तियाँ चमकने लगीं—

तीर्थ होगा वतन हमारा ये,
गंगा जमना से जो मिल जायेंगे।
हर तरफ होगा अमन चैन तभी,
दिल जो अश्कों से पिघल जायेंगे।

ग्रामीणों ने पन्नावासी सेठ को फोन कर जानकारी दे दी फलतः वहाँ से कुछ युवक रात में ही मुनिवर के समक्ष पहुँच गए। विनयपूर्वक नमोस्तु के बाद उन्होंने अपने साथ लाए घी से मुनिद्वय की वैयावृत्ति शुरू कर दी।

तीव्र गर्मी और थकान के कारण मुनिवर विमर्शसागर तख़्त पर लेटे हुए थे, भक्तों को देखकर भी, व्यर्थ मौनवार्ता न करना पड़े अतः मुनिवर लेटे रहे, भक्त सेवा करने लगे। थोड़ी देर बाद महाराज ने मना कर दिया, तब वे भक्त आज्ञा लेकर लौट गए।

मुनि विनर्घसागर जी ने बैठकर वैयावृत्ति कराई थी अतः जाते-जाते भक्तगण उनके हाथ पैर पर लगे घी को पोंछना नहीं भूले। किन्तु विमर्शसागर जी का घी पोंछना भूल गए थे। वे तो चले गए किन्तु घी की सुगंध पाकर दूसरे भक्तों का समूह विमर्शसागर जी की सेवा में जा पहुँचा। जब उन भक्तों की संख्या बढ़ गई तो मुनिवर को आभास हुआ कि शरीर पर चींटियाँ चल रही हैं ओर भक्तिपूर्वक अपना आहार भी ले रहे हैं। वे सावधानीपूर्वक उठे, पद्मासन में बैठे फिर पिच्छिका से मार्जन करने लगे। ध्यान रख रहे थे कि किसी चींटी को कष्ट न हो। फिर वे लेट न सके। बैठे-बैठे सामायिक करते रहे। सुबह जब विनर्घसागर जी ने देखा तो भारी आश्चर्य प्रकट किया, अपनी पीछी से सावधानीपूर्वक शेष चींटियों को अलग किया। देखा शरीर पर कतिपय ददरे पड़ गए थे। तब उन्होंने कहा—'मुनिवर चींटियों ने आपकी देह की शरण ली थी, अतः कष्ट नहीं दिया।'

मनोविनोद के भाव से विमर्शसागर जी ने विनर्घसागर जी से मुस्काते हुए कहा—'आप थोड़ी देर बैठ गए तो रात्रि में विश्राम मिल गया। मैं थोड़ी देर लेट गया तो रात्रि भर बैठना पड़ा।' यह सुनकर मुनिवर हँस पड़े। उन्होनें प्रातःकालीन क्रियायें और वंदनादि सम्पन्न की फिर विहार कर गए।

पन्ना प्रवेश : 2002

मुनिद्वय पन्ना के समीप पहुँचे तो देखा समाज के लोग अगवानी के लिए खड़े हैं। अगवानी को किंचित समय दिया और लघु शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश किया। जाते ही मुख्य जिनालय की वंदना की, फिर पौर्वाण्हिक स्वाध्याय के लिए बैठ गए। तब तक बमीठा और छतरपुर से भी भक्तों का समूह आ गया, वे अपने-अपने नगर के लिए विहार कराने प्रार्थना करने लगे। आई फिर आहारचर्या की बारी। श्रीशांत कुमार जैन पड़गाहने में सफल हो गए। जब अपने भवन में ले जाकर आहार दिए तो मुनिवर विमर्शसागर जी ने केवल जल लिया और बैठ गए। इससे सम्पूर्ण भक्तों को भारी क्षोभ हुआ। गृहणीरत्न श्रीमति द्रोपदी देवी तो अश्रु ही बहाने लगीं। बाद में उन्हें ज्ञात हुआ कि मुनिवर की पित्त प्रकृति है अतः आहार से अरुचि हो जाती है।

स्थिति यह बनी कि जितने दिन पन्ना में रहे भक्तों ने नितप्रति 'आदर्श आहार' देने का प्रयास करते हुए मुनि के स्वास्थ्य लाभ का भी भाव रखा अतः थोड़ा जल और इने-गिने ग्रास ही दे पाते थे।

एकदिन श्रीरजनीश जैन (एडवोकेट) ने कुछ भक्तों सहित अनुरोध किया कि मुनिद्वय पन्ना को अधिक समय दें तो हम पर भारी कृपा होगी। मुनिवर ने उन्हें बतलाया—'इसके लिए गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागर जी की अनुमति

लानी होगी।' वकील साहब 'हाँ' कहकर चले गए।

मुनिवर विमर्शसागर जी को तो श्रेयांसगिरि जाना था अतः उन्होंने चार दिन का समय पन्ना को दे दिया फिर देवेन्द्रनगर की ओर विहार कर दिया।

लघुभ्राता से मिलन

संघ देवेन्द्रनगर के समीप पहुँच रहा था तभी समाचार मिला कि मुनिरत्न विनिश्चयसागर जी ससंघ विहार करते हुए आ रहे हैं, जिसे सुनकर दोनों संतों को आत्मिक हर्ष हुआ। कुछ समय बाद सड़क पर ही दोनों संघों का वात्सल्य मिलन हुआ, हुई समाचारी। कुछ वार्ताओं के बाद दोनों संघों ने अपनी-अपनी राह पकड़ी।

देवेन्द्रनगर प्रवेश एवं बिहार

स्थानीय समाज ने संत द्वय की अगवानी की, फिर नगर प्रवेश कराया। मुनिवर विमर्शसागर जी एवं मुनिश्री विनर्घसागर जी के प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला। सलेहा के लोगों ने श्री केवलचंद जैन के साथ मुनिवर से निवेदन किया। उन्हें भी गुरुदेव की अनुमति लाने कह दिया। संघ पुनः चल पड़ा। सामने था नागौद। श्री सुरेन्द्र जैन मनमंदिर, प्रेमचंद परेड़ी, दिलीप कुमार जैन आदि, देवेन्द्रनगर के लोग, साथ चल रहे थे। प्रातःकाल की बेला में संतद्वय ने नागोद नगर में प्रवेश किया। वहाँ भी प्रवचन, फिर आहारचर्या, दोपहर में बड़ा प्रतिक्रमण किया, क्योंकि चतुर्दशी थी। अपरान्ह बेला में सतना के लिए विहार किया। साथ में नागौद के लोग थे। वे आधी दूर तक पहुँचाने के बाद मुनिवर की विनय कर वापिस हो गए। मुनिद्वय अकेले ही सतना की ओर बढ़ चले।

तभी काली-काली घटाएँ आसमान में घिर आईं, मुनिद्वय कुछ सोचते उसके पूर्व ही बादलों ने पादप्रच्छालन शुरू कर दिया। सुना था कि बड़े लोग जब कुछ देते हैं तो छप्पर फाड़कर देते हैं, उस समय बादल ही बड़े लग रहे थे, क्योंकि उन्होंने पादप्रच्छालन के कार्य से बढ़कर मुनिद्वय के पूरे शरीर का ही प्रच्छालन कर दिया था। हो गए दोनों तरबतर। मूसलाधार बारिस उनसे लिपटे रहने का प्रयास कर रही थी, उसका प्रयास सफल भी रहा। मगर दोनों मुनिराज श्री देशभूषण और श्री कुलभूषण की तरह अपने चरण गंतव्य की ओर बढ़ाते रहे। रुके नहीं। रुकते भी कहाँ? वहाँ तो चारों ओर खुला ही खुला था, कोई छाया नहीं थी। तब मुनि विनर्घसागर जी पूछने लगे—'आज कहाँ रुकोगे?' मुनिवर विमर्शसागर जी बोले—'जब तक उजेला है, चले चलते हैं, ज्यों ही कोई उचित स्थान, स्कूल, गाँव मिलेगा तो रुक जावेंगे। अनुकूलता भी अपने पुण्यों से ही बनेगी।'

मौसम रिमझिम करता रहा, बूँदें नाचती रहीं, फिर धीरे-धीरे शांत। आँधी पानी का आना बहुत प्राकृतिक था, किसी की ओर से किया गया विघ्न या परिषह नहीं था, फिर भी कुछ था, क्योंकि जब आंधी और बरसात विदा ले गई तो मुनिवर द्वारा रचित ये पंक्तियाँ बरबस चित्त में प्रकट हो पड़ीं–

देखे हैं जिन्दगी में आँधी-तूफाँ भी बहुत,
दीदार के तूफाँ में दिशा ही बदल गई।
झुक-झुक दरख़्त करते हैं प्रणाम भी जिसे
रब नाम से आँधी प्रणाम कर निकल गई।

मुनिवर श्री विमर्शसागर जी को आभास हुआ कि आगे कोई स्थान अवश्य है, वे बढ़ते चले गए, तभी पीछे से एक बस आई और रुक गई। उसमें से एक युवक उतरा, उसने मुनिद्वय को नमोस्तु किया ओर पूछने लगा, 'आप लोग कहाँ जा रहे हैं?' आप लोग कहाँ से आ रहे हैं।' मुनिवर मुस्कराकर बोले–'कुछ पता नहीं।' तब नवयुवक ने अंदाज लगाते हुए कहा–'आप लोग नागौद से आ रहे हैं।' मुनिवर हँस पड़े।

युवक ने बस को जाने दिया, फिर मुनिवर से बोला-मेरा नाम पंकज जैन है, मुनिसंघ सेवा समिति सतना का अध्यक्ष हूँ, मुझे सेवा का अवसर दीजिए। समीप ही एक शाला भवन है, आप मेरे साथ आइए। उसने शाला भवन का एक कमरा साफ कर चीप (पत्थर) बिछा दिया और मुनिवर से बोला–विराजिए। फिर सतना फोन किया तो शीघ्र ही पाटे आदि आ गए, स्कूल का सहारा मुनिसाधना में सहायक हुआ। मुनिद्वय सामायिक में लीन हो गए किन्तु सतना के भक्त गृहस्थी में लीन नहीं हुए, वे वैयावृत्ति के लिए पहुँचे।

सतना प्रवेश

सुबह शोभायात्रा के साथ मुनिसंघ ने नगर प्रवेश किया, पन्नीलाल चौक से होते हुए मंदिर जी पहुँचे। उसी दिन से प्रवचन का क्रम शुरू कर दिया गया। सुबह प्रवचन, दोपहर में परमात्म-प्रकाश पर स्वाध्याय, शाम को गुरूभक्ति।

वर्षायोग का समय निकट था, अतः सतना-समाज ने दोपहर को होनेवाले रविवारीय प्रवचन के बाद मुनिवर के चरणों में श्रीफल अर्पित करते हुए चातुर्मास का निवेदन किया। मुनिवर ने सदाबहार परामर्श दिया–आचार्यश्री से अनुमति लाईए। तब तक अमरपाटन वाले भी अपने समूह के साथ निवेदन करने लगे, तब उन्हें भी वही परामर्श दिया गया।

वर्षायोग सतना- 2002

भक्तों का आना जाना और अनुरोध करना शुरू रहा आया, तब तक

सतनावालों ने बाजी मार ली, फलतः मुनिवर ने ससंघ 23 जुलाई 2002 को सुबह चातुर्मास स्थापना के कार्यक्रम में सान्निध्य दिया, जो सरस्वती भवन के विशाल सभागार में रखा गया था। कलश स्थापना का सौभाग्य श्री रविन्द्रकुमार जैन (बड़े) सपरिवार को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम श्री सिद्धार्थ जैन ने सम्पन्न कराया।

हर वर्षायोग की तरह, सतना में भी गुरुपूर्णिमा फिर वीरशासन जयंती का आयोजन किया गया। सतना में प्रवचनसभा को लालित्य प्रदान करते हुए मुनिश्री विनर्घसागर जी ने प्रतिदिन प्रश्नमंच का क्रम शुरू किया। मुनिवर विर्मशसागर जो प्रवचन देते थे उसमें से पाँच प्रश्न पूछे जाते थे, भक्तगण उत्साहपूर्वक उत्तर देते थे।

श्री भक्तामर शिक्षण शिविर

8 अगस्त से मुनिवर की प्रेरणा से शिविर प्रारंभ किया गया, जिसमें अनुशासन और श्रद्धा श्लाघनीय थी। श्रावकगण श्वेत परिधानों के साथ टोपी और मालाएँ बहिनें केशरिया-परिधानों में छटा बिखेरती थीं। लगता था जैसे धर्म के खेत में एक तरफ कपास की क्यारी है, तो दूसरी ओर केसर की। बड़ा रमणीक दृश्य बन जाता था सुबह-सुबह। शिविरार्थी सच्चे छात्र की तरह अध्ययन करते थे। सभा के उपरांत पढ़ाया गया एक श्लोक, शुद्ध उच्चारण के साथ, बोलने को प्रेरित किया जाता था। जो शुद्ध बोल देता था वह पुरुस्कार भी पाता था। मुनिवर प्रतिदिन एक काव्य पर ही पूरा प्रवचन करते थे जिसे बालक-बालिकाएँ, पुरुष-महिलाएँ उत्साहपूर्वक सुनकर हृदयंगम करते थे।

शिविर दो माह से अधिक अवधि तक चला, पश्चात् 11 अक्टूबर को समारोह-सहित समापान किया गया। दूसरे दिन लिखित परीक्षा भी ली गई।

शिविर तो पूर्ण हो गया। श्रावकगण अपने घरों को लौट गए, किन्तु उन्हें मुनिवर विमर्शसागर की काव्य-पंक्तियाँ बार-बार चित्त से टकरा रही थीं, जैसे वे जगा रही हों–

कभी किसी का दिल दुख जाए, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मरहम बन जाएँ, ऐसे बोल बड़े अनमोल।।
माता-पिता-बड़ों का आदर, धर्म-मार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्त्तव्य कहा।।
धन, वैभव, यह महल, खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, सांझ समय मुरझायेगा।।

हर भक्त संस्कारों से बंध चुका था शिविर में, हृदय से (चुपचाप) व्यसन त्यागी हो गया था, अतः हर व्यक्ति को काव्य मधुर लग रहा था।

पर्युषण पर्व

11 सितम्बर से 20 सितम्बर तक, मुनिवर ने दस धर्मों पर अत्यंत विचारपूर्ण प्रवचन किए। उनकी सुकुमार काय को देखकर लोग आश्चर्य करते कि सुबह से 11 बजे तक प्रवचन के लिए श्रेष्ठ श्रम करते, दोपहर में तत्वार्थसूत्र पर व्याख्यान करते, फिर शाम को आचार्य वंदना 5 मिनट का समय बोलने-बतयाने तक को नहीं निकालते थे।

''विराग-श्रुतज्ञान-प्रतियोगिता'' का आयोजन भी मुनिवर की प्रेरणा से अत्यंत ज्ञानवर्धक और आनंदकारी रहा। दस दिन तक प्रतिदिन प्रवचन के बाद एक प्रश्नपत्र, जिसमें दस प्रश्न होते थे, भक्तों को दिया जाता था, भक्त उसे हल करते थे। दूसरे दिन सभी के प्रश्नप्रत्रों का 'ड्रा' निकाला जाता था। इस दिन तक भक्तों ने भक्तिपूर्वक भाग लिया।

क्षमावाणी पर्व

पर्युषण के बाद 22 सितम्बर को मुनिवर के सान्निध्य में विशाल जनसमुदाय ने क्षमावाणी पर्व मनाया। गतवर्ष की तरह गुरु-सकेत पर लोगों ने वास्तव में अपने वैर भूलकर आपस में क्षमा-याचना की। उस दिन जैन-समाज-सतना के साथ-साथ भिण्ड, महारौनी, सागर आदि नगरों से भी बड़ी संख्या में भक्तगण आए थे।

क्षमावाणी का प्रभाव लोगों में देखते ही बनता था, वे सोच रहे थे—

मिट जाए दिल की दूरियाँ जी ऐसी जिंदगी,
तूफाँ भी हिलाए, नहीं इंसान हिल सके।
अपनी खुशी में करना, मत तबाह गैर को,
जल, बन के शमा, जिससे बुझा दीप जल सके।।

श्रेयांसगिरि में धर्मशाला

एक दिन प्रवचन सभा में मुनिवर ने प्रेरणा दी कि अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी में धर्मशाला का निर्माण किया जावे, जैन समाज सतना ने उनके संकेत को हृदय से प्रतिसाद दिया, एक बड़ी धनराशि एकत्रित कर निर्माण कार्य में लगाई गई। फलतः श्रेयांसगिरि पंचकल्याणक महोत्सव के पूर्व ही धर्मशाला रूप ले सकी।

चंद्रानी देवी बनी आर्यिका विलक्ष्यश्री

4 अक्टूबर 2002 को प्रातःकाल जब मुनिद्वय प्रवचन हेतु मंच पर जानेवाले थे, तभी पन्ना निवासी दो श्रावक मुनिवर विमर्शसागर जी से प्रार्थना करने लगे—महाराज श्री, हमारी माताजी बहुत बीमार हैं, डॉ. ने जवाब दे दिया। अब

उनकी भावना है कि वे समाधिपूर्वक मरण करें अतः आप आज्ञा दें तो हम आज ही उन्हें आपके चरण सान्निध्य में ला सकते हैं।

मुनिवर विमर्शसागरजी विचार करने लगे कि संघ में कोई आर्यिका या ब्रह्मचारिणी नहीं है, अतः सँभाल कौन करेगा। पुरुष रोगी होता तो विचार कर सकते थे। तब तक उनका ध्यान गुरुदेव के संघ पर गया, जो समीप ही श्रेयांसगिरि में साधनारत था, उनके साथ आर्यिका संघ भी था। अतः मुनिवर ने पन्नावासियों को वहाँ जाने का परामर्श दिया। तब तक पन्नावालों के पारिवारिक जन बीमार माँ को लेकर मुनिवर के समक्ष ही आ गए। उनकी नातिनें और बहुएँ रोती हुई बोलीं–महाराज मना मत कीजिए, समय बहुत कम है, अतः समाधि प्रदान कीजिए।

उनका बिलखना और माँ जी के पुत्रों द्वारा मुनिवर के चरण पकड़ना, चमत्कारी सिद्ध हुआ, उनके हृदय में छुपी करुणा सामने आ गई अतः वे बोले इन्हें पृथक कक्ष में ले जाइए, रंगीन वस्त्र हटाकर शुभ्र वस्त्र पहनाइए। फिर मैं देखता हूँ उस परिवार ने वैसा ही किया। अपनी बीमार माँ श्रीमती चंद्रानीदेवी को नया रूप दे दिया, तभी मुनिवर उनके कक्ष में पहुँचे और रोगी जो अब क्षपक बन रही थीं, से पूछने लगे–'अम्माजी आपकी क्या भावना है? क्या समाधि चाहती हो? चंद्राणीदेवी ने सिर हिलाकर सहमति प्रदान की। तभी उनकी बहू ने कहा–अम्मा जी आप महान हैं, जो इस समय आपको साक्षात् करुणासागर के रूप में दिगम्बर मुनि के दर्शन हुए। अम्मा ने फिर सिर हिलाया, फिर मुनिवर की ओर देखकर प्रसन्नता व्यक्त की ओर पुनः समाधि के लिए हाथ जोड़कर नमोस्तु किया।

विमर्शसागर–'अम्मा जी, यह जीव संसार के सुखों में लीन रहकर अनादिकाल से अनेक पर्याय खोता आ रहा है, इस जीव ने संसार के भोगोपभोग और संग्रह में फँसकर चारों गतियों के दुःख अनंतबार भोगे हैं।'

तभी चन्द्राणी जी ने दीक्षा प्रदान करने हेतु अपने दुर्बल हाथों से प्रार्थना की। तब मुनिवर बोले–'हर पर्याय में संयम प्रदान करनेवाली यह दीक्षा दुर्लभ रही, मगर इस बार आप समय पर पहुँची हैं। हे माँ, अब तू घर, परिवार, पुत्र, बहू, धन-सम्पत्ति ओर आत्मा के विभावों से विरक्त होकर संयम-दायनी दीक्षा ग्रहण कर।

चंद्राणीदेवी मुनिवर के उद्‌बोधन से बहुत प्रसन्न हुईं, चेहरे पर शांति राज्य करने लगी। फिर उन्होंने हाथ जोड़कर दीक्षा ग्रहण करने की भावना की। तब तक सतना के श्रावक श्री दुलीचंद जैन जो मुनिभक्त हैं, और पूर्व में पिच्छिका परिवर्तन के समय पीछी प्राप्त कर चुके थे, ने पीछी लाकर मुनिवर को दे दी,

फलतः वे भी चन्द्राणी देवी की दीक्षा के सच्चे सहयोगी बने।

मुनिवर ने परिवार के सभी सदस्यों से पूछकर चंद्राणीदेवी के सर्व प्रकारके परिग्रह का त्याग कराया, फिर संस्कारपूर्वक दीक्षा विधि पूर्ण की और उनका नामकरण 'आर्यिका विलक्ष्यश्री' किया। फिर उन्होंने पिच्छिका प्रदान की आगे बोले--अब आप आर्यिका हैं, संयमी हैं, उपचार से महाव्रती हैं, चारों प्रकार के आहारों का त्याग कर दीजिए।

आर्यिका श्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, त्याग की भावना जाहिर की। पंडित निर्मलचंद जैन भी कक्ष में थे, अतः उन्होंने भी यथायोग्य उद्‌बोधन दिया।

मुनिवर ने क्षपक को समाधिमरण पाठ सुनाया और संक्षिप्त में अर्थ भी समझाते गए। समाधिकक्ष के आसपास श्रद्धालुओं की विशाल भीड़ लग गई थी सभी जन क्षपक के दर्शन करना चाहते थे। मुनिवर के संकेत पर उपस्थित वैद्यजी ने क्षपक की नाड़ी का अवलोकन किया, उन्हें ठीकठाक ही लगी चेहरे पर निराशा के भाव थे अतः मुनिवर ने क्षपक को कुशलतापूर्वक अरिहंत-सिद्ध का उच्चारण कराना शुरू कर दिया। उन्हें अपने गुरुदेव के दृश्य याद थे, फलतः जैसा वे करते रहे वैसा ही मुनिवर कर रहे थे। धीरे-धीरे क्षपक ने अरिहंत-सिद्ध कहना बंद कर दिया और ओम् का उच्चारण करने लगी। मुनिवर समीप थे, वे देख रहे थे, तभी अचानक प्राणरूपी पखेरू उड़ गया। उस समय दस बजे थे। पारिवारिक जन समाज के साथ व्यवस्था में लग गए। मुनिद्वय उपवास ग्रहणकर वसतिका में लौट आए। दोपहर में मुनिवर के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। पश्चात् अचेतन देह को सिविका में विराजमान कर संस्कार स्थल में ले गए और अग्नि संस्कार किया गया।

तीन दिन बाद राख (खारी/भस्म) के कण श्रेयांसगिरी ले जाए गए। लोग चर्चा कर रहे थे-श्रीमती चंद्रानी देवी धर्मपत्नी श्री स्वरूपचंद जैन पन्ना ने अंत समय में मुनि-संघ के सान्निध्य में संयमपूर्वक जीवन यात्रा सार्थक की।

पूजन प्रशिक्षण शिविर

15 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 02 तक पूजन शिविर आयोजित किया गया। सभी शिविरार्थियों को पूजन की पोशाक आदि दी गई। पूर्व की तरह पुरुष श्वेत वस्त्रों में और महिलाएँ केशरिया वस्त्रों में सजधजकर, मुकुट पहनकर इन्द्र-इन्द्राणी बने। मुनि के निर्देशानुसार स्वर्णिम पाण्डुक शिला का निर्माण किया गया था। साथ ही समवशरण का भी। प्रतिदिन 6.30 से 10.30 बजे तक पूजन-प्रशिक्षण शिविर भक्तिपूर्वक चलता था। उसके समक्ष विधानादि के समारोह भी लघु प्रतीत हो रहे थे। नौ दिन तक धर्म और आनंद की गंगाएँ बहती रहीं। समापन के समय उत्साही इन्द्रों ने प्रभु का रथ स्वतः खींचकर परिक्रमा का आनंद लिया।

जब पाण्डुक शिला से भगवान को उठाकर मंदिर जी ले जा रहे थे, तो वहाँ का सूनापन महिलाओं को आहत कर रहा था। श्रीमती वंदना जैन अश्रुधार बहाते हुए बोलीं—भगवान को समवशरण से मत ले जाओ। तब मुनिवर ने क्षणभर उनकी ओर देखा। वंदना जी कह पड़ीं—महाराज ऐसा आनंद मैंने पहली बार देखा है। जब धरती के समवशरण में इतना आनंद है, तो यथार्थ समवशरण में कितना आनंद होगा ?

सतना चातुर्मास पर विचार किया तो ज्ञात हुआ कि मुनिवर ने परमात्म प्रकाश का हिन्दी अनुवाद, सुप्रभात स्तोत्र, महावीराष्टक स्तोत्र, पंचमहागुरुभक्ति, लघु स्वयंभूस्तोत्र ओर गोम्टेस थुदि का सुन्दर पद्यानुवाद किया है जिनका प्रथम श्रोता के रूप में आनंद श्री निर्मल जैन सतना ने लिया है, जो दर्शन के बाद पद्यानुवाद सुनने बैठ जाते थे।

ज्ञानाभ्यास का अंतराय

सतना में अक्सर सिद्धार्थ जी मुनिवर विमर्शसागर जी की सन्निधि में ग्रंथ 'पंडित रतनचंद जी मुख्तार : व्यक्तित्त्व-कृतित्व' का स्वाध्याय करते थे तथा विभिन्न विषयों पर तत्व चर्चा भी। एक सुबह स्वाध्याय के समय अन्य नगर निवासी एक सज्जन स्फूर्ति से आए, मुनिवर के दर्शन किए और पादप्रच्छालन करने हाथ बढ़ाए, तभी मुनिवर ने वात्सल्यपूर्वक कहा—'स्वाध्याय के बाद कर लेना।' मगर उन्हें कहीं जाना होगा, इसलिए पुनः निवेदन करने लगे, तब सिद्धार्थ जी बोले—भाई साहब स्वाध्याय के बाद भक्तिभाव सहित कर लेना। सज्जन ऐसे बने रहे जैसे उन्हें कुछ सुनाई नहीं पड़ा, बस लुटेरे की तरह वे पुनः बढ़े, मुनिवर के चरणों के नीचे थाली रखी और कलश से जल ढारकर पादप्रच्छालन कर लिया। शीघ्रता से प्रच्छाल जल मस्तिष्क पर लगाया और थाली, कलश लेकर चल पड़े। मुनिश्री ज्ञाता-दृष्टा की तरह मौन रह गए। उनके चले जाने के बाद सिद्धार्थ जी ने पूछा, महाराजश्री ! अब तो लोग भक्ति में भी उपसर्ग करने लगे हैं ? पहले तो मुनिवर ने उत्तर के रूप में अपनी मुस्कान बिखेर दी, फिर कुछ मिनट बाद बोले—'लोग ज्ञान के अभाव में ज्ञानाभ्यास के अंतराय को नहीं जानते'। पश्चात् पुनः स्वाध्याय में लीन हो गए।

नित्य नए भाँति-भाँति के भक्त आते -जाते रहते थे। एक दिन श्री राजेन्द्र जैन मुनिवर से अपना स्वर सजाते हुए बोले—'महाराज श्री, आप तप, संयम, साधना और चर्या का ज्ञानपूर्वक निर्वाह करते हैं, इसलिए लोग आपको चाहते हैं।' मगर इसके आगे राजेन्द्र जी अपनत्व वश बोले 'आप जहाँ भी जाएँ, एक दो पक्के भक्त जरूर बनाएँ।' मुनिवर सुनकर आश्चर्य में पड़ गए, अतः उन्हें मुस्कराकर विदा कर दिया।

निष्ठापन

4 नवम्बर 02, सोमवार को भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस पर स्थानीय सरस्वती भवन में मुनिद्वय ने चातुर्मास निष्ठापना की क्रियाएँ सम्पन्न कीं। फिर अपनी वसतिका को लौट आए। दोपहर में सामायिक के बाद, जब कक्ष से बाहर निकले तो रंगोली के रूप में विभिन्न रंगों की सुन्दर आकृतियाँ बनी हुई देखीं। उसका आकर्षण देखकर मुनिवर सोचते रहे—'ऐसी कौन श्राविका होगी, जो इतनी अच्छी चित्रकला कर लेती हैं?' शाम को किसी युवक ने बतलाया —'श्रीमती श्वेता जैन धर्मपत्नी संदीप जैन के द्वारा बनाई गई हैं।

नगर में दीपोत्सव की खुशियाँ हर द्वार से छलक रहीं थी, अतः खुशियाँ ही लेकर लोग शाम को मुनिवर के कक्ष में पहुँचे और कुछ ही समय में दीपों की आवलि से कक्ष आलोकित कर दिया, फिर मुनिवर की आरती कर प्रसन्नता पूर्वक घरों को लौट गए।

सतना से विहार

दीवाली के बाद एक सप्ताह पूरा न हो पाया और मुनिवर ने 10 नवम्बर को अचानक विहार कर दिया, लोग दौड़-दौड़कर उनके पीछे चल रहे थे, उनके चरण अमरपाटन की ओर थे।

अमरपाटन प्रवेश : 2002

मुनिवर की दिशा देखकर लोग समझ गए कि वे क्यों अमरपाटन जा रहे हैं? भाई, वह मुनि विनर्घसागर जी का गृहनगर भी तो है। मुनिवर ने रात्रि-विश्राम एक स्कूल में किया, सुबह पुनः चले। श्रावकों ने रास्ते में ही आहार की व्यवस्था बनाई, सतना के कैलाशचंद जैन (सम्राट) आदि चौका लेकर चल रहे थे। पुनः विहारकर दूसरे दिन अमरपाटन पहुँचे।

नगर सीमा पर ही श्री सप्पू जैन एवं अध्यक्ष श्री दीपचंद जैन ने विशाल समूह के साथ नगर प्रवेश कराया और उचित व्यवस्थाएँ बनाईं। समाज ने मुनिवर को शीतकालीन वाचना के लिए राजी कर लिया, फिर गांधी बाजार चौक पर विशाल पंडाल और मंच स्थापित किए। मुनिवर के निर्देशानुसार समाज के लोग उनके गुरुदेव से अनुमति भी ले आए थे, अतः फिर भारी उत्साह से हर कार्यक्रम में समाज ने उपस्थिति दी। नितप्रति वाचना होती थी जिसमें पुरुषार्थ सिद्धयुपाय दोपहर में और प्रवचनसार की सुबह। इस बीच एक दिन भारी तैयारी के साथ पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुनिद्वय को नवीन पिच्छिकाएँ भेंट की गईं और पुरानी पिच्छिकाएं संयम धारण करनेवाले भक्तों द्वारा प्राप्त की गई। शीघ्र ही 14 दिसम्बर को मुनिवर का

पाँचवाँ 'दीक्षा दिवस समारोह' हर्ष और उत्साहपूर्वक मनाया गया। जिसमें सतना, भिण्ड, महरौनी, ललितपुर सागर आदि के अनेक भक्त उपस्थित हुए। समाज ने सभी के साथ विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया, जो मुख्यमार्ग से होती हुई आदिनाथ जिनालय तक गई और पुनः पंडाल आई। श्री सप्पू जैन ने सभी गुरु भक्तों का अपनी ओर से विशिष्ट सम्मान किया।

अनेक श्रावकों ने तीन-तीन दीपक रखकर आरती उतारी। कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण अमरपाटन में धर्म की अमरता के सूत्र फैल गए।

एक दिन विहार करते हुए उपाध्याय श्री आत्मासागर जी महाराज अमरपाटन पधारे और आदिनाथ जिलनालय में रुके, मुनिसंघ ने उनसे वात्सल्य मिलन किया।

श्रेयांसगिरि वंदना

श्रेयांसगिरि में मुनिवर के गुरुदेव विराजे थे, वहाँ पंचकल्याणक महोत्सव निश्चित हो चुका था और गुरुदेव की आज्ञा भी आ चुकी थी, अतः मुनिद्वय ने अमरपाटन से विहार कर दिया। स्थानीय लोग उनके साथ थे। मुनिवर को रास्ते मालूम थे। अतः वे सड़क से न जाकर पहाड़ के रास्ते गए और सीधा पहाड़ उतरकर श्रेयांसगिरि पहुँच गए। वहाँ गुरुदेव के संघस्थ मुनियों ने समाज सहित आगत संघ की अगवानी की। अगवानी के बाद मुनिद्वय सीधे गुरुवसतिका की ओर बढ़ गए। वहाँ उन्होंने गुरुदेव की चरण वंदना की।

गुरु आज्ञा से विहार

पंचकल्याणक के कार्यक्रम नित्यप्रति उत्साहपूर्वक चल रहे थे, तभी महरौनी और ललितपुर के भक्तों ने मुनिवर विमर्शसागर जी को अपने साथ ले जाने हेतु आचार्य विरागसागर से निवेदन किया और बतलाया कि महरौनी में पंचकल्याणक है और ललितपुर में इंद्रध्वज विधान। आचार्यश्री सुनकर प्रसन्न हुए। शिष्यों को आज्ञा दी फलतः वे भक्तों के साथ विहार कर गए।

दोनों मुनि, पूज्य विमर्शसागर जी व पूज्य विनर्धसागर जी विजावर होते हुए डिकोली पहुँचे। रास्ते में कोहरा घना था अतः ओस के कणों से मुनियों की देह सफेद चादर सी दिखने लगी थी। ठंड तीव्रता से अपना प्रभाव छोड़ रही थी। जनवरी 2003 का समय था। जब मुनि डिकोली से लार के लिए विहार कर रहे थे तब रास्ते में अचानक वर्षा होने लगी। साथ में चल रहे लोग थर-थर काँप रहे थे, एक तो ठंड ऊपर से पानी। वे विचार करने लगे कि कोट और पतलून के बाद अपना ये हाल है तो ये मुनिवर किस शक्ति के बल पर यह भीषण शीत सह पा रहे हैं। हमें विश्वास हो गया कि वे चलते हुए रास्ता को तो देख रहे थे किन्तु पूर्ण रूप से आत्मध्यान में लीन हैं, अतः परिषह सहने की समता बनी

हुई है। कुछ देर बाद बारिस बंद हो गई, मुनिसंघ ने आहारजी के मंदिरों के दर्शन किए, फिर महरौनी की ओर बढ़ गए। रात्रि विश्राम एक प्राइमरी शाला में किया। महरौनी वहाँ से 7 किलोमीटर था।

जैसे ही महरौनी समाचार पहुँचा सैकड़ों, श्रावक श्राविकाएँ सर्दी के मौसम और कोहरे को धता बताकर मुनिसंघ के पास पहुँच गए। जिनमें अध्यक्ष श्री कपूरचंद जी लोंडुआ सतीश सिघई, महेन्द्र बाबा, ऋषभ कठरया प्रशांत चौधरी, वीर बहादुर, मुकेश जैन, चक्रेश चौधरी आदि लोग प्रमुख थे।

महरौनी प्रवेश : 2003

भव्य शोभायात्रा के साथ प्रातःकाल की बेला में मुनिसंघ ने विहार कर महरौनी नगर में प्रवेश किया। वहाँ जैनों के साथ अजैन बंधु भी मुनिवर के दर्शन और प्रवचन के लिए लालायित दिखे।

चूँकि महरौनी में कार्यक्रम 19 फरवरी से था। उससे 12 दिन पहले ललितपुर में शुरू होना था इन्द्रध्वज विधान, 7 फरवरी से 15 फरवरी के मध्य। अतः मुनिवर ने महरौनी में दो दिन के प्रवास में पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियों पर चर्चा की। पंडित विमल कुमार सौरया प्रतिष्ठाचार्य के मार्गदर्शन में पात्रों का चयन किया गया।

जिसतरह कोई हेडमास्टर समय विशेष के लिए छुट्टी लेकर कहीं जाता है और अवधि पूर्ण होते ही लौटकर शीघ्र अपने कार्य में लग जाता है, उसी तरह मुनिवर ने महरौनी से ललितपुर जाने और लौटने की चर्चा कर, विहार कर दिया।

ललितपुर प्रवेश : 2003

भगवान के भक्त हवा की तरह चलते हैं या नदी की तरह बहते हैं, रुकते नहीं, मुनिद्वय भी वही कर रहे थे। जिस दिन ललितपुर स्थित डोंड़ाघाट में इन्द्रध्वज महामंडल विधान का शुभारंभ होना था उसी दिन मुनिद्वय ललितपुर पहुँच गए। शाम हो पड़ी थी, विधान की घटयात्रा चल रही थी। जैसे ही श्रावकों को मुनि आगमन की सूचना मिली, वे सम्पूर्ण घटयात्रा के साथ मुनिवर की अगवानी करने नेहरू महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में जा पहुँचे। किया मुनिद्वय का पादप्रच्छालन फिर आरती। भारी जन-समुदाय के मध्य अध्यक्ष श्री सुन्दरलाल अनोरा, महामत्री अनिल अंचल, अरविंद जैन, पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद इमलिया, अखिलेश, गदयाना, शीलचंद अनोरा, वीरचंद सर्राफ, कोमलचंद, कोमल माड़वारी, वीरेन्द्र लाला, मुकेश सर्राफ, जिनेन्द्र जैन, अरविन्द बमोर, हुकमचंद धनवारा, रवि चुनगी, अनंत सर्राफ आदि भी थे।

पंचायत समिति के पदाधिकारियों ने मुनिद्वय के पादप्रच्छालन कर, मंगल आरती का लाभ लिया, फिर उन्हें शोभायात्रा के साथ डोड़ाघाट जैन मंदिर ले गए।

कार्यक्रम तो सुबह से ही शुरू हो चुका था फिर भी आशीर्वाद के लिए मुनिवर की प्रतीक्षा की जा रही थी, जैसे ही वे मंदिरजी पहुँचे, पंडित नरेन्द्रकुमार ने वहाँ के मंदिर प्रबंधक श्री प्रेमचंद, वीरचंद सर्राफ से ध्वजारोहण कराया। फिर विधि सहित भूमि-शुद्धि की क्रियाएँ सम्पन्न की गईं। उसके बाद सुने सभी ने मुनिवर के प्रवचन।

1.

दूसरे दिन सुबह मुनिश्री ने कहा—आत्मज्ञान के साथ परमात्म आराधना ही परमशांति का निमित्त है।

दोपहर में कहा—व्यवहारज्ञानी बहिरंग त्याग करता है तत्त्वज्ञानी अंतरंग से त्याग करता जबकि शुद्धात्मज्ञानी दोनों प्रकार के त्याग से रहित है।

आयुर्वेदिक राज्यमंत्री चिकित्सा विभाग कुंवर वीरेन्द्र सिंह जी बुन्देला 'भगत राजा' ने मुनिश्री के चरणों में नमन कर श्रीफल अर्पित किया और कहा—मुनिश्री का दर्शन वंदन और आशीर्वाद पाकर ऐसा लगा जैसे हमारा क्षत्रिय जीवन सार्थक हो गया हो क्योंकि जैनधर्म के सभी तीर्थंकर क्षत्रिय थे।

2.

तीसरे दिन मुनिश्री ने कहा—कर्तव्यपालन और संस्कारित जीवन ही जैनत्व को संरक्षित कर सकता है।

दोपहर में कहा—युवा, शक्ति का प्रतीक है इसलिए युवाओं को व्यसनमुक्त जीवन जीना चाहिए साथ ही सामाजिक सेवा में आगे आकर रचनात्मक कार्यों में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए।

3.

चौथे दिन मुनिश्री ने कहा—मनुष्य शंकालु नहीं बल्कि श्रद्धालु बनकर जीवन सुखमय बनाएँ।

दोपहर में कहा—आज समाज में चोरी-छिपे शराब, सिगरेट, और सट्टे का चलन कल नासूर बन जाए, इसके पहले ही समाज को जागरूक हो जाना चाहिए और इन बुराईयों को दूर करने के लिए सख्त निर्णय समाज के मध्य रखना चाहिए।

4.

पाँचवें दिन प्रवचन में कहा—आकांक्षा और कामना के साथ की गई ईश भक्ति का प्रतिफल मनुष्य को कुछ भी नहीं मिलता। आस्तिक होने का ढोंग करनेवाले व्यक्तियों से अच्छे तो नास्तिक हैं जो भगवान से कुछ नहीं माँगते, और अपने कर्म पर विश्वास करते हैं।

दोपहर में कहा—साधु में भेदभाव करनेवाला श्रावक अधर्मी है। अतः पंथ, ग्रंथ और संत के व्यामोह से मुक्त होकर निर्ग्रन्थ आचरण की उपासना करना चाहिए।

पुलिस महानिरीक्षक मल्कियतसिंह और पुलिस अधीक्षक एम. अशोक जैन ने मुनिश्री का दर्शन वंदन कर आशीर्वाद लिया।

5.

छठवें दिन प्रातः प्रवचन में कहा—जैनधर्म में व्यक्ति की नहीं अपितु गुणों की पूजा कही है, अतः चेहरे नहीं साधु का चारित्र पूजना चाहिए।

दोपहर में कहा—श्रमपूर्वक धन अर्जित करना पुण्य किन्तु श्रम के बिना धन कमाना पाप है। अतः कभी भी जुआ नहीं खेलना चाहिए।

6.

सातवें दिन प्रवचन में कहा—मनुष्य को सदैव दूसरों की निंदा करने से बचना चाहिए।

दोपहर में कहा—आज मनुष्य लूट-खसोट, हवस-वासना जैसे दुष्कृत्यों में लिप्त हो पशु के समान व्यवहार कर रहा है यदि अपना रास्ता नहीं बदला, तो जीवन में दारुण दुःख भोगने पड़ेंगे।

7.

आठवें दिन प्रातः प्रवचन में कहा—लोग कहते हैं कि पुण्य का कार्य है रोते हुए बच्चों को हँसाना चाहिए। लेकिन जिस घर में बच्चे ही न हों वो किसको हँसाएगा। उन्हें मैं सलाह देता हूँ कि उन्हें सुबह और शाम आइने को हँसाना चाहिए और आइना तभी हँसेगा जब आप हँसेंगे।

दोपहर में कहा—निराशा और अवसाद में जीना आत्मा के परमआनन्द से वंचित रहना है जिसे आत्मा का परमआनंद मिल जाता है, उसके जीवन में निराशा कभी आती ही नहीं।

8.

नवें दिन प्रातः प्रवचन में कहा—मनुष्य ज्ञानार्जन के साथ चारित्र का निर्माण भी करे। चारित्र के बिना ज्ञानी मनुष्य भी अंधे व्यक्ति के तरह दुःख भोगने को मजबूर रहता है।

9.

दसवें दिन 16.2.03 रविवार को मुनिश्री का प्रवचन लोहा पीतल बाजार में दिगंबर जैन पंचायत समिति द्वारा आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने प्रवचन में कहा—अहंकार जीवन की सबसे बड़ी विकृति है। रावण को राम ने नहीं अपितु अहंकार ने मारा था।

वेलेन्टाइन डे भारतीय संस्कृति के लिए घातक है यह निष्काम प्रेम का दिन नहीं अपितु वासनापूर्ति का साधन है।

कार्यक्रम का संचालन दिगंबर जैन पंचायत के महामंत्री श्री अनिल अंचल ने किया। अंत में अध्यक्ष सुन्दरलालजी अनौरा ने मुनिश्री से अनजाने में हुई गल्तियों के लिए क्षमा याचना की।

महरौनी समाज के प्रतिनिधियों ने पचकल्याणक के लिए सानिध्य हेतु विहार की भावना श्रीफल अर्पित कर व्यक्त की। मुनिश्री प्रवचन के पश्चात् महरौनी की ओर विहार कर गए। मुनि भक्तों ने नगर सीमा पर जाकर उन्हें विदा किया।

महरौनी प्रवेश : पंचकल्याणक

18.2.2003 को मुनिश्री का महरौनी प्रवेश हुआ, जैन समाज ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। पुरुषों के हाथों में ध्वजा तथा महिलाएँ कलश लेकर चल रहे थे। वहीं युवाओं ने मुनिवर के जयकारों से आकाश गुंजायमान कर दिया था। बैंड बाजों के साथ मंगल आगमन गीतों का स्वर और उत्साहित युवाओं का आनन्द नृत्य के साथ परिलक्षित हो रहा था। प्रतिष्ठाचार्य पं. वर्द्धमानजी सौंरया ने पंचकल्याणक की रूपरेखा बताई। शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई जैन मन्दिर पहुँची।

42 वर्षों के बाद होनेवाले इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रवेश के दिन मुनिश्री ने सभी को जीवन में सदाचरण अपनाने व धर्म के प्रति समर्पित रहने का उपदेश दिया।

19 फरवरी से 25 फरवरी तक हुए पंचकल्याणक महोत्सव का समापन दोपहर में गजरथ महोत्सव के साथ हुआ। हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा का दृश्य सभी के लिए रोमांचित करता रहा। पंचकल्याणक महोत्सव निर्विघ्न सानन्द सम्पन्न हुआ।

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का आदेश बीना आने का हो चुका था। अतः मुनिद्वय ने महरौनी क्षेत्रपालजी से बीना के लिए विहार कर दिया। पठा, पाली, बालाबेहट, खिमलासा होते हुए शाम को मुनिद्वय बीना इटावा पहुँचे। संघ ने आगवानी की। पश्चात् मुनिद्वय ने आचार्यश्री का दर्शन कर त्रयभक्तियुत् नमोस्तु किया।

बीना में विशुद्धसागरजी, विशदसागरजी, विनम्रसागरजी, विहर्षसागरजी, विकर्षसागरजी, आर्यिका विशाश्री आदि सभी आर्यिकाओं से मिलन हुआ।

15 अप्रैल 2003 को महावीर जयंती का आयोजन इटावा जैन मंदिर के बाहर प्रांगण में आयोजित किया। पश्चात् बीना से सभी संघों के विहार हो गए।

मुँगावली विहार

मुनिश्री विमर्शसागरजी मुनि विश्वपूज्यसागर जी मुनिश्री विनर्घ्यसागरजी का विहार बीना से मुँगावली की ओर हुआ। मुनिद्वय मुँगावली में सात-आठ दिन रुके। एक दिन आचार्यश्री विद्यासागरजी के शिष्य बा.ब्र. राजुभैया (मुनि विशदसागर) ने मुनिश्री विमर्शसागरजी महाराज से आहारचर्या के बाद कहा—महाराजश्री! आपके सुस्वर नामकर्म का उदय है आप जो भक्तियाँ आदि पढ़ते हो उनका उच्चारण भी स्पष्ट है यदि आप अपने स्वर में समयसार जी आदि ग्रंथों की गाथाएँ और अर्थ कर दें तो बहुत उपयोगी हो जाएँगे। मुनिश्री ने अपने स्वभाव के अनुसार मात्र मुस्कराकर भैयाजी की बात का स्वागत किया।

अध्यात्म चिंतन के धनी मुनिवर

एक सुबह मुनि विमर्शसागरजी ससंघ जंगल गए थे। साथ में मुँगावली के कुछ ब्र. भैया भी थे। बिना ट्राली के ट्रेक्टर को तेज दौड़ते हुए देखकर मुनिश्री विमर्शसागर ने मनोविनोद करते हुए बड़ी मार्मिक बात कही—देखो-देखो ट्रेक्टर कितना तेज दौड़ रहा है। सभी ने मिलकर कहा—महाराज श्री इसमें ट्राली नहीं है इसलिए तेज दौड़ रहा है।

मुनिश्री ने कहा—इसीप्रकार जब तक स्त्रीरूपी ट्राली पुरुष रूपी ट्रेक्टर के साथ नहीं है तब तक ट्रेक्टर स्वतंत्र होकर तेज दौड़ सकता है। किन्तु जब स्त्री रूपी ट्राली साथ लग जाती है तो पुरुषरूपी ट्रेक्टर पराधीन होने से इच्छानुसार तेज नहीं दौड़ सकता अतः स्त्री से सदैव ही दूर रहना चाहिए।

सभी लोग मुनिवर का चिंतन सुनकर बोले—महाराजश्री! आपने बड़ी मार्मिक बात कही है जो प्रेरणादायक है।

मुनिश्री के शांत और सरल स्वभाव से सभी लोग प्रभावित थे। एक दिन मुनिसंघ ने भौरासा के लिए विहार किया। क्षेत्र की वंदना कर मण्डीबामौरा

पहुँचे। मण्डीबामौरा में पवन जैन, नीलमणि जैन आदि ने एवं पाठशाला की दीदियाँ सभी ने तत्त्वज्ञान चर्चा आदि में भाग लिया। 15 20 दिन संघ रुका।

मंडी बामौरा से विहार

मुनिवर ने ललितपुर में होनेवाली दीक्षाओं का समाचार पाते ही मंडीबामौरा से विहार किया। संघ खुरई पहुँचा। आर्यिका भावनामति प्रभावनामति माताजी (शिष्या आचार्य विद्यासागरजी) ने मुनिसंघ की अगवानी की। मुनि विमर्शसागर जी के पहुँचते ही प्रवचनसभा समवसरण सी प्रतीत होने लगी। मुनिसंघ चलकर आया था, अतः आर्यिका संघ ने अनुकूल स्थान पर मुनिसंघ को आग्रहकर ठहराया। स्वयं नवनिर्मित धर्मशाला में स्थान पा लिया। यद्यपि मुनिवर ने कहा—माताजी, आप लोग परेशान न हों। माताजी ने कहा—महाराजश्री! अनुकूल स्थान हो तो धर्मसाधना भी अनुकूल रहती है। फिर हमारा भी तो कर्तव्य बनता है। यथायोग्य समाचारी से समाज में दोनों संघों की चर्चा प्रशंसापरक होती रही। जब मुनिसंघ का दूसरे दिन खुरई से विहार हुआ तो आर्यिका संघ ने दूर तक चलकर विदाई दी। संघ खिमलासा पहुँचा।

खिमलासा में आर्यिका विशाश्री संघ से मिलन हुआ। दोपहर में तत्वचर्चा हुई। दूसरे दिन मुनिवर ने पाली के लिए विहार किया। ललितपुर प्रवेश के पूर्व गौशाला में आहारचर्या हुई। मुनिवर विमर्शसागर जी का अंतराय हो गया।

ललितपुर प्रवेश

मुनिवर विमर्शसागरजी संघ के आगमन का समाचार पाते ही डोंडाघाट के नवयुवकों ने बैंडवादन करते हुए धूमधाम से प्रवेश कराया। हुआ पू. विरागसागर जी संघ का दर्शन। मुनिवर ने अपने गुरु की त्रयभक्ति वंदना की। सभी के साथ योग्य समाचारी हुई। सभी एक-दूसरे से मिलकर प्रसन्न हुए।

8 जून को 21 दीक्षाएँ कराने का सौभाग्य ललितपुर की धर्मवत्सव समाज को मिला। 10 जून को छत्तीसगढ़ भिलाई के भक्तों ने पू. विरागसागर जी संघ का विहार ललितपुर से कराया।

चंदेरी में वात्सल्य मिलन

मुनिवर विमर्शसागर जी मुनि विश्वपूज्यसागर जी, मुनि विनर्घसागर जी एवं मुनि विनम्रसागरजी, मुनि विजयसागरजी, क्षु. विशारदसागर जी, क्षु. विधेययागर जी, दोनों संघों ने एक साथ ललितपुर से विहार कर तीर्थक्षेत्र सेरोनजी की वंदना की। वहाँ से चंदेरी पहुँचे। मुनि स्वभावसागर जी से मिलन हुआ। चंदेरी में दो दिन प्रवास कर मुनिसंघ थूबौन जी पहुँचा। क्षेत्र की भाववंदना कर वहाँ से विहार किया। रात्रि विश्राम हेतु संघ बरखेड़ा स्कूल में ठहरा। जहाँ अशोकनगर समाज

के प्रतिनिधियों ने अशोकनगर प्रवेश हेतु श्रीफल समर्पित किए। दूसरे दिन सुबह 8.00 बजे मुनिसंघ ने अशोकनगर के गंजमंदिर में प्रवेश किया। जगह जगह तोरणद्वार, रंगोली, पादप्रक्षालन और नीरांजना उतारी गई।

मुनिसंघ चैत्यवंदना कर प्रवचनसभा में पहुँचा। जहाँ अध्यक्ष रमेश चौधरी के नेतृत्व में समाज ने चातुर्मास हेतु श्रीफल समर्पित किए। मुनि विमर्शसागर ने गुरुआज्ञा की बात कहकर मार्गदर्शन किया। उस दिन मुनिवर का संक्षिप्त प्रवचन भी इतना प्रभावशाली था, कि लोग जगह-जगह चर्चा करते रहे। तभी 25 जून को मुनिवर विमर्शसागर की विधि न मिलने से अंतराय हो गया। श्रावकों में एक चर्चा चल पड़ी। साधु श्रेष्ठ चर्यावाले हैं।

चातुर्मास निकट था अतः समाज के प्रतिनिधि लखनादौन जाकर पू. विरागसागर जी से आशीर्वाद पत्र लाए। 'चातुर्मास धर्मप्रभावनापूर्वक हो' ऐसा आशीर्वाद भी दिया।

बजरंगगढ़ दर्शन

2 जुलाई 03 को मुनि विमर्शसागर ने बजरंगगढ़ दर्शन हेतु विहार किया, तो मुनि विनम्रसागर जी ने चंदेरी वर्षायोग हेतु। बजरंगगढ़ में भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ का मनोहारी दर्शन कर सबका मन प्रफुल्लित हुआ।

अशोकनगर चातुर्मास : 2003

मुनिवर विमर्शसागर जी ससंघ 10 जुलाई 2003 को अशोकनगर में प्रवेश करनेवाले हैं अतः नगर को विशेष रूप से सजाया गया। आबालवृद्ध नगर की सीमा पर रंगोली-आरती का थाल, कलश, लिए खड़े थे। मुनिसंघ के पहुँचते ही सबने अपने श्रद्धाभाव व्यक्त किए। मुनिवर के ऐतिहासिक प्रवेश का साक्षी बना था समूचा नगर।

सुभाषगंज स्थित जिनालय के समीप सुन्दर पंडाल खड़ा किया गया था। नियत तिथि 12 जुलाई 2003 को मुनिवर विमर्शसागर जी ने ससंघ वर्षायोग की स्थापना की। चातुर्मास कलश स्थापना का सौभाग्य समाज के अध्यक्ष श्री रमेशचंद चौधरी को प्राप्त हुआ। स्थापना का कार्यक्रम पूर्ण हो कि उसके पूर्व प्रशासन के प्रतिनिधि ने हर्षपूर्वक घोषित कर दिया कि आज से यह नगर 'जिला केन्द्र' हो गया है। कल तक तहसील अशोकनगर गुना जिले का एक हिस्सा था आज यह स्वतः जिला है। घोषणा सुनकर श्रोताओं ने मुनिवर का जयघोष किया और स्वीकार किया कि मुनिवर के स्थापना कलश के प्रभाव से ही नगर जिला केन्द्र स्थापित हो सका है। यह उनकी देन मानी जावेगी। प्रतिनिधि सहित कार्यकर्ताओं ने श्रीफल भेंटकर मुनिवर का आशीष पाया।

मुनिवर की प्रेरणा से अशोकनगर में प्रथमबार भक्तामर शिविर की आयोजना की गई, जो कई दिनों तक चर्चा में रही। इसी अंतराल में मुनि विमर्शसागर जी ने भक्तामर का गेय पद्यानुवाद कर डाला, जिसकी मधुर-लय और शब्द-सम्पदा अलौकिक है। जिसका एक पद्य यहाँ उद्धृत है–

श्री भक्तामर स्तोत्र महान, रचा गुरु मानतुंग ने जान।
भक्ति जब हृदय समाई है....
आदि विधाता आदिनाथ की महिमा गाई है।
चरण में वंदन है–चरण रज चंदन है'

अशोकनगर में गत 100 वर्षों में अनेक साधुसंत निर्दोष चर्या सम्पन्न कर चुके हैं, किन्तु जब वहाँ के भक्तों ने मुनिवर विमर्शसागर जी की आगमोक्त चर्या देखी और समझी तो आँखें खुल गईं। उन्होंने स्वीकार किया कि पूर्व में कुछ भ्रांतियों ने मन में जन्म ले लिया था जो मुनिवर की चर्या से स्वतः ही दूर हो गईं।

अशोकनगर वर्षायोग विशेष प्रभावना के साथ सम्पन्न होता रहा, उधर मुनिवर की लेखनी आगम-प्रणीत साहित्य समृद्ध करती रही। इस अंतराल में उन्होंने एक भजन की रचना की, जो क्रमशः लोकप्रियता के मानदण्ड पार कर गया। आज भी सायंकालीन गुरुभक्ति के बाद मुनिवर के मीठे कंठ से सुनकर श्रद्धालुगण झूमने लगते हैं–

कर तू प्रभु का ध्यान-बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान-2

चातुर्मास में पूजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 600 शिविरार्थियों ने जिनेन्द्रदेव, जिनधर्म में आस्था का आदर्श स्थापित किया यानि गुरुदेव से नित्य नियम की पूजन का संकल्प किया।

एडी. जे. सुभाष जैन मुनिवर का दर्शन, वंदन, प्रवचन लाभ लेने आते रहते थे। पूज्य मुनिवर के प्रवचन जनमानस के अंतस् पटल पर अंकित हो जाते थे। वास्तव में थे प्रवचन जन-जन के लिए। एक दिन सुभाषजी ने जेल में प्रवचन का आग्रह किया। पूज्य मुनिवर ने करुणान्वित हो निवेदन को स्वीकार लिया। उस दिन सैकड़ों लोगों ने मुनिवर के साथ की थी जेल जाने के लिए पदयात्रा। मुनिवर का प्रवचन हुआ भी ऐसा कि बंदीभाईयों ने अश्रुपूरित हो व्यसन त्याग का संकल्प किया था।

मानो चतुर्थकाल आ गया हो

पर्यूषण पर्व में मुनिश्री के प्रवचन आध्यात्मरस में सराबोर करनेवाले थे। क्षमावाणी पर्व पर मन को निर्मल करने वाली मुनिवर की वाणी सुनकर हर

श्रावक की आँख नम और आचरण नम्र हो गया था। वर्षों का वैर पांडाल में फूट फूटकर रो रहा था। अध्यात्मप्रेमी सुभाष वकील ने मंच से कहा इस बार चातुर्मास में ऐसा लग रहा है मानो चतुर्थकाल आ गया हो। न कोई विवाद-न कोई बात। जहाँ देखो वहाँ धर्म की चर्चा और इन संत की अर्चा हो रही है। अध्यक्ष रमेश चौधरी, बाबूलाल बरोदिया, भानु चौधरी, सुमेरचंद सर्राफ, डॉ. सुगन चंद जी ने भी ऐसे ही विचार रखे।

धीरे-धीरे वर्षायोग का समय पूर्ण हो गया। महावीर निर्वाण-दिवस पर उनके पूजन के साथ, मुनिवर ने ससंघ निष्ठापन क्रिया की।

ब्रह्मचारी छोगालाल की समाधि

यह प्रसंग वर्षायोग के प्रारंभिक समय का है जब ब्र.जी ने मुनिवर से अशोकनगर स्थित गंज मंदिर में समाधि करा देने की प्रार्थना की। मुनिवर ने उन्हें आशीर्वाद दिया–'समाधिरस्तु।'

मुनिवर के निर्देशन में ब्रह्मचारी जी ने समाधि की साधना प्रारंभ कर दी। उनकी कमर की हड्डी टूट गई थी इसलिए चलना-फिरना बंद था। लगातार लेटे रहने से पीठ में फोड़े (बैड शोर) हो गए थे। डॉ. सुगनचंद उनकी ड्रेसिंग आदि करते थे। ब्रह्मचारी जी के नाती जयकुमार जैन सेवा हेतु उपस्थित रहते थे।

जुलाई से चलकर सितम्बर माह लग गया, ब्रह्मचारी जी का देह तत्त्व कमजोर हो गया था। एक दिन प्रातःकाल 7.30 बजे उनको सम्बोधित करने मुनिवर कक्ष में आए तो देखा उनकी श्वास उलटी चल रही है किंतु चेतना बनी हुई है, अतः मुनिश्री सम्बोधित करने लगे। तभी वयोवृद्ध ब्रह्मचारीजी ने मुनिवर के समक्ष याचना भरे हाथ फैलाए। मुनिवर समझ गए क्षपकराज दीक्षा चाहते हैं। उन्होंने तुरंत मुनिदीक्षा संस्कार सम्पन्न किए। उनके हाथ में एक पीछी भेंट की। नामकरण किया-मुनिश्री विश्वतीर्थसागर जी।

मुनिवर णमोकार मंत्र पढ़ते रहे, साथ में संघस्थ संतगण एवं श्रावकगण भी। मुनिवर ने उनसे उच्चारण कराया। लगभग 8.15 बजे क्षपक मुनिराज विश्वतीर्थसागर ने देह का त्याग कर दिया। उनकी खुली हुई आँखें मुनिवर को निहारती सी लग रही थीं। वह 26 सितम्बर 2003 का दिन था।

शीघ्र ही समाज ने सहस्त्रों श्रावकों के साथ 'विमान यात्रा' निकाली एवं मुनि विश्वतीर्थसागर जी की देह को स्थानीय गौशाला में अग्नि के सुपुर्द किया। बाद में मुनिवर की प्रेरणा से समाज ने वहाँ एक छतरी का निर्माण भी कराया।

ब्र. राजीव भैया

सेठ पदमचंद जैन (सिंघाड़ा) का बड़ा बेटा राजीव मुनिवर की सेवा, वैयावृत्ति एवं चर्या में नित्य रहता। जब मुनिरत्न विमर्शसागर जी के चरण अशोकनगर को स्पर्श दे रहे थे, तभी मुनिवर की वीतराग छवि हृदय में अंकित हो गई थी। मुनिवर की ज्ञान-ध्यान चर्या से प्रभावित हो भक्ति के प्रसून पूजन बनकर जन्मे थे। अतः राजीव अपने इष्ट मित्रों के साथ नित्य मुनिवर की पूजा करने उपस्थित होता। एक दिन मुनिश्री ने पूछा—

—क्या नाम है तुम्हारा?

—जी राजीव।

—क्या करते हो?

—आपके चरणों में रहने की भावना।

—अच्छा, क्या पक्की भावना है।

—हाँ, मैंने दृढ़ निश्चय किया है।

प्रवचन का समय हो गया था, अतः मुनिवर ने कहा—तुम्हें अपने मम्मी-पापा से बात करना चाहिए। उनकी अनुमति होगी, तभी यह संभव हो पाएगा। राजीव ने कहा— ठीक है महाराज! मैं कल मम्मी-पापा को साथ लेकर आऊँगा।

राजीव के दृढ़ निश्चय से अवगत होने पर माता-पिता ने मुनिवर को बोझिल मन से दी स्वीकृति, राजीव को मिला 5 वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत का आशीर्वाद।

पिच्छिका परिवर्तन के समय राजीव ने भावना की थी पुरानी पिच्छी की, सो मुनिवर विमर्शसागर जी के 'मुनि दीक्षा दिवस' 14 दिसंबर को वह भावना पूर्ण हो गई जब राजीव के हाथों में मुनिवर ने अपने कर कमलों से पिच्छी सौंप दी।

अशोकनगर से विहार

14 जुलाई, 04 को मुनिवर विमर्शसागर जी ने दोपहर धर्मशाला में विहार का निर्णय सुना दिया। भक्तों के चेहरे अश्रुपूरित हो गए। मुनिवर ने विहार पूर्व प्रवचन में कहा—'साधु विहार करता रहे तो निर्मल रहता है नदी के जल की तरह। समाज को 'संत, पंथ और ग्रंथ के भेद से दूर रहकर सच्चे श्रावक बनने एवं कर्तव्यपालन करने का मार्गदर्शन देकर क्षमाभाव रखने का संदेश दिया काव्य की मधुरता से—

आप सबका प्यार लेकर जा रहा हूँ।

आचरण का हार देकर जा रहा हूँ।।
गीत हूँ जब गुनगुनाओगे मुझे।
आप अपने पास पाओगे मुझे।।
धर्म की मनुहार देकर जा रहा हूँ। आप...
जो हुई त्रुटि भूल से अज्ञान से।
माँगते हैं क्षमा हर श्रीमान् से।।
क्षमा का उपहार देकर जा रहा हूँ। आप...
भूलकर भी भूल न पाओगे तुम।
होगे जब तन्हा तो याद आयेंगे हम।।
प्रेम का व्यवहार देकर जा रहा हूँ। आप...

मुनिवर अशोकनगर से चाँदखेड़ी तीर्थवंदन को चल पड़े। साथ ही मुनि विनम्रसागर जी ससंघ चले। मुनिवर के पीछे अशोकनगर के सैकड़ों श्रद्धालुभक्त 7 किमी. तक पीछे-पीछे गए। अशोकनगर के लिए यह पहला अवसर था जब किसी संत के विहार में ऐसा श्रद्धाभाव देखा गया हो।

चाँदखेड़ी प्रवेश

मुनिसंघ गुना, छबड़ा होते हुए चाँदखेड़ी पहुँचा। हुआ आदिनाथ का मनोहारी दर्शन। 12 अप्रैल को ब्र राजीव ने मुनिवर के आशीष से वस्त्र परिवर्तित किए। 12 दिन मंगल प्रवास चाँदखेड़ी में व्यतीतकर कोटा के लिए विहार किया।

कोटा प्रवेश

चाँदखेड़ी से चलकर संघ कोटा नगर में पहुँच चुका था, मई का माह तीव्र आंच दे रहा था। संघ छावनी जिनमंदिर में रुका। उस समय मुनि विमर्शसागर जी के साथ-साथ मुनि विनम्रसागर जी भी अवस्थित थे। कोटा की ग्रीष्मकालीन हवाओं ने अनेक लोगों का स्वास्थ्य खराब कर दिया। ब्र. राजीव भैया को तो ज्वर के साथ-साथ उल्टियाँ होने लगी। मुनि विमर्शसागर जी ने दोपहर में एक श्रावक से चौके का मेवा बुलवाया। राजीव ने थोड़ा सा मेवा खाया किन्तु तुरंत वमन हो गया। रात को ब्रह्मचारी जी छत पर मुनिवर के समीप ही लेटे थे। श्रावक गण उनकी वैयावृत्ति कर वापिस हो चुके थे, तभी मुनिवर ने क्षुल्लक विदेहसागर को साथ लिया तथा हाथ में तेल की शीशी ली और ब्रह्मचारी जी के सिर पर मालिश करने हाथ बढ़ाए। क्षुल्लक जी को इशारा किया, उन्होंने पीछे से ब्र. जी के दोनों हाथ पकड़ लिए, अब क्या था मुनिवर ने हथेली में तेल लेकर दस मिनट तक ब्र. जी के सिर और काँधों की मालिश की। मालिश के

बाद ब्र. जी के सिर व पीठ पर हाथ रखा, उन्हें सान्त्वना दी और अपने कक्ष की ओर चले गए।

ब्र. जी को तो उस क्षण माता और पिता एक साथ मिल गए थे, उन्हें इतनी खुशी हुई कि वे सुख से निद्रामग्न हो गए। सुबह उठे तो अपने आप को पहले से अधिक ठीक पाया। ब्र. जी मंद स्वर में बोले–'सब आपके आशीर्वाद का सुफल है।'

देवपुरा (बूंदी) में पंचकल्याणक

क्षुल्लक विशुद्धसागर जी एवं देवपुरा समाज के निवेदन पर मुनि विमर्शसागर एवं मुनि विनम्रसागर ससंघ केशवरायपाटन होते हुए बूंदी पहुँचे। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सानिध्य प्रदान किया। पश्चात् ऐतिहासिक नगरी बूँदी में चौराहे-चौराहे पर प्रवचन सभा आयोजित की गई। रामगंजमंडी, केकड़ी, निवाई आदि स्थानों से चातुर्मास निवेदन समाज ने किया, किन्तु आशीर्वाद मिला रामगंजमंडी समाज को। मुनिवर विमर्शसागर ने चातुर्मास हेतु बूँदी से विहार कर दिया।

वर्षायोग रामगंजमण्डी : 2004

मुनिवर ने ससंघ रामगंजमण्डी की सीमा पर चरण रखे, दिनांक था 26 जून 2004। पूरी मंडी का समाज अगवानी की प्रतीक्षा कर रहा था। हुई भाव-भीनी अगवानी। पादप्रच्छालन आरती। इस अवसर पर भिण्ड ओर अशोकनगर के श्रावक भी उपस्थित थे। मुनिवर शोभायात्रा के साथ मंदिर पहुँचे, देवदर्शन के पश्चात् हुए मंगल प्रवचन। सारे नगर में हर्ष था 'मुनिवर पधार गए। धर्मधारा प्रवाहित करने वाले आ गए।'

मंगल कलश स्थापना

4 जुलाई को मुनिवर ने ससंघ वर्षायोग स्थापना की। चातुर्मास मंगल-कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री अनंत जी बागड़िया ने प्राप्त किया एवं ध्वजारोहण का सुयोग श्री जयकुमार विनायका ने। उस दिन भी मुनिवर के प्रवचन अत्यंत प्रभावनाकारी सिद्ध हुए।

मुनिवर विमर्शसागरजी एक दिन भी धर्म से रिक्त नहीं जाने देते, श्रावकों के समक्ष ऐसे-ऐसे कार्यक्रम ला देते हैं कि वे मनोयोग से उसी में खोए रहते हैं।

11 जुलाई से प्रतिदिन प्रातःकाल 8.15 से 9.30 तक भक्तामर पर प्रवचन देते। उनकी मीठी वाणी से उच्चारित किए जानेवाले श्लोक लोरी जैसा मिठास कानों में भर देते थे। इसी बीच वे अन्य अन्य पर्व, त्योहार और कार्यक्रम भी सम्पन्न करते चलते थे। प्रत्येक कार्यक्रम में सुरीले कंठ की धनी खुशबू जैन का मंगलाचरण नियत था।

15 अगस्त 2004 को मुनिवर के सान्निध्य में 'भारत विकाश परिषद्' के अनुरोध पर विशेष सभास्थल पर सार्वजनिक प्रवचन रखे गए। उस दिन सभी उपस्थित नेता, अधिकारी और श्रावकगण मंत्रमुग्ध हो प्रवचनों का लाभ लेते रहे। जब लोगों को ज्ञात हुआ कि मुनिवर ने राष्ट्र बोधक एक सुन्दर रचना लिखी है, तो मुनिवर से सुनाने का अनुरोध किया। वे अनुरोध को टाल नहीं सके—पाठकगण यह रचना छठवें खंड में पढ़कर आनंद लें। बाद में शिक्षा बोर्ड में सलाहकार के पद पर सेवारत् बचपन के अभिन्न मित्र लोकेश खरे ने प्रयासकर 'मध्यप्रदेश शासन शिक्षा मण्डल' की ग्यारहवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक 'मकरंद' में प्रकाशित कराई।

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं जिनकी रचना पाठ्यक्रम में शामिल की गई।

पूजन शिविर

मुनिवर विमर्शसागर जी की सद्प्रेरणा से समाज ने 3 सितम्बर से 15 सितम्बर तक पूजनशिविर का आयोजन किया। प्रथम दिन से ही केशर और कपास की क्यारियाँ मंच के समक्ष खिल गईं, महिलाएँ केशरिया वस्त्रों में थीं और पुरुष सफेद वस्त्रों में। सुबह 7:30 से अभिषेक और पूजन की विधि बतलाते हुए मुनिवर स्वतः अभिषेक देखते और लोगो को सही ढंग से करने की विधि समझाते। बाद में 9 बजे से प्रवचन होते थे जिसमें संस्कारों की चर्चा प्रभावकता से की जाती थी। श्रावकों और श्राविकाओं के साथ युवक-युवतियों और बच्चों ने भी भाग लिया, प्रशस्त विधि सीखी। अंतिम दिन कार्यक्रम का समापन करते हुए मुनिवर ने जो प्रवचन दिए थे उसका आशय सारांश कहना सरल नहीं है।

उस दिन मुनिवर ने अपने प्रवचनों के माध्यम से आगम का सत्य स्थापित करते हुए आदमी का परिचय आदमियत से कराने का सुंदर ढंग अख्तियार किया था। उनकी बातें सुनकर लगा कि जन-जन को बतला देना चाहते हैं—

कह कह के अपना दे रहे सबको दगा अपने
खाकर दगा न फिर भी सँभलता है आदमी।
अपना जमीर खोने से इज्जत किसे मिली,
पानी का मोल है, यहाँ सस्ता है आदमी।
जैसा करम करोगे, वैसा फल भी पाओगे,
क्यों भाग्य के लिए ही तरसता है आदमी।।''

उक्त पंक्तियों का आशय यह है—पूजन शिविर में गुरुदेव की भक्त कल्पना मित्तल ने बोली ले ली। बाद में मुनिवर से कहा—हमारे पति जैनधर्म नहीं मानते। मुनिवर ने दर्शनार्थ लाने को कहा। दूसरे दिन पति-पत्नी साथ आए, तो मुनिवर

ने आदेश दिया पूजन शिविर में बैठने को। साथ ही बताया यह प्रशिक्षण शिविर है इसलिए घबराएँ नहीं। संयोग से विनोद मित्तल के पूजन में भाग लेते ही पुराने व्यापारी से जिसकी आशा छोड़ चुके थे, वह बड़ी राशि का हिसाब करने का समाचार आया। विनोद मित्तल ने सोचा—यही है गुरु का आशीष। तब से वे परमगुरुभक्त और जैनधर्म के अनुयायी हो गए।

केशलुंचन

4 अक्टूबर को पुरुषों और स्त्रियों के साथ-साथ बच्चे-बच्चियों की भारी भीड़ लगी, वे सब मुनिवर के केशलुंचन की क्रिया देखकर पुण्य पा रहे थे। जब वे अपने काले और सुकोमल बालों को खींचते थे तो महिलाएँ बड़ी करुणा चेहरे पर ले आतीं थी। अनेक युवकों ने अपने जीवन में केशलुंचन का दृश्य पहली बार देखा था। जाहिर है कि मुनिवर ने केशलुंचन किया तो उपवास भी किया, अब बेचारी माताएँ, बहिनें पश्चाताप् सा करें तो मुनिवर काहे को सुनेंगे? फिर भी कुछ वृद्धा महिलाएँ आपस में बतियाती रहीं—'देखो तो, दुबले-पतले सुकुमार राजकुमार जैसे हैं, केश खींचने में कैसा कष्ट होता होगा?'

श्री कल्पद्रुम-महामंडल विधान

मुनिवर के सान्निध्य में ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत के आचार्यत्व में 26 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक भक्तिभावपूर्वक विधान सम्पन्न किया गया। प्रतिदिन मुकुट लगाए हुए इन्द्र और इन्द्राणियों के दल जब झूम-झूमकर पूजन करते थे तो उनके साथ-साथ दर्शक भी आनंदित हो उठते थे।

आचार्य पदारोहण दिवस

8 नवम्बर 2004 को मुनिवर विमर्शसागर जी ने भक्तिभाव से ससंघ अपने गुरुदेव आचार्यश्री विरागसागर जी का 13वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाया। इस अवसर पर उन्होंने गुरु के विषय में महत्वपूर्ण बातें बताईं और डूबकर गुरुभक्ति की। जिसका सारांश कहने के लिए उन्हीं की कविता का सहरा ले रहा हूँ—

और चाहे न अब किसी को दिल,
तू ही मेरा दुलारा हो जाए।
तेरे कदमों की धूल बनकर ही,
जिंदगी का गुजारा हो जाए।।

उनकी मीठी आवाज सुनकर श्रोतागण आनंद के दोलन पर झूलने लगे। फिर सभी ने अपने मंचासीन गुरु मुनिवर विमर्शसागर जी की भी आरती की और अपने समय को धन्य माना।

निष्ठापना

रामगंजमंडी वालों को समय का पता नहीं चला और चातुर्मास निकल गया। जब 12 नवम्बर 2004 को सभी ने मुनिवर के सान्निध्य में 'महावीर निर्वाण दिवस' मनाया तो ध्यान आया कि आज तो गुरुदेव निष्ठापना भी करेंगे और हुआ भी वही। मुनिवर विमर्शसागर जी ससंघ प्रातःकाल से ही निष्ठापना की क्रियाएँ शुरू कर चुके थे। उन्होंने बीच में श्रावकों के अनुरोध पर प्रवचन भी किया जिससे भक्तों को भारी राहत मिली। मगर वे दुखी भी थे क्योंकि मुनिवर ने वर्षायोग की सीमा जो पूर्ण कर दी थी, समाज को भय था कि किसी भी दिन विहार कर सकते हैं। अतः लोगों ने अपनी चतुराई बतलाते हुए शीघ्र श्रीफल अर्पितकर शीतकालीन वाचना की प्रार्थना की, मुनिवर मुस्कराते रहे।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह

21 नवम्बर 2004 को मुनिवर के सान्निध्य में पीछी परिवर्तन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें लोगों ने बढ़-चढ़कर मुनिवर का गुणगान किया। इस अवसर पर मुनिवर ने पीछी और पीछी परिवर्तन का महत्त्व प्रतिपादित किया। मुनिवर की पीछी प्राप्त करने का सौभाग्य मिला श्रीमती अनीता जैन महावीर प्रसाद जैन (डाबला) को। उसी क्रम में कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

भक्तगण रोज-रोज मुनिवर से विनय करते थे कि विहार नहीं करना, शीतकाल यहाँ ही देना, किन्तु मुनिवर चुप रहे आते थे। दस दिन पूरे न हुए और मुनिवर ने ससंघ 1 दिसम्बर 2004 को रामगंजमण्डी से विहार कर दिया। चरण थे भानपुरा की ओर। आगे-आगे मुनिसंघ पीछे-पीछे श्रावक और श्राविकाएँ।

भानपुरा प्रवेश

सकल समाज ने 3 दिसम्बर 2004 को नगर की सीमा पर जाकर मुनिवर की मंगल-अगवानी की। पादप्रच्छालन, आरती। फिर शोभायात्रा के साथ मुनिवर को मंदिर जी लाया गया।

वहाँ भी, नित्य प्रवचन, दोपहर में कक्षा और शाम को आचार्य-भक्ति के क्रम में समाज ने भारी उत्साह से भाग लिया। तभी कुछ भक्तों को याद हो आया कि 14 दिसम्बर को मुनिवर का सातवाँ मुनिदीक्षा दिवस है, अतः उन्होंने समारोह धूमधाम से मनाने की तैयारी शुरू कर दी।

मुनिदीक्षा दिवस

समाज की तैयारी के अनुसार 14 दिसम्बर को विशाल मंच पर मुनिवर का

दीक्षा दिवस मनाया गया। मंच संचालन के लिए ब्र. जयकुमार निशांत उपस्थित हो चुके थे। कार्यक्रम शुरू किया गया, मुख्य अतिथि विधायक राजेश यादव से चित्र अनावरित कराया गया। श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन रामगंजमण्डी को पादप्रच्छालन का अवसर मिला। संचालक महोदय ने अपने अधिकार का उपयोग करते हुए श्रोताओं को बतलाया कि जब हमारे समक्ष मुनिवर की देह के पिता माननीय श्री सनतकुमार जी जैन उपस्थित हैं तो हम बिना स्वागत के उन्हें कैसे जाने देंगे, अतः अध्यक्ष और मुख्य अतिथि महोदय उनका स्वागत करें। हुआ पिताजी का भावभीना स्वागत। फिर विधायक महोदय ने संक्षिप्त उद्‌बोधन देते हुए अपने भाग्य को सराहा और मुनिवर से आशीर्वाद लिया। श्रीफल तो वे पहले ही अर्पित कर चुके थे। फिर नगर पंचायत अध्यक्ष श्री हरकचंद हरसोरा ने भी उद्‌बोधन दिया और मुनिवर का गुणगान किया। इस क्रम में श्री देवीलाल धाकड़ अध्यक्ष अभिभावक संघ एवं श्री गौरीशंकर मादलिया पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष ने भी अपने विचार रखकर मुनिवर का जयघोष किया।

दीक्षा-दिवस से पूर्व श्री दिगम्बर जैन बड़े मंदिर में वेदी-प्रतिष्ठा महोत्सव 12 दिसम्बर से प्रारंभ कर दिया गया था, जिसका समापन भी दीक्षा दिवस के साथ ही किया गया, जिससे सम्पूर्ण त्रिदिवसीय महोत्सव की शोभा बढ़ गई।

विशेष प्रवचन

18 दिसम्बर 2004 को मुनिवर ने एक प्रवचन में तीन रंग घोल दिए। पहला रंग था पूजा-प्रशिक्षण के लिए मानसिक रूप से तैयार होना, दूसरा था स्वार्थसाधना करने वाले व्यक्तियों को निःस्वार्थ भाव करने का, तीसरे रंग में मातृ शक्ति के लिए सुन्दर संकेत था। द्वितीय और तृतीय का सार इस तरह है—

मुनिवर ने प्रवचन सभी के लिए किए थे, सभी श्रावकों ने ध्यान से सुने भी थे। किन्तु उनके मध्य जो दो-तीन स्वार्थ-साधना करने वाले व्यक्ति थे, उन्हें मुनिवर का प्रवचना काटता सा लगा। उन लोगों को मुनिवर की काव्य-पंक्तियाँ दिशा दे रही थीं—

झूठी कसमों का भरोसा न करो,
जीस्त है झूठे रिश्तों का सफर
जिसको अपना कहा लूटा उसने
ये तो दुनिया हे लुटेरों का नगर।।

उस दिन प्रवचनों में मातृ शक्ति के लिए सुंदर संदेश समाया हुआ था, यदि मुनिवर की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहूँ ये पंक्तियाँ बोलूँगा—

रूह अपनी सँवारने निकले,
बोझ अपना उतारने निकले।
न लगे दाग कोई दामन में,
आचरण हम पखारने निकले।।

माताओं पर ही नहीं, ये पंक्तियाँ पुरुषों पर भी प्रकाश डालती हैं। संकेत है कि हम श्रावकगण गुरु के चरणों का प्रक्षालन तो खूब अच्छी तरह से कर लेते हैं, मगर अपने आचरणों का प्रक्षालन कब करेंगे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे क्षेत्रीय विधायक श्री राजेश यादव ने मुनिवर से पूर्व, अपना भाषण दिया था जिसमें उन्होंने मुनिवर के संयम और चर्या की भारी सराहना की थी। उन्होंने भाषण तो पहले दिया था किन्तु मुनिवर के प्रवचन सुनने के लिए अंत तक बैठे रहे, जिससे समाज को भारी खुशी हुई।

श्रीमज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर

मुनिवर की करुणा बरस रही थी समाज पर, अतः उन्होंने दस दिवसीय अवधि के शिविर के लिए आशीर्वाद दिया जो सन् 2004 से 2005 तक चला। इसका आशय यह नहीं कि एक वर्ष चला, अभिप्राय यह है कि 25 दिसम्बर 2004 से 4 जनवरी 2005 तक चला। समाज के लिए यह प्रथम अवसर था, अतः समस्त नरनारी, युवक-युवतियाँ और नन्हे-नन्हे बालगोपाल अभिषेक और पूजन की आगम-प्रणीत विधि सीखने आने लगे। मंच के समक्ष केशर ओर कपास की क्यारियाँ भानपुरा में भी खिलने लगीं। कार्यक्रम सभी को बहुत पसंद आया। लोग खुश थे कि जो कार्य हम नई पीढ़ी को दस वर्ष में सिखा पाते, वह मुनिवर दस दिन में पूरा कर रहे है। शाम को आचार्य भक्ति के बाद सभी भक्तों ने प्रशिक्षण शिविर के आयोजन की सराहना की।

गणतंत्र दिवस 2005

समाज एवं नगरपालिका परिषद् के सहयोग से मुनिवर का 'राष्ट्र के नाम संदेश' कार्यक्रम नगरपालिका परिसर में रखा गया, जिसमें जैन, हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई लोगों के साथ-साथ हजारों छात्र-छात्राएँ श्रोता के रूप में उपस्थित हुए। समाज के अनुरोध पर नगर-पालिका अध्यक्ष श्री हरकचंद हरसोरा ने तिरंगा ध्वज फहराया। कार्यक्रम हेतु तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर आमंत्रित थे, पर चूँकि उन्हें भोपाल की परेड में रहना था अतः उन्होंने विनयपूर्वक अपना संदेश पत्र के माध्यम से कमेटी को भेज दिया था। श्री हरकचंद जी ने उनके पत्र का वाचन किया, जिसमें राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रधर्म की बातें कहीं गईं थीं।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में मुनिवर विमर्शसागर जी के प्रेरक प्रवचन हुए जिसमें उन्होंने बतलाया कि राष्ट्रीय एकता युवकों के चिंतन पर निर्भर करती है। जब वे समस्त धर्मों, संस्कृतियों और भाषाओं के प्रति समान आदरभाव बनाएँगे तभी एकता के फूल खिलेंगे। जहाँ तक राष्ट्रधर्म की बात है, वह पशु-धन को कत्लखाने भेजकर नहीं निभाया जा सकता। जब आदमी-आदमी में अहिंसा की भावना जागृत होगी, तभी राष्ट्रधर्म बचाया जा सकता है।

कार्यक्रम की समग्र नगर ने प्रशंसा की और मुनिवर के प्रवचनों को सर्वधर्म समभाव के धरातल पर आँका।

ज़ाहिद की ग़ज़लें

मुनिवर का शीतकाल प्रवास धर्मध्यानपूर्वक व्यतीत हो रहा था। मुनिवर का उपयोग इस समय गजल लिखने में खूब लग रहा था। आध्यात्मिक गजलें मुनिवर के मुख से सांझ गुरुभक्ति में सुनने श्रावक समय से पूर्व ही उपस्थित हो जाते थे। अतः घरों में रात्रिभोजन का त्याग स्वयमेव हो गया।

केशलुंचन

मुनिवर उत्कृष्ट केशलुंचन की भावना रखते हैं, अतः यह कार्य समय सीमा में 28 जनवरी 2005 को सम्पन्न किया, समाज के नरनारी पावन दृश्य देखने पहुँचे।

वेदी-प्रतिष्ठा

सरावगी समाज जैन पंचायत के समस्त कार्यक्रमों में शामिल होता रहा है, अतः उन्होंने मुनिवर से प्रार्थना कर त्रिदिवसीय-आयोजन 29 जनवरी से 31 जनवरी 2005 तक रखा, जिसमें मुनिवर ने सवात्सल्य सान्निध्य प्रदान किया। सम्पूर्ण जैन समाज ने मिलकर वेदी प्रतिष्ठा, जिनबिम्ब स्थापना, ध्वजदंड संस्थापन एवं कलशारोहण का धार्मिक कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अनिल भैया (उदासीन आश्रम इंदौर) के आचार्यत्व में पूर्ण किया। अंतिम दिन विशाल रथयात्रा महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें मुनिसंघ के साथ-साथ सम्पूर्ण नगर शामिल हुआ और पुण्य लाभ लिया।

जनवरी की तीव्र ठंड मुनिवर के सघन कार्यक्रमों के समक्ष फीकी लगने लगी थी। भक्तगण शीत की परवाह किए बिना, समय पर धर्म-कर्म कर रहे थे। तभी मुनिवर की कृपा से सोलह दिवसीय श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें धर्म की बातें संगीत में लपेटकर श्रावकों के कर्ण कुण्ड में पहुँचाई गई। नितप्रति मुनिवर के प्रवचन सर्वाधिक आत्मिक आनंद प्रदान करते थे।

विशुद्ध साधना की झलक

रात्रि का स्वाध्याय कर मुनिवर विश्राम करने लगे। कक्ष में क्षु. विशुद्धसागर थे। स्वप्न में देखा-जंगल में चले जा रहे हैं केवलज्ञान होनेवाला है अतः पद्मासन लगा ध्यानस्थ हो गए। इधर क्षुल्लकजी ने देखा-मुनिवर इस कठोर शीत में बिना चटाई के लेटे हैं। इधर केवलज्ञान प्राप्ति का समय हुआ और उधर चटाई ओढ़ाने का। जिससे मुनिवर की नींद खुल गई। मुनि विमर्शसागर उठकर बैठ गए, सोचने लगे—अहो! स्वप्न में विशुद्ध साधना की यह झलक। लेकिन पंचमकाल में केवलज्ञान नहीं होता, अतः स्वप्न में भी नहीं हुआ।

भवानीमंडी विहार : 2005

मुनिवर ने जनवरी के साथ-साथ फरवरी माह का समय भी भानपुरा वालों को देकर गद्गद् कर दिया था। समाज को ऐसी सतुष्टि हुई जैसे भूखे को खीर, पूड़ी, हलवा आदि मिल गया हो। तभी मुनिवर ने दो मार्च को विहार कर दिया। आगे-आगे मुनिसंघ, पीछे-पीछे कार्यकर्तागण और माताएँ बहिनें। संघ शाम 4 बजे निकला था जो लोटखेड़ी, नारायण खेरा, भेसोदामण्डी होते हुए 6 मार्च को भवानीमण्डी पहुँचा। समाज ने भव्य अगवानी के साथ नगर प्रवेश कराया। नगर सीमा पर मुनि विमर्शसागर जी श्रावकों का समूह देख रहे थे, जिसके आगे मुनिश्री स्वभावसागर जी, संत मिलन हेतु प्रतीक्षारथ थे। वे संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी के शिष्य हैं। विमर्शसागर जी उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए, भारी आत्मीयता से दोनों संतों का वात्सल्य मिलन हुआ, हुई दोनों की समाचारी। विमर्शसागर जी के संघ से सभी सदस्यों ने स्वभावसागर जी को सविनय नमन किया, फिर दोनों संघ विशाल शोभायात्रा के साथ नगर की ओर लौटे। लगभग दो किमी. चलने के बाद नगर आया। दोनों संघ तीन दिन तक साथ-साथ रुके, साथ-साथ अहारचर्या सम्पन्न हुई और हुए साथ-साथ प्रवचन। समाज का आनंद द्विगुणित हो गया।

रावतभाटा प्रवेश

भवानीमंडी से मुनिवर विमर्शसागर जी 8 मार्च 05 को विहार कर गए। वे गोपालपुरा होते हुए 11 मार्च के प्रातःकाल अतिशय तीर्थक्षेत्र कैथूली पहुँचे, वहाँ पूर्वयोजना के अनुसार एकदिन का शांतिविधान सम्पन्न किया, जिसमें कोटा, रामगंजमण्डी, भवानीमण्डी, लोटखेडी आदि स्थानों से सैकड़ों नरनारी पहुँचे और विधान के पुण्य के साथ साथ मुनिवर के आशीष भी प्राप्त किए। छोटा सा आयोजन भारी आनंद दे गया। उसी दिन शाम को कैथूली से मुनिवर ने ससंघ विहार कर दिया। नीमथूर, इकलिंगपुरा, बरोदिया होते हुए मुनिवर 14 मार्च को रावतभाटा पहुँचे, वहाँ 3 दिनों तक अभूतपूर्व प्रभावना हुई। मुनिवर का प्रवचन

सभाभवन में रखा गया। 'सम्यग्दर्शन' विषय पर प्रवचन कर जब मुनिश्री कक्ष में पहुँचे, तो स्वाध्यायी फूलचंदजी हरसौरा सपत्नीक पधारे और अश्रुधारा बहाते हुए धर्मपत्नी से बोले—करो नमोस्तु। मुनिवर ने पूछा—बाबा! क्या बात है ? अश्रु पोंछते हुए वे बोले—महाराज! मैं दस प्रश्न पूछने सभा में बैठा था, प्रवचन में सभी का सहज समाधान हो गया। पुनः बोले—मैं जयपुर टोडरमल स्मारक शिविर में जाता हूँ जो शुद्धाश्रय की बात आपने बताई, वह वहाँ भी सुनता हूँ। लेकिन वहाँ गद्दी के नीचे उतरते ही कुछ नजर नहीं आता। मुनिवर मौन रहे आये। चर्या का समय हुआ अतः भक्ति कार्य में लग गए। फिर तीसरे दिन ही वहाँ से विहार कर दिया। भैंसरोडगढ़ एवं श्रीपुरा आदि को आहारचर्या का लाभ देते हुए मुनिवर 19 मार्च को बोराव पहुँचे। समाज के अनुनय-विनय से 9 दिन का समय समाज को मिला। पुनः 27 मार्च को विहार कर दस किमी. चले और सुबह 8 बजे सिंगोली की सीमा पर पहुँच गए।

सिंगोली प्रवेश

समाज ने भव्य अगवानी कर नगर प्रवेश कराया। यहाँ भक्तों को श्रीयागमंडल विधान के लिए मंगल-सान्निध्य दिया। दिए 7 दिन, जिनमें 28 मार्च से 2 अप्रैल तक का समय विधान को सजा गया। 2 अप्रैल विधान के समापन पर, भव्य शोभायात्रा का आयोजन कर श्रीजी के साथ भ्रमण किया गया।

3 अप्रैल को मुनिवर सिंगोली से चेची की ओर बढे। रास्ते में धनगांव, झांतला आदि ग्रामों के भक्तों को आशीष देते हुए 5 अप्रैल को चेची में पदार्पण किया। वहाँ विजयनगर (राजस्थान) का प्रतिनिधि मंडल श्रीचांदमल जी शाह के साथ वेदी प्रतिष्ठा हेतु अनुरोध करने आया। श्रीफल अर्पित कर सभी ने प्रार्थना की। मुनिवर ने मुस्कुराकर स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन श्री शांतिनाथ मंडल विधान का आयोजन कर नगर को धन्य किया और तीसरे दिन, सात अप्रैल को, चेची से विहार कर ठुकराई ग्राम की सीमा को स्पर्श किया। वहाँ विराजित मुनिश्री विप्रणसागर एवं ऐलक विनीतसागर जी श्रावकों के साथ अगवानी के लिए खड़े थे। भव्य अगवानी के साथ दोनों संघ बस्ती में पधारे, दोपहर में दोनों मुनिराजों के मंगल प्रवचन हुए।

बिजौलिया दर्शन

9 अप्रैल को वहाँ से विहार कर मुनिवर विमर्शसागर ससंघ आरोली पहुँचे फिर सिलाबटिया होते हुए 11 अप्रैल को अतिशय क्षेत्र बिजौलिया। भावपूर्ण वंदना के साथ 2 दिन प्रवास रहा। भीलवाड़ा जिले का यह नगर कोटा से 90 किमी. दूर है, जहाँ विक्रम सं. 1226 के शिलालेख ऐतिहासिक हैं। इन शिला लेखों से ही जानकारी मिलती है कि तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ पर कमठ ने यहाँ

ही उपसर्ग ढाया था और प्रभु को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। पूर्व में यहाँ जैन भट्टारक की गद्दी भी थी।

13 अप्रैल को संघ बिजौलिया से विहार कर ऊँदराखेड़ा होते हुए, महुआ (राजस्थान) पहुँचा। जहाँ समाज के अनुरोध पर मुनिवर ने महावीर जयंती महोत्सव को सान्निध्य प्रदान करते हुए, 21 अप्रैल का दिन स्वर्णिम कर दिया। उसी दिन दोपहर में शांतिविधान का कल्याणकारी आयोजन सफल हुआ।

पुनः 22 अप्रैल को विहारकर धामनियां, रामगढ़ होते हुए मुनिवर 23 अप्रैल को अतिशय तीर्थ क्षेत्र श्री चंबलेश्वर जी पहुँचे। 3 दिन क्षेत्र पर रुककर भावपूर्ण वंदना की। यह क्षेत्र भी भीलवाड़ा जिले में है और चैनपुरा गाँव के पास है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ का प्रथम समवशरण लगा था। वर्तमान में भगवान पार्श्वनाथ की जो मूर्ति है, वह वर्षों पूर्व, भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। क्षेत्र के पास से बनास नदी बहती है। क्षेत्र पर जैनों और अजैनों का बड़ी संख्या में आना-जाना होता है।

पुनः विहार

25 अप्रैल को चंबलेश्वर से विहार कर रोपा-पारोली होते हुए संघ ने 30 अप्रैल को शाहपुर में मंगल प्रवेश किया। चार दिन अंतराय हो जाने से मुनिवर का स्वास्थ्य बिगड़ गया, चेहरा कुम्हला गया। फलतः भक्तों की विनय स्वीकार करते हुए मुनिवर 14 दिन तक वहाँ रुके और प्रभावना की।

बारी आई विजयनगर की

14 मई 05 को मुनिवर ने शाहपुरा से विहार कर अरनिया घोड़ा, राज्यास, कोठिया, गुलाबपुरा होते हुए 23 मई को विजयनगर की सीमा छू ली। भव्य अगवानी के साथ मंगल प्रवेश।

वेदी प्रतिष्ठा

पूर्वयोजना के अनुसार मुनिवर ने 26 मई से 28 मई तक त्रि-द्विवसीय समारोह को सान्निध्य दिया और श्रीचन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर में नवनिर्मित वेदी की विधि विधान पूर्वक सम्पन्न कराई। शिखरों पर कलशारोहण कराया ओर तीसरे दिन रथोत्सव का भव्य आयोजन। प्रतिष्ठाचार्य थे—पंडित रतनलाल जी काला एवं पंडित लादूलाल जी कोठिया।

लगभग 22 दिन मुनिवर का विजयनगर में प्रवास रहा, नित्य प्रवचन, दोपहर में कक्षा और सायंकाल आचार्य भक्ति। इस बीच अनेक नगरों के भक्त 2005 के वर्षायोग के लिए प्रार्थना करने आए और श्रीफल अर्पित किए। सिंगोली, कोटा, भानपुरा, भीलवाड़ा मालपुरा सहित विजयनगर के प्रतिनिधि

अपने-अपने नगर के लिए रोज-रोज निवेदन करते रहे। मुनिवर के संकेत थे कि उनके गुरुदेव मूड़विद्रि में अवस्थित हैं, वहाँ जाकर अनुमति लेनी होगी। फिर क्या था, सिगोली, कोटा और भानपुरा के लोग मुनिवर के पत्र लेकर गुरुदेव के पास पहुँचे। भाग्य खुले सिंगोली के।

तब तक मुनिवर ने 15 जून को विजयनगर से विहार कर दिया। चाँपानेरी पहुँचे। वहाँ बारह दिनों तक धर्म-वर्षा की। जून का तपता माह शीतल लगने लगा।

भीलवाड़ा की ओर विहार

मुनिवर को गुरुदेव की अनुमति की जानकारी मिल चुकी थी अतः 27 जून को उन्होंने विहार कर दिया। विजयनगर, गुलाबपुरा, रुपाहेली, रायला होते हुए 3 जुलाई को भीलवाड़ा पहुँचे। हुआ भव्य-मंगल प्रवेश। स्थानीय सुभाषनगर कॉलोनी में मुनिवर ने 5 दिनों तक प्रवचन पीयूष की धार बहाई। पश्चात् उन्होंने नगर के अनेक वार्डों (मोहल्लों) को समय दिया—शास्त्रीनगर, आर.के. कॉलानी, बापूनगर, अरहंत नगर एवं आमिलिया की बाड़ी प्रमुख थे। इन दिनों हर स्थान पर सदा की तरह श्रेष्ठ प्रभावना हुई। आर.के. कॉलोनी के विवेकानंद तरणताल में मुनिवर का प्रवचन रखा गया। सुन्दर कोठारी आदि नवयुवक मंडल के सदस्यों ने मुनिसंघ का विशेष ध्यान रखा।

आमलिया की बाड़ी में भीलवाड़ा की सभी कॉलोनियों के भक्तों ने मिलकर मुनिवर को चातुर्मास हेतु श्रीफल अर्पित किए और प्रार्थना की।वहाँ के वयोवृद्ध श्रावक श्री बसंतीलाल जैन ने बतलाया कि गत 40 वर्षों के इतिहास में, यह प्रथम अवसर है, जब नगर की सभी कॉलोनियों के श्रावकों ने एक साथ मुनिवर से प्रार्थना की हो अतः हे मुनिवर मान जाइए। मुनिवर मुस्काते रहे।

11 जुलाई 05 को मुनिवर ने भीलवाड़ा से चरण उठा दिए और सिंगोली की ओर रखे। 8 किमी. ही चल पाए थे कि उनके अनुज गुरुभाई मुनिश्री विनम्रसागर जी से भव्य मिलन हुआ, दोनों संतों ने एक दूसरे की ओर वात्सल्य का जल सिंचन किया। फिर बढ़ गए अपनी-अपनी दिशा की ओर। मुनिवर विमर्शसागर जी एक सप्ताह लगातार चले ओर बीगोद, मांडलगढ़, मैनाल, ठुकराई होते हुए जोगड़िया घाटा पहुँचे। वहाँ उपाध्याय 108 श्री आत्मासागर से आत्मिक मिलन हुआ, फिर हुई समाचारी। पुनः कदम बढ़े तो धड़ौद एवं धनगाँव होते हुए मुनिवर पहुँच गए सिंगोली नगर की सीमा पर। वहाँ पूरा समाज श्रीफल मंगलकलश, आरती आदि लिए, भव्य अगवानी के लिए आतुर था। ज्यों ही मुनिवर पहुँचे पंक्ति लग गई पादप्रच्छालन और आरती के लिए। फिर गाजे-बाजे के साथ विशाल शोभायात्रा के रूप में भव्य मंगलप्रवेश हुआ 18 जुलाई को।

वर्षायोग सिंगोली : 2005

सिंगोली जो नीमच जिले में है, अपनी सीमाओं से राजस्थान को जोड़ता है, है यह मध्यप्रदेश में। समाज की सुन्दर व्यवस्था चल रही थी। दो दिन बाद ही 21 जुलाई को वर्षायोग स्थापना की क्रिया सम्पन्न की गई। विमर्शसागर जी एवं मुनि विश्वपूज्य सागर जी ससंघ मंच पर विराजे थे। मंच-संचालक पंडित शैलेन्द्र शास्त्री ने ध्वजारोहण हेतु श्री नेमीचंद विनोद कुमार जैन बेगूँ को आमंत्रित किया। मुनिवर की आशीषछाया में उन्होंने ध्वजारोहण किया। श्रीमोहनलाल प्रेमचंद साकुण्या सिंगोली के कर-कमलों से द्वीपप्रज्वलन सम्पन्न हुआ तो शास्त्र-भेंट श्री कैलाशचंद निर्मल कुमार साकुण्या सिंगोली ने किया। चातुर्मास-कलश स्थापना का सुयोग पाया श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार बावरिया रामगंजमण्डी ने। इसी क्रम में प्रथम कलश श्री प्रमोद कुमार अंकुश कुमार रामगंजमण्डी, द्वितीय तेजकुमार जयकुमार मोहीवाल सिंगोली, तृतीय कलश श्री प्रकाश जी ताथेड़िया सिंगोली और चतुर्थ कलश श्री नेमीचंद निर्मल कुमार खटोड़ सिंगोली ने स्थापित किया। सभी भक्तराज मुनिवर के चरण छूकर धन्य हुए।

कार्यक्रम विशाल था, मुनिवर ने प्रातःकाल से ही स्थापना विधि शुरू कर, पूर्ण कर ली थी। हुए अंत में मुनिवर के प्रवचन। श्रोताओं की दशा जैसे प्यारे चातक को स्वाति नीर मिल गया हो।

मानतुंग के मोती

कुछ दिन पूर्व ही मुनिवर द्वारा लिखित ग्रंथ मानतुंग के मोती तैयार होकर आया था। अतः सिंगोली समाज ने 29 जुलाई को ग्रंथ का विमोचन कराया फिर भक्तामर शिविर में भाग लिया। यह एक पठनीय ग्रंथ बन चुका है जिसे हर भक्त पढ़ना चाहता है। शिविर का क्रम अनवरत चलता रहा।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त को प्रवचन पंडाल से परे, तहसील प्रांगण में, नगर-पालिका के तत्वावधान में विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। पहले स्थानीय कार्यकर्ताओं ने विचार रखे फिर प्रधानाचार्य के अनुरोध पर नव-निर्मित शासकीय स्कूल भवन का लोकार्पण मुनिवर की आशीष छाया में किया गया। हुए फिर 'प्रवचन सम्राट' के प्रवचन। मुनिवर ने धैर्यपूर्वक 'राष्ट्र के नाम संदेश' प्रदान करते हुए कहा -'वर्तमान भारत में डंडों की लड़ाई समाप्त हुई तो झंडों की शुरू हो गई है। आप देखते होंगे कि हर धर्म का अपना-अपना झंडा है, जिससे संबंधित भक्तगण ऊँचा से ऊँचा करने की होड़ में रहते हैं। सत्य तो यह

है कि धार्मिक झंडे के मोह में लोग राष्ट्रीय तिरंगे झंडे को भूल गए हैं। यदि धार्मिक झंडों से ध्यान हटाकर, तिरंगे झंडे को ही सामूहिक रूप से अपना अपना धर्म ध्वज स्वीकार कर लिया जावे तो जातिगत फसाद समाप्त हो सकेंगे, राष्ट्रीयता का उत्थान होगा।'

'जैन' को तिरंगे में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के रंग नजर आवें, इसी तरह हिन्दु को तिरंगे के तीन रंगों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की कृपाछाया दिखलाई देवे, मुसलमान को अपना भाग्यशाली अंक '786' तीन रंगों में 7, 8, 6 दिखाई दे, ईसाई को गॉड, सन, होलीगोस्ट दिखाई दे तो उसी दिन से देश में अशांति और आतंक विदा ले जाएंगे। शांति और अहिंसा चमकने लगेंगे। भारतवर्ष में फिर से राम, रहीम और महावीर का शासनकाल प्रतीत होने लगेगा। भरत का भारत, गारत में जाने से बच जाएगा।

हम सब कवि — मुनिवर महाकवि

4 सितम्बर को जैन नवयुवक मंडल ने मुनिवर के चरण सान्निध्य में सातवाँ स्थापना दिवस समारोह मनाया। लिया सभी ने आशीर्वाद। इसी क्रम में अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि-सम्मेलन की आयोजना की गई। जिसमें विभिन्न कवियों के बाद, कविवर मुनिश्रेष्ठ, विमर्शसागर जी ने भी अपनी भाव-सम्पदा सम्पन्न 'कविताओं' का रसास्वादन कराया।

भारती के भाग्य, जिनवाणी माँ के सतपूत,
तेरा चारित्र तो सुमेरू सा महान है।
दया सिरमौर, वात्सल्य शृंगार,
तीर्थेश महावीर की तू आन-बान-शान है।।
दुखियों का पीर, निर्बल का तू शक्ति पुंज,
भव्यों का तीर्थ भक्तों का भगवान है।
चाहता विमर्श आज चरणों की धूल माथे,
गुरु पदरज मेरे लिए वरदान है।।

मुनि विमर्शसागर जी ने भगवान महावीर स्वामी के चरणों में भी अपनी पंक्तियाँ समर्पित कीं—

जग हितकारी महावीर प्रभु आपके,
श्री चरणों में मेरा कोटिशः प्रणाम है।
आपको ही ध्याऊँ नाथ, आपको ही पाऊँ नाथ,
आप जैसा बनूँ अतः कोटिशः प्रणाम है।।

आप वीतरागी सर्वज्ञ हितउपदेशी,
भवतापहारी अतः कोटिशः प्रणाम है।
आप जैसा नहीं कोई दुनिया में दीनानाथ,
और मैं अनाथ अतः कोटिशः प्रणाम है।।

मुनिवर ने जैन समाज की एकता एवं पंथवाद पर प्रश्नचिन्ह खड़े करते हुए निम्न पंक्तियाँ पढ़ी और समाज, श्रावक, साधु को सजग किया—

तेरा और बीसपंथ उलझे हैं श्रावक संत,
कोई तेरा कोई बीस करते बढ़ाई हैं।
करते हैं रागद्वेष, जानें नहीं धर्म लेश
मंदिरों में खींचतान करते लड़ाई हैं।।
कर रहे धर्म लोप, मानते हैं धर्म गोप,
एक दूसरे की अहंकार की चढ़ाई है।
तेरा-बीस के बयान जैसे हिन्द-पाकिस्तान,
हाय जैन एकता भी आज लड़खड़ाई है।।

जैन मंदिरों एवं जैन तीर्थों पर जातीयता के हावी होने पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हुए पंक्तियाँ इस प्रकार पढ़ीं—

जातिमद चढ़ रहा, पंथभेद बढ़ रहा,
जहाँ देखो वहाँ रागद्वेष की ही बात है।
महावीर हुए खाण्डेलवाल अग्रवाल,
आदि-आदि मंदिरों पे लिखा ये दिखात है।।
कहीं महावीर हुए तेरापंथी वीसपंथी,
धर्मात्माओं ने भी दी क्या सौगात है।
सोचा जब मैं भी महावीर को पहिचान दूँ,
तो धरा महावीर रूप मेरी क्या औकात है।।

कोई है बघेरवाल कोई खण्डेलवाल
कोई अग्रवाल तो कोई परवार है
कोई-कोई जैसवाल कोई-कोई ओसवाल
कोई पोरवाल कोई गोल श्रृंगार है।।
बंद हुए बोलचाल, वाल की खड़ी दीवाल,
जातियों का भूत सबके ही सिर सवार है।

मंदिरों में अब जैन कहीं दिखते ही नहीं,
मंदिरों पे अब जातियों का अधिकार है।।

मुनिश्री ने सकल जैन बंधुओं को आत्महितकारी-मार्ग की प्रेरणा देते हुए कुछ पंक्तियाँ पढ़ी–

वीतरागी देवों को ही सच्चा देव जानकर,
रागीद्वेषी देवों को ना कभी सिर नाइए।
जिसने दिखाया सारी दुनिया को मोक्षमार्ग,
उस महावीर के ही गाना गुण गाइए।।
सुनो रोज जिनवाणी जो है आत्म कल्याणी,
वीतराग साधना का मार्ग अपनाइए।
मिल गया जैनधर्म मिल गया जैन कुल,
दाग जैन कुल में कभी भी न लगाइए।।

मुनिश्री ने स्वरचित कई कविताएँ एवं गजलें भी पढ़ीं। जिसे सुनकर सभी आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में खूब प्रेरणास्पद आनंद लेते रहे।

इसी अवसर पर मुनि विमर्शसागर द्वारा रचित कविताओं का काव्यसंग्रह 'सोचता हूँ कभी-कभी' विमोचित किया गया।

कविगण बोले—हम सब कवि-मुनिवर महाकवि। जितने कीमती शब्द थे, उतनी ही अधिक मधुर वाणी थी। इस अवसर पर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गायक श्री नंदकुमार जैन जबलपुर के मधुरस्वर भी सुने गए। उनके द्वारा बनाए गए दो आडियो कैसेट 'कर तू प्रभु का ध्यान' तथा 'हे विमर्श यशस्वी' का लोकार्पण किया गया।

निस्पृह मुनि ने नहीं स्वीकारा आचार्यपद

इसी वर्ष में आचार्य विरागसागर जी जब दक्षिण स्थित कुंथुगिरि में आचार्य कुंथुसागर जी सहित 200 पिछीधारियों के साथ थे, तब उन्होंने पत्र द्वारा घोषित किया था कि उनके छह शिष्य, जहाँ जिस नगर में हैं, वे आज से मेरी आज्ञानुसार आचार्य घोषित किए जाते हैं उस समय मुनिवर विमर्शसागर जी अपने गुरु से दूर थे अतः उन्हें पत्र और समाज के माध्यम से आचार्यपद स्वीकार नहीं था, सहज ही कह दिया था—'ऐसा विशिष्ट कार्य गुरु के कर कमलों से ही अच्छा लगता है।'

जब आचार्य विरागसागरजी को अपने शिष्य की भावना मालूम हुई तो उन्हें शिष्य पर गौरव हो आया। जब विमर्शसागर जी सिंगोली में थे, तब वहाँ के भक्तगण विरागसागरजी के दर्शनार्थ कुंथुगिरि गए। लौटने लगे तो आचार्यश्री

ने आशीर्वाद सहित एक पत्र दे दिया और बोले-'आप सब विमर्शसागर जी को आचार्यपद प्रदान कर देना। वे भक्तगण 17 अक्टूबर 05 को वापिस आए तो मुनिवर से आचार्यपद की प्रार्थना करने लगे, पत्र उन्हें दे दिया। मुनिवर फिर मुस्काए और धीरे से बोले—'प्रायश्चित ग्रंथ के अनुभव बिना आचार्यपद की शोभा नहीं।' अतः यह श्रेष्ठकार्य गुरु सान्निध्य में ही उचित लगता है। अस्तु।

श्रावकगण उनकी निस्पृहता देखकर चकित हो गए, हुआ सभी को आत्मगौरव अपने महान मुनि पर।

प्रतिभा सम्मान समारोह

नगर के लोगों ने 29 सितम्बर को मुनिवर के सान्निध्य में समारोह आयोजित किया, जिसमें प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया और प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए। मुनिवर ने दिया प्रतिभावर्द्धन का शुभाशीष।

धनतेरस बनी धन्य तेरस

मुनिवर ने 30 अक्टूबर को धन-तेरस दिवस पर ऐसा प्रवचन दिया कि वह धन्य तेरस बन गई। श्रोतागण बहुत समय तक उसकी चर्चा करते रहे, फिर समझे कि सही में यह तो ध्यान तेरस है जो महावीर के समय से चल रही है।

निष्ठापन समारोह : 2005

1 नवम्बर को प्रातःकालीन बेला में गुरुवर के मंगल सान्निध्य में भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाया गया, उसी क्रम में संघ ने चातुर्मासिक निष्ठापन भी सम्पन्न किया। सुने फिर सभी ने गुरुवर विमर्शसागर जी के कल्याणकारी प्रवचन।

8 नवंबर से 18 नवम्बर तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठाचार्य थे—पं. हरी प्रसाद जैन पंडित उदयचंद शास्त्री एवं पंडित शैलेन्द्र शास्त्री।

सिंगोली से विहार

नगर के जन-जन में धर्मकण भर देनेवाले गुरुदेव विमर्शसागर जी ससंघ 25 नवम्बर 05 को सिंगोली से विहार कर गए। सभी भक्त रोने, बिलखने लगे। अधिकांश तो पीछे-पीछे भागे। न रुके गुरुवर। सभी ने कहा—पक्के निर्मोही हैं। (यही तो संत का आभूषण है) मुनिवर तो बोराव नगर की ओर चले जा रह थे। भक्तों को यही प्रसन्नता थी कि गुरुदेव के रहते हुए हमारे समाज में उनके चातुर्मास स्थल को ''मुनि विमर्शसागर मांगलीक भवन'' में परिवर्तित कर दिया गया। जो सिगोली के पुराने थाने के पास है। सभी लोगों ने पंडित शैलेन्द्र

शास्त्री को भी याद किया जिन्होंने चातुर्मास की अवधि में सभी कार्यक्रमों का मंच-संचालन किया था और गुरुदेव के विहार के एक हफ्ते पूर्व की 16 नवम्बर को पिच्छिका परिवर्तन समारोह भी सम्पन्न कराया।

25 नवम्बर 05 को गुरुदेव ने ससंघ बोराव नगर में प्रवेश किया। समाज गद्‌गद् हो गया। सभी जन विचार करने लगे कि हमारी विनय सुनकर गुरुदेव शीतकालीन वाचना का सुअवसर प्रदान करेंगे। किंतु गुरुवर नहीं रुके।

चरण रावतभाटा की ओर : 2005

26 नवम्बर को बोराव से चरण उठे तो नगर दर नगर पार करते हुए 28 नवम्बर तक विहार करते रहे। प्रतिदिन किसी नगर को आहारचर्या का लाभ मिला तो किसी को वैयावृत्ति का। वे नगर थे—श्रीपुरा, भैसरोड़गढ़, रावतभाटा। 28 नवम्बर को रावतभाटा वालों ने गुरुवर की अगवानी नगर से दूर चलकर कोटा बैरियर पर की। पादप्रच्छालन और आरती का सुख भक्त ही समझ सकते थे। शाम के 4 बज चुके थे, समाज ने वाद्ययंत्र दल के साथ विशाल शोभयात्रा निकाली और गुरुदेव को हाट चौक पुराना बाजार आदि महत्वपूर्ण स्थलों पर चरण रज खिराते हुए, श्री सुपार्श्वनाथ जिनालय ले गए। गुरुवर ने भक्तिपूर्वक वंदना की। शोभायात्रा में जितने भक्त रावतभाटा के थे, उतने ही सिंगोली, बोराव, श्रीपुरा, भैसरोडगढ़ और कोटा के थे। सभी ने दौड़-दौड़कर चरणोदक का लाभ लिया। उसी दिन कोटा-बैरियर के पास निर्मित होनेवाले 'अहिंसा सर्किल' का शिलान्यास भी गुरु चरणों के सान्निध्य में सम्पन्न किया गया था। जिसमें नगर पालिका के पार्षदों के साथ-साथ अध्यक्ष श्रीमती लीलाशर्मा भी उपस्थित हुई थी। शिलान्यास विधि पंडित पवनकुमार दीवान ने गुरुदेव के मार्गदर्शन में सम्पन्न की।

कल्पद्रुम महामंडल विधान

वहाँ के भक्त तो गुरुवर की प्रतीक्षा में थे ही अतः उनके आते ही दूसरे दिन से 'श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान' शुभारंभ कर दिया जो 29 नवम्बर से 9 दिसम्बर तक पूर्ण हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे—श्री पवन जैन मुख्य पुलिस अधीक्षक कोटा शहर और विशिष्ट अतिथि थे श्री भरतसिंह हिंगड़ थाना प्रभारी दादाबाड़ी कोटा। विधान के चलते एक दिन जैन समाज कोटा के प्रतिनिधि अपने अध्यक्ष श्री राजमल जी पाटोदी के साथ आए और गुरुदेव को श्रीफल अर्पित कर सन् 2006 के चातुर्मास के लिए प्रार्थना करने लगे, तब मुनिवर ने मुस्कराकर कहा—'बंधु सन् 05 में सन् 06 की चिंता क्यों कर रहे हैं, उस समय तक क्या होता है, किसने देखा है।' कोटा वाले गुरुदेव की मुस्कान से चिरपरिचित थे अतः उन्हें विश्वास हो गया कि सात माह बाद कोटा को

वर्षायोग का समय अवश्य मिलेगा।

इस विशेष कार्यक्रम के आयोजक श्री बाबूलाल सेठिया सपरिवार थे। जिन्होंने अंतिम दिवस, भारी धूमधाम और उत्साह से सम्पन्न हुए समारोह के समापन की घोषणा की।

9 दिसम्बर तक गुरुदेव नगर के पुराना बाजार स्थित जिनालय में थे। प्रभावना का लाभ सबको मिले इस विचार से कार्यकर्ताओं के साथ 10 दिसम्बर को नया बाजार स्थित जिनालय में प्रवेश किया। अब यहाँ के भक्त हँस रहे थे, वहाँ के दीन से बन गए थे। क्योंकि उनका धर्ममणि भौतिक रूप से उनसे कुछ दूर हो गया था। धार्मिक रूप से तो हृदय में ही था वह मणि, जिन्हें गुरुदेव कहते हैं।

दीक्षा दिवस

सचेत समाज ने गुरुदेव के दीक्षा दिवस को आते समीप देखा अतः भारी उत्साह से 14 दिसम्बर 2005 को गुरुदेव का 8वाँ मुनिदीक्षा दिवस मनाया। दो बजे से विशाल मंच पर मुनिवर को ससंघ आमंत्रित कर विराजमान किया गया। सिंगोली की आगत-बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। श्री कल्याणमल जी रावतभाटा को पादप्रच्छालन का सौभाग्य मिला। श्री जम्बूकुमार जी रावतभाटा सपरिवार ने आरती का आनंद लिया। श्री बाबूलाल जैन बोराव के करकमल चित्र अनावरण कर हँस रहे थे। श्री अजित प्रकाश जैन रावतभाटा एवं पंडित संजय जैन शास्त्री रावतभाटा शास्त्र भेंट कर अपनी मनीषा का उत्कर्ष देख रहे थे।

बात आई मुनिवर के मंगलकारी प्रवचनों की। तब कार्यकर्ताओं ने पहले उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'समर्पण के स्वर' का लोकार्पण कराया, जिसमें गुरुदेव ने अपने गुरु विरागसागर के लिए भक्तिपूर्ण कविताएँ रची हैं।

संयोग तो देखिए, दीक्षा दिवस पर भी अनेक नगरों के भक्त सश्रद्धा उपस्थित हुए थे—कोटा, सिंगोली, रावतभाटा, बोराव, भानपुरा, बिजौलिया, रामगंजमण्डी, श्रीपुरा, धाकड़मऊ, भीलवाड़ा, विजयनगर, बूंदी, चेची, थड़ौद, भैसरोडगढ़, अशोकनगर, भिण्ड, आदि प्रमुख स्थान थे।

उसी दिन जैन समाज कोटा के कार्यकर्ताओं ने वर्षायोग 2006 के लिए पुनः निवेदन किया और श्रीफल भेंट किए। कहने लगे अब 06 के लिए मात्र 16 दिन बचे हैं। तब मुनिवर मुस्काए और बोले—'16 दिन तो बतला दिए, उसके बाद जो साढ़े छह माह बचते हैं उसकी चर्चा नहीं की। सभी लोग हँसने लगे। तब तक रावतभाटा वालों ने श्रीफल अर्पित कर विनय की 'चातुर्मास तो सात माह बाद है, किंतु शीतकाल की अवधि तो शुरू हो चुकी है, अतः कृपया शीतकालीन

वाचना का आशीर्वाद दीजिए। गुरुदेव ने मुस्कराकर वरदहस्त उठा दिया।

शीतकालीन वाचना : रावतभाटा

सन् 2005 में मिले आशीषों में रावतभाटा समाज के लिए गुरुदेव का शीतकालीन प्रवास सबसे बड़ा आशीर्वाद सिद्ध हुआ। समय पर वाचना शुरू की गई जिसमें गोम्मटसार कर्मकाण्ड-जीवकाण्ड, क्षपणासार ओर समयसार की वाचना प्रमुख रही। प्रतिदिन पंडित संजय शास्त्री, फूलचंद जी, पं. अजितप्रकाश, पंकज जैन आदि बुद्धिजीवीगण, गुरुदेव से समयानुसार तत्त्वचर्चा करते थे।

कमंडल विज्ञान

एकदिन समय अधिक हो गया, केवल संजयशास्त्री ही कक्ष में थे। मुनिवर कमंडल लेकर शौच क्रिया को जाने लगे, तभी पं. संजयशास्त्री ने कहा—आज कोई नहीं है तो कमण्डल का सौभाग्य आप मुझे दे दीजिए। थोड़ा चलने के बाद मुनिवर ने मुस्कराते हुए कहा—शास्त्रीजी! कमंडलु की टोंटी पीछे रखी जाती है। शास्त्रीजी— महाराजश्री! हमने पहली बार कमंडलु पकड़ा है अन्यथा हम तो महाराजों से दूर ही रहते हैं। मुनिश्री—आज हमारा कमडल पकड़ा है किसी पर्याय में अपना कमंडल-पीछी भी पकड़ोगे, क्योंकि इसके बिना मुक्ति संभव नहीं, इसलिए हम कहते हैं ज्ञान के साथ चर्या का विवेक भी आवश्यक है। शास्त्रीजी—तो क्या कमंडल ऐसा पकड़ने का कोई कारण है ? मुनिश्री—जब साधु की समाधि हो जाती है, तब टोंटी आगे रखी जाती है। शास्त्री जी—फिर तो हमसे भूल हो गई, हमें क्षमा करना। मुनिश्री—यही तो ज्ञान ग्रहण की बात है।

प्रतिदिन कहीं न कहीं के भक्त पहुँचकर गुरुदेव से अपने नगर या कॉलोनी पहुँचने की प्रार्थना करते थे। एक दिन बूंदी नगर स्थित रजतगृह कॉलोनी के प्रतिनिधि आए और प्रार्थना की, कि पुण्योदय से कॉलोनी के नवनिर्मित भगवान श्री शीतलनाथ जी जिनालय की वेदी-प्रतिष्ठा हेतु सान्निध्य प्रदान कीजिए। गुरुवर का आशीष मिल गया फलतः प्रतिनिधि श्री श्यामसुन्दर जैन, श्री लालचंद जैन पटवारी आदि के चेहरों पर कमल खिल गए।

दूसरे दिन बोराव नगर से प्रतिनिधि गण आए। विनय और श्रीफल को माध्यम बनाकर गुरुदेव से बोले—श्रीप्रभुलाल सेठिया परिवार ने शिखर जी यात्रा सुलभता से की, उस उपलक्ष्य में 'श्री रत्नत्रय महामंडल विधान' आपके सान्निध्य में करना चाहते हैं। उन्हें भी मुस्कान के माध्यम से आशीष मिल गया।

नया वर्ष-नया हर्ष

सन् 2006 का प्रथम दिवस मुनिसंघ ने रावतभाटा में ही देखा। सूर्य की नन्हीं-नन्हीं किरणें ब्रह्मचारिणी बहिनों की तरह आईं और गुरुदेव के चरण स्पर्श

करने लगीं। भक्तों ने सुबह-सुबह आकर जयघोष किया और प्रार्थना की, कि नए वर्ष के उपलक्ष्य में कुछ नया हो जावे।

—क्या हो जावे ?

-गुरु जी, हम आपकी कविताएँ सुनना चाहते हैं सो काव्य गोष्ठी हो जावे। मुस्करा पड़े गुरुजी। जैसे किताब के अधरों से काव्य झरा हो।

काव्य गोष्ठी : रावतभाटा

नूतन वर्षाभिनंदन का क्रम सुबह से शुरू हो गया था। धार्मिक भक्तों को काव्य सुनने का आनंद भी मिला दोपहर में। गोष्ठी में कुछ नए पुराने भद्रजनों ने कविता और भजन सुनाए, बाद में सभी ने प्रार्थना की गुरुदेव से, तब उन्होंने अपनी कुछ रचनाएँ सुनाईं जो लोगों के कान में अमृत सा घोलती लगी। गुरुदेव बोले, सुनो धर्मात्मा व्यक्तियों के लिए हैं ये पंक्तियाँ–

छोटा-बड़ा इंसान को मत कह अरे नादाँ,
तकदीर हर इंसान की होती जुदा यहाँ
रत्नों की संपदा से भी अनमोल है इंसाँ,
इंसान पै भगवान भी होता फिदा यहाँ।।

गुरुदेव का मन काव्य में होते हुए भी शिक्षा की ओर था, अतः बोले—व्यसनी आदमी के लिए भी कुछ पंक्तियाँ हैं–

दो पल को भी सुकूँ नहीं कोल्हू का बैल है,
लगता है ज़िंदगी को ढो रहा है आदमी।
चोरी, फ़रेब, झूठ इनका हो गया आदी,
काँटे खुद अपनी राह बो रहा है आदमी।
झाड़ी खड़ीं मज़ार पै इतना ही कह रहीं
भोगों का दास इसमें सो रहा है आदमी।

गुरुवर ने मुस्कराते हुए बतलाया कि महलों में रहकर सुख मनाने वाले लोग भ्रम में हैं, उनके विषय में भी सुन लीजिए–

खुद खुदा की न राह चल पाए,
राह सबको लगे दिखाने में
बाँट न पाए दर्द इंसाँ का
लगे दैरोहरम बनाने में।
चैन मिल जाए दो घड़ी के लिए
जिन्दगी खोते धन कमाने में।।

गुरुवर द्वारा की जा रही रस-वर्षा से श्रोताओं के अंग-अंग भीग गए, कोई उठना नहीं चाह रहा था। तब गुरुदेव ही बोले 'बहुत हो गया, कुछ बाद के लिए बचने दो।' श्रोतागण हँसने लगे, गुरुदेव अपनी वसतिका में चले गए। श्रोतागणों ने स्वीकारा कि नए वर्ष का शुभारंभ ही शुभों और पुण्यों से भर गया, कृपा है गुरुदेव की।

रावतभाटा से विहार

बोराव वालों को गुरुदेव आशीर्वाद दे चुके थे अतः 18 जनवरी 06 को बोरावनगर के लिए विहार कर दिया। ठंड का मौसम बर्फ के गोले दाग रहा था, हवाओं के हाथों में तलवारें घूम रही थी, आम लोगों को घर से बाहर निकलने में कष्ट हो रहा था, तब दिगम्बर संत मौसम की कठोरता को सरलता का आवरण पहनाते हुए निकल पड़े। रास्ते में भैंसरोडगढ़ और श्रीपुरा वालों को आहारचर्या का पुण्य प्रदान करते हुए गुरुदेव विमर्शसागर, मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी एवं क्षु. विशुद्धसागरजी 21 जनवरी को बोरावनगर की सीमा पर पहुँचे। वहाँ भक्त समूह ने भक्तिपूर्वक भव्य आगवानी की और शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश कराया।

श्री रत्नत्रय महामंडल विधान

गुरुदेव का सान्निध्य पाकर विधानाचार्य पंडित धरणेन्द्र शास्त्री ने 21 जनवरी से 23 जनवरी 06 तक भव्य विधान सम्पन्न किया। आयोजक श्री प्रभुलाल जैन सेठिया गद्‌गद् हो उठे।

बोराब वालों का सुख 30 जनवरी तक चरम पर रहा, मगर जब उसी दिन संघ ने सिंगोली के लिए विहार किया तो सुख, दुख में बदल गया। दिया नौ दिन का समय गुरुदेव ने सिंगोली को। फिर वहाँ से पुनः 8 फरवरी से 13 फरवरी तक विहार करते रहे। इस बीच बूढ़ी चाँदखेड़ी, बिजोलिया, फिर रास्ते में सिंचाई विभाग का ऑफिस, पुनः रास्ते में एक स्कूल एवं 12 फरवरी को एक फैक्ट्री में रुके। जब सिंचाई विभाग के ऑफिस में थे तो सर्दगर्म के कारण पित्त उमड़ पड़ा अतः वमन हो गया था। भक्तगण चिंता में पड़ गए थे किन्तु 'यायावर' को कोई चिंता नहीं थी।

13 फरवरी को सुबह विहार कर बूंदी पहुँचे, वहाँ नैनवा-रोड स्थित रजतगृह कॉलोनी में नवनिर्मित श्री शीतलनाथ जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा हेतु पूर्व स्वीकृति दे चुके थे, सो लिया वहाँ कुछ दिनों का विराम।

वेदी प्रतिष्ठा

गुरुदेव की उपस्थित मात्र से बूँदी नगर का उदास चेहरा मुस्कानसिक्त हो

गया। लोग हर्षातिरेक से ससमूह दर्शन करने पहुँच रहे थे। कार्यकर्ताओं ने पावन सान्निध्य का लाभ लिया और 18 फरवरी से 20 फरवरी तक भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया। तदनुरूप तीसरे दिन (20 फरवरी) को भगवान शीतलनाथ जी की मूर्ति को नवीन जिनालय की नवीन वेदी पर विराजमान किया। महोत्सव में जैन समाज कोटा के अनेक भक्त पहुँचे थे अतः उन्होंने पुनः गुरुदेव से आगामी चातुर्मास के लिए प्रार्थना की।

सम्पूर्ण महोत्सव निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो गया। प्रतिष्ठाचार्य थे पं. उदयचंद शास्त्री। जबकि सौधर्म इन्द्र का स्वरूप धारण किया था श्री श्यामसुन्दर जैन ने और ईशान इन्द्र का श्री लालचंद पटवारी ने। महोत्सव अवधि का अंतिम सत्र इतना लम्बा हो गया कि मुनिवर आहारचर्या के लिए समय ही न निकाल पाए, फलतः दोपहर बाद भक्तों ने आहारचर्या हेतु विनय की, उठे तब गुरुदेव।

दूसरे दिन अलोद नगर से एक प्रतिनिधि मंडल आया, जिसके प्रमुख थे पंडित अनिल शास्त्री। उन्होंने अपने नगर में सिद्धचक्र महामंडल विधान के लिए आज्ञा मांगी। मुनिवर तो बूदी में धर्म की बूंदे बरसा रहे थे। अतः वहाँ के नागदी बाजार के कार्यकर्ताओं को 26 से 28 फरवरी, त्रिदिवसीय श्री शांतिनाथ विधान एवं पंचपरमेष्ठी विधान की स्वीकृति दे दी। फलतः वहाँ भी तीन दिन तक धर्म का सागर लहराया और अमृत वर्षा हुई।

कोटा समाज लगातार सम्पर्क में था अतः 28 फरवरी को पुनः श्री राजमल पाटौदी के साथ एक प्रतिनिधि मंडल आया और 11 अप्रैल को सम्पन्न होने वाली महावीर जयंती के लिए सान्निध्य प्रदान करने की प्रार्थना करने लगा। मुनिवर ने कहा–देखते हैं।

ओ जानेवाले हो सके तो लौट के आना

4 मार्च को मध्यान्ह 4:30 बजे गुरुवर को ससंघ बूंदी से विहार करना था, किंतु अचानक 3 बजे से ही तेज वर्षा होने लगी। गिरे ओले। चली आँधी। ऐसा लगा जैसे कोई कमठ जैसा व्यक्तित्व जान बूझकर उपसर्ग कर रहा था। कार्यकर्तागण मुस्काते हुए बोले–'गुरुदेव ऐसे माहौल में जाना उचित नहीं है, अतः आज विहार को विराम दीजिए, कल सुविधा से निकलिए।' उनकी बातें सुनकर महाव्रती विमर्शसागर जी भी मुस्करा उठे, फिर बोले–'4.30 तो बजने दो सब ठीक हो जाएगा।' भक्तगण मन मारकर बैठ गए।

घड़ी का काँटा खिसकते हुए 4.15 पर आया तो एकदम ओले, पानी, आँधी रुक गए, आकाश साफ हो गया। गुरुवर ने भक्तों की ओर देखा, मुस्काए और पीछी उठाकर चल दिए। पीछे-पीछे मुनि विश्वपूज्य सागर और उनके पीछे पूरा समाज। तभी एक भक्त ने लाउडस्पीकर चालू कर दिया, आवाज सुनने मिली 'ओ जानेवाले हो सके तो लौट के आना।'

अलोद प्रवेश

चलते-चलते शाम होने लगी, तब कार्यकर्ताओं ने गुरुजी को लकड़ी के कारखाने (वुड फैक्टरी) के एक साफ-सुथरे कक्ष में ठहरा दिया। सुबह पुनः विहार कर अलोद नगर में प्रवेश किया। वहाँ के भक्त गुरुदेव का रास्ता ही देख रहे थे क्योंकि उन्हें सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन करना था। अतः विशाल समूह के साथ गुरुदेव की अगवानी की और मंदिर जी के समीप ठहराया।

6 मार्च से 16 मार्च तक सफलतापूर्वक विधान का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री महेशचंद पटवारी सौधर्म इन्द्र बने थे। प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित पवनकुमार दीवान एवं पं. अनिल शास्त्री।

गुरुदेव ने 20 मार्च को पुनः विहार कर दिया और अनेक नगरों को आहारचर्या एवं वैयावृत्ति के क्षण प्रदान करते हुए बढ़ते रहे। 20 मार्च से 31 मार्च तक धोवड़ा, गोठड़ा, अतिशय क्षेत्र आवाँ, बन्थली, दूनी, पोल्याडा पहुँचकर रात्रि विश्राम एक शाला भवन में किया।

सुबह 1 अप्रैल को जिसे सारा संसार फूल डे (मूर्ख दिवस) के नाम से मनाता है, गुरुदेव सांसारिक मूर्खता को संयम से समाप्त करते हुए, देवली पहुँचे। देवली वाले मूर्ख नहीं थे, विद्वान और धार्मिक थे। अतः उन्होंने गुरुदेव से रुकने और महावीर जयंती समारोह को सान्निध्य देने का आग्रह किया

मगर गुरुदेव समय न दे सके, क्योंकि पूर्व में ही कोटा समाज को आशीर्वाद दे चुके थे। फिर भी दो दिन रुके और प्रभावना की। दूसरे दिन हिंडोली होते हुए बड़ा नयागाँव पहुँचे।

मुनि विनम्रसागर जी का संदेश

बड़ा नयागाँव में लोगों ने विनम्रसागर जी का संदेश विमर्शसागर जी को देते हुए बतलाया कि आज 4 अप्रैल है, कल 5 अप्रैल को मुनि विनम्रसागर बूंदी पधार रहे हैं, अतः उनकी भावना है कि आप 5 को बूंदी पधारें। भक्तों के विचार सुनकर गुरुदेव विमर्शसागर जी प्रसन्न हो उठे। गुरुभाई से मिलन का अवसर जो था। गुरुवर ने 5 अप्रैल को नयागाँव और बूंदी के भक्तों के साथ विहार कर दिया।

विमर्श-विनम्र मिलन : 2006

इतिहास में बूँदी की लड़ाई जग जाहिर है जहाँ दो बड़े राजाओं ने वर्षों पूर्व युद्ध किया था किन्तु उस दिन, 5 अप्रैल को, बूंदी की लड़ाई का अनुवाद हो गया

'धर्म की बढ़ाई'। बूँदी नगर के कार्यकर्ताओं ने दोनों संघों के सम्मान मे दो टोलियाँ बना लीं। एक टोली बैंड दल के साथ विमर्शसागर जी के साथ और दूसरी टोली वाद्ययंत्रों के साथ विनम्रसागर जी के साथ हो गई। फिर दोनों टोलियाँ संघों के साथ आजाद पार्क की ओर बढ़ी, जहाँ दो 'आजाद महासाधु' वात्सल्य मिलन कर सके। दोनों ने करबद्ध कर पिच्छिका सम्भाली और नमोस्तु-प्रतिनमोस्तु करते हुए एक-दूसरे के गले से लग गए। उनका मिलन देखकर दोनों टोलियाँ मिलकर संतों का जयघोष करने लगीं।

वात्सल्य की लहर ऐसी उमड़ी कि हर भक्त ने भावना की कि दोनों मुनियों की आहारचर्या एक ही चौके में सम्पन्न होवे। संयोग से उन्हें वह दृश्य देखने का सौभाग्य मिल गया। हुए एक ही चौके में दोनों के आहार। दोपहर में एक ही कक्ष में दोनों की सामायिक। बाहर गाना गूँज रहा था—'बहारो फूल बरसाओ महामुनिराज आए हैं'। शाम को ही विमर्शसागर जी ने विहार कर दिया अपने गन्तव्य की दिशा में।

शिलान्यास

6 अप्रैल को बूंदी के समीप स्थित रजतगृह कॉलानी पर स्थित जिनालय के विचाराधीन शिखर का शिलान्यास गुरुदेव के सान्निध्य में सम्पन्न किया गया। प्रतिष्ठाचार्य थे—पंडित नरेन्द्र जैन नैनवां।

6 अप्रैल को सम्पन्न शिलान्यास कार्यक्रम के बाद गुरुदेव ने वहाँ के भक्तों को आहार चर्या का अवसर नहीं दिया, वे कार्यक्रम के बाद ससंघ विहार कर गए और देवपुरा पहुँचे। देवपुरा जो धरती के देवों में से एक क्षुल्लक विशुद्धसागर जी की जन्मनगरी कहलाती है। गुरुदेव ने वात्सल्य पूर्वक वहाँ ही आहारचर्या की, मगर रुके नहीं, दोपहर बाद पुनः विहार कर दिया, फलतः रात्रि-विश्राम एक फैक्टरी में करना पड़ा। तीन दिन विहारकर तालेड़ा होते हुए कोटा नगर से पूर्व कुन्हाड़ी-जैन मंदिर में रात्रि विश्राम किया।

कोटा प्रवेश

मुनिवर ने ससंघ 9 अप्रैल 06 को कोटा की सीमा स्पर्श की। पूर्व-महापौर मोहनलाल महावर ने की नगर अगवानी। हजारों भक्तगण आरती लिए खड़े थे, सैकड़ों ने पादप्रच्छालन किया फिर की सभी ने आरती। शोभायात्रा बढ़ी नगर की ओर। सबसे आगे दो युवा ध्वजवाहक, उनके पीछे सौभाग्यवती महिलाएं कलश धरे चल रही थीं, उनके पीछे ब्रह्मचारिणी बहिनें और उनके पीछे भक्तों से घिरे हुए गुरुदेव। गुरुदेव के पीछे पूरा कोटा नगर। भक्तों ने मुनिसंघ के चरणों से नगर की अनेक सड़कें पवित्र कराईं फिर गीताभवन में हुआ मंगल प्रवचन। लोग थे गद्गद् अपने प्रिय को पाकर एवं अपने पूजनीय के प्रवचन सुनकर।

प्रवचनोपरांत गुरुवर ने रामपुरा स्थित जिनालय से आहारचर्या साधी। मध्यान्ह बेला में रामपुरा से विहार कर कोटा के विज्ञाननगर में आ गए। आई साथ-साथ हजारों की भीड़। दूसरे दिन वहीं आहारचर्या। 11 अप्रैल को पुनः रामपुरा-स्थित मंदिर आकर 'महावीर जयंती समारोह' को सान्निध्य दिया। वहाँ प्रातःकाल 7 बजे से भव्य शोभायात्रा निकाली गई, महावीर स्वामी रजत पालकी पर विराजे थे। जब मुनिवर पालकी के साथ बढ़े तो उनके पीछे इतना लम्बा जुलूस था कि उसका आखिरी हिस्सा समझ में ही नहीं आ रहा था। दो चंट युवक उसे देखने स्कूटर से चल दिए। लौटकर उन्होंने बतलाया कि आज का जुलूस तो सात किमी. लम्बा हो गया है। नगर का मुख्यमार्ग जनमेदनी बन गया था। मीलों दूर तक मुण्ड ही मुण्ड दिख रहे थे। शोभायात्रा नगर को धन्य करती हुई सी.ए.डी. ग्राउंड पहुँची और वहाँ बनाए गए पंडाल में समा गई। 25 हजार से अधिक लोग वहाँ गुरुवर के प्रवचन सुनने लालायित बैठे थे।

महावीर जयंती का मंच : 11 अप्रैल 06

कोटा की उस विराट सभा के मंच पर गुरुदेव सूर्य की तरह प्रदीप्त थे। उनके एक तरफ मुनि विश्वपूज्यसागर और दूसरी तरफ क्षुल्लक विशुद्धसागर जी दर्शन, ज्ञान बनकर विराजे थे, चारित्र थे स्वतः गुरुदेव। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद श्रीचन्द्रकृपलानी थे। विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के कृषिमंत्री श्री प्रभुलाल सैनी संसदीय सचिव श्री भवानी सिंह राजावत, विधायक श्री ओम बिड़ला आदि थे।

पहले सभी अतिथियों ने और समाज के कार्यकर्ताओं ने अपने विचार रखते हुए गुरुदेव का श्रद्धास्पद गुणगान किया। समय आया फिर गुरुदेव के प्रवचन का। उन्होंने अपनी गंभीर किन्तु मधुरवाणी से बतलाया—'भगवान महावीरस्वामी ने देश के नागरिकों के लिए पंचशील सिद्धांतों का प्रवर्तन किया था, जो देश के साथ-साथ सारे भूमण्डल के नागरिकों को जीवन का सद्मार्ग दिखलाते हैं। उनका दिव्यसूत्र था 'जिओ और जीने दो' जो धार्मिकता के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक धरातल पर मनुष्य मात्र को ज्ञान प्रदान करता है। हर स्तर और हर वर्ग के प्राणी को जीने की राह दिखाता है। महावीर के सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से संबंधित सिद्धांत जो भी मनुष्य या देश अपना लेता है, वह कलयुग में रहते हुए सतयुग का जीवन जीने की दिशा पा जाता है।'

प्रवचन समाप्त ही हुए कि सकल दिगम्बर जैन समाज कोटा के पदाधिकारीगण अपने अध्यक्ष श्री राजमल पटौदी के साथ गुरुचरणों में आए, श्रीफल अर्पित

किए और चातुर्मास 2006 के लिए प्रार्थना करने लगे। मुनिवर ने मुस्काते हुए कहा–'प्रयास कर रहे हो तो सफलता भी मिलेगी।' कुछ ही क्षणों में जयंती महोत्सव का कार्यक्रम पूर्ण हो गया, जिसे प्रबुद्धजनों ने ऐतिहासिक तो कहा ही, चिरस्मरणीय भी कहा। लोग बहुत प्रसन्न थे।

12 अप्रैल को गुरुदेव स्थानीय भक्तों के साथ विहार कर श्री नसियाँ जी पहुँच गए। है यह कोटा के धार्मिक लोगों के लिए जंक्शन, सभी कॉलोनियों की सड़कें नसियाँ जी से जोड़ी गई हैं। दो दिन ही बीते कि कोटावासियों को पुनः शंकाएं होने लगी कि कहीं महाराज जी अन्यत्र न चले जाएँ अतः एक सूचना पर नगर के सभी 48 मंदिरों के पदाधिकारीगण और श्रावकगण समाजाध्यक्ष एवं मंत्री के साथ 14 अप्रैल को नसिया जी पहुँचे और सभी ने श्रीफल अर्पित करते हुए चातुर्मास काल प्रदान करने की विनय की। जैसे वे गुरुदेव के समक्ष कह देना चाहते हों–

जिन्दगी भर गई है बदबू से,
फूलों की बगिया खिलाई जाये।
रूह विकलांग हो रही हरदम,
दवा बच्चों सी पिलाई जाये।।

समाज की मृदुल भावनाएँ गुरुदेव का अंतरंग स्पर्श कर गईं, अतः उन्होंने मुस्काते हुए, सदा की तरह मीठा उत्तर दिया–'देखेंगे।'

गुरुदेव 18 अप्रैल तक कोटा में विराजमान रहे, मगर शाम को विहार कर दिया। भक्तों में दौड़-धूप मच गई। मुनिवर ने सूर्यास्त से पूर्व, रिद्धि सिद्धि कॉलोनी में स्थित एक चिल्ड्रन स्कूल के कक्ष में विराम लिया। सुबह पुनः चल पड़े। तब भक्तों ने रास्ते में ही गोटेवाला कृषि फार्म पर आहारचर्या की व्यवस्था की। सायंकाल पुनः विहार और ग्राम मायजा पहुँचे, दिए वहाँ दो दिन। हुआ जन-जन सुखी। फिर अजेता ग्राम होते हुए खटकड़ नगर पहुँचे। भक्तों ने दिव्यघोष के साथ मंगल अगवानी की और भव्य शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश कराया। हुई वहाँ ही आहारचर्या, जैन मंदिर सहित जैनों के पंद्रह घर मुस्करा रहे थे।

उसी दिन दोपहर में बूंदी का प्रतिनिधि मंडल आ गया, श्रीफल अर्पित कर अपनी पुरानी विनय दुहराई–'हे गुरुदेव, वर्षायोग बूंदी में ही करें।' वे चरणों से उठे ही थे कि नैनवाँ नगर के भक्त श्री राजेन्द्र जैन मारवाड़ा के साथ नतमस्तक होकर वही क्रिया करने लगे, जो बूँदी वाले कर चुके थे। वह दिन भक्त सम्मेलन का दिन बन गया था, क्योंकि नैनवा वालों के बाद भीलवाड़ा निवासी श्री बालचंद शाह सपरिवार उपस्थित हुए। यद्यपि वे गोमटेश यात्रा से

लोटे थे, फिर भी जिस तरह बच्चे जलेबी देखकर उसे पा लेने की इच्छा करते हैं, उन्होंने भी शिशु की तरह पवित्र भावना से उक्त विनय ही दुहराई।

गुरुदेव ने सभी को मुस्कानों से उत्तर दिया फिर बोले–'देखिए कुछ न कुछ होना ही चाहिए।'

पुनः विहार

गुरुदेव ने अपने विहार को परिणाम देते हुए चौबीस अप्रैल को खटकड़ से चलकर लुहरगाँव छू लिया। इस तरह 25 अप्रैल तक वे चले और पीपलिया गाँव में 26 अप्रैल को उपाध्याय श्री संयमसागर जी से वात्सल्य मिलन करते हुए चैतपुरा पहुँच गए। फिर देई नगर जहाँ 100 जैन परिवार रहते हैं, में दो दिन का प्रवास किया। 28 अप्रैल को पुनः नैनवाँ वाले जा पहुँचे और प्रार्थना की, कि वर्षाकाल तो दूर है, ग्रीष्मकालीन वाचना की आज्ञा दीजिए। गुरुवर ने की उन पर कृपा और उन्हीं के साथ विहार कर नैनवाँ की ओर चरण बढ़ा दिए। रात्रि विश्राम मार्ग के किनारे स्थित एक मकान में किया।

नैनवाँ प्रवेश

29 अप्रैल 06 को मुनिवर ने ससंघ, नैनवाँ के भक्तों की मंगल-भावनाओं को आशीष देते हुए प्रातः 8:30 बजे भव्य शोभायात्रा के साथ, नगर में प्रवेश किया। है यहाँ 400 घर का समाज और 9 जिनालय।

अक्षय तृतीया

दूसरे दिन नैनवाँ के श्रावकों ने गुरुदेव के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया। उसदिन गुरुदेव ने अक्षय तृतीया का महत्व समझाते हुए प्राचीनकाल के मुनियों की आहारचर्या पर और प्राचीन भक्तों की नवधा-भक्ति पर प्रकाश डाला। लोग धन्य हो गए।

ग्रीष्मकालीन वाचना

1 मई 06 से गुरुदेव ने ग्रीष्मकालीन वाचना का शुभारंभ कर दिया। मुख्य ग्रंथ था समयसार जी। क्रम बना सुबह प्रवचन, दोपहर में कक्षा और शाम को आचार्य भक्ति का। मुनिवर ने यहाँ 'खूबसूरत लाइनें' पुस्तक एवं 'आदिनाथ पूजा' की रचना की।

कलशारोहण

वाचना के चलते ही कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को भी समय दिया। अतः 16 जून से 18 जून तक श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर में कलशारोहण एवं ध्वजा स्थापना के त्रि-दिवसीय कार्यक्रम को सान्निध्य दिया। 17 जून को श्री

यागमंडल विधान सम्पन्न किया। उसी दिन क्षुल्लक श्री पद्मसागर जी, गुरुदेव विमर्शसागर जी के दर्शनार्थ पधारे। फिर वे 18 जून तक साथ ही रहे। 18 जून को ही गुरुदेव के साथ में विशाल रथयात्रा का आयोजन दोपहर 1 बजे से किया गया और मंदिर जी के शिखर पर कलशारोहण किया। प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित नरेन्द्र जैन शास्त्री।

गुरुदेव ने नैनवाँ में धर्म की ऐसी ज्योति जलाई कि उसका उजास पाने वहाँ कोटा, देई और बूँदी आदि के भक्तगण पुनः पहुँच गए। सभी ने पुरानी रट को नया किया, तब मुनिवर ने पहले देई समाज को पत्र लिखकर दिया कि आचार्य विरागसागर जी से अनुमति लाई जावे। 5 जून को सुबह पहला पत्र लिखा, तो मध्यान्ह बेला में बूँदी वाले पत्र के लिए अनुनय विनय करने लगे। अतः दूसरा पत्र लेकर उन्होंने भी दौड़ लगा दी। 7 अप्रैल को कोटा वाले आ गए, उन्होंने भी पत्र माँगा, गुरुदेव ने तीसरा पत्र दे दिया।

अभिप्राय यह कि तीनों नगर के समाज ने आचार्य विरागसागर जी के पास जाकर अनुमति चाही थी, किन्तु वह मिली कोटा वालों को, फलतः वे आचार्यश्री का पत्र लेकर 20 जून को गुरुदेव विमर्शसागर जी के समक्ष नैनवा जा पहुँचे। तब तक दूसरे दल भी आ गए, मगर उनके पास अनुमति नहीं थी। विमर्शसागर जी ने कहा कि अंतिम निर्णय 26 जून को किया जाएगा।

निर्णय का दिन

26 जून को गुरुदेव के समक्ष अनेक नगरों के दल उपस्थित थे, जिनमें कोटा, नैनवाँ, देई और बूंदी के लोग भारी उल्लास में दिख रहे थे। उन्हें विश्वास था कि अंतिम निर्णय उन्हीं की कमेटी को मिलेगा। किन्तु जब मुनिवर ने अपने गुरु और भक्तों के प्रयासों पर विचार किया तो उन्होंने कोटा नगर के लिए निर्णय दे दिया। कोटा वाले उछलने लगे, जयघोष करने लगे, शेष लोग दुख के दरिया में डूब गए।

जबरन मनाया जन्मदिन

नैनवा के कुछ कार्यकर्ताओं को जानकारी मिली थी कि स्कूल रिकार्ड के अनुसार मुनिवर की जन्मतिथि 26 जून 1974 है अतः उन्होंने 26 जून 06 को मुनिवर का 33वाँ जन्मदिन महोत्सव धूमधाम से मनाया। गुरुदेव चकित कि ये लोग क्या कर रहे हैं?

पाठकों को स्मरण होगा कि गुरुदेव की जन्मतिथि 15 नवंबर1973 है। जब वे बालक थे और पिताजी के साथ नाम लिखाने शाला गए थे, तब उनकी उम्र 6 वर्ष में लगभग 8 माह कम थी, अतः शिक्षक महोदय ने वह उम्र पूरी करने

के लिए उनकी जन्मतिथि 26 जून 1974 दर्ज की थी। सो यह एक प्राकृतिक संयोग था, तिथि बदलने में पारिवारिक जनों ने किंचित भी प्रयास नहीं किया था।

गुरुदेव नैनवाँ से विहारकर 6 जुलाई 06 को बड़गाँव पहुँचे। फिर रात्रि में रिद्धि सिद्धि नगर में विश्राम किया।

कोटा महानगर प्रवेश : 2006

7 जुलाई को विचित्र संयोग बन पड़ा, गुरुदेव विहार करने के लिए एक कदम भी न चल पाए और अगवानी करनेवाले भक्तों की दर्जनों टोलियाँ दरबार में जा पहुँची। सबके मन में एक ही भावना कि भव्य प्रवेश कराना है और भव्य शोभायात्रा निकालना है। भक्तों के साथ गुरुदेव ने विहार किया ससंघ। आगे-आगे मुनिवर विमर्शसागर जी, उनके पीछे मुनि विश्वपूज्यसागर जी और उनके बाजु में क्षुल्लक विशुद्धसागर जी। सैकड़ों लोगों के साथ गुरुदेव नयापुरा चौराहा पहुँचे, तो वहाँ हजारों लोग फिर अगवानी करने खड़े थे, जिनमें कोटा स्थित अड़तालीस मंदिरों के अध्यक्ष, मंत्री और अन्य पदाधिकारी तो थे ही, विधायक श्री ओम विडला तथा श्री भवानीसिंह राजावत नगर निगम महापौर जो नगर की प्रथम महिला नागरिक कही जाती हैं डॉ. रत्ना जैन भी उपस्थित थीं। उन्हीं के पास पूर्व महापौर श्री मोहनलाल महावर खड़े थे। इन सब के पीछे हजारों की संख्या में श्रावक श्राविकाएँ, युवक-युवतियाँ और छात्र-छात्राएँ भी। था विशाल जन समुदाय। प्रमुख लोगों ने पादप्रच्छालन किया, आरती उतारी और अगवानी रश्म की भव्यता वर्धित की। चूँकि मुनिवर को भीड़ के कारण विलम्ब हो गया था, अतः युवकगण कैसिट बजा रहे थे—"मोरो रामरमापति प्यारो बनरा कुन विलमालओं री"। भक्तगण गाने का सकेत समझें, तब तक गाना बंद हो गया।

जन-समुदाय ने शोभायात्रा के आगे बैण्डबाजा दल कर दिया साथ ही दो ध्वजधारक युवक। संघ के पीछे सम्पूर्ण जन समुदाय था। चली शोभायात्रा नगर की ओर। गली-गली स्वागत द्वार बनाए गए थे, मकानों के समक्ष रंगोली से चौक पूरे गए थे और छतों के समान्तर वंदनवार बाँधे गए थे। हर दस-बीस कदम के बाद लोग पादप्रच्छालन कर रहे थे। धीरे-धीरे यात्रा गीता भवन पहुँच गई। चिरपरिचित सभाभवन में प्रवचन सभा रखी गई। प्रवचन के पूर्व पुनः जैन समाज कोटा के अध्यक्ष श्री राजमल पटौदी, अतिशय क्षेत्र नसिया जी के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र गोयल, मंत्री श्री महेन्द्र कासलीवाल आदि प्रमुख जनों ने गुरुदेव के चरणों में श्रीफल अर्पित किए और कहा—'महाराज, आज तो हाँ कह दीजिए।' तब गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा—99 प्रतिशत अनुमति है। भक्तगण बोले—गुरुदेव

1 प्रतिशत का संशय मत रखिए, हाँ कह दीजिए। गुरुदेव मुस्काते रहे। दिगम्बर देवता को मनाने और रिझाने का क्रम 8 और 9 जुलाई को भी चलता रहा। 9 जुलाई को वहाँ स्थित पीपल के वृक्ष के नीचे विशाल धर्मसभा आयोजित की गई और मुनिवर से पुनः निवेदन किया गया, तब उन्होंने एक अंगुली उठाकर कहा—'दादावाड़ी स्थित श्री नसिया जी ठीक रहेगा।'

वाक्य सुनते ही वहाँ उपस्थित भक्तगण खुशी से उछल पड़े। शीघ्र ही खुशी के कण घर-घर जा पहुँचे। अतः पूरे नगर में खुशियों की बहार आ गई। उसी दिन मध्यान्ह बेला में गुरुदेव वहाँ से चलकर अन्य-अन्य कॉलोनियों को स्पर्श देने लगे। पहले रामपुरा, फिर तिपता, गढ़पैलेस, प्रतापनगर, शास्त्रीनगर और अंत में विशाल शोभायात्रा के साथ नसिया जी का पावन प्रांगण।

नसिया प्रवेश भी भव्य था। भक्तों ने सैकड़ों तोरणद्वार बनाए थे। गुरुदेव उनमें से होते हुए मूलनायक भगवान आदिनाथ के चरणों में पहुँच गए, भक्तगण भगवान-आदिनाथ ओर गुरुदेव विमर्शसागर के जयघोष बराबरी से करते रहे। वहाँ श्रमणसंस्कृति महिला मंडल, आदिश्वर महिला मंडल, जैन मित्र मंडल, साधु सेवा समिति, नसिया जी कमेटी आदि के सदस्य पादप्रच्छालन और आरती के लिए संघर्ष सा करने लगे। प्यार भरा संघर्ष। इस बीच नसिया पाठशाला की शिक्षिका ब्रह्मचारिणी मंजूदीदी एवं ब्रह्मचारिणी अर्चना दीदी ने अपने छात्रों के साथ गुरुदेव की तीन परिक्रमा लगाईं फिर की आरती।

इस अवसर पर गुरुदेव ने संक्षिप्त उद्बोधन दिया, जिसका आशय यह लेखन उन्हीं की पंक्तियों के माध्यम से बतला रहा है—

रहना दुनिया में खुदा के होकर,
सारी दुनिया से जुदा से होकर।

चातुर्मास कलश स्थापना

10 जुलाई 06 को विशिष्ट शहर कोटा में जिसे देश के महान शिक्षा केन्द्र के रूप में सम्मान प्राप्त है, गुरुदेव ने ससघ वर्षायोग स्थापना विधिपूर्वक की। इस अवसर पर मुख्य मंगलकलश स्थापना का सौभाग्य मिला श्री प्रेमचंद सर्राफ को। उसी क्रम में शेष चार कलश स्थापित किए श्री देवेन्द्र जी पांड्या, श्री महावीर जी कोठारी, श्री रामचंद जी गोयल और श्री अनिल कुमार चांदवाड़ ने। कार्यक्रम के पूर्व ध्वजारोहण किया इंजी. श्री अजय जैन वाकलीवाल ने। चित्र अनावरण किया श्री प्रकाश बज एवं नरेश जैन ने। अखण्डदीप प्रज्ज्वलन कर्ता थे श्री पद्मजी बज और शास्त्र भेंटकर्ता थे श्री राजमल जी पाटोदी एवं डॉ. रामकिशोर जैन।

अंत में गुरुदेव के हृदयस्पर्शी प्रवचन सम्पन्न हुए।

दूसरे दिन से ही विभिन्न कार्यक्रमों की आयोजना शुरू हो गई। 11 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया, जिसमें गुरुदेव ने अतिविशेष प्रवचन किया। उसके बाद तीन दिन का समय अघोषित होते हुए भी नियमानुसार चलता रहा। कृपा गुरुदेव की।

वात्सल्य का गंभीर सागर

मुनिरत्न विमर्शसागर ससंघ जब कोटा में थे (सन् 2004 में) तब वहाँ पूज्य 105 श्री विशुद्धसागर जी क्षुल्लक महाराज ने उनके संघ में प्रवेश करने की आज्ञा मांगी। वे उस समय 73 वर्ष के थे। मतलब यह है कि काफी वर्ष पूर्व उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था और सन् 2002 में राजस्थान स्थित रामगढ़ में आचार्य 108 श्री विपुलसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर ली थी। चूंकि कोटा में वे एकल विहारी तो थे ही वृद्ध अवस्था में भी थे, अतः मुनिवर विमर्शसागरजी ने करुणा की धार बहाते हुए उन्हें सन् 2004 में सम्पन्न बूंदी पंचकल्याणक महोत्सव के असवर पर संघ प्रवेश दे दिया था।

क्षुल्लक जी पूज्य विमर्शसागर जी को वात्सल्य का 'गंभीर सागर' मानते हैं, जो उचित भी है। वर्तमान में इस जीवनी को लिखते समय वे 81 वर्ष के हैं और गुरु छाया में प्रसन्नतापूर्वक संयम पालन कर रहे हैं। कहते हैं 'पूज्य विमर्शसागर जी जैसी चर्या, प्रज्ञा, वत्सलता और अनुशासन की भावना अन्यत्र नहीं देखी है। उनका आचार्यत्व आचरणीय है, सराहनीय तो है ही। अभी तक गुरुदेव से समयसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, मरणकंडिका, भक्तामर, रत्नकण्डकश्रावकाचार, रयणसार, मूलाचार, प्रवचनसार, आदि महान ग्रंथों का अध्ययन कर चुके हैं वे देव-वंदना, गुरुवंदना और शास्त्र अध्ययन के पश्चात् अधिक से अधिक समय गुरुसेवा में देना चाहते हैं। किन्तु उनकी जर्जर काया एवं बढ़ती हुई उम्र देखकर गुरुदेव स्वतः उनकी वैयावृत्ति में रुचि लेते हैं।

क्षुल्लक जी का पूर्व नाम प्यारेलाल जैन है। पौष शुक्ल ग्यारस, विक्रम संवत 1988 को बूंदी के समीप स्थित देवपुरा ग्राम में जन्म लिया था।

श्री भक्तामर स्तोत्र शिक्षण शिविर

15 जुलाई को गुरुवर की प्रेरणा से शिविर प्रारंभ किया गया, जिसके ज्ञानकलश स्थापन कर्ता डॉ. संतोष जैन कोटा थीं। इस अवसर पर गुरुदेव की प्रकाशित पुस्तक 'जीवन है पानी की बूँद' का लोकार्पण सांसद श्री रघुवीर सिंह जी कौशल के करकमलों से सम्पन्न हुआ। उन्होंने जी भर प्रशसा की लेखनी की।

शिविर के कार्यक्रम निर्धारित ढंग से चलते रहे। इस अंतराल में 30 जुलाई को मोक्ष-सप्तमी मनाई गई और भगवान पार्श्वनाथ का पूजन सम्पन्न किया

गया। अतिथि संसदीय सचिव श्री ओम बिड़ला थे। जबकि मुख्य अतिथि लार्डपुरा विधायक श्री पूनम जी गोयल।

31 जुलाई का रविवार मुनिवर के प्रवचन से दमक उठा था। विशाल श्रोता समुदाय ने कंठ नहीं हृदय से सराहना की थी। 9 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। इस अवसर पर श्रावकों ने गुरुवर के चरणों में 4500 श्रीफल अर्पित किए और प्राचीन मुनियों के रक्षासूत्रों को स्पष्ट करते हुए मुनिभक्ति पर दृढ़ता बतलाई।

रविवारीय प्रवचन धार्मिक होते हुए भी राष्ट्रीय और सामाजिक रंग लेकर प्रगट होते थे। फलतः 13 अगस्त के रविवार को भी वही श्रेष्ठ माहौल रहा। उस दिन मुख्य अतिथि थे रामगंजमण्डी विधायक श्री प्रहलाद गुंजल। फिर आया स्वतंत्रता दिवस। 15 अगस्त के प्रवचन भी राष्ट्रीय धरातल पर अत्यंत प्रेरक सिद्ध हुए। उस दिन का कार्यक्रम महाराज उम्मेदसिंह स्टेडियम में भारतीय संत समाज द्वारा आयोजित किया गया था जिसमें सैकड़ों विद्यालय के सहस्त्रों छात्र उपस्थित हुए थे। संयोजक थे हर्षानंद जी। उन्हें गुरुदेव विमर्शसागर ने कुछ सप्ताह पूर्व ही ऐसा प्रभावित किया था कि वे गुरुदेव को लेने नसिया जी आए थे और फिर साथ-साथ स्टेडियम तक पैदल ही गए थे।

जब गुरुदेव मंच पर पहुँचे थे तब तेज बरसात होने लगी फलतः पण्डाल से निकलकर छनकर पानी की बूंदें लोगों के ऊपर आ रही थीं। पहले अन्य-अन्य संतो ने प्रवचन दिए थे, जब गुरुदेव का क्रम आया तो उन्होंने मौन रहते हुए आशीर्वाद तो दिया किन्तु प्रवचन नहीं दिए। कार्यक्रम के समापन के समय संत श्री हरसानंद जी महाराज ने विनयपूर्वक गुरुदेव से कहा—'सम्पूर्ण श्रोतागण आपको सुनने अधीर हो रहे हैं, तब मुनिश्री ने बतलाया—'यदि बरसते पानी में प्रवचन करते हैं तो वर्षा की बूँदें मुख में आ सकतीं हैं। इससे जैन मुनि का व्रत खंडित हो जाता है। इसलिए मौन रहना उचित है।' संत हर्षानंद जी ने उनका उत्तर सुनकर आत्मिक सुख अनुभूत किया, बोले 'धन्य हैं आप और आपकी साधना। वे तुरंत गुरुदेव के समक्ष श्रद्धावान हो गए तथा मुनिवर की वार्ता उन्होंने मंच से उद्घोषित की, जिसे सुनकर सभी ने जैन साधु की साधना को सराहा। कार्यक्रम में मुख्य संत इस तरह थे। गुरुवर विमर्शसागर जी, मुनिवर विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक विशुद्धसागर, संत श्री सनातन पुरी महाराज, संत श्री अवधेश जी महाराज, कबीर पारक संस्था के संत श्री प्रभाकर जी महाराज और योगाचार्य श्री हर्षानंद जी महाराज।

सम्पूर्ण कोटा में जैन-अजैनों के मध्य गुरुदेव के रविवारीय प्रवचन भारी चर्चा पा रहे थे। उसी क्रम में 18 अगस्त रविवार के प्रवचन भी अति विशेष रहे। उस दिन मुख्य अतिथि थे पूर्व स्वायतशासन मंत्री श्री शांतिलाल धारीवाल

तथा विशिष्ट अतिथि थे श्री वी.के. गोलछा अतिरिक्त मुख्य अभियंता नगर विकास न्यास एवं श्री सुनील माथुर पत्रकार। 25 अगस्त की धर्मसभा में श्री राजीव दीक्षित उपस्थित हुए जो 'आजादी बचाओ आंदोलन' के प्रणेता हैं एवं 'स्वदेशी' के राष्ट्रीय प्रवक्ता। उन्होंने उस दिन डेढ़ घंटे उद्बोधन दिया और गुरुदेव का आशीर्वाद पाया। सदा की तरह गुरुदेव का प्रवचन भी प्रभावना पूर्ण रहा।

पर्युषण पर्व

27 अगस्त से 6 सितम्बर तक, गुरुदेव के सान्निध्य में पर्वराज पर्युषण मनाया गयां प्रतिवर्ष की तरह गुरुदेव ने प्रतिदिन एक धर्म की महत्वपूर्ण जानकारी दी।

क्षमावाणी

कोटा में महावीर नगर (द्वितीय) के तत्वावधान में सामूहिक 'क्षमावाणी पर्व' स्वामी विवेकानंद स्कूल परिसर में रखा गया। जिसमें कोटा और समीपी बस्तियों के साथ-साथ अशोकनगर, महरौनी, बूदी, भानपुरा, राममगजमण्डी, सिंगोली आदि नगरों के हजारों भक्त उपस्थित हुए थे। कार्यक्रम के अतिथिगण थे श्री हरिकुमार औदिच्य पूर्व शिक्षा मंत्री, श्री ओम प्रकाश विडला संसदीय सविच श्री भवानी सिंह राजावत, श्री सत्यनारायण गुप्ता अध्यक्ष अभाव अभियोग एवं श्री ए.के. जैन आयकर आयुक्त। समस्त जन-समूह सहित अतिथियों ने मुनिवर के प्रवचन से प्रभावित होकर आपस में क्षमायाचना की।

विद्वत संगोष्ठी

पूर्व योजनानुसार 20 सितम्बर से 22 सितम्बर तक त्रिदिवसीय 'समसामयिक राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी' का आयोजन पंडित पवनकुमार दीवान के संयोजन में किया गया, जिसमें तीन दिन तक विभिन्न सत्रों में अनेक विद्वानों ने भाग लिया—डॉ. शीतलचंद जैन जयपुर, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. फूलचंद प्रेमी दिल्ली, डॉ. श्रेयांस जैन बडौत, ब्र. जयकुमार टीकमगढ़, डॉ. सुशील कुमार जैन मैनपुरी, डॉ. सुरेन्द्र भारती, प्रो. निहालचंद बीना, डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, डॉ. अल्पना जैन लखनऊ, डॉ. विमला जी फिरोजाबाद, डॉ. संतोष जैन कोटा, पंडित विनोद जैन रजवांस, डॉ. रमेश बिजनौर, डॉ. अशोक लाडनु, नरेन्द्र भारती।

गोष्ठी में गुरुवर और विद्वानों की बातें सुनकर श्रोताओं को संयम का महत्व समझ में आया। वहाँ यह भावना भी स्पष्ट हुई कि जो व्यक्ति संयमी नहीं है, उसके लिए तो यही कहा जा सकता है—

क्या मिला रूह को जलाने में,

सारी दुनिया से दिल लगाने में।
जब नाव बँधी हो किनारे से,
क्या मिला माँझी को बुलाने में।

कोटा शिविर

3 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक 10 दिवसीय 'श्रीमज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर' का धर्मप्रधान आयोजन किया गया, जिसमें धवल पोशाक में पुरुष और केशरिया साड़ी में धात्रियाँ सुबह से उपस्थित होकर, अभिषेक और पूजन की प्रशस्त विधि गुरुदेव से सीखते थे। 1100 शिविरार्थियों द्वारा भव्य पांडुक शिला के घूमते कमलासन पर विराजित श्रीजी की अर्चना का यह आयोजन कोटा ही नहीं आसपास के सभी क्षेत्रों में चर्चा का विषय बना रहा। मुनिवर के निर्देशन में 4 घंटे खड़े-खड़े पूजन करना, फिर शंका समाधान, रात को महाआरती सभी को खूब भाया। शिविर के शिविराधिपति श्री पद्म बज जो शिविर के 'चक्रवर्ती' थे। मंगल-कलश की स्थापना उन्हीं के करकमलों से हुई थी। प्रथम दिन ध्वजारोहण श्री अजय बाकलीवाल ने किया था तो अखण्ड दीप प्रज्वलन श्री नरेश वैद्य ने। पंडित पवन कुमार दीवान का निर्देशन था और सुधीर एंड पार्टी सागर का संगीत। शिविर के चलते 8 अक्टूबर को शांतिविधान का आयोजन शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ। 10 अक्टूबर को आध्यात्मिक कवि-सम्मेलन ने सभी भक्तों को आल्हादित कर दिया।

जैन मित्र मंडल के प्रदेश अध्यक्ष श्री हुकमचंद काका (उद्योगपति) ने शिविर में महती भूमिका निभाई थी।

रजत जयंती

नगर की हर कॉलोनी के लोग गुरुदेव का सान्निध्य चाहते थे अतः बढ़कर सद्प्रयास करते रहते थे अपने क्षेत्र में लाने के लिए। इस क्रम में तलवंडी कमेटी ने शिविर समाप्त होते ही 13 अक्टूबर को नसिया जी से गुरुदेव के विहार में सेवाएं दीं और जैन मंदिर तलवण्डी ले गए, जहाँ उनके सान्निध्य में रजत-जयंती समारोह मनाया गया। यह कार्यक्रम त्रिदिवसीय हो गया था। मुख्य अतिथि थे आयकर आयुक्त श्री ए.के. जैन।

बाद में गुरुदेव ससंघ नसिया जी आ गए, जहाँ 21 अक्टूबर को महावीर निर्वाण महोत्सव मनाते हुए वर्षायोग का निष्ठापन सम्पन्न किया। जब पूज्यवर ने प्रवचन दिया तो उसका आशय उन्हीं की पंक्तियों में यह निकाला गया–

काली रातों को मिटाया जाए
घर में इक दीप जलाया जाए।

जिन्दगी सबकी है पहेली सी
इसका हल सबको बताया जाए।

पिच्छिका परिवर्तन समारोह

28 अक्टूबर 06 को गुरुदेव ने ससंघ पिच्छिका परिवर्तन का आयोजन सम्पन्न किया, जिसमें उनकी पिच्छिका श्री हेमन्त जी डूंगरवाल को प्राप्त हुई। मुनि विश्वपूज्यसागर जी की पिच्छिका श्री रामबाबू जैन शिक्षक को एवं क्षुल्लक विशुद्धसागरजी की श्री सुरेशचंद जैन को।

गुरुदेव पूरा दिन वहाँ नहीं रुक सके। शाम को कोटा नगर के अन्य उपनगर तलवण्डी के लिए विहार किया। 5 बजे हुआ मंदिर जी में प्रवेश।

16वाँ आचार्य पदारोहण दिवस

8 नवम्बर को गुरुदेव ने अपने गुरु आचार्य विरागसागर जी का 16वाँ आचार्य पदारोहण दिवस गुणानुवादपूर्वक मनाया। इस अवसर पर गुरुदेव द्वारा संकलित एवं लिखित पुस्तिका 'विरागांजलि' का लोकार्पण परमगुरुभक्त ताराचंद, जम्बूकुमार विनोदकुमार मित्तल परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया फिर दोपहर को हुआ श्री भक्तामर महामण्डल विधान। हुई शाम को सुसज्जित थालियों से भरे दीपकों से आरती। पंडित शैलेन्द्र जैन, पं. वीरेन्द्र जैन और पंडित ब्रजेश जैन के उद्बोधन हुए।

10 नवम्बर को गुरुदेव ने तलवण्डी से ससंघ विहार कर दिया और भक्तों के साथ आर.के. पुरम कॉलोनी पहुँचे। वहाँ भक्तामर विधान सम्पन्न हुआ। 12 नवम्बर को मंदिर निर्माण जो बंद हो गया था, मुनिवर के प्रवचन से एक बड़ी राशि कमेटी को प्राप्त हुई, समाज में खुशी आ गई।

मुनिसंघ ने 13 नवम्बर को महावीर नगर स्थित मंदिर में प्रवेश किया। भक्तों ने धूमधाम से अगवानी की। मिला उन्हें दो दिन का प्रवचन लाभ। 15 नवम्बर को गुरुदेव विज्ञाननगर जैनमंदिर पहुँचे, वहाँ 3 दिन तक प्रवचन सुधा लुटाई। 18 नवम्बर को मंदिर जी के शिखर पर ध्वजारोहण सम्पन्न कराया। एक दिन शांपिंग सेन्टर जैन मंदिर गए। वहाँ 25 नवम्बर को भक्तामर महामण्डल विधान सम्पन्न कराया। पुनः दूसरे दिन वापिस विज्ञाननगर आ गए। वहाँ 30 नवम्बर को भक्तामर महामण्डल विधान कराया। 1 दिसम्बर को जैन मंदिर महावीर नगर (प्रथम) गए, वहाँ 13 दिसम्बर तक रुके और भारी प्रभावना की। वहीं आचार्य विरागसागर जी का '24वां मुनिदीक्षा दिवस समारोह' मनाया, जो त्रिदिवसीय रहा। इस बीच रत्नत्रय महामंडल विधान भी सम्पन्न कराया। दीक्षादिवस का मुख्य आयोजन 9 दिसम्बर को हुआ। इस अवसर पर गुरुदेव के आशीर्वाद से 'साहित्य-सदन' की स्थापना की गई। विधानाचार्य पंडित

व्रजेश शास्त्री और संगीतकार अनिल एण्ड पार्टी दोशा ने अपने कार्य से सभी का मन मोह लिया। इन कार्यक्रमों में जहाँ 3 दिसम्बर को आयकर आयुक्त ए. के. जैन उपस्थित हुए, तो 9 दिसम्बर को संसदीय सचिव ओम विडला एव पुलिस उप अधीक्षक कोटा श्री चलन जैन।

9वाँ मुनिदीक्षा दिवस

13 दिसम्बर की शाम को बसंत विहार के भक्तों के साथ विहार कर गुरुदेव जैन मंदिर पहुँचे। सारे परिक्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई।

बसंत विहार के समर्पित भक्तों ने 14 दिसम्बर 06 को गुरुदेव का भव्यमुनि दीक्षा दिवस मनाया। चूँकि उस दिन अधिक भक्तों के आगमन की संभावना थी, अतः समूचा समारोह अकलंक स्कूल के समीप विशाल मैदान में मनाया गया। उस दिन श्रावकों ने अपने परम पूज्य और परमप्रिय गुरु के सम्मान में उनकी रचना पढ़ी–

आप हो मेरे रहनुमा गुरुवर
हर घड़ी चाहूँ चरणरज गुरुवर।
सादगी तेरी, ज़िंदगी हो मेरी
कर सके न बयाँ जुबाँ गुरुवर।
सारी दुनिया को हो तुम तो प्रियवर
तुमको अर्पित है दिलो-जाँ गुरुवर।
तुझसा दुनिया में न कोई अनुभवी
दे दो संयममयी सुधा गुरुवर।
सच कहूँ धन्य भाग्य हैं उनके
जिसने पाई तेरी दुआ गुरुवर।।

18 दिसम्बर को संघ बसंत विहार से विहारकर महावीर नगर (द्वितीय) चला गया। गए साथ भक्तगण। वहाँ 18 से 24 दिसम्बर तक शीतकालीन प्रवचन शृंखला का भव्य आयोजन किया गया। भक्तों के विशेष अनुरोध पर समापन से एक दिन पूर्व, 23 दिसम्बर को दोपहर में मुनिश्री के सान्निध्य में आध्यात्मिक कवि सम्मेलन रखा गया जिसमें कतिपय कवियों ने अपनी रचनाएँ रखीं। मगर जन समुदाय को तो गुरुदेव की काव्य रचनाएँ सुननी थीं अतः भक्तगण खड़े हो होकर निवेदन करने लगे। तब गुरुदेव ने दो महत्वपूर्ण रचनाएँ सुनाई। उनके अंश यहाँ दे रहा हूँ। गुरुदेव ने जन-समुदाय को बतलाया व्यसन कौन त्यागता है, जिसमें शर्म होती है–

हर मुलाकात अहम होती है
रब की हर बात अहम होती है।
करते अपने गुनाहों से तौबा
जिनको थोड़ी सी शर्म होती है।।

गुरुदेव ने अपनी द्वितीय कविता के लिए भूमिका बनाते हुए कहा—जो जन, मुनि और दीनों की सेवा करते हैं, उन पर स्वर्ग तक प्रसन्न हो जाता है—

हमने जलता चिराग देखा है
अपने घर में प्रयाग देखा है।
जिसने सेवा की यति यतीमों की
स्वर्ग को बाग-बाग देखा है।

24 दिसम्बर को आयोजन के समापन दिवस पर श्री भक्तामर महामण्डल विधान सम्पन्न किया गया। क्रियाएं पंडित ब्रजेश शास्त्री ने कराईं। उसी दिन शाम को गुरुदेव ससंघ भक्तों के साथ श्री जैन मंदिर तलवण्डी जा पहुँचे।

सर्वोदय ज्ञान-शिक्षण शिविर

तलवण्डी की पावन धरा पर 26 दिसम्बर से 3 जनवरी तक 9 दिवसीय उक्त शिविर का आयोजन प्रभावनापूर्वक किया गया, जिसमें 600 शिविरार्थियों ने भाग लिया, विषय थे—प्रश्नोत्तर रत्नमालिका, बालबोध-भाग-1, भाग-2, भाग-3, भाग-4, त्रय स्तोत्र, इष्टोपदेश एवं श्रावकाचार। मुनिवर विमर्शसागरजी ने प्रश्नोत्तर रत्नमालिका का विषय 'चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर' पहेलियों के रूप में रखा। बाद में यह पहेली इसी नाम से पुस्तकाकार की गई। इस अवसर पर विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। जिनमें डॉ. शीतलचंद जैन जयपुर, पं. सनतकुमार जैन जयपुर, ब्र. अर्चना दीदी, ब्र. मंजू दीदी, ब्र. राजेश भैया, ब्र. रवीन्द्र भैया, पंडित शेलेन्द्र जैन, पंडित ब्रजेश जैन, पं. वीरेन्द्र जैन, पं. शैलेष जैन, किशनगढ़, पं. आनंद शास्त्री बनारस, पं. जितेन्द्र जैन सहित पंडित पवन जैन आदि उपस्थित हुए थे।

नववर्ष पर मुनिवर ने रखा उपवास

शिविर के चलते नया वर्ष लग गया था, अतः 1 जनवरी 07 को गुरुदेव के मार्गदर्शन में नववर्ष एवं ईद एक साथ होने से विशेष कार्यक्रम रखा गया। जिसमें विभिन्न वक्ताओं के बाद गुरुवर ने अपने प्रवचन में डंके की चोट पर कहा कि नववर्ष अहिंसक तरीके से मनाया जाना चाहिए। आज के दिन पशुओं का कत्ल न हो, लघु जीवों तक की हिंसा न हो। लोगों को प्रशस्त चर्या की प्रेरणा हेतु आज हम सबको उपवास करना चाहिए। उनके आह्वान पर सैकड़ों

लोगों ने हाथ उठाकर उपवास की स्वीकृति दी। माना गया कि अब अहिंसा का संदेश जन-जन तक जावेगा और नववर्ष का नूतन दिवस ''अहिंसा दिवस'' बन जावेगा।

शिविर चल ही रहा था जिसका समापन 3 जनवरी को समारोह पूर्वक हुआ। कार्यक्रम की भारी सफलता से जनसमुदाय प्रसन्न था और संस्कारों की प्रेरणा पा सका था। गुरुदेव कुछ दिन और रुके तलवण्डी में।

18 जनवरी को तीर्थंकर आदिनाथ का निर्वाण दिवस सभी भक्तों ने उपस्थित होकर गुरुदेव के सान्निध्य में मनाया। वह उस प्रवास का अंतिम दिन भी सिद्ध हुआ। क्योंकि गुरुदेव उसी दिन शाम को ससंघ विहार कर, छावनी स्थित जैन मंदिर चले गए, जहाँ पूर्व योजनानुसार विवेकानंद स्कूल परिसर में श्री भक्तामर महामंडल विधान किया। 3 दिन बाद ही उस कॉलोनी के भक्तों को गुरुवर की वह मुद्रा देखने मिली जो सबके नसीब में नहीं होती, उस दिन गुरुदेव ने केशलुंचन किया था। इसी दिन 2 मई 07 से होने वाले पंचकल्याणक में सानिध्य हेतु रामगंजमंडी के सूरजमल जी, जयकुमारजी, रमेशजी आदि ने आशीर्वाद लिया। तभी सरस्वती कॉलोनी कोटा के वर्धमान सरवाड़िया ने भी 11 मई 07 से होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के लिए निवेदन कर आशीर्वाद लिया। आशीष पाकर सभी खुश हुए। गुरुदेव 26 जनवरी तक छावनी को समय दे सके, फिर उसी दिन विशाल शांतिविधान सम्पन्न कराया और शाम को रामपुरा में भव्य प्रवेश किया।

पीपल का पेड़

पाठकों को याद होगा कि पूर्व में श्री गुरुदेव पीपल के पेड़ के नीचे, चौराहे के समीप, विशाल मैदान में धर्मसभा सम्बोधित कर चुके हैं। इस बार 28 जनवरी को वह पीपल का विशाल वृक्ष अपनी सम्पूर्ण शाखाओं के साथ नाचता सा दिख रहा था क्योंकि उसकी गोद में इस बार पुनः दिगम्बर देव बैठे और प्रवचन किया। मिला तीन दिन का अतिरिक्त सत्सग श्रावकों को।

शिलान्यास

1 फरवरी 2007 को गुरुदेव रिद्धि-सिद्धि नगर के नवनिर्मित जिनालय पहुँचे और भक्तों की प्रार्थना के अनुसार जिनालय में त्रिदिवसीय भूमिपूजन शिलान्यास एवं वेदी प्रतिष्ठा समारोह को सान्निध्य दिया। पंडित हँसमुख जी धरियावद ने गुरुदेव के निर्देशानुसार समस्त क्रियाएँ सम्पन्न कीं।

5 फरवरी 07 को गुरुदेव बल्लभबाड़ी गए और वहाँ 6 फरवरी को जिन मंदिर में शांति विधान सम्पन्न कराया। दो दिन और रुके फिर पुनः वापिस नसिया जी पहुँच गए। सारे मार्ग में भक्तगण जयकार करते रहे।

कोटा से विहार

19 फरवरी 07 को अनेक माताएँ बहिनें और पुरुष भारी उदासी व्यक्त कर रहे थे। क्योंकि उस दिन उनके गुरुनाथ पूज्य विमर्शसागर जी ससंघ कोटा छोड़कर अन्यत्र जा रहे थे। कर दिया उन्होंने विहार। भक्त काफी दूर तक पीछे-पीछे दौड़ते रहे।

कंसार प्रवेश

गुरुदेव कोटा से जगपुरा को स्पर्श देते हुए कंसार पहुँचे, वहाँ जाते ही मंदिर जी के जीर्णोद्धार की प्रेरणा की। कार्य हेतु दिया आशीर्वाद भक्तों को रात्रिविश्राम किया कृतिका तेल मील। गुरुदेव के आगमन की खुशी में काम करने वाले आदिवासियों ने सजधजकर संगीत के साथ भक्तिपूर्वक लोकनृत्य किया। जब वे जी भरकर भजन गा चुके और नृत्य कर चुके तब गुरुदेव ने उन सभी को अपने पास बुलाया, समीप ही बैठने को कहा, फिर व्यसन त्यागने, उपदेश दिया। उनकी वाणी से आदिवासी गण ऐसे प्रभावित हुए कि उन्होंने खड़े होकर और हाथ जोड़कर शराब, अण्डा, मांस का त्याग कर दिया। फिर किया त्याग शिकार और परस्त्रीगमन का। आशय यह कि उस दिन उनके सातों व्यसन सिर पर पैर रखकर भाग गए। गुरुभक्त महावीर मित्तल ने मुनिवर के आशीष से सभी को कंबल भेंट किए।

वहाँ से विहारकर गुरुदेव ग्राम दरा मण्डाना, मोड़क चौराहा, झालावाड़ होते हुए 26 फरवरी को झालरापाटन पहुँचे। झालरापाटन में भगवान शांतिनाथ की मनोहारी विशाल प्रतिमा का दर्शन किया। प्रतिदिन प्रवचन का क्रम प्रारंभ हो गया। जो होली में भक्तामर विधान एवं मुख्य बाजार में रविवारीय प्रवचन तक जारी रहा। पश्चात् विहार हो गया।

योगसार प्राभृत टीका

मुनिवर ने कोटा शास्त्रागार में 'योगसार प्राभृत' ग्रंथ देखा। देखकर मन अत्यंत आह्लादित एवं बहुमान से भर उठा। पं. गजाधरलाल जी का हिंदी अनुवाद, जुगलकिशोर मुख्तार का भाष्य, आर्यिका विशुद्धमती की प्रश्नोत्तर टीका देखकर भी इस पवित्र ग्रंथ की टीका लिखने को मन प्रफुल्लित हुआ। झालरापाटन के शांतिनाथ प्रभु का पादमूल एवं गुरुवर आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के शुभाशीष से मुनिवर ने टीका प्रारंभ की।

पिड़ावा प्रवेश

मुनिवर के कदम पिड़ावा की ओर थे। महावीर कमलध्वज, अनिल 'उपहार' राकेश 'प्रेमी' आदि ने मुनिवर को विशेष निवेदन कर पिड़ावा प्रवेश कराया।

दूसरे दिन से प्रारंभ हुए मुनिवर के प्रवचन। 'सम्यग्दर्शन' की व्याख्या सुनने उमड़ पड़ा जनसैलाब।

एक दिन अनिल 'उपहार' ने मुनिवर से निवेदन किया, आप हमारे मंदिर भी दर्शनार्थ पधारें। जब मुनिवर दर्शनकर लौटे तो अनिल जी बोले—महाराजश्री आपके आगमन से पिड़ावा में अच्छी धर्मप्रभावना हो रही है। हमारी मुमुक्षु समाज भी आपसे प्रभावित है सभी प्रवचनों में आते हैं, ऐसी प्रभावना ब्र. सुमतप्रकाशजी खानियाधाना के बाद अब आपके सानिध्य में देखने को मिल रही है। हमारी समाज में भी आहारदान की भावना हो रही है।

ऐसा ही हुआ, जब मुनिवर का पड़गाहन एक प्रमुख मुमुक्ष परिवार में हुआ। नगर में चर्चा का विषय बना रहा। हर जुबान पर एक ही बात थी, 'अध्यात्म की चर्चा एवं चर्या करनेवाले साधु पहली बार ही आए हैं।'

महावीर जयंती भवानीमंडी में

मुनिसंघ सात दिन पिड़ावा ठहरकर भवानीमंडी पहुँचा। हुई भव्य अगवानी। दिगंबर-श्वेतांबर समाज के प्रतिनिधियों ने मिलकर किया निवेदन, महावीर जयंती में सानिध्य हेतु। दिया मुनिवर ने आशीष प्रेम और एकता की मिशाल कायम रखना ही द्वय जैन समुदायों की जिम्मेदारी है। 31 मार्च को रथयात्रा निकाली गई, जो श्वेताम्बर धर्मशाला में धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हो गई। दिया मुनिवर ने मैत्री का संदेश।

रामगंजमण्डी प्रवेश

3 अप्रैल को गुरुदेव ने वह नगर छोड़ दिया और विहार करते हुए रामगंजमण्डी पहुँचे। भव्य अगवानी। 18 अप्रैल तक नित्यप्रति गुरुदेव की प्रवचन धारा में जन-जन ने आनंद स्नान किए। 19 अप्रैल को श्री आदिनाथ छोटे मंदिर में गुरुदेव के सान्निध्य में 'कलशारोहण समारोह' सम्पन्न हुआ। कलशारोहण का सौभाग्य रामगंजमण्डी के दोतड़ा परिवार को मिला। प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित सनत जैन एवं शैलेन्द्र जैन।

सभी श्रावक जानते थे कि गुरुदेव के रविवारीय प्रवचन व्यापक पैमाने पर होते हैं जो जन-जन को छू लेते हैं, अतः उन्होंने 22 अप्रैल को विशेष व्यवस्था की एवं अनेक अतिथियों को आमंत्रित किया, जिनमें प्रमुख थे–ए.एस.आई. कम्पनी प्रेसीडेंड श्री एस.सी. अग्रवाल, वाईस प्रेसीडेंट श्री वी.एस. अग्रवाल व्यापार संघ अध्यक्ष श्री फूलचंद डांगी, नगर पालिका अध्यक्ष श्री विजय कुमार गौतम। सभी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में गुरुदेव के प्रवचन और काव्य की, जिनसे वे पूर्व से अवगत थे, भारी सराहना की। फिर अनुरोध किया गुरुदेव से। हुए तब उनके मंगलकारी प्रवचन।

इसी तरह 29 अप्रैल के रविवार को भी विशिष्ट प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमें जज श्री वीरेन्द्र पाठक एवं एस.पी. ललित शर्मा अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने भी अपने उद्‌बोधन में गुरुदेव के कार्यकलापों की प्रशंसा की और आशीर्वाद माँगा।

पंचकल्याणक महोत्सव : रामगंजमण्डी

गुरुदेव का सान्निध्य पाकर नगर का जन मन हर्ष से प्लावित था। फलतः उन्हीं की सन्निधि में 2 मई से 7 मई 07 तक श्री आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं नगर गजरथ महोत्सव सम्पन्न किया गया, जिसके अंतर्गत 4 मई को जन्म कल्याणक के अवसर पर कार्यकर्ताओं की प्रार्थना पर आध्यात्मिक कवि सम्मेलन रखा गया, पधारे राजस्थान सरकार के गृहमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया एवं विधायक श्री प्रहलाद गुंजल। कतिपय कवियों ने एक-एक रचना सुनाई फिर वे और अतिथिगण मुनिवर के पीछे पड़ गए। अतः मुस्काते हुए उन्होंने भी अनुरोध मान लिया। कुछ देर तक काव्य किया। उन्होंने ईश्वर, साहस और भाग्य पर चलनेवाले युवकों के विषय में कहा—

जलता है जो बुझता है वो, मैं जानता मगर
मौके पे ऐसा वाकिआ, कई बार आ गया
सब कुछ लुटा के बैठा जो दर तेरे सुना है
उसका भी तू चुपके से आ दीपक जला गया।

फिर उन्होंने श्रावकों की ओर इशारा करके परोपकारी बनने की बात की और कहा कि परोपकार के बीजों का वपन करते हुए चलो—

खुद ही पतवार चलाई जाए
कस्ती साहिल से लगाई जाए
नाव लहरों पे डोलती जिनकी
उनको उम्मीद जगाई जाए।

ये तो काव्यांश है उनकी पूरी-पूरी कविताएँ सुनकर गृहमंत्री जी, विधायक जी और प्रबुद्धवर्ग अभिभूत हो गया। जाने कैसी प्रभावना उनके मनों तक पहुँची कि उन्होंने खड़े होकर गुरुदेव के समक्ष संकल्प लिया—'भ्रष्टाचार न करूँगा न करने दूँगा।'

विधान के प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित ब्र. जयकुमार निशांत, पं. मनीष जैन एवं ब्र. नितिन खुरई। अंतिम दिन जिला कलेक्टर श्री आलोक जी भी गुरुदेव का आशीर्वाद लेने पहुँचे। तब तक जैन समाज कोटा के भक्त श्रीफल लेकर गुरुदेव के चरणों में निवेदन करने लगे कि उनके नगर के पंचकल्याणक को भी सान्निध्य मिले। उन्हें मिला मुस्कान रूपी प्रसाद।

कोटा पंचकल्याणक हेतु विहार

9 मई को गजरथ महोत्सव का निर्विघ्न समापन कर शाम को ही गुरुदेव ने कोटा की ओर विहार कर दिया। उन्हें वहाँ की सुधि थी, आशीर्वाद जो दिया था। तीव्र गर्मी का समय था, लू और लपट अंगारों की तरह पेश आ रही थी। तापमान 43 डिग्री सेल्सियस था, अतः भक्तगण अनुरोध करने लगे कि कुछ दिनों बाद चले जाना, किन्तु वे हवा की तरह चल पड़े। वहाँ से कोटा लगभग 90 किमी. था और 8 घंटे धूप रहती थी, लोग चिंतित थे–'हमारे कोमल-कोमल महाराज झुलस जावेंगे।' गुरुदेव ने ताप की परवाह नहीं की, उन्हें तो भक्तों का संताप अनुभूत हो रहा था अतः वे चल पड़े ससंघ। ढाई घंटे सुबह पारी में चलते थे और 3 घंटे शाम की पारी में चल रहे थे, तभी बादलों को उनकी सुध आ गई। अतः वे काले-काले मेघकुमार संघ के ऊपर छा गए। फिर शुरू कर दी बौछार। गुरुदेव 3 दिन चले, जलाने वाला वातावरण सुहाना बन गया। हो गया सुहाना सफर।

साथ में चल रहे श्रावकगण बादलों का चमत्कार देखकर अपने गुरुदेव के तप की सराहना करने लगे, धूप-छाँव की सौगातें सहते हुए गुरुदेव ने 12 मई को सरस्वती कॉलोनी में भव्य प्रवेश किया। उसी दिन से पचकल्याणक कार्यक्रम का शुभारंभ हो गया। प्रतिष्ठाचार्य थे पं. प्रदीप जैन बम्बई। अंतिम दिन नगर रथयात्रा के साथ-साथ गुरुदेव भी चले और शहर को पवित्रताओं से समृद्ध कर दिया।

रामपुरा में शिविर

18 से 27 मई तक रामपुरा की पावन धरती पर महात्मा गांधी विद्यालय परिसर में 'ज्ञानज्योति शिक्षण-शिविर' का आयोजन किया गया। जिसमें संत संख्या वृद्धिंगत हुई। मंच पर थे गुरुदेव श्री विमर्शसागर जी, मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी, मुनिश्री सिद्धसेन सागर, ऐलक श्री चेतनसागर जी एवं क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी। संयोजक थे-राकेश जैन चपलमन। विद्वान थे-ब्रह्मचारिणी रचना दीदी मुम्बई, ब्र. सुषमा दीदी, डॉ. सविता जैन उज्जैन, पं. हेमंतकाला इन्दौर एवं कुछ और अन्य बंधु। कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हुआ।

बालतोड़ न तोड़ सका संयम

गुरुदेव को कार्यक्रम के बाद विहार करना था किन्तु उन्हें पैर में बालतोड (बड़ा फोड़ा) हो गया, उसका रंग बंदर के मुँह जैसा लाल था, कहें अंगार सा। यदि हम-आप होते, तो तड़फ जाते, किन्तु गुरुदेव उसको देख-देख मुस्काते रहे। कभी दर्द की चर्चा नहीं की। यह पृथक बात थी कि ठीक से चलते नहीं बनता

था। श्रावकों ने अपने कई अनेक प्रयास किए किन्तु दर्द कम न हुआ। आहारचर्या भी मुश्किल में पड़ने लगी, फलतः वे रामपुरा में ही रुके रहे। तनिक सी राहत मिलते ही, एक दिन महाराज ने विहार कर दिया ससंघ और भक्तों के साथ तलवण्डी जैन मंदिर पहुँचे। वहाँ प्रतिदिन 'मेरीभावना' पर हृदयग्राही प्रवचन करते रहे।

फिर एक दिन 19 जून को तलवण्डी से विहार कर महावीर नगर (प्रथम) पहुँचे, वहाँ आदिनाथ जिनालय में 20 से 22 जून 07 तक भव्यवेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न कराया। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के बीच में ही 21 जून 07 को जैन समाज अशोकनगर के प्रतिनिधि गण अपने अध्यक्ष श्री रमेश चौधरी के साथ गुरुदेव के समक्ष पहुँचे। चरणों में श्रीफल अर्पित किए ओर सन् 2007 के वर्षायोग के लिए प्रार्थना करने लगे। उन्होंने कहा कि अशोकनगर में आपके आशीर्वाद से नवनिर्मित श्री आदिनाथ जिनालय का पंचकल्याणक महोत्सव भी आपके सान्निध्य में होवे ऐसा आशीर्वाद दीजिए। गुरुवर मुस्करा दिए जैसे स्वीकृति प्रदान कर रहे हों।

यहाँ यह जानकर खुशी होगी कि मुनिश्री सिद्धसेन जी महाराज जो समाधिस्थ संत आचार्यश्रीबाहुबलीसागर जी महाराज के सुशिष्य हैं 'ज्ञान ज्योति शिविर' के समय से ही गुरुदेव विमर्शसागर के समीप लगभग 1 माह तक बने रहे। वे विनम्र स्वभावी मुनिराज हैं। प्रतिष्ठा कार्यक्रम के प्रतिष्ठाचार्य थे पंडित जितेन्द्र जैन शास्त्री एवं पंडित ब्रजेश जैन शास्त्री।

सिंहद्वार एवं मानस्तंभ शिलान्यास

3 दिन बाद ऋद्धि सिद्धि कॉलोनी के लोगों ने गुरुदेव की स्कूल रिकार्ड की तिथि अनुसार 26 जून 07 को 33 वाँ जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर समाज प्रमुख श्रीराजमल पटौदी एवं श्री पद्मबज ने गुरुदेव का पादप्रच्छालन कर अर्घ अर्पित किया। उनकी निर्मल श्रद्धा की सभी ने सराहना की। मुनिवर सिद्धसेनसागरजी ने विनयांजलि अर्पित की। मध्यान्ह बेला में रिद्धिसिद्धि कॉलोनी के जिनालय में प्रस्तावित भव्य मानस्तम्भ एवं विशाल सिंहद्वार का शिलान्यास गुरुदेव की सन्निधि में सम्पन्न हुआ। समारोह का ध्वजारोहण श्री नत्थीलाल जैन के करकमलों से सम्पन्न हुआ। सिंहद्वार का शिलान्यास किया श्री राजकुमार जैन सबदरा ने। हँसमुख जी धरियावद ने विधि संपन्न कराई।

कोटा से पुनः विहार

2 जुलाई को मध्यान्ह बाद मुनिवर ने ससंघ विहार किया। आचरण के चरण चल पड़े।

8 जुलाई को गुरुदेव की भव्य अगवानी राजस्थान की प्राचीन नगरी बाराँ की सीमा पर हुई, जैन समाज ने मंदिर और नसिया जी के दर्शन कराए और फिर की प्रार्थना चातुर्मास के लिए। दूसरे दिन जैन समाज शिवपुरी (मध्यप्रदेश) के भक्त, अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन (जड़ीबूटी वाले), पधारे ओर उन्होंनें भी श्रीफल अर्पित कर आसन्न वर्षायोग के लिए प्रार्थना की। मध्यान्ह बाद मुनिवर ने विहार कर दिया, मगर यह कोई न समझ पाया कि वे वर्षायोग कहाँ करेंगे।

संघ हाईवे नम्बर 76 पर चलता रहा। रास्ते के समरानिया, शाहाबाद नगरों/ग्रामों को उपकृत करता हुआ कस्बाथाना पहुँचा।

चर्या से समझौता नहीं

मुनिवर ससंघ शिवपुरी मार्ग की ओर चल रहे थे, उनका पथ ही ऐसा है पथान्त पर 'शिवपुरी' ही मिलती है, किन्तु अभी अतिशय तीर्थक्षेत्र सेसई जी के दर्शनों की भावना थी। शिवपुरी के श्रावकों ने सेसई जी से 12 किमी. पहले ही एक गेस्टहाउस के साफ शुद्ध कक्ष में आहार व्यवस्था की थी। उन कमरों पर प्लास्टिक का कारपेट विछाकर चिपकाया गया था, फिर भी एक श्रावक ने ब्र. राजीव से पूछा–'कारपेट वाले कमरे में मुनिवर आहार ले लेंगे?' भैया जी को जानकारी नहीं थी अतः उन्होंने सहज ही स्वीकृति में सिर हिला दिया। श्रावकों ने चौका तैयार कर लिया, जब मुनिवर को पड़गाहकर लाए तो वे चौके में प्रवेश न कर सके। कारपेट देखकर लौट गए और उपवास कर लिया। उन्हें उपवास देखकर मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी और क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी ने भी उपवास कर लिया। यह देख ब्र. जी अपनी गलती पर भारी पश्चाताप करने लगे। हाथ जोडकर गुरुदेव के समक्ष गए और क्षमा याचना करने लगे। तब गुरुदेव बोले–'इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है।' फिर हँसते हुए कहा–'यह हमारे ही लाभान्तराय कर्म का उदय है। तुम तो निमित्त मात्र हो।'

श्रावकों को भी अपनी गलती का अहसास हुआ। समझ गए शिवपुरी वाले मुनिवर अपनी चर्या से समझौता नहीं करते।

सेसई प्रवेश

शाम को संघ सेसई पहुँच गया। सेसई में निरंतराय आहारोपरान्त आयोजित धर्मसभा में अशोकनगर एवं शिवपुरी समाज से सैकड़ों लोग उपस्थित थे। सभी ने अपनी अपनी चातुर्मास हेतु प्रार्थना की। मुनिवर ने शिवपुरी चातुर्मास की संभावना व्यक्त की। 25 जुलाई को शाम सेसई से विहारकर राजकुमार जड़ीबूटी के फार्महाउस पर रुके। सुबह संघ लगातार चलता हुआ धर्मनगरी शिवपुरी स्थित श्री पार्श्वनाथ दि.जैन छत्री मंदिर के दर्शन कर रहा था,

सम्पूर्ण नगर को अगवानी करने और भव्य शोभायात्रा निकालने की भारी खुशी हो रही थी।

चातुर्मास स्थापना : 2007

शिवपुरी के धर्मज्ञ लोगों के भाग्य से गुरुदेव ने 29 जुलाई 07 को विधि विधानपूर्वक ससघ चातुर्मास की स्थापना की। राजकुमार जड़ीबूटी ने मुख्य कलश स्थापित किया। विशाल जन समूह ने गुरुदेव के मधुर-मधुर प्रवचनों का लाभ लिया। उसी दिन गुरुदेव की प्रेरणा से वार्षिक त्योहार गुरु पूर्णिमा भी मनाई गई। पर्वों का क्रम चल पड़ा, 30 जुलाई को वीरशासन जयंती का समारोह सम्पन्न किया।

19 अगस्त को गुरुदेव के प्रवचन स्थानीय जिला जेल परिसर में कराए गए, जिसमें गुरुदेव ने कैदियों के साथ-साथ जेल के कर्मियों और समाज के लोगों से सदाचार का आह्वान किया।

गुरुदेव के अनेक वर्षायोगों का वर्णन पाठकगण अब तक पढ़ चुके हैं अतः अब मैं संक्षिप्त में ही दृश्य वर्णित करूँगा। पाठकगण स्वतः उसके विस्तार तक अपनी दृष्टि पहुँचा सकेंगे। गुरु कृपा से यहाँ शिवपुरी के भक्तों को भी श्री भक्तामर शिक्षण शिविर का पूरा-पूरा लाभ मिला जो पांच अगस्त से शुरू किया गया था। उसी क्रम में 20 अगस्त को सुबह मोक्ष-सप्तमी मनाई गई। 28 अगस्त को गुरुदेव के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

विद्वत संगोष्ठी

12 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय 'पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन' पर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न की गई, जिसमें संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुरेन्द्र भारती थे। समागत विद्वान् निहालचंदजी बीना, रमेश जी बिजनौर, सुरेशचंद जी दिल्ली, नेमिचदजी खुरई, नरेन्द्र भारती सनावद, अशोक जैन लाडनुँ, पवन दीवान मुरैना, सुरेशजी मारोरा, सुमतप्रकाश कोलारस, पंकज ललितपुर, संतोष सीकर, कोमलचंद टीकमगढ़, महेन्द्र मुरैना आदि उपस्थित अनेक विद्वानों के साथ-साथ श्रोताओं को भी मार्गदर्शन मिला।

23 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक 'पूजन प्रशिक्षण शिविर' 8 नवंबर को प. पू. आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का 16वाँ आचार्य पदारोहण दिवस गुणानुवादपूर्वक मनाया गया।

निष्ठापन

निर्विघ्न सम्पन्न हुए वर्षायोग का निष्ठापन गुरुदेव ने वीर-निर्वाण महोत्सव मनाते हुए विधिपूर्वक ससंघ सम्पन्न किया। तिथि थी 9 नवंबर 07।

सिद्धचक्र महामंडल विधान

18 नवम्बर से प्रारंभ आष्टान्हिक पर्व में मुनिवर के सानिध्य में सिद्धचक्र की आराधना की गई। पं. सनतकुमार, विनोदकुमार रजवाँस विधानाचार्य रहे। इसीसमय विद्वान भाइयों के साथ समाज ने पूज्य मुनिवर से 'आचार्यपद स्थापना' का निवेदन किया, किन्तु मुनिवर पूर्ववत् निष्पृह ही रहे आए।

सेसई में कल्पद्रुम विधान

एक दिन अजित जैन पत्तेवाले सपरिवार श्रीफल लेकर मुनिवर से प्रार्थना करने आए कि हमारे भाव 'कल्पद्रुम विधान' कराने के हैं आप अपना सानिध्य प्रदानकर कृतार्थ करें। दिया मुनिवर ने आशीर्वाद सानंद संपन्नता का।

समयानुसार शिवपुरी से विहारकर मुनिसंघ ने सेसई में विधान के लिए पूर्ण समय दिया। कार्यक्रम की संपन्नता होते ही मुनिसंघ ने शिवपुरी के लिए विहार किया।

रजत मुनिदीक्षा जयंती गुरुदेव की

शिवपुरी वालों को पू. मुनिवर का खूब आशीष मिला, और अनेक कार्यक्रम सानंद संपन्न कराए। इसी क्रम में 7 नवंबर से 9 नवंबर तक पू. आचार्य विरागसागरजी का 'रजत मुनिदीक्षा जयंती' महोत्सव मनाया गया। मुनिवर ने किए श्रद्धाभाव समर्पित, 'आचार्य विरागसागर विधान' की रचना करके। भक्तों ने भी शीघ्र पुस्तकाकार कर मुनिवर के भावों को बहुमान दिया। 9 दिसंबर को पिच्छिका परिवर्तन का विशाल आयोजन रखा गया, जिसमें मुख्यता थी गुरुवर के रजत जयंती कार्यक्रम की। अतः मुनिवर के आशीर्वाद से 'आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला' की स्थापना की गई।

लोकेश खरे द्वारा लिखा गया लघुशोध 'हिन्दी साहित्य की संत परंपरा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन' का विमोचन राजकुमार जैन जड़ीबूटी ने किया। प्रेरणा थी पूज्य मुनिवर की।

मुनिवर की लेखनी से उपकृत कृति 'मेरा प्रेम स्वीकार करो' का विमोचन स्वरूपचंद जी परिवार ने किया।

रात्रि में 8.00 बजे सुरेशचंद जी मारोरा के संयोजकत्व में 'आचार्य आदिसागर अंकलीकर एवं उनकी वर्तमान आचार्य परंपरा' विषय पर संगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ।

शिवपुरी पंचकल्याणक

छत्री मंदिर में शांतिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा और जिनालय की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 18 जनवरी से 25 जनवरी तक होना निश्चित हुई। प्रतिष्ठाचार्य थे ब्र. जय निशांत। मुनिवर विमर्शसागर के आशीर्वाद से रेजीमेंट परेड का भव्य प्रदर्शन हुआ। सारा नगर धर्ममय नजर आ रहा था। 22 जनवरी को धर्म संरक्षिणी महासभा का 'राष्ट्रीय नैमित्तिक अधिवेशन' रखा गया, जिसमें निर्मल सेठी, अजित पाटनी, हेमचंद झाँझरी आदि पधारे, लिया सभी ने मुनिवर से मंगल आशीर्वाद। दीक्षा कल्याणक के अवसर पर ब्र. ममता दीदी एवं ब्र. रीनादीदी ने ब्राह्मी-सुंदरी बनने का आशीर्वाद लिया, दिया मुनिवर ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत। मोक्ष कल्याणक के दिन विशाल गजरथ यात्रा निकाली गई। कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। सौधर्म इंद्र बने राजकुमार जड़ी बूटी परिवार में यह चिंता थी कि प्रतिष्ठा के समय कहीं सूतक न लग जाए, मुनिवर ने आशीर्वाद देकर कहा—आप चिंता मत करो, प्रतिष्ठा कार्य संपन्न करो। हुआ भी यही, पंचकल्याणक पूर्ण होते ही शाम को सूतक लगा सभी ने कहा—सब मुनिवर का ही आशीर्वाद है।

शिवपुरी से विहार

मुनिसंघ ने 12 फरवरी 08 को शिवपुरी से विहार किया। नरवर होते हुए सोनागिर पहुँच भावसहित वंदना की। संघ पहुँचा ग्वालियर। हरिशंकरपुरम, चंपाबाग, विनयनगर, त्रिशलामाला आदि स्थानों की वंदना की। फालका बाजार स्थित जैन मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा हेतु मुनिसंघ पहुँचा।

वेदी प्रतिष्ठा

अध्यक्ष कुशलचंद जी ने मुनिसंघ को नवनिर्मित मंदिर के कक्षों में विराजमान कराया। त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा पं. चंद्रप्रकाश जी चंदर के विधानाचार्यत्व में संपन्न की गई।

जहाँ मुनिवर ठहरे थे, उसके ठीक सामने रामा मार्केट का मालिक राजेन्द्र साहु निवासरत था। वह अपने छज्जे पर खड़े होकर मुनिवर को प्रणामकर जल चढ़ाता, पूजा करता, अगरबत्ती लगाता, दीपक जला आरती करता। युवा दंपत्ति का यह आराधना कार्य प्रतिदिन होने लगा। एकदिन राजेन्द्र साहु जैनी भाई के साथ मुनिवर के दर्शनार्थ आया। बोला—महाराज! आपका दर्शनकर अपूर्व शांति मिलती है। आप मुझे साक्षात् ठाकुर जी नजर आते हैं। मुनिवर ने कहा—यह आपकी श्रद्धा है। मुनिसंघ दूसरे दिन गोपाचल पहुँचा। वहाँ मुनिवर द्वारा रचित 'भक्तामर विधान' धूमधाम से किया गया।

मुरैना में नंदीश्वर विधान

पं. गोपालदास बरैया संस्कृत गुरुकुल से प्रसिद्धि प्राप्त मुरैना में तीन मंदिर हैं। मुनिवर के सानिध्य में बगीची मंदिर में रखा गया नंदीश्वर विधान। ब्र. रवीन्द्र भैया थे विधानाचार्य। विधान की संपन्नता के साथ ही महावीर जयंती छोटे मंदिर से प्रारंभ की गई। रथ में श्री जी को विराजमान कर मुनिसंघ की सन्निधि में यह शोभायात्रा विराट लग रही थी। हुए मुनिवर के पंचशील सिद्धान्त पर प्रवचन।

आगरा में मुनिसंघ

शाम को मुनिसंघ का विहार हुआ। धौलपुर, राजाखेड़ा, शमसाबाद होते हुए संघ ने आगरा में पदार्पण किया। श्रमण संस्कृति समिति के अध्यक्ष राजकुमार जैन गुड्डू ने मुनिसंघ को पत्तल गली में प्रवेश कराया। हुआ आत्मीय स्वागत, अभिनंदन। मुनिसंघ आगरा की प्रमुख शैली शालीमार, कमलानगर, ट्रांसयमुना, नसिया जी, जयपुर हाउस, हरिपर्वत, राजामंडी, छीपीटोला, ओल्ड ईदगाह आदि स्थानों पर तीन-तीन दिन प्रभावना करते हुए श्रुतपंचमी पर्व मनाने पुनः छीपीटोला पहुँचा।

श्रुतपंचमी

बड़े मंदिर से चार बग्घियों में चार अनुयोगशास्त्र विराजमान कर प्रभावनापूर्वक श्रुतपंचमी का जुलूस निर्मल सदन पहुँचा। प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश, डॉ. अनूपचंद, डॉ. विमला जैन फिरोजाबाद ने पर्व के विषय में विचार रखे। हुए फिर मुनिवर के प्रभावी प्रवचन। तभी निर्मल सेवा समिति एवं जैन समाज आगरा ने किया 2008 वर्षायोग का निवेदन। मुनिवर मथुरा दर्शन का संकेत देकर विहार कर गए।

मथुरा प्रवेश

मूलनायक अजितनाथ भगवान एवं जम्बूस्वामी की निर्वाणस्थली मथुरा में मुनिवर ने प्रवेश किया। किए क्षेत्र के दर्शन। हुई आगरा चातुर्मास की संभावना व्यक्त सैकड़ों आगरा भक्तों के सामने। मुनिसंघ पहुँचा फिरोजाबाद। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, डॉ. अनूपचंद, विजय देवता, आदि ने किया पाद प्रक्षाल, उतारी आरती। छदामीलाल मंदिर में संघ ने किया तीन दिवस प्रवास। फिर पहुँचे विभवनगर। श्यामजी, राजुजी भक्तों के आग्रह पर हुआ भक्तामर विधान। फिर पहुँचे जैननगर खेड़ा। मुकेश जैन, मनोज जैन ने की सेवा। संघ ने किया विहार आगरा के लिए।

आगरा चातुर्मास 2008

मुनिवर विमर्शसागर, मुनि विश्वपूज्यसागर, क्षु. विशुद्धसागर जी संघ ने 14 जुलाई को छीपीटोला आगरा में प्रवेश किया। पाद प्रक्षालन आरती का क्रम बहुत समय तक चला। मुनिवर के चरण छूने को हर कोई लालायित हो रहा था। तभी श्वेताम्बर स्थानकवासी राष्ट्रसंत कमलमुनि ने मुनिवर की चरणवन्दना कर की आगवानी। बड़े मंदिर, छोटे मंदिर, चद्रप्रभ मंदिर के दर्शनकर संघ निर्मल सदन पहुँचा। किए दिगम्बर-श्वेताम्बर संत ने प्रवचन। जो संदेश था—चातुर्मास में एकता और प्रेम का होगा, दर्शन।

चातुर्मास का ध्वजारोहण प्रदीप (पी.एन.सी.) ने तो मुख्य कलश स्थापना मुन्नालाल मनोज जैन बॉबी ने किया। 20 जुलाई को भक्तामर शिक्षण शिविर प्रारंभ किया गया। जिसमें निर्मल सदन विद्वानों का घर दिखाई देता था। क्योंकि सिर पर सफेद टोपी जो विद्वत्ता का दर्शन करा रही थी। मुनिवर ने 1 अक्टूबर को भक्तामर जी की पढ़ाई करने वाले श्रावकों की लिखित परीक्षा ली। फिर 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक 'पूजन प्रशिक्षण शिविर' आयोजित किया गया।

विराग भवन का शिलान्यास

मुनिवर विमर्शसागर की प्रेरणा से निर्मल समिति ने 'विराग भवन' का शिलान्यास कराया। यह संत वसतिका, छात्रावास, औषधालय, एवं प्रवचन सभागार से युक्त होगा। यह विशाल विरागभवन समाज के लिए विशेष उपलब्धि है। जो मुनिवर के सानिध्य से ही संभव हो सकी।

17 से 27 अक्टूबर तक गुरुदेव के माध्यम से भक्तों को महावीराष्टक कक्षा का लाभ मिला। 15.11.2008 को गुरुदेव विमर्शसागर जी की जन्मजयंती का आयोजन समारोहपूर्वक किया गया।

28 अक्टूबर महावीर निर्वाण दिवस पर प्रभु का भव्य अभिषेक और पूजन किया गया एवं गुरुदेव ने ससंघ विधि विधान पूर्वक वर्षायोग की निष्ठापना की।

108 की वंदना करने 1008

14 दिसम्बर को पूज्य विमर्शसागर जी का 11वां मुनिदीक्षा दिवस' पिच्छिका परिवर्तन समारोह सम्पन्न हुआ। उस दिन सभास्थल 'एंग्लो बंगाली गर्ल्स इंटर कॉलेज परिसर' के विशाल वक्ष पर राजस्थानी पगड़ी बाँधे हुए, कोटानगर से एक हजार आठ गुरुभक्त चरणों में पधारे, उन्होंने शीतकालीन वाचना करने की प्रार्थना की। अर्पित किए श्रीफल, श्रीयुक्त संत के चरणों में। पर न मिली स्वीकृति। फिर भी भक्तगण तो दर्शनों से ही गद्‌गद् हो रहे थे। हुआ पिच्छिका परिवर्तन ससंघ।

शीतकालीन वाचना

आगरा के सुप्रसिद्ध जैनभवन में गुरुदेव ने ससंघ 21 दिसम्बर को भव्य प्रवेश किया, फिर 30 दिसम्बर से शीतकालीन वाचना का शुभारंभ हुआ। प्रमुख ग्रंथ था 'रयणसार'।

आगरावालों की भक्ति इतनी अच्छी थी कि गुरुदेव ने वहाँ काफी समय दिया। दिसम्बर के बाद जनवरी 2009 निकल जाने के बाद, फरवरी का समय भी वहाँ के भक्तों को मिला। फलतः 15 फरवरी 09 को गुरुदेव ने युवक-युवतियों और छात्र-छात्राओं से 'बाल-विज्ञान' की लिखित परीक्षा ली।

गजरथ महोत्सव

तारघर मैदान, छीपीटोला (आगरा) में सर्वसम्मति से, 1 मार्च से 7 मार्च 09 तक श्री आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक एवं गजरथ-महोत्सव का आयोजन भी अति विशिष्ट रहा। यहाँ ब्राह्मी-सुन्दरी बनने का सौभाग्य मिला ब्र. आशा दीदी कोटा, ब्र. रेणुदीदी कोटा को। लिया दोनों बहिनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत। समाज में भक्ति के साथ-साथ गुरुदेव के प्रति अनुराग भी बढ़ गया। समाज मुनिवर को धन-दौलत देने में सक्षम नहीं था, न ही गुरुदेव उनसे कुछ लेते, अतः विद्वानों ने सुनहरा रास्ता तैयार किया और महोत्सव के अंतिम दिन, सात मार्च को भारी जन-समुदाय के मध्य गुरुदेव पूज्य विमर्शसागर जी को 'वात्सल्य शिरोमणि' का अलंकरण प्रदान किया। बदले में गुरुदेव ने एक वाक्य दिया 'इसकी क्या जरूरत थी'।

पंचकल्याणक समारोह के ध्वजारोहणकर्ता थे—श्री कैलाशचंद जैन (डायमंड कॉरपेट) और प्रतिष्ठाचार्य थे—ब्र. जय निशांत टीकमगढ़। सौधर्म इंद्र का धर्मनिर्वाह किया श्री अशोक जैन गोदामवाले।

अब यदि आगरा वर्षायोग 2009 की कुछ अन्य झलकियों पर चर्चा करें तो आनंद द्विगुणित हो जावेगा। अतः कुछ पीछे चलते है। गुरुदेव के सान्निध्य में 14 अगस्त 08 को श्रीपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर का भूमिपूजन एवं भव्य शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। स्थान था—अमृतपुरी (मधुनगर) आगरा। शिलान्यास कर्ता थे—श्री स्वरूपचंद मार्सन्स। ध्वजारोहण कर्ता थे—श्री पंडित निरंजनलाल बैनाड़ा। मंच पर चित्रानावरण किया था श्री प्रदीप जैन पी. एन.सी. एवं दीपप्रज्वलन किया था श्री भोलानाथ जैन ने। ग्वालियर निवासी पंडित चन्द्रप्रकाश जैन प्रतिष्ठाचार्य थे।

इसी तरह 8 नवम्बर 08 को गुरुदेव ने समारोह पूर्वक अपने गुरु आचार्य विरागसागरजी का आचार्य पदारोहण दिवस मनाया। गुरुदेव विमर्शसागर जी

की प्रभावना से हर भक्त का दिल लबालब भर गया था।

21 जुलाई को जो भक्तामर शिविर शुरू किया गया था उसके कलश स्थापनाकर्ता थे श्री नत्थीलाल मनोजकुमार जैन बालू गंज, आगरा। यहाँ सहयोगी संस्थाओं का उल्लेख करना आवश्यक है, जिन्होंने स्थापना से निष्ठापन तक जी तोड़ सेवा की थी और व्यवस्थाएँ बनाई थीं—भक्तामर म्युजिकल ग्रुप आगरा, विमर्शसेवा समिति आगरा, जैन मिलन आगरा, जैन जागृति युवा मंच आगरा, विमर्श महिला मंडल आगरा, महिला मंडल छीपीटोला, स्वतंत्र चिंतन महिला प्रकोष्ठ आगरा, युवा मंडल आगरा आदि। शिविर के निवेदक थे अध्यक्ष श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर छीपीटोला व सकल दिगम्बर जैन समाज आगरा। आयोजक थे अध्यक्ष निर्मल सेवा समिति छीपीटोला।

अब, जब अनेक उल्लेख किए गए हैं, तो चातुर्मास समिति के संगठन का उल्लेख भी अनिवार्य है, संयोजक—श्री मुकेश जैन (लले), अध्यक्ष-श्री महेशचंद जैन मांगरोल, महामंत्री—श्री विशंभरदयाल जैन, कोषाध्यक्ष-श्री सुभाषचंद जैन बोरिंग वाले और निर्माण संयोजक श्री अनिल कुमार जैनबंधु।

आगरा के अनेक कार्यक्रम चर्चा में न लें, तो भी कुछ तो लेने ही पड़ेंगे। गुरुदेव ने 20 से 22 फरवरी 09 तक त्रिदिवसीय वेदी-प्रतिष्ठा समारोह को श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सिकंदरा (आगरा) पहुँचकर भक्तों को सान्निध्य दिया था। कार्यक्रम भव्य था जो निर्विघ्न सम्पन्न हुआ था। संयोजक थे—श्री मदनलाल वैनाड़ा, अध्यक्ष श्री रमेशचंद जैन, मंत्री श्री अखिल कुमार जैन, कोषाध्यक्ष श्री हुकुम कुमार जैन।

इसी तरह दिसम्बर माह में 3 दिसम्बर से 9 दिसम्बर 08 तक शमशाबाद में गुरुदेव के सान्निध्य में 'तेरहद्वीप महामंडल विधान' भारी प्रभावना से सम्पन्न हुआ था।

आगरा से विहार

21 मार्च को मुनिवर आहारचर्या से लौटे तभी विहार की संभावना व्यक्त की। समाचार घर-घर तक पहुँच गया। क्या बाल-क्या वृद्ध सभी भक्तों की भीड़ दोपहर तक ही इकट्ठी हो गई। आँखों से मुनिवर के विहार का दर्द छलक-छलक उठता था।

भक्तामर मंडल के पिंटुजी सोच रहे हैं, मुनिवर की वैयावृत्ति चल रही है रोज सैकड़ों की संख्या में आनेवाले भक्त कोई मुनिवर के पादमर्दन कर रहा है, तो कोई इंतजार में है। मैं प्रतिदिन की तरह नया भजन तैयार कर लाया हूँ वैयावृत्ति के साथ गुरुभक्ति का आनंद ही कुछ और है। कोई भजन सुना रहा

है तो कोई नृत्य कर गुरुभक्ति में डूबा है। मैं संगीत के साथ अपना सुनाने खड़ा हूँ। तभी मनोज गुरु ने पूछा पिंटु क्या गुरुदेव आज विहार कर रहे हैं। चिंतन टूटते ही पिंटु बुदबुदाया—'अब कौन सुनेगा तेरा भजन।'

छोटे बच्चे सोच रहे हैं—जब गुरुदेव मंच पर आते जाते तो हम कमंडल पकडकर प्रसन्न हो कहते--108 बार पकड़ लिया, दूसरा कहता 81 बार मैंने भी पकड़ लिया। अब कब पकडूँगा कमंडल। मन तो कर रहा है गुरुदेव के साथ ही मुनिवन विहार करूँ।

जैन भवन के कोने में खड़ा मोन्टी गोदाम सोच रहा है—एक बार में गुरुदेव से बोला—अपने संघ की व्यवस्था के लिए यह ए.टी.एम. कार्ड रख लीजिए, यह मेरा सौभाग्य होगा। तब गुरुदेव ने कह दिया—संघ की सेवा करना तेरा धर्म है, लेकिन ए.टी.एम. कार्ड रखना मेरी मर्यादा से बाहर हैं मैं तो आर.टी.एम. (रत्नत्रयमंत्र) ही पास रखकर खुश हूँ। कितने श्रेष्ठ संत हैं ये गुरुदेव।

अचानक आवाज आई—मुनिवर मंच पर आ रहे हैं। खचाखच भरा जैनभवन शांत सा हो गया। किसी ने पद्य में तो किसी ने गद्य में की चातुर्मासिक उपलब्धियों की चर्चा, तो विनयांजलि से की गुरुवंदना।

मुनिवर विमर्शसागर जी ने कहा--'संत का चेहरा नहीं चरित्र देखना। संत को नाम से नहीं निष्काम भाव से पहिचानना। पंथवाद, संतवाद, जातिवाद से हटकर जिनधर्म का पालन करना।' सभी ने जय-जयकार कर किया मुनिश्री की भावनाओं का सम्मान।

इधर मुनिवर के कदम आगरा से बाहर जा रहे थे, उधर भक्तोंके अश्रु आँखों से बाहर आ रहे थे।

चलते-चलते आगरा की दो सहोदरा बहिनों नमिता और श्वेता ने लिया मुनिवर से मोक्षमार्ग पर चलने का आशीर्वाद। जिन्होंने चातुर्मास में सम्पूर्ण आयोजनों में भाग लिया, और जो मुनिवर की चर्या तथा आध्यात्मिक स्वाध्याय से प्रभावित रहीं।

तीर्थक्षेत्र वटेश्वर दर्शन

मुनिवर आगरा से वटेश्वर पहुँचे। उन्हें याद आया, जब 1998 में पूज्य आचार्यश्री विरागसागरजी के साथ किए थे इस क्षेत्र के मनोहारी दर्शन ओर भावना की थी, भगवान अजितनाथ के चरणों में जिनलिंग धारणकर पुनः दर्शन करने की। अपनी भावना को पूर्ण हुआ देख मुनिवर आनंदित थे।

एटा के 21 दिन : 2009

अभी जो दिगम्बर छवि मुनि कहलाती थी उसमें से जाने क्यों 'आचार्यत्व'

की किरणें फूट-फूट पड़ रही थीं। हर भक्त उन्हें आचार्य विमर्शसागर कहना चाहता था किन्तु जानता था कि आचार्य सम्बोधन से मुनिवर को सुख नहीं होगा। अतः मन के भाव मन में ही रह जाते थे।

गुरुवर ससंघ आगरा छोड़ वटेश्वर से भी एटा नगर का रास्ता ग्रहण चुके थे। मन में भावना थी कि एटा शहर के आसपास कहीं कोसमा ग्राम है तो कहीं फफोतु। नगर ने हमारे गुरुणांगुरु का अवतरण सन् 1905 में देखा है तो फफोतु ने 27 फरवरी 1938 को हमारे द्वितीय गुरुणां-गुरु आचार्य सन्मतिसागर जी को अपनी गोद में खिलाया है। यदि इन दोनों पावन भूमियों के दर्शन कर सकूँगा तो समाधिस्थ गुरुओं से परोक्ष रूप से आशीर्वाद भी मिलेगा। पुण्य मिलेगा सो अलग। उनके चरण बढ़ते गए।

जिस एटा शहर को वे जा रहे थे वह उत्तरप्रदेश की सीमा में अवस्थित है। कालांतर में अनेक पूज्यताओं और शिष्टताओं की उद्गम भूमि था किंतु वर्तमान में चार पाँच दशकों से डकैती, अपहरण और हत्याओं के लिए प्रसिद्ध हो गया है। चंद बटमारों ने एटा को इतनी क्षति पहुँचाई है कि एटा के सभ्य लोग जब अन्य नगर में धर्मशाला या लॉज का कमरा माँगते हैं तो उनका परिचय पत्र देखने के बाद भी, व्यवस्थापकों को सोचना पड़ता है। इतना ही नहीं एटा में जात-पाँत और धर्म के नाम पर भी हिंसाएँ होने लगी हैं। उन सबके बीच में थोड़े से जैन धर्मावलम्बी अपनी इज्जत बचाते हुए सभ्यता से रह रहे हैं। वे बेचारे सोचते कोई ऐसा भव्य व्यक्तित्व नगर में आ जावे जिसके कारण पापाचार कम हो जावे और सदाचार बढ़ जावे।

फफोतु नगर कुछ दूर शेष था कि रात्रि घिरने लगी अतः संघ के साथ चल रहे आगरा-जैन समाज के कार्यकर्ताओं ने एक कोल्ड स्टोर के साफ सुथरे कक्ष में मुनिवर का ससंघ विराम कराया। उस समय संघ में मुनिवर के साथ मुनि 108 श्री विश्वपूज्यसागर जी, क्षुल्लक 105 श्री विशुद्धसागर जी ही थे अन्य व्रतियों में बा.ब्र. राजीव भैया और 5 ब्रह्मचारिणी बहिनें थी-ब्र. आशा दीदी, ब्र. रीना दीदी, ब्र. रेणुदीदी, ब्र. मीरा दीदी और ब्र. प्रियंका दीदी। मगर कोल्ड स्टोर्स के कमरे में केवल दो मुनि थे। आधा घंटा ही बीता होगा कि एटा जैन समाज के मंत्री श्री प्रदीप जैन गुड्डू दर्शन करने मुनिवर के कक्ष में जा पहुँचे। नमोस्तु के बाद, किंचित चर्चा का भी लाभ लिया। उन्हें बतला दिया गया था कि विहार के समय भी मुनिवर शाम 7.30 से मौन धारण कर लेते हैं। प्रदीप जी ने देखा कि अभी कुछ मिनट शेष है, उन्होंने भक्तिपूर्वक विमर्शसागर जी के चरणों में श्रीफल अर्पित किए और प्रार्थना की, कि पहले आपके चरण एटा में पड़ें तो नगर धन्य हो जावेगा। उनकी सार्थक धरातल पर की गई अनुनय विनय से महान योगी मुनिवर विमर्शसागर जी करुणार्द्र हो गए अतः उन्होंने मुस्कराते हुए

स्वीकृति दे दी। सभी भक्त जोर-जोर से जयघोष करने लगे।

प्रदीप जी शीघ्रता से एटा गए और सुबह ही श्रावकों की एक टोली मुनिवर के साथ विहार कराने के लिए भेज दी। सुबह जब गुरुवर ने दरवाजे खोले तो अनेक श्रावक उनके चरणों में भूसात हो गए। मुनिवर ने मुस्कराकर पूछा 'एटा से हो क्या?' सभी ने बोला -'जी महाराज, हम आपको लेने आए हैं'। मुनिवर उनके साथ विहार कर गए। जब नगर सीमा पर पहुँचे तो एटा समाज ने भव्य अगवानी की और शोभायात्रा के साथ नगर-प्रवेश कराया।

अभी फाल्गुन माह के कुछ दिन शेष थे अतः कुछ लोगों में फगुनाई मस्ती अंगड़ाई ले रही थी। मुनिवर ने अपने प्रथम प्रवचन में ही रत्नत्रय के पुष्प खिला दिए जो लोग दर्शन, ज्ञान, चारित्र को गहराई तक नहीं जानते थे वे प्रथम प्रवचन सुनकर ही आधे पंडित बन गए। क्रम बना सदा की तरह सुबह प्रवचन, दोपहर में वाचना की कक्षा और शाम को आचार्य भक्ति। हर परिवार बच्चों सहित उपस्थित होता था। मुनिवर नित्य नये विषयों पर प्रवचन करते रहे फलतः नगर में सद्ज्ञान रूपी सूर्य चमकने लगा, मिथ्यातम के लिए स्थान ही न बचा। दस दिन ही बीते थे कि उनके अहिंसा प्रधान प्रवचनों की सुरभि नगर में ऐसी फैली कि नगर के जैन तो जैन, हिन्दु, मुस्लिम और अन्य जाति के लोग भी आने लगे फलतः उनमें अहिंसा और शाकाहार का बीजारोपण हो सका।

भक्तों को यह बात मुनिवर से ही समझ में आई कि प्रशस्त जीवन जीने की कला 'गुरु' से ही मिलती है। समस्त नगर में चर्चा थी कि मात्र 34-35 साल की उम्र में ही मुनिवर बड़े-बड़े आचार्यों की तरह सद्ज्ञान और सद्चर्या प्रदान कर रहे हैं। हिन्दू जैनियों से पूछते-'भाई इतना अधिक ज्ञान इन्होंने कहाँ से पाया होगा?'

महावीर जयंती

चैत्र शुक्ल तेरस के लिए कुछ ही दिन शेष थे, तभी समाज के लोगों ने विचार किया कि इस बार मुनिवर के सान्निध्य में जयंती मनाने का सौभाग्य भी मिलेगा अतः उनसे मार्गदर्शन लेना आवश्यक है। गए सभी जन मुनिवर के पास और माँगने लगे दिशा-ज्ञान। तब मुनिवर ने पूछा-'आप लोग किस तरह मनाते हैं?' तब उन्होंने बतलाया-महाराज, हम तो एक मैदान में पंडाल लगाकर मनाते हैं। मंदिर जी से सुबह-सुबह रथयात्रा नगर-भ्रमण करती हुई पंडाल पहुँचती है, वहाँ सामूहिक रूप से श्रीजी का अभिषेक पूजन और आरती दूसरे दिन महिला मंडल के द्वारा शाम को भजन संध्या का आयोजन करते हैं। तीसरे दिन श्रीजी को रथ में विराजमान कर प्रमुख मार्गों से होते हुए मंदिर लाते हैं।

एक सज्जन बोले हम लोगों की तो परम्परा से एक लीक सी बन गई है, अब आप जैसा बतलाएँगे वैसा करना चाहेंगे और आपके वरदहस्त की कृपा से सफलता भी पाएँगे। फिर मुनिवर ने उन्हें कुछ मार्गदर्शन दिया अतः इस वर्ष का समारोह ऐतिहासिक हो गया।

जयंती के एक दिन पूर्व ही अनेक नगरों से बहुत अधिक संख्या में भक्तगण पधारे उनमें आगारा छीपीटोला से पधारे 500 भक्तों की विशेष भक्ति रही। दूसरे दिन जब सुबह प्रवचन सभा हुई तो नगर और विनगर के लोगों की भीड़ देखते ही बनती थी। कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर मुनिवर प्रवचन करने बैठे। प्रातःकाल की बेला थी, सब लोग सोच रहे थे कि रोज की तरह आज भी विशिष्ट प्रवचन होंगे किन्तु मुनिवर ने सभी को चकित कर दिया, उन्होंने मधुरलय से एक चिरपरिचित गीत शुरू किया—'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाऐ रे।' वे गाते गए, लोग साँस थामे सुनते रहे। भक्तों को ऐसी शांति मिली जैसे वे तीर्थंकर महावीर की वाणी सुन रहे हों। भजन पूर्ण होने पर लोग धन्य-धन्य कर उठे। सभी ने अनेकों बार जयघोष किया। भजन ने सभी के भीतर आकिंचन्य और निस्पृहता के सूत्र मजबूत कर दिए।

एटा समाज का कार्यक्रम जैसा हर साल चलता था वैसा ही क्रम बना रहा, किन्तु इस बार मुनिवर के सान्निध्य के कारण लोगों का रोम-रोम हर्षित था।

श्री महावीर जी दर्शन

जैसे बहुप्रतीक्षित अभिलषित वस्तु के संयोग से मानव प्रसन्नता का अनुभव करता है, वैसे ही आनंदित थे मुनिवर विमर्शसागरजी, तीर्थक्षेत्र महावीर जी की वंदना कर।

आर्यिका सुनयमति एवं ब्र. ममता दीदी पूर्व से विराजित थीं पावन क्षेत्र पर। हुई समाचारी दोनों संघों में। साथ-साथ आहारचर्या। मुनिवर को आहार देते समय ब्र. ममता दीदी बहुत प्रभावित हुईं विशुद्ध चर्या का दर्शन कर। वे बोलीं मुनिवर से—आपको आहार देते समय ऐसा लगता है जैसे साक्षात् भगवान महावीर को आहार देने का सुख पा रही हूँ।

जब तीसरे दिन आहारचर्या हुई, तो आर्यिका सुनयमति माताजी ने भी किया विशुद्धचर्या का दर्शन। अतः दोपहर में स्वाध्याय के समय मुनिवर से बोलीं—'आपकी चर्या इस क्षेत्र के योग्य नहीं आपको तो बुन्देलखण्ड में ही रहना चाहिए।'

मुनिवर ने कहा—इस क्षेत्र की वंदना का भाव बचपन से था, सो दर्शनार्थ चला आया। वात्सल्यपूर्वक दोनों संघ यथायोग्य समय मिलते रहे।

कुछ समय बाद दिगम्बर जैन पंचायत एटा के प्रतिनिधि पुनः महावीर जी पहुँचे और मुनिवर से एटा में चातुर्मास करने की प्रार्थना की। अजमेर, रावतभाटा समाज ने भी महावीर जी पहुँचकर चातुर्मास का निवेदन किया। मुनिवर अपने गुरुदेव के आदेश के बिना एक कदम कहीं नहीं चलते, अतः उन्होंने आगत लोगों को सदा की तरह एक ही परामर्श दिया—'हमारे गुरुदेव गुजरात में हैं, वहाँ जाकर अनुमति लाईए, तब विहार उचित होगा'। एटा समाज के अध्यक्ष, मत्री एवं अन्य सदस्य मुनिवर से पत्र लेकर उसी रात को गुजरात प्रस्थान कर गए। वहाँ उन्होंने गणाचार्य श्री विरागसागर जी से प्रार्थना की—हे गुरुदेव हम आपके गुरु की जन्मभूमि से आए हैं, हमने आपकी कीमती खदान के एक अनमोल हीरे का सत्संग ग्रीष्मकाल में पाया था, अब हमारी प्रार्थना है कि आप वर्षायोग के लिए भी हमें वही हीरा दीजिए। गणाचार्य जी को उनकी बातें समझने में विलम्ब नहीं लगा, वे जान गए कि ये विमर्शसागर जी को ले जाना चाहते हैं अतः उन्होंने सहर्ष अनुमति दे दी। कार्यकर्ताओं ने गणाचार्य जी से पत्र लेकर खुशी मनाई और पक्षियों की तरह उड़ते हुए मुनिवर विमर्शसागर जी के पास पहुँचे। उन्हें पत्र दिया और पुनः श्रीफल अर्पित किया। अब क्या था, मुनिवर की भी स्वीकृति मिल गई।

उधर गुजरात में अजमेर वाले भी गणाचार्य जी के पास विमर्शसागर जी के बावत् पहुँचे तब उन्होंने मुस्कराकर कहा—'आपने कुछ विलम्ब कर दिया।

महावीर जी से एटा की दूरी लगभग 300 किमी. है, एटा वालों ने कहा—हम आपके साथ रहेंगे। अब आप विहार का आशीष दीजिए।

महावीर जी से विहार

जून के तपते माह में मुनिवर ने एटा की ओर विहार कर दिया। साथ-साथ एटा वाले अपना सौभाग्य मनाते हुए चल रहे थे। देखते ही देखते अनेक ग्रामों ओर नगरों को उपकृत करते हुए मुनिवर ससंघ एटा की धरती पर पहुँच गए।

वर्षायोग एटा : 2009

3 जुलाई को नगर का सम्पूर्ण समाज, नगर से बाहर जाकर संघ की प्रतीक्षा कर रहा था। ज्यों ही मुनिवर समीप पहुँचे, समूह के लोग जयघोष करने लगे। बारी-बारी से अनेक लोगों ने पादप्रच्छालन किया फिर सभी ने की भक्तिपूर्वक आरती। मुनिवर को लेकर शोभायात्रा ने नगर प्रवेश किया। एटा के हर मार्ग पर खुशहाली छाई हुई थी, पताकाएँ और वंदनबार झुकझुक नमन कर रहे थे। प्रातःकाल की बेला में सूर्य की सुकुमार किरणें बरस रही थीं, लगा वे सब मुनिवर के चरण स्पर्श करने दौड़ी आईं हैं।

कुछ ही देर बाद कुछ काली-काली बदलियाँ आकाश में तैरने लगीं, उनकी दृष्टि भी मुनिवर पर पड़ गई, अतः मंद मंद फुहार से पादप्रच्छालन करने लगीं। शोभायात्रा के आगे वाद्ययंत्र ध्वनियों के रूप में भक्ति प्रवाहित कर रहे थे। बैंड बाजे वालों के पीछे नगर के प्रमुख नेतागण, गुरु को नमन करते हुए चल रहे थे, जिनमें नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती कंचन गुप्ता अडंगा, कांग्रेस नेता श्री प्रजापालन वर्मा, भाजपा नेता श्री प्रमोद गुप्ता आदि तो थे ही, प्रशासन के उच्च अधिकारी भी साथ-साथ चल रहे थे। हर दस-बीस-कदम की दूरी पर श्रावकगण अपने घर के समक्ष रंगोली डाले खड़े थे, ज्यों ही मुनिवर पहुँचते, झुक-झुक पादप्रच्छालन करते और आरती उतारते। अंत में शोभायात्रा पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायत बड़ा जैन मंदिर के समक्ष पहुँची। जो नेतागण और अधिकारीगण पादप्रच्छालन नहीं कर पाए थे, उन्होंने स्तुतिपूर्वक वह क्रिया वहीं सम्पन्न की।

शोभायात्रा के समस्त नरनारी सभाभवन में बैठ गए, मुनिवर ससंघ पहले मंदिर जी गए, भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण में जाकर उनकी स्तुति की, किया प्रभु-गुणों का गुणानुवाद। वे जैसे ही लौटे कार्यकर्तागण उन्हें मंच पर ले आए, पुनः हर कोने से जयघोष होने लगा। सीमित औपचारिकताओं के बाद, मुनिवर विमर्शसागर जी ने अपनी अमृतवाणी की वर्षा की। भक्तगण प्यासे पपीहे की तरह अपने कानों से वाणी पान कर रहे थे, आँखों से दर्शन और मन से स्तवन।

उस क्षण मंच भरा-भरा लग रहा था, मुनिवर विमर्शसागर जी के बगल में मुनिश्री विश्वपूज्यसागर पधारे थे तो दूसरी तरफ क्षुल्लक श्री विशुद्धसागर जी। समीप ही ब्रह्मचारी राजीव भैया आसन लिए थे। मंच के समीप ही दीदीयों के बैठने की व्यवस्था थी, जो एक पंक्ति में बैठी हुई थी—ब्र. आशा दीदी, ब्र. रीना दीदी, ब्र. रेणु दीदी, ब्र. मीरा दीदी और ब्र. प्रियंका दीदी। कार्यक्रम को अधिक लम्बा नहीं खींचा गया क्योंकि भक्तों को मुनिवर की आहारचर्या की चिंता थी।

स्थापना का आयोजन

वर्षायोग समिति 2009 की कार्यकारिणी में ये नाम प्रमुख थे—श्री उमेश चंद जैन अध्यक्ष, श्री प्रदीप जैन महामंत्री, श्री राजवीर मंत्री, श्री राजीव सुल्ली, श्री संजय, शैली श्री पवन कुमार, कोषाध्यक्ष श्री नवीन ठेकेदार उपाध्याय और श्री विजयकुमार जैन स्वागताध्यक्ष।

आषाढ़ शुक्ल चौदस की तिथि को आने में विलम्ब नहीं लगा अतः संघ ने उसका स्वागत किया। समारोह पूर्वक चातुर्मास कलश की स्थापना की गई। अवसर मिला राजीव जैन सुल्ली को। फिर जैसा क्रम हर वर्षायोग में रहता है,

वही यहाँ देखा गया, जो कुछ अधिक ही प्रभावनापूर्ण था। गुरुपूर्णिमा, वीरशासन जयंती आदि समारोह मनाए गए। प्रतिदिन सुबह भक्तामर प्रवचन और दोपहर में प्रवचनसार की कक्षा। देखते ही देखते पर्युषण पर्व आ गया। मुनिवर ने दस धर्म की प्रभावना में चार चांद लगा दिए। अक्टूबर माह आया तो मुनिवर विमर्शसागर जी को अपने गुरुणांगुरु आचार्य सन्मतिसागर जी की जन्मस्थली ग्राम फफोतु जाने का मन हुआ। गाँव पास ही था और मुनिवर ने वर्षायोग स्थापना के समय ही उतनी यात्रा की छूट ले ली थी। अतः वे ससंघ फफोतु गए। गया उनके साथ पूरा नगर। वहाँ 6 अक्टूबर 2009 का जिनेन्द्र रथयात्रा का आयोजन किया गया ओर गुरुणां गुरु को हृदय से स्मरण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे–एटा विधायक श्री प्रजापालन वर्मा। ध्वजारोहण का सुयोग मिला था श्री राजेन्द्र जैन एडवोकेट को और मंच पर दीपप्रज्वलन का सौभाग्य श्री सुन्नेस जैन एडवोकेट को। समारोह की विशालता और भव्यता देखने लायक थी, क्योंकि आयोजन किया था 'वर्षायोग समिति एटा–ने। कोई कसर नहीं रखी गई।

चातुर्मास में आयोजित अब विशेष प्रभावना के आयोजनों को देना उचित है पाठकगण पढ़ें पूज्य मुनिवर के प्रभावक संस्मरण।

ऐतिहासिक क्षमावाणी पर्व

मुख्य मार्केट के चौराहे पर मुनिश्री के सानिध्य में प्रातः 8.00 बजे से क्षमावाणी पर्व का भव्य आयोजन रखा गया। जैसे ही मुनिश्री ने क्षमावाणी पर्व पर हृदय से क्षमायाचना माँगना चाहिए आदि प्रवचन किया, लोगों ने एक–दूसरे के गले लगकर चरण छूकर अतीत की सभी गल्तियाँ धो डालीं।

राजेश जैन गीतकार जिनका अपने भाई से वर्षों से बोलचाल बंद हो गया था, स्वयं जाकर क्षमायाचना की और वैर विरोध को समाप्त कर दिया।

मुनिवर प्रवचनकर वापिस मंदिरजी आ रहे थे। मंदिरजी के बगल से ही मुमुक्ष अजीत जैन का मकान था। वो अपने परिवार के साथ द्वार पर खड़े थे। जैसे ही मुनिश्री वहाँ पहुँचे, तो मुमुक्ष अजितजी ने मुनिश्री को एकदम से गले लगा लिया। देखनेवाले बड़े आश्चर्य में पड़ गए। भक्त लोग मुनिश्री की जय–जयकार करने लगे तभी अजितजी ने जल का लोटा लिया, थाल रखा और मुनिश्री का पाद प्रक्षालन किया। फिर मुनिवर से बोले–महाराजश्री हमें आपसे एकांत में थोड़ा सा समय चाहिए। मुनिवर ने कहा–आप आ जाना जब आओगे तभी एकांत हो जाएगा।

अजितजी बबली जैन एटा के साथ आए और मुनिश्री को अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते हुए आँखों से अश्रु बहाने लगे। फिर मुनिवर से बोले महाराजश्री, आप हमारा स्वाध्याय भवन ले लो। मुनिवर ने कहा–अजितजी, आप तो जानते

ही हैं, जैन साधु जड़ की इच्छा न करके चैतन्यभवन की भावना करता है। अजितजी बोले महाराजश्री, हम भी चौका लगा सकते हैं क्या, मुनिवर ने दिया प्रेरक आशीष।

11.9.2009 से 19.9.2009 तक पूजन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कृष्णा मैरिज गार्डन में रखा गया। शिविर में 600 शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रथम दिन एक विशाल शोभायात्रा घटयात्रा के रूप में निकाली गई।

इसी दिन 'आचार्य विमलसागर जयंती' का जुलूस भी साथ में रखा गया था। दोपहर में मुनिश्री के साथ नरेन्द्रप्रकाश जी फिरोजाबाद, अनूपचंद जी एडवोकेट फिरोजाबाद, एवं विमला जैन 'विमल' फिरोजाबाद ने भी विनयांजलि प्रस्तुत की।

विशेषता यह थी कि उस दिन खूब जोर से बारिस हो गई और पांडाल में पानी भर गया। फिर भी सैकड़ों लोगों ने खड़े-खड़े ही प्रवचन सुने।

वात्सल्य सिंधु

20 सितम्बर को मुनिश्री के सानिध्य में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। दोपहर में खचाखच भरे पांडाल को देख कवियों ने कहा—दिन में होने वाले कवि सम्मेलन में इतनी भीड़ दिखाई देना मुनिश्री का ही प्रभाव है। कवियों ने मिलकर मुनिश्री को 'वात्सल्य सिंधु' अलंकार से अलंकृत किया।

प्रवचन नुमाइश में

एटा नुमाइश में विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन वर्षों से पारंपरिक रूप से चले आ रहे हैं। इसमें आयोजकों ने 'युवा सम्मेलन' रखा। एक दिन प्रदीप जी रघुनन्दन मुनिवर के पास निवेदन करने आए। मुनिवर ने कहा—हमारा नुमाइश में कोई काम नहीं है। प्रदीप जी ने कहा—महाराज जी, आपको सिर्फ युवाओं को सबोधन देना है। आपका आगमन हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात होगी। फिर भी मुनिश्री ने मना किया, तब प्रदीप रघुनंदन ने बार-बार निवेदन किया, कहा—महाराजश्री आपके अनुकूल ही मंच रहेगा। जब तक आप मंच पर होंगे, पूरी आपकी गरिमा के अनुरूप ही आयोजन रखा जाएगा। आपके पहुँचते ही आपका उद्बोधन होगा। हम आपको अधिक देर नहीं रोकेंगे।

यह एटा के इतिहास में प्रथम अवसर था कि मुनि विमर्शसागर जी के रूप में जैनमुनि ने जाकर नुमाइश मंच से युवाओं को संबोधित किया। युवा सम्मेलन में मुम्बई से अभिनेत्री जूही बब्बर भी पधारीं। उन्होंने भी मुनिवर को नमोस्तु कर दो शब्द कहे।

जिला कारागार एटा में प्रवचन

मुनिश्री 2.10.2009 को जिला कारागार एटा में जेल अधीक्षक डॉ.

वीरेशराज शर्मा, कार्यवाहक कारागार डॉ. गिरिजाशंकर यादव, उप कारागार डॉ. विजयप्रकाश, डॉ. सुरेश के आग्रह पर प्रवचन हेतु गए।

मुनिवर के साथ समाज के मंत्री प्रदीप जैन, आदित्य बजाज, दीपक वार्ष्णेय, प्रदीप रघुनन्दन, पदम जैन, अशोक जैन, विपिन जैन, पंकज बन्दु, कुलदीप जैन, विमल जैन, अनिल जैन आदि सैकड़ों लोग साथ गए।

मुनिवर ने बंदियों को संबोधित करते हुए कहा–'मैं जेल के अंदर आंदोलन आदि करके नहीं आया, मैं तो तुम्हारी आत्मा को अंदर से आंदोलित करने के लिए आया हूँ।

मुनिश्री के प्रवचन से पूर्व डॉ. वीरेशराज शर्मा ने मुनिश्री का पाद प्रक्षालन किया। मुनिश्री ने 1100 से अधिक बंदियों को संबोधित किया।

वर्षायोग निष्ठापन

नगरवासियों को जिस तिथि का भय था, वह सामने आ गई। मुनिवर ने 18 अक्टूबर को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण-महोत्सव मनाते हुए, विधिपूर्वक चातुर्मास की निष्ठापना की। सकलसंघ ने भी वे ही क्रियाएँ की। पश्चात् मुनिवर के प्रवचन हुए। जब उन्होंने कहा कि आज हम समय सीमा से मुक्त हो गए, तो सम्पूर्ण श्रोतागण साँस साधे हुए विकल हो पड़े। कुछ पुरुषार्थियों ने समिति के पदाधिकारियों के साथ खड़े होकर प्रार्थना की–'हे मुनिरत्न, कृपया शीतकालीन वाचना भी एटा नगर में कीजिए।' सभी ने श्रीफल अर्पित किए। मुनिवर द्वारा सृजित 'जैन श्रावक और दीपावली पर्व' कृति का विमोचन किया गया। मुनिवर ने दी प्रेरणा, दीपावली पर्व जैन विधि से मनाने की।

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

जिस तरह महात्मा गांधी जी समाज सेवा में एक पल का भी अवकाश नहीं लेते थे उसी तरह महात्मा विमर्शसागर जी मुनिमहाराज धर्म प्रभावना से क्षण भर का भी अवकाश नहीं लेते थे। उनके कार्यक्रम निरंतर चलते थे। 25 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक भक्तिभावपूर्वक विधान कराया गया। पाठकों को याद होगा कि पूर्व से ही श्रावक और श्राविकाओं को शुभ्र और केशरिया पोशाकों में बुलाया जाता रहा है। विधानाचार्य थे पंडित वर्धमान सौरया टीकमगढ़। मुनिवर के सान्निध्य में कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। होती रही चर्चा समग्र नगर में। विधान के अवसर पर सागर से आए संगीतकार सुधीर एंड पार्टी का संगीत सराहा गया।

पिच्छिका परिवर्तन

विधान के बाद अंतिम दिवस के रूप में, 3 नवम्बर को पिच्छिका परिवर्तन समारोह रखा गया। वह आयोजन भी अतिविशाल और भव्य बन चुका था। मुख्य उपलब्धि थी मुनिवर विमर्शसागर जी की पिच्छिका। जिसे प्राप्त करने का सौभाग्य मिला श्री राजेन्द्र प्रकाश जैन (स्व. ओमप्रकाश जैन) मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी की पीछी श्रीमती बबली जन, धर्मपत्नी श्री ऋषिकुमार जैन को प्राप्त हुई। क्षुल्लक विशुद्धसागर जी की पीछी श्रीमती मंजू जैन, धर्मपत्नी श्री प्रमोद जैन ने पाने का सुयोग पाया।

कम्पिल जी की ओर विहार

11 नवंबर को मुनिश्री ने तीर्थक्षत्र कम्पिलजी के लिए विहार किया।

अचानक मौसम बदल गया और घना कुहरा छाने लगा। सर्दी बढ़ गई। विहार करते ही बारिस प्रारंभ हो गई। नवयुवकों ने मुनिवर का सानंद विहार कराया।

14 नवंबर को शाम कम्पिलजी में ससंघ प्रवेश किया।

15 नवंबर को विपिन स्वामी के नेतृत्व में एटा से दो बसें एवं अन्य साधनों से श्रद्धालु कम्पिल पहुँचे और मुनिवर विमर्शसागर जी का जन्मोत्सव दिवस मनाया।

कम्पिल जी से एटा विहार

16 नवंबर को मुनिसंघ कम्पिल से विहार कर 20 नवम्बर को पुनः एटा में पहुँचा। मुनिश्री के सानिध्य में जो सुबह प्रवचन, दोपहर में प्रवचनसार जी स्वाध्याय और शाम को गुरुभक्ति होती थी, पुनः प्रारंभ हो गई।

समाज ने मुनिवर से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का निवेदन किया। नेमिनाथ जिनालय में भगवान नेमिनाथ की 7 फीट ऊँची प्रतिमा। उनके दोनों बाजू में दो विशाल प्रतिमाएँ स्थापित की गई थीं। मुनिवर ने समाज के आग्रह पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। समाज में खुशी की लहर दौड़ गई। तैयारियाँ चालू हो गई।

शीतकालीन वाचना

मुनिवर ने दो दिन का समय भी खाली नहीं जाने दिया, और शीतकालीन वाचना के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया, फलतः दो माह तक रयणसार ग्रंथ की वाचना का लाभ एटा समाज को मिला। धीरे-धीरे वर्ष पूरा हो गया। जनवरी की शीत में भी धर्मकार्य में कोई विघ्न नहीं आ पाया।

इसी बीच पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मुख्य पात्रों का भी चयन कर लिया गया।

पंचकल्याणक समारोह : 2010

एटावालों को ऐसा धर्मलाभ कभी नहीं हुआ था। मुनिवर सभी की झोलियों में धर्मभावना भर रहे थे, तभी 6 फरवरी से 13 फरवरी तक, श्री आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन किया गया। समस्त कार्यक्रम स्थानीय वर्णी जैन इंटर कॉलेज प्रेमनगर के विशाल मैदान में हुआ। इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य ब्र. पंडित जयनिशांत मार्गदर्शन दे रहे थे एवं संगीतकार श्री सुनील जैन भोपाल संगीत स्वर सुना रहे थे। प्रत्येक दिन भारी प्रभावना हुई, जिसमें प्रथम दिवस जैन ध्वजारोहण और परेड की चर्चा सारे नगर में हुई। उसी तरह अंतिम दिन गजरथ यात्रा का आयोजन भी आकर्षण का केन्द्र रहा। दीक्षा कल्याणक में बा.ब्र. प्रियका दीदी एवं बा.ब्र. रीता दीदी ने ब्राह्मी सुंदरी बनकर मुनिवर से आजीवन ब्र. व्रत लिया। इसी समय एटा की आँचल बहिन एवं ट्विंकल बहिन ने वैराग्यपथ पर चलने की भावना की।

जयपुर की ओर

फरवरी 2010 का समय चल रहा था। गुरुदेव ससंघ एटा में धर्म जागरण कर रहे थे। माह पूरा न हो पाया, और 18 फरवरी को जयपुर की ओर विहार कर दिया। उसके बाद उदयपुर तो पहुँचना ही था, जहाँ उनके गुरु विराजमान थे। 13 मार्च को जयपुर स्थित खानिया जी में प्रवेश किया, 2 दिन रुककर चूलगिरी की वंदना की। 17 मार्च को जयपुर सिटी स्थित पार्श्वनाथ भवन चौड़ा रास्ता पहुँचे। जैन समाज एवं राजस्थान महासभा ने 'महावीर जयती समारोह' को सान्निध्य प्रदान करने की विनय की। तब गुरुदेव ने उन्हें सहर्ष आशीर्वाद दिया। 27 मार्च तक सदा की तरह प्रवचन गंगा बहाई। 28 मार्च को गुजरात केशरी आचार्यश्री भरतसागर जी महाराज से वात्सल्य मिलन किया। फिर दोनों संघों ने गुलाबी नगरी के ऐतिहासिक महावीर जयंती समारोह' को रंग भर ही नहीं, सुगंध भी प्रदान की। 'प्रवचनों की सुगंध' चारों दिशाओं में फैल गई। विशाल मंच पर दोनों संघ प्रमुखों के प्रवचन हुए थे।

समय पाकर जैन समाज जयपुर ने गुरुदेव विमर्शसागर जी से 2010 का चातुर्मास करने की प्रार्थना की और श्रीफल भेंट किए। गुरुदेव मुस्कराते रहे। फिर उसी दिन शाम को 5 बजे पार्श्वनाथ भवन से चलकर जनकपुरी पहुँच लिए वहाँ किया रात्रि विराम। दूसरे दिन प्रभावनाकरी प्रवचन। शाम को विहार कर सांगानेर पहुँचे।

30 मार्च को संघ ने सांगानेर के मंदिरों की वंदना की और शाम को विहार

कर रात्रि-विराम रास्ते में किया एक शाला भवन में। सुबह एक अप्रैल 2010 को गुरुदेव रैनवाल पहुँचे। हुई भव्य अगवानी। अगवानी इसलिए भव्य बन गई कि वहाँ पूर्व से विराजे ऐलाचार्य श्री नवीनसागर जी ससंघ विशाल जनसमुदाय के साथ, दो किमी. चलकर, अगवानी करने पहुँचे थे, हुआ दोनों संतों का भव्य-मिलन। शाम को विहारकर फागी होते हुए 3 अप्रैल को डिग्गीनगर पहुँचे। वहाँ गुरुदेव ने उपवास किया। शाम को मालपुरा निवासी श्री नरेन्द्र कुमार जैन, समिति सहित, आए और श्रीफल चढ़ाकर मालपुरा चलने की प्रार्थना की। मिली उन्हें मधुर मुस्कान।

उपवास की स्थिति में ही शाम को डिग्गी से विहार कर दिया और चौसला ग्राम होते हुए 4 अप्रैल को मालपुरा में भव्य-प्रवेश किया। वहाँ वयोवृद्ध संत मुनिश्री इन्द्रनंदी जी ससंघ एवं उनके अनुज मुनिश्री विजयसागर जी ससंघ से वात्सल्य मिलन हुआ। 5 अप्रैल से 7 अप्रैल तक मालपुरा को मुनिवर की वाणी ने धर्मसिक्त कर दिया। वहाँ मुनिश्री कंचनसागर जी से भी मिलन हुआ। 7 अप्रैल की शाम को गुरुदेव ने विहार कर दिया और जूनिया नगर से पूर्व, बड़ागांव में रात्रि-विश्राम लिया।

आचार्य बाहुबली सागर जी से मिलन

गुरुदेव सुबह-सुबह बड़ागाँव से जूनिया की ओर विहार कर रहे थे, तभी बीच राह में आचार्यश्री बाहुबलीसागर जी महाराज (19 पिच्छियों के साथ) मिल गए। हुआ दोनों संघों का वात्सल्य मिलन। गुरुदेव विमर्शसागर जी काफी देर तक उनके पास रहे, तभी उन्हें ज्ञात हुआ कि आचार्यश्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं है और वे यहीं रुकेंगे। तब विमर्शसागर जी चरण स्पर्श कर लौटने लगे तो आचार्य संघ के मुनिश्री सिद्धसेन जी ने मुस्कराते हुए आग्रह किया—'आज आप भी हम लोगों के साथ ही आहारचर्या कीजिए।' तब तक आचार्यश्री ने भी आदेश दे दिया, फलतः विमर्शसागर जी उस दिन वहीं रुके। दोनों संघों की साथ-साथ आहारचर्या हुई। वह स्थान एक दिन के लिए त्रिवेणी बन गया, क्योंकि वहीं मुनिश्री कंचनसागर जी एवं मुनिश्री विबुद्धसागर जी भी सवात्सल्य मिले थे। तीन संघों की एक धारा बन गई थी।

8 अप्रैल की शाम तक जो अभी रास्ते में रुके थे, वे गुरुदेव विमर्शसागर जी विहार कर जूनिया पहुँचे। 9 अप्रैल को केकड़ीनगर में भव्य प्रवेश हुआ। समाज ने शोभायात्रा के साथ अगवानी की थी। मिले उन्हें दो दिन। 10 अप्रैल की शाम केकड़ी से विहारकर रामपाली पहुँचे और पुनः 3 दिन विहारकर बड़गांव, चांपानेरी, देवलिया कॅला, बड़लीगांव, राजनगर पहुँचे।

मांगलिक भवन का लोकार्पण

14 अप्रैल को विजयनगर में भव्य प्रवेश किया। भक्तों ने भव्य आगवानी की और शोभायात्रा के साथ मंदिरजी में लाए। गुरुदेव वहाँ 4 दिन रुके और श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन संस्थान में नवीन मांगलिक भवन का भव्य शुभारंभ कराया। इस अवसर पर, जब उन्होंने मनोहारी प्रवचन किए तो भक्तों के समक्ष प्रेरणा भी की कि इस संस्थान के अंतर्गत एक जिनालय का निर्माण आवश्यक प्रतीत होता है।

भक्त चतुर थे, जब प्रवचन पूर्ण हो गया तो सम्पूर्ण समाज की ओर से श्री चाँदमल जी शाह ने श्रीफल अर्पित कर, अनुरोध किया कि यदि आप आगामी वर्षायोग इस नगर में करेंगे तो अवश्य ही इस भूमि पर जिनालय का स्वप्न आकार पा जाएगा। गुरुदेव मुस्काए।

17 अप्रैल को विजयनगर से धर्मपताका फहराते हुए एवं अनेक ग्रामों को स्पर्श देते हुए चल पड़े। कहीं फैक्ट्री में विश्राम, तो कहीं फार्महाऊस में रुके हुए, 6 दिन तक चलते रहे। इसतरह गुलाबपुरा, शाहजी की फैक्ट्री, छाजेड़ फार्महाउस, सनोलिया विद्यालय, रायलागाँव, एन.सी.जैन की फैक्ट्री और अत में श्वेताम्बर स्थानक में रात्रि विराम करते हुए, 22 अप्रैल को भीलवाड़ा की सीमा पर पहुँचे। समाज ने भव्य अगवानी की ओर शोभायात्रा के साथ सुभाषनगर जैन मंदिर ले गए।

मुनिवर ससंघ 12 दिन सुभाषनगर रुके। प्यारे भक्तों को मिला प्रतिदिन प्रवचनामृत।

03 मई को सुभाषनगर से विहारकर आर.के. कॉलोनी पहुँचे। सुबह भगवती आराधना ग्रंथ का स्वाध्याय, 8.00 बजे से सम्यग्दर्शन के आठ अंगों पर प्रवचन, दोपहर में समयसार जी ग्रंथ का स्वाध्याय नित्य चल रहा था।

श्रावकों को कराया क्रिया बोध

जब मुनिवर सुबह भगवती आराधना का स्वाध्याय करते, तभी पुजारीगण जिनाभिषेक के लिए निवेदन करने आते, मुनिवर कहते–'अभी तो मैं ज्ञानाभिषेक कर रहा हूँ आप लोग जिनाभिषेक कर लीजिए।' पुजारीगण सुनकर चले जाते। एक दिन सभी मुनिवर से कहने लगे–

–महाराजश्री! आप जब से यहाँ आये हैं एक दिन भी अभिषेक देखने नहीं आये, आज तो आपको चलना ही होगा।

–अभी मेरा ज्ञानाभिषेक चल रहा है। (मुनिवर ने उत्तर दिया)

–हम लोग थोड़ा इंतजार कर लेंगे।

—भैया, आप लोग जो अभिषेक करते हैं वह आर.ओ. के पानी से करते हैं जो टंकी से जाता है।

—महाराजश्री! वो क्या है यहाँ व्यवस्था नहीं बन पाती क्योंकि पानी में फ्लोराइड है।

—अभी चौके के लिए पानी कहाँ से आ रहा है?

—जी, सुभाषनगर के कुआँ से।

—जब चौके के लिए इतना पानी आ सकता है तो अभिषेक के लिए थोड़ा पानी लाने की व्यवस्था क्यों नहीं बन सकती? जैसे अभी आ रहा है वैसे अभिषेक के लिए भी आ सकता है। आप लोग रोज बोली से अभिषेक करते हो, भजन बोलते हो—'क्षीरसागर से जल भर लाये'।

क्या यही क्षीरसागर का शुद्धजल है, जिससे आप लोग पुण्य कमाते हो।

भैया, ऐसे जिनाभिषेक से तो हमारा ज्ञानाभिषेक ही अच्छा है।

—महाराजश्री! आपने हम श्रावकों को क्रियाबोध कराया, हम लोग इसकी अवश्य चर्चा करेंगे, सुधार करेंगे।

मुनिसंघ 11 मई को सुपार्श्वमती आश्रम पहुँचा अक्षय तृतीया का पर्व उल्लासपूर्वक मनाया, मिला श्रावकों को संबोध, आहारदान की महत्ता जानकर। तापमान 49 डिग्री तक पहुँच रहा था अतः 1 जून तक मुनिसंघ ने हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में रुककर ग्रीष्मकाल व्यतीत किया, 2 जून को सुबह चित्तौड़गढ़ के लिए हुआ विहार, ससंघ।

प्रसंग चित्तौड़गढ़ 2010

चित्तौड़गढ़ के श्रावक चाहते थे कि दिगम्बर देव इस नगरी में आए हैं तो चित्तौड़गढ़ का किला अवश्य देखें, समय न निकाल पावें तो रानी पद्मनी का महल देख लें। अतः वे अनुरोध करने लगे। मुनिवर का मन देखकर मंच पर घोषणा कर दी गई कि कल महाराज के साथ सभी भक्तगण किला स्थित मानस्तंभ एवं महल देखने चलेंगे। 10 बजे घोषणा हुई थी और अचानक तीन बजे उदयपुर से प्रकाश सिंघवी सहित कुछ भक्तगण आचार्यश्री का संदेश देकर आ गए कि 13 जून को मिलना उचित है। गुरु का संदेश सुन पद्मनी के महल की इच्छा त्यागकर आज्ञा-महल की ओर चलना उचित समझा गया अतः मुनिवर ने सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए और दूसरे दिन ही उदयपुर की ओर विहार करने की घोषणा कर दी। लोग चकित जून की तीव्र धूप में मुनिवर ने विहार कर दिया फलतः पेट में छुपे पुराने भक्त श्री पित्तराज भड़क पड़े, हो गया उन्हें वमन। स्थिति यह बनी कि 11 और 12 जून 2010 को अंतराय हो गया

मगर गुरुजी विहार करते रहे और 13 जून को गुरुदेव से वात्सल्य मिलन कर गद्गद् हो गए। उनकी तत्परता और आज्ञा पालने की भावना से आचार्यश्री परिचित थे अतः उन्होंने सम्पूर्ण संघ के समक्ष अपने शिष्य के प्रति स्नेह वर्षण किया। हुआ सात वर्ष बाद गुरु-शिष्य का मिलन। साक्षी बने हजारों लोग।

उदयपुर में भाग्योदय

मुनिवर विमर्शसागरजी जब कोटा महावीर जयंती पर पहुँचे, तो दादाबाड़ी नसियाँ जी में एक आशा बहिन मुनिवर से बोली—महाराजश्री! मैंने आपको महावीर जयंती के दिन मंच पर बैठे देखा। आप दृष्टि नीचे किए शांत बैठे थे, साक्षात् महावीर लग रहे थे।

(थोड़ा रुककर, पुनः) महाराजश्री! आप संघ में दीदियों को नहीं रखते?

नहीं, (मुनिवर ने उत्तर दिया)।

लेकिन, कोई अपना कल्याण करना चाहता है, तो उसे आशीर्वाद तो देना चाहिए।

कल्याण के लिए आशीर्वाद है, लेकिन मूलसंघ में जाना होगा अथवा किसी आर्यिका संघ में।

जब मुनिवर का चातुर्मास हुआ, तो आशा बहिन के साथ कोटा की रेणु बहिन के भाव भी ऐसे ही बने, किन्तु मुनिवर ने पूर्ववत् अपनी बात से अवगत करा दिया। लिया दोनों बहिनों ने मुनिवर से ब्रह्मचर्य व्रत पिच्छिका परिवर्तन पर।



जब मुनिवर का चातुर्मास शिवपुरी में हुआ, तब प्रियंका बहिन ने भी संघ में रहकर साधना करने की भावना व्यक्त की, किन्तु मुनिवर विमर्शसागर ने संघ प्रवेश की अनुमति नहीं दी। माता-पिता की आज्ञा से प्रियंका दीदी ने भी मुनिवर से तीन वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लिया।

जब मुनिवर का शिवपुरी से विहार हुआ, तो विहार में श्रावक-श्राविकाओं के साथ ब्र. अमिता दीदी, ब्र. शोभा दीदी, ब्र. ममता दीदी, ब्र. रीना दीदी, मीरा दीदी, प्रियंका दीदी आदि ने विहार कराया। मुनिसंघ पहुँचा आगरा। वहाँ ब्र. रीना दीदी, ब्र. मीरा दीदी एवं ब्र. प्रियंका दीदी ने मुनिवर से पुनः प्रार्थना की। मुनिवर ने संघ प्रवेश की अनुमति नहीं दी। तब तीनों दीदियों ने मुनिवर से कहा—हम लोग अपनी जिम्मेदारी से रहेंगे, कभी किसी से संघस्थ शिष्य होने की बात नहीं कहेंगे। मुनिवर ने कहा—यह आपका, आपके परिवार का विषय है। जब कोटा की आशा बहिन एवं रेणु बहिन को यह पता चला, तो दोनों बहिनें

भी आगरा आ गईं। किन्तु मुनिवर ने स्पष्ट कह दिया–संघ में प्रवेश नहीं है। आप अपनी जिम्मेदारी से रहें।



जब मुनिवर ससंघ एटा से उदयपुर पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचे, तब पू. आचार्य विरागसागर जी ने मुनि विमर्शसागर जी से कहा–दीदियों को ब्रह्मचारिणी बहिनों की ड्रेस ही उचित है। तब मुनिवर ने कहा–इन्हें संघ प्रवेश की अनुमति नहीं है, अपनी जिम्मेदारी से रहती हैं, सो वे ही जानें। हमने तो मूलसंघ में ही रहने की बात कही। पू. विरागसागर जी ने दीदियों का मंतव्य समझकर मुनि विमर्शसागर से कहा–अपन तो कल्याण के निमित्त हैं, सो इन्हें ड्रेस परिवर्तन की अनुमति है। ये आपके संघ में रहकर अपनी साधना करें। हुआ उदयपुर में दीदियों का भाग्योदय, पू. आचार्य विरागसागरजी के आशीर्वाद से। मुनिवर विमर्शसागर का संघ वृद्धि को प्राप्त हुआ।

उदयपुर में 26 दीक्षाएँ दी पू. विरागसागर ने, संचालन किया मुनिवर विमर्शसागर ने।

उदयपुर से डूंगरपुर विहार

उदयपुर में 8 जुलाई को विहार का अद्‌भुत दृश्य बना था क्योंकि आचार्य विरागसागर जी की आज्ञानुसार विमर्शसागर जी को डूंगरपुर की ओर विहार करना था, मगर उसी समय आचार्य विरागसागर जी को लोहारिया के लिए विहार करना था, अतः ऐसा लग रहा था कि दोनों संघ एक-दूसरे को पहुँचाने जा रहे हैं। गंगा नदी बहते हुए खम्भात की खाड़ी के पास दो धाराओं में बँट जाती है, उसी तरह का दृश्य बना था। उदयपुर से कुछ दूर तक दोनों संघ साथ चलते रहे, एक चौराहे पर पहुँचकर आचार्य विरागसागर ससंघ लोहारिया की ओर चले गए और उनके प्रिय शिष्य मुनिवर विमर्शसागर जी ससंघ डूंगरपुर की तरफ बढ़ गए। वे बारापाल और परसाद होते हुए 12 जुलाई को अतिशय तीर्थक्षेत्र श्री केशरिया जी पहुँचे। की भावपूर्ण वंदना। फिर 13 जुलाई को वहाँ से विहार कर खैरवाड़ा और देवल होते हुए डूंगरपुर में प्रवेश किया। था वह 18 जुलाई का दिवस। भव्य अगवानी के साथ समाज उन्हें मंदिरजी ले गया।

7 दिन तक हृदयग्राही प्रवचन शृंखला चलती रही गुरुदेव की।

डूंगरपुर वर्षायोग : 2010

25 जुलाई को गुरुदेव ने ससंघ वर्षायोग की स्थापना विधिपूर्वक की। उस वर्ष उनके संघ का विस्तार हो चुका था, अतः बड़ा बड़ा दिख रहा था। मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री अतुल्यसागर जी (शिष्य आचार्य

अभिनंदनसागर जी) क्षुल्लक विश्वयोग सागर जी और क्षुल्लक विश्वबंधु सागर जी के साथ साथ ब्र. राजीव भैया, ब्र. दीपक भैया, ब्र. रीना दीदी, ब्र. आशा दीदी, ब्र. रेणु दीदी ब्र. प्रियंका दीदी और ब्र. मीरा दीदी।

चातुर्मास कलश की स्थापना का सौभाग्य मिला श्री प्रवीण कुमार जैन (एल. आई.सी.) अन्य मंगल कलश श्री मोहनलाल जैन, श्री मनोहरलाल जैन, श्री ब्रजमोहन लाल जैन एवं श्री कैलाशचंद जैन ने प्राप्त किए। कार्यक्रम के प्रारंभ में ध्वजारोहण किया श्री गोवर्धनलाल ओर श्री भगवती लाल जैन ने। हुए फिर गुरुदेव के अति सुन्दर प्रवचन।

गुरुदेव ने ससघ 23 जुलाई को नगर के सभी जिन-मंदिरों के दर्शन किए। 26 जुलाई को गुरु-पूर्णिमा और 27 जुलाई को वीरशासन जयंती जैसे चिरपरिचित समारोहों को गरिमापूर्ण सानिध्य प्रदान किया। तब धन्यवाद ज्ञापन किया वर्षायोग समिति के अध्यक्ष श्री मनोहरलाल जैन ने।

श्री भक्तामर शिक्षण शिविर

आयोजक 'महावीर जिन चैत्यालय ट्रस्ट मंडल महावीर नगर' डूंगरपुर की व्यवस्था के अंतर्गत 28 जुलाई से शिविर का शुभारंभ गुरुदेव की कृपाछाया में हुआ। कलश स्थापनकर्ता थे श्री लक्ष्मीलाल जी भूखिया परिवार। पूर्ववर्ती वर्षों की तरह डूंगरपुर में भी एक श्लोक पर पूरा प्रवचन होता था। श्रोतागण धर्म के साथ-साथ आगम का रसास्वादन तल्लीनता से करते थे। शिविर के चलते, गुरुदेव अन्य कार्यक्रमों को भी सान्निध्य देते थे। प्रवचनों की ख्याति सुनकर दो विशेष कार्य हुए पहला यह कि स्थानीय पुलक चेतनामंच के कार्यकर्ताओं ने मंच का स्थापनादिवस गुरुदेव के सान्निध्य में 8 अगस्त को मनाया। दूसरा, 9 अगस्त को स्थानीय सांसद श्री ताराचंद भगोरा प्रवचन सुनने आए और गुरुदेव को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद लिया। 15 अगस्त राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस के महापर्व पर गुरुदेव ने अपने, अध्यात्म के बोल, राष्ट्रीय विचारधारा में घोलकर श्रोताओं के कर्ण-कुंड तक पहुँचाए।

24 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व पर श्रमण-सुरक्षा की भावना से श्रेष्ठ कथा सुनाई।

पर्युषण पर्व

13 सितम्बर से 22 सितम्बर 10 तक डूंगरपुर के श्रावकों ने गुरुदेव के सान्निध्य में पर्वराज पर्युषण मनाया, सुने प्रतिदिन उत्तम धर्मों पर प्रवचन। 24 सितम्बर को क्षमावाणी पर्व मनाते हुए हर श्रावक के हृदय में स्थायी रूप से क्षमत्व का अंकुरण हुआ। सभी ने नया पुराना वैर भुलाकर एक दूसरे से क्षमाचायना की। शाम को कराया मुनिवर ने प्रतिक्रमण, सभी के लिए।

पूजन प्रशिक्षण शिविर

29 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक 10 दिवसीय शिविर का आयोजन सम्पूर्ण नगर के लिए हितकारी सिद्ध हुआ। अन्य स्थानों पर मंगल कलश एक भक्त लेता है, तो सौधर्म इन्द्र दूसरा बनता। महाआरती एकदल करता तो, शांतिधारा दूसरा दल करता था, मगर डूंगरपुर में उक्त चारों शुभ कार्यों का सौभाग्य एक ही व्यक्ति ने प्राप्त कर समाज को धन्य किया, वे हैं श्री लक्ष्मीलाल जी भूखिया एवं परिवार। उक्त अवसर पर चक्रवर्ती का पद वर्षायोग समिति के अध्यक्ष श्री मनोहरलाल ने प्राप्त किया था।

पिच्छिका परिवर्तन

14 नवम्बर 10 को आयोजकों ने धूमधाम से पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित किया। फलस्वरूप गुरुदेव विमर्शसागर जी की पुरानी पीछी श्री लक्ष्मीलाल भूखिया ने प्राप्त कर, अहो-भाग्य माना।

डूंगरपुर से विहार

कार्यकर्ता लोग 15 नवम्बर को गुरुदेव का जन्मदिवस मनाना चाहते थे किन्तु गुरुदेव ने उन्हें अवसर नहीं दिया। कारण था गुरुदेव को अपने गुरु की आज्ञा पर लोहारिया की ओर विहार करना। अतः वे 14 नवम्बर की मध्यान्ह बेला में लोहारिया को ससंघ विहार कर गए।



चतुर्थ खण्ड

आचार्य : आगमिक सूत्रों का महायात्री

इस खण्ड में उनका वर्णन है जो मेरी दृष्टि में अर्हन्नीति उन्नायक आचार्य हैं, जो जन जन का हृदय परिवर्तन करते चल रहे हैं, जो युवा पीढ़ी में वैचारिक चर्या का बीजारोपण कर रहे हैं, जो प्रबुद्धों के युवा मार्गदर्शक हैं, जिनका कंठालंकार सरस्वती है, जो सूरीश्वर हैं, जिनकी अर्चना से भक्तों के मार्ग उजासमय हो उठते हैं, जिनकी साधना से सामान्य जगह 'तपोभूमि' बन जाती है, जिनके प्रति असंख्य नेत्रों में श्रद्धा-भक्ति का पारावार उमड़ता देखा गया है, जो जन-गण की आस्था के नूतन प्रतीक बन चुके हैं, जिन्होंने बहुरत्ना-वसुधरा 'जतारा' में जन्म लेकर बुंदेलखण्ड के भाल पर मंगल-तिलक लगाया है, जिनके कारण अनेक क्षेत्रों के जिनालय बहुआयामी समृद्धि से जग-जग हुए हैं, जो 'श्रावक' नामक कथा पर कल्याणमयी हस्ताक्षर हैं। ऐसे श्रमणाचार्य प.पू. गुरुदेव विमर्शसागर जी महाराज भक्तों के हृदय में ही नहीं, इस ग्रंथ के पन्ने-पन्ने में व्याप्त हैं।

वे संघहित चिंतक, तपोनिधि, अध्यात्मयोगी, आत्मोद्धारक, लोकोद्धारक, पल-पल महावीर-शासन में जागृत रहते हैं। उनकी सन्निधि में परोपकार, सिद्धियाँ और कल्याण का मेह बरसता है। उन्हें देखते समय जब भक्त अपने सहस्र नेत्र नहीं बना पाता तो वह अपनी पूरी देह को ही आँख बनाकर निहारता है। उन्हें सुनते हुए भक्त अपने शरीर को ही कर्ण बना लेता है। वे धन्य हैं—धन्य-धन्य हैं।

वे कल तक कमललोचन थे, आज आगमलोचन हो चुके हैं, कल तक कर्मप्रवीण थे, आज धर्मप्रवीण हैं। जिस कथा में विराजते हैं, वह महाकथा हो जाती है, शुभ कथा बन जाती है। उनकी कथा के लिए मुनि विचिन्त्यसागर जी लिखते हैं—

यह पुन्य प्रसवनी-कथा हमें जीवन का पथ दर्शाएगी,
बस पुन्य हमारा लक्ष्य नहीं, यह शुद्धि की थाह दिखायेगी।
जीवन मंगल होता कैसे, वह-पथ दर्शानेवाली है,
आतम के शुष्क मरुस्थल में अमृत बरसानेवाली है।

तो कथा चल रही थी कि मुनिवर ने, गुरुदेव की आज्ञा सुनते ही डूंगरपुर से लोहारिया की ओर प्रस्थान कर दिया।

आचार्यत्व संस्थापन

सत्य तो यह है कि आचार्य विरागसागरजी ने सन् 2005 में ही मुनिवर विमर्शसागर जी में आचार्यत्व देख लिया था अतः दक्षिण में होते हुए भी उन्होंने सैकड़ों मील दूर अवस्थित नगर सिंगोली के श्रावकों द्वारा पत्र भेजकर निर्दिष्ट किया था कि सिंगोली चातुर्मास के अंतराल में समाज उन्हें आचार्यपद पर

आसीन करे, किन्तु मुनिवर तो अपने गुरु के करकमलों से ही विधि सम्पन्न होना, देखना चाहते थे अतः उन्होंने लगातार 5 वर्ष तक गुरुदेव के पत्रों पर विनयपूर्वक अस्वीकृति ही दिखलाई थी, कहें कि सन् 2005 से 2010 के बीच 6 चातुर्मास निकल गए और 6 नगर सिगोली, कोटा, शिवपुरी, आगरा, एटा और डूंगरपुर, मगर मुनिवर को राजी नहीं कर पाए। तब विचारकर आचार्य विरागसागरजी ने उन्हें लोहारिया बुलाया था।

गंगा-जमुना संगम

मुनिवर डूंगरपुर से विहारकर लोहारिया की सीमा पर जा पहुँचे, भक्तों ने दौड़कर विरागसागरजी को सूचना दी, उन्होंने भक्तों को संदेश के साथ वापिस किया कि विमर्शसागर वहीं रुकें, संघ अगवानी करने आ रहा है। मुनिवर ने संदेश सुना तो पुनः भक्तों को दौड़ाया कि गुरुदेव से कहें वे कष्ट न करें, मैं उनके चरणों तक स्वयं पहुँचना चाहता हूँ किंतु गुरुदेव नहीं माने, वे संघ सहित चल पड़े अपने प्रिय शिष्य की ओर। पीछे-पीछे सकल समाज।

दोनों संघों का भावपूर्ण मिलन हुआ। मुनिवर ने गुरुचरणों में भूसात् होते हुए साष्टांग नमन किया। गुरुदेव ने सवात्सल्य शिष्य को उठाकर वक्ष से लगा लिया। हजारों नयन दृश्य देखकर नव-सुखानंद अनुभूत कर रहे थे उनके समक्ष वात्सल्य-गुण का यह सबसे विराट उदाहरण था। संघ ने नगर प्रवेश किया।

लोहारिया में पंचकल्याणक समारोह चल रहा था तभी बाँसवाड़ा समाज ने आचार्य विरागसागरजी से अनुरोध किया कि आचार्यपद समारोह का शुभ अवसर बाँसवाड़ा की भूमि को प्रदान करें स्वीकृति मिल गई। लोहारिया से लौटकर बाँसवाड़ा के कार्यकर्ताओं ने उचित तैयारी की फिर गणाचार्य विरागसागर जी को 108 पिच्छियों के साथ विहार कराकर 8 दिसम्बर 2010 को नगर में भव्य प्रवेश कराया। उसी दिन गुरु आज्ञानुसार मुनि विनम्रसागर जी भी ससंघ बांसवाड़ा पहुँचे। सभी संत बाहुबली कॉलोनी स्थित जिनालय पहुँचे। समाज ने श्री सुरेश जैन के नवीन गृह पंचशील भवन में संतों को ठहराया।

आचार्य पद ग्रहण पूर्व शिष्यों को कराया कर्त्तव्यबोध

पूज्य मुनिवर विर्मशसागर जी ने 11 दिसम्बर 2010 को संघस्थ त्यागी-व्रती भैया-बहिनों को कर्त्तव्यबोध कराते हुए कहा—'पूज्य गुरुदेव के हस्तकमलों से कल आचार्यपद की जिम्मेदारी संस्कार विधिपूर्वक प्रदान की जाएगी।

—(शिष्यों ने कहा) यह तो हम लोगों के लिए बड़े सौभाग्य का दिन है।

वास्तव में आचार्य पद गरिमा और जिम्मेदारी का पद होता है और इस पद की गरिमा आगम की आज्ञा पालन करने एवं अनुशासित-अनुकूल शिष्यों

से होती है।

यह आचार्य पद स्वयं के लिए नहीं होता अपितु शिवमार्गी शिष्यों के हितार्थ ग्रहण किया जाता है, स्वयं का हित तो एकमात्र मुनिपद की वीतरागता से ही होता है।

क्या आप लोग आज्ञा-अनुशासन में रहकर एवं कर्तव्यशील बनकर गुरु गरिमा को बनाकर रखेंगे? क्योंकि इस पद में हमारा कोई हित नहीं है, पूज्य आचार्यश्री की पारखी दृष्टि एवं आशीर्वादपूर्वक आप लोगों के हितार्थ ही इस पद को ग्रहण कर रहा हूँ।

—हे गुरुदेव! आपने हमेशा हम सभी को कर्तव्यपालन की शिक्षा दी है। आपने स्वयं हमेशा गुरु आज्ञा एवं आगम की आज्ञा का पालन किया है इसलिए कभी-भी हम सभी को स्वय प्रायश्चित न देकर पूज्य आचार्यश्री से ही प्रायश्चित ग्रहण करने को कहा।

हे गुरुदेव! हम सब हमेशा आपके अनुकूल कर्तव्यशील बनकर आपके आचार्यत्व की गरिमा को बढ़ाएँगे। प्रयास करेंगे कि हमसे भूल न हो, लेकिन प्रमादवश भूल हो जाए, तो सभी के कल्याण के लिए आप आचार्यपद को स्वीकार कीजिए।

—मैं चाहता हूँ, आप सभी कर्तव्यशील बनें, और प्रसन्न रहें। जो कर्तव्यशील होता है वह स्वयं प्रसन्न रहकर सभी को प्रसन्न रखता है। कर्तव्यशील बनना ही सबसे बड़ी साधना है। आज आप सभी के लिए हमारा यही आशीर्वाद है।

संघस्थ साधु, भैया, बहिनों ने हाथों की अंजुलि बनाकर गुरुवंदना की और कहा—हे गुरुदेव! जो आपने आज कर्तव्यबोध कराया है उसे हम हमेशा याद रखेंगे और अनुशासित शिष्य बनकर आत्महित करेंगे।

आचार्य पदारोहण : 12 दिसम्बर 2010

पहले सभी शिष्यों ने 9 दिसम्बर को समाज के साथ अपने गुरुदेव का 28वाँ मुनि दीक्षा दिवस मनाया। 10 दिसम्बर का दिन गुरुदेव ने विभिन्न आगमिक निर्देश उद्‌घाटित करते हुए शिष्य द्वय मुनि विमर्शसागर जी एवं मुनि विनम्रसागर जी के साथ पूरा किया। 11 दिसम्बर को भारत के कोने-कोने से भक्तों का आगमन शुरू हो गया। कार्यकर्ताओं ने पहले से ही विभिन्न धर्मशालाएँ और कुछ लॉज के कमरे हस्तगत कर लिए थे फलतः आगंतुक आते गए, कमरे भरते गए। उस दिन सारी रात भक्तों से भरी हुई बसें और कारें आती रहीं। स्थानीय महिला मंडलों और बालिका मंडलों ने रातभर जागकर कार्यक्रम स्थल की सजावट की, साथ ही मनमोहक रंगोलियाँ बनाई। जिस पथ से संघ को आना

था उसे भरपूर सजाया। युवकगण पंडाल सजाने में लगे रहे। पूरे नगर को वह रात उत्सव जैसी लग रही थी।

12 दिसंबर को सूर्य की किरणें धरती को चूमें उसके पूर्व ही प्रातः 4 बजे से, नारी शक्ति द्वारा मंगल गीत गाए जाने लगे, मधुर भजन माईक का सहारा पाकर नगर की सम्पूर्ण सीमा में गूँज रहे थे। लोगों को दिसम्बर की ठंड उस रात सता नहीं पाई, वे सुबह 5 बजे से ही नहा-धोकर कार्यक्रम स्थल पहुँचने लगे थे। उधर पंचशील भवन में, प्रातः 4:30 बजे से ही प्रतिष्ठेय आचार्य मुनि 108 श्री विमर्शसागर जी एवं मुनि 108 श्री विनम्रसागर जी केशलुंचन कर रहे थे। आचार्य विरागसागर जी के कक्ष में दोनों मुनि पाटों पर विराजमान थे। पारस चैनल के कार्यकर्ता हर दृश्य को कैमरे में ले रहे थे। आचार्य विरागसागर जी दोनों मुनियों के समक्ष पाटे पर विराजे थे। मुनियों के समक्ष चाँदी की थालियों में केशों को रखा जा रहा था। मुनिगण थाली से चुटकी भर राख (वानी) उठाते और लुंचन करने लगते। गुरुदेव के संकेत के अनुसार दोनों मुनि केशलुंचन प्रतिष्ठापन की भक्तियाँ कर रहे थे, फिर सिद्ध और योगी भक्ति का पाठ मन ही मन में कर गुरुदेव को नमन किया। वे, दोनों शिष्यों को मुस्करा-मुस्करा कर आशीष दे रहे थे।

गुरुदेव ने अपने हाथों से वरिष्ठ मुनिराज श्री विमर्शसागर जी के केशलोंच वामावर्तपूर्वक किए फिर विनम्रसागर जी के। मुनि विमर्शसागर जी के केश छोटे-छोटे थे अतः मुनिवर को परेशानी हो रही थी शीघ्र ही गुरुदेव ने अपने कर कमलों से दूर कर दी। दोनों मुनियों के सिर पर पाँच स्थानों पर केश छोड़ दिए गए थे ताकि आगामी क्षणों में पंचमुष्ठि केशलोंच क्रिया हो सके। केशलोंच के उपरांत आचार्यश्री ससंघ सभा-कक्ष में आ गए। सुप्रभात की भक्तियों के साथ संघ ने मौन खोला। पहले आचार्य वदना, फिर स्वाध्याय और नित्य की क्रियाओं से निवृत्त होने के बाद आचार्य-संघ भवन में स्थित मंच पर विराज गया। आयोजकों के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। सभी के हाथों में श्रीफल थे, अर्घ के साथ गुरुदेव से निवेदन किया—शोभायात्रा में पधारने का। आचार्यश्री विशालसंघ के साथ शामिल हुए। मगर पहले समीपस्थ श्रेयांसनाथ जिनालय में दर्शनार्थ गए। निकाली गई फिर शोभायात्रा। आगे-आगे वाद्ययंत्र दल उसके पीछे सुसज्जित मंगल कलश लिए माताएँ, बहिनें। महिला मंडल अपनी विशेष वेषभूषा में चल रहा था। उनके पीछे शीष पर जिनवाणी माता को विराजमान कर, श्रावक समूह पंक्तिबद्ध चल रहा था, उनके धवल वस्त्र आदमी के हृदय की धवलता प्रकट कर रहे थे। उनके ठीक पीछे पुलक चेतना मंच के सदस्य हाथों में केशरिया और पंचरंगी ध्वजाएँ लेकर चल रहे थे। उनके पीछे दो श्रावक सुसज्जित पालकी पर पिच्छिका सजाकर चल रहे थे और उनके पीछे था विशाल

आचार्य संघ। गुरुदेव विरागसागर जी के दाहिनी ओर मुनि विमर्शसागर जी और वामहस्त की ओर मुनि विनम्रसागर चल रहे थे। उनके पीछे तीन तीन की पक्ति में समस्त मुनिगण, ऐलकगण, क्षुल्लकगण, आर्यिका माताएँ और क्षुल्लिका माताएँ सहित चतुर्विध संघ गमन कर रहा था।

नगर के विभिन्न मार्गों को धन्य करती हुई जिनधर्म प्रभावक शोभायात्रा 9 बजे स्थल पर पहुँच गई। विशाल मंच और अति विशाल पंडाल संतों के गुण गा रहे थे। पंडाल के समीप ही ध्वजारोहण स्थल पर प्रतिष्ठाचार्य ब्र. ऋषभ भैया ध्वजारोहण की क्रिया, श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन रामगंजमण्डी से करा रहे थे। जैसे ही ध्वज फहराया गया, वह पूर्व की दिशा की ओर लहरा गया। गुणीजनों को इतने मात्र से श्रेष्ठ कार्य की निर्विघ्न रहने की सूचना मिल गई।

पंडाल के मुख्य द्वार पर आचार्यश्री का पाद्प्रच्छालन और आरती की गई। मंच की व्यवस्था भी उत्तम थी मंच के मध्य में आचार्यश्री का सिंहासन, उनके दाहिनी ओर मुनिराजों का समूह और बायीं ओर आर्यिका माताओं का समूह विराजमान था। आचार्य शिरोमणि विद्यासागर जी महाराज की शिष्या द्वय आर्यिका सत्यमति जी एवं आर्यिका सकलमति जी भी मंच की शोभा बढ़ा रही थीं। आचार्य कुन्थुसागर जी की शिष्या आर्यिका वीरमति जी आचार्य भरतसागर जी की शिष्या आर्यिका भरतेश्वरमति माताजी, आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी एवं आचार्य अभिनंदन सागर जी के शिष्य क्षुल्लक अतुल्यसागर जी सहित कुल 101 पिच्छिकाएँ, शरीर में प्राण की तरह, मंच पर प्रदीप्त थीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहिनों के मधुर स्वर में कहे गए मंगलाष्टक से हुआ। फिर आचार्य परम्परा के चित्रों का अनावरण श्री सुरेश जी सिंघवी जी द्वारा किया गया। दीप प्रज्जवलन श्री नानालाल जैन डूंगरपुर ने किया। फिर प्रतिष्ठेय मुनिद्वय द्वारा अपने गुरु का पादप्रच्छालन किया गया। हुई मंगल पूजा। इसी क्रम में मुनियों के माता-पिता और धार्मिक क्रिया हेतु नियुक्त माता-पिता का सम्मान समाज ने किया। विमर्शसागर जी के गृहस्थ धर्म संस्कार के माता-पिता श्रीमती भगवती देवी एवं श्री सनतकुमार जैन थे, तो धर्म के माता-पिता थे श्री सुरेश कुमार जैन दोतड़ा वाले और श्रीमती रेखा बाबरिया।

हुआ फिर कनिष्ठ से वरिष्ठ की ओर बढ़ते हुए प्रवचनों का कार्यक्रम, तदनुकूल पहले मुनि विनम्रसागर, फिर मुनि विमर्शसागर और फिर आचार्य विरागसागर। उस दिन श्री विमर्शसागर जी ने भावना प्रधान बातें बतलाईं—'शिशु का जन्म होता है तब वह अपनी जन्म दात्री माँ को नहीं देख पाता, मगर जब मेरा जन्म हुआ तो मैंने माँ को ही नहीं पिता को भी देख लिया था। यों इस तन को जन्म देनेवाली माँ को नहीं देखा था किन्तु चेतना को जन्म देनेवाले माता-पिता को गुरु के रूप में देख लिया था। 'मुनि दीक्षा' मेरा वास्तविक जन्म

दिवस था। तब से लेकर आज तक, जो कुछ भी पाया, वह गुरुदेव के आशीर्वाद से पाया। मैंने वह समय भी देखा जब मैं श्रावक था, फिर वह समय देखा जब ब्रह्मचारी था, देखा फिर ऐलक का समयकाल और फिर मुनित्व का निर्वाह भी किया। अपने अर्जित पुण्यों से आज गुरुदेव के समक्ष आचार्यपद पा रहा हूँ, यह भी स्मृति में रहेगा। मैं सदा देव, शास्त्र, गुरु की आज्ञा के प्रति नतमस्तक रहूँगा।

करुणा के समुद्र वात्सल्य शिरोमणि मुनि विमर्शसागर जी के प्रभावनाकारी प्रवचनों से सारा जनसमूह रोमांचित हो उठा। हर प्रबुद्ध का हृदय उन्हें सराह रहा था। उनके बाद आचार्य विरागसागर जी के प्रवचन हुए, जिसमें उन्होंने दोनों प्रतिष्ठेय आचार्यों को आचार्य पद की गरिमा का बोध दिलाया और महिमा की चमक का वर्णन किया। सुनाए फिर अपने आचार्य पद के अनुभव। आचार्य पदारोहण हेतु उन्होंने संघस्थ समस्त साधुओं और आर्यिकाओं का अनुमोदन सुनना चाहा, तब सभी संतों ने मुकुलित हाथों में पीछी लिए हुए अनुमोदना की। फिर आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमूह से पूछा, फलतः पण्डाल में बैठे श्रावकों के कई सहस्र हाथ समर्थन में उठे, फिर तालियाँ बजाई गईं और जयकारे लगाए।

दोनों मुनिराजों की माताओं और धर्ममाताओं ने मिलकर अक्षत से स्वस्तिक बनाए। संघस्थ ब्रह्मचारी रविन्द्र जी एवं राजीव जी ने दो धवल वस्त्रों पर केशर से स्वस्तिक बनाए और उन्हें अक्षत निर्मित स्वस्तिक के ऊपर बिछा दिया। उन वस्त्रों पर लकड़ी के पाटे रखे गए, जिन पर प्रतिष्ठेय मुनिराज विराजित हुए। आचार्य विरागसागर जी मुनिराजों के समक्ष खड़े होकर मंत्रोच्चारपूर्वक प्रतिष्ठापन विधि संपन्न करने लगे। इस बीच दोनों मुनिराजों से पंचमुष्ठि केशलोंच सम्पन्न कराया। भगवान शांतिनाथ के अभिषेक से प्राप्त गंधोदक की धारा मुनिराजों के मस्तक पर छोड़ी गई। दोनों मुनिराजों की हथेली (अंजुली) में श्रीकार बीजाक्षर का अंकन किया फिर मंगल द्रव्यों से अंजुली भर दी गई। केशर, कर्पूर आदि से मिश्रित श्रीखंड से मस्तक पर श्रीकार का लेखन कर, संस्कार पूर्ण किए गए। दोनों मुनियों को नूतन पीछी प्रदत्त की गई साथ ही कमंडलु भी।

आचार्य विमर्शसागर जी को आचार्य पदारोहण के बाद प्रथम पिच्छिका भेंट करने का सौभाग्य बांसवाड़ा निवासी श्री भूपेन्द्र जेन को मिला और कमंडलु भेंट करने का श्री सुरेश सिंघवी को। शास्त्र भेंट किए संघस्थ ब्रह्मचारिणी मीरा दीदी सहित सभी त्यागी व्रतियों ने। सिंहासन पर विराजित आचार्यश्री 108 विमर्शसागर जी महाराज के सर्वोषधि से पादप्रच्छालन करने का सौभाग्य भी संघस्थ त्यागी व्रतियों को मिला।

उक्त सभी क्रियाएँ आचार्य विनम्रसागर जी के साथ भी सम्पन्न की गईं। फिर मुनिराजों द्वारा अंजुलि में ग्रहण किए गए द्रव्य माता और धर्ममाता की

ओली में डाले गए। सारा पंडाल आचार्य विमर्शसागर जी महाराज के जयकारों से गूँज उठा। इस तरह बाँसवाड़ा की पवित्र भूमि पर दो आचार्यों का उद्‌भव हुआ जो उस क्षण से लेकर आज तक जिन-शासन की पताका देश में फहरा रहे हैं।

शांत तपस्वी के मुनित्व पर आचार्यत्व का कलशारोहण सम्पूर्ण देश के लिए अतिविशेष समाचार था। जो भी भक्त सुनता कि उन्हें बाँसवाड़ा में आचार्यपद प्रदान किया गया है, वह गर्व से कह पड़ता—'वे तो थे ही इसके योग्य।' हवाएँ सुगन्ध बहाती थीं, वे आज खबर बहा रहीं थीं। सारे राष्ट्र में फोनों की घंटियाँ घनघना रही थीं—'मुनिश्री विमर्शसागर जी को आचार्यपद पर शोभित कर दिया।'

—कब ?

—आज, 12 दिसम्बर 2010 को।

भक्त-समुदाय डूबकर चर्चा कर रहे थे अपने-अपने ग्रामों-शहरों में। किसी भी प्रदेश के लिए वे, आचार्यश्री नए नहीं थे। हर प्रान्त के भक्त उनके दर्शन कर धन्यता पा चुके थे।

खबरें पक्षियों से तेज उड़ान भरती हैं और क्षण भर नदी-पहाड़ पारकर आलोक की तरह प्रसारित हो जाती हैं। किस शहर के लोगों ने क्या कहा, इसे क्षण भर को छोड़ें और चलें गुरुदेव की जन्मभूमि जतारा, जहाँ चर्चाओं का क्रम थम ही नहीं रहा था। लोग गद्‌गद थे। बड़ी बात यह कि गुरुदेव के छात्र जीवन के साथी, शिक्षकगण भी अपने-अपने मन के विचार प्रकट कर रहे थे।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जतारा के शिक्षक रामरतन जी दीक्षित, जिन्होंने राकेश भैया को सातवीं कक्षा में पढ़ाया था, कहने लगे—'एक दिन प्रयोगशाला में ऑक्सीजन गैस बनाने की विधि समझा रहा था, तब राकेश मेरे एक शब्द पर विशेष ध्यान दे रहे थे, वह शब्द था—'उत्प्रेरक'। वे विनयपूर्वक मुझसे बोले कि उत्प्रेरक का अर्थ समझा दीजिए। तब मैंने उन्हें प्रसन्नतापूर्वक उत्प्रेरक के प्रकार, प्रभाव और परिभाषा समझाई। दोपहर में जब मैं अकेला बैठा कुछ सोच रहा था, तो राकेश की याद हो आई कि यह छात्र आगे चलकर धर्मपथ का उच्च शिखर पाएगा और उस पथ पर चलनेवालों के लिए 'उत्प्रेरक' का कार्य करेगा, जिससे परिवार, गाँव, समाज और देश का नाम गौरव पायेगा। सच उनकी अध्ययनशीलता, पात्रता और सोच अन्य छात्रों से हटकर थी। आज मुझे अपनी सोच पर हर्ष है कि उन्होंने 'आचार्य-पद' ग्रहण कर मेरे सोच को सत्य में बदल दिया।'

श्री एच.एस. चौहान जो अब प्राचार्य हैं, बतलाने लगे 'मैंने उन्हें 11वीं कक्षा

में पढ़ाया था। पूर्व में जब शासकीय विद्यालय जतारा में, मैं व्याख्याता था तब उन्हें भौतिक शास्त्र का अध्ययन कराता था, आज वे भौतिकी से दूर होकर, साधना के शिखर पर पहुँच गए हैं मुझे हार्दिक खुशी हो रही है जो छात्र बचपन में ही मितभाषी, सदाचारी, सुसंस्कृत और निर्व्यसन रहा हो, वह ही तो मुनि और आचार्य बनता है। मैं उनके चरणों में शत्-शत् नमन करता हूँ और भावना करता हूँ कि वे आगम पथ के सर्वश्रेष्ठ यात्री सिद्ध हों।'

विचार-ज्ञापन का क्रम थमा नहीं, जितने मुँह, उतनी सराहना।उस दिन राकेश समाज ही नहीं, गाँव का सर्वाधिक प्यारा बेटा सिद्ध हुआ था। तभी सेवानिवृत्त शिक्षक प्रधानपुरा जतारा, श्री नंदराम नामदेव कह पड़े–'छात्र जीवन के बाद भी राकेश से मेरा मिलना जुलना बंद नहीं हुआ, वे हमारे अतिनिकट पड़ोसी भी रहे हैं और उन्हें छठवीं कक्षा में पढ़ाने का मुझे सौभाग्य भी मिला है। उस समय मैं उनका गुरु था, आज वे हमारे गुरु बन चुके हैं, सही में 'जगत-गुरु'। वे प्रारंभ से ही लगन और परिश्रम के साथ पढ़ाई किया करते थे, उनके वे ही तत्व लगन और परिश्रम मुनि-पथ पर पल-पल सहयोग कर रहे होंगे, तभी तो उन्होंने आचार्य बनने योग्य आगम साहित्य का अगम अध्ययन किया। बचपन में कभी किसी मित्र से कठोरता पूर्वक नहीं बोले, वाणी मृदुता और मिठास से पगी रहती थी। ये दोनों गुण अब आचार्य बनने पर सारे संसार को पसंद आयेंगे। हम सामान्य व्यक्ति हैं, उन जैसे महान आचार्य के विषय में अधिक क्या कह सकते हैं, वह तो उनके भक्त ही कहेंगे। यदि बचपन में जान लिया होता कि वे इतने ऊँचे पद की शोभा बढ़ाएँगे तो, मैं तो तभी चरण पकड़ लेता। अब वे दूर हैं अतः उन्हें यहीं से विनयपूर्वक नमन करता हूँ। कभी न कभी दर्शन अवश्य करूँगा।

श्री विनोद खरे सेवानिवृत्त शिक्षक जतारा, जिन्होंने राकेश भैया को 9वीं कक्षा से पढ़ाया था, बोले–'मेरा लौकिक शिष्य आज धर्मक्षेत्र का महान आचार्य बन गया है, यह जानकर मैं अपने भाग्य की सराहना करता हूँ कि मुझे उनके बचपन से उनके समीप रहने का गौरव मिला। आचार्यश्री के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ और उनके चरणों में नमन करता हूँ।

उद्‌गार तो पूरे नगर के जैन-अजैन प्रबुद्धों ने प्रगट किए थे, काश, वे सभी यहाँ संकलित कर पाता। वे महाआचार्य धन्य हैं कि उनके पुरजन और परिजन उनके विषय में बचपन से ही प्रशस्त भाव रखते थे।

गुरुमुख से प्रायश्चित ग्रंथ का अध्ययन

पूज्य आचार्य विरागसागर जी महाराज ने 13 दिसम्बर से नवोदित द्वय

आचार्यों को प्रायश्चित ग्रंथ का अध्ययन कराना प्रारंभ किया। आचार्य पद के अनुभव एवं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार प्रायश्चित विधि से परिचय कराया।

—कहा, आप लोग सौभाग्यशाली हैं जो गुरुमुख से प्रायश्चित ग्रंथ पढ़ने, प्रायश्चित देते देखने, एवं प्रायश्चित देने का भी अनुभव मिला है। अन्यथा कदाचित् प्रायश्चित ग्रंथ तो पढ़ने को मिल जाता है किन्तु गुरु सानिध्य के अभाव में अनुभव नहीं मिल पाते।

आचार्यद्वय ऐसा सुनकर अपने गुरु की उदारता के साथ ही आगमिक परंपरा की रक्षा के प्रति गुरु का मूलाचार कथित कर्तव्य साक्षात् देख रहे थे। 19 दिसंबर को गुरु आशीषपूर्वक आचार्य द्वय ने प्रायश्चित ग्रंथ पूर्ण किया।

पूज्य आचार्य विरागसागर जी ने प्रायश्चित ग्रंथ पढ़ाने के पूर्व स्वयं अपने हस्त कमलों से नवोदित आचार्य विमर्शसागर को प्रायश्चित ग्रंथ प्रदान किया। पूज्यवर ने शुभाशीष इस प्रकार लिखा—

आचार्यश्री विमर्शसागर जी को प्रतिनमोस्तु

पुरुस्सर शुभाशीष

12/2/2/2537 शनिवार बाहुबलि कॉलोनी, बाँसवाड़ा (राज.)

तपस्वी सम्राट की समाधि

कोटा महावीरनगर, विस्तार योजना समाज के निवेदन पर पू. विरागसागर जी ने पू. विमर्शसागर जी को कोटा विहार की अनुमति प्रदान की। संघ बाँसवाड़ा से 10 किमी. दूर विहार कर सका। प्रातःकालीन भक्ति पाठ के पश्चात् समाचार मिला—तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागरजी का समाधि मरण हो गया। तारीख थी 24 दिसंबर। आचार्यद्वय विमर्शसागर एवं विनम्रसागर पुनः बाँसवाड़ा पहुँचे। पू. विमर्शसागर जी के वापिस बाँसवाड़ा पहुँचने से संघ को कुछ शांति अनुभव हुई थी, क्योंकि गुरु वियोग से द्रवित विरागसागर जी के अश्रुपूरित नेत्र विमर्शसागर की वार्ता से थोड़ा विश्राम पा रहे थे। वार्ता का क्रम पू. विमर्शसागर ने अनवरत बनाकर रखा। विषय था तपस्वी सम्राट का साधनामय जीवन, जिनके संस्मरण सुनाने में पू. विरागसागर की तत्परता भी देखते ही बनती थी। दोपहर में श्रद्धाजलि सभा का आयोजन रखा गया।

बाँसवाड़ा से कोटा विहार

16 दिसम्बर को पू. विरागसागर जी की आज्ञा से आचार्यद्वय ने विहार किया। पू. विमर्शसागर जी कोटा तो विनम्रसागर जी पारसोला की ओर गए।

घाटोल पहुँचते ही आर्यिका भरतेश्वरमति एवं आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी के साथ समाज ने भव्य अगवानी की। हुई प्रवचन सभा। जतारा से सैकड़ों की संख्या में पहुँचे भक्त, जतारा विहार का निवेदन करने। किन्तु पू. विमर्शसागर जी चले गंतव्य की ओर। खमेरा होते हुए प्रतापगढ़ पहुँचे। आचार्य सच्चिदानंदसागर ने की भव्य अगवानी, हुई समाचारी, आहारोपरांत नीमच के लिए विहार हुआ। 03 जनवरी 2011 को नीमच में भव्य अगवानी हुई, वहाँ पूर्व से विराजित आर्यिका सुभूषणमती माताजी ने ससंघ परिक्रमा कर समाचारी की। हुए प्रवचन। 04 जनवरी को नीमच से सिंगोली के लिए विहार हुआ।

सिंगोली में भव्य प्रवेश

पाठकों को स्मरण होगा, जब मुनिवर ने ससंघ 2005 में चातुर्मास किया था, तब समाज ने आचार्यपद हेतु निवेदन किया किन्तु सफलता नहीं मिली। अब, जब आचार्य पद के बाद पू. विमर्शसागर के सिंगोली आगमन की चर्चा समाज ने सुनी, तो हर्ष की लहर दौड़ गई। नीमच से नेरड, सरवानिया, मोरवन डेम, दड़ौली, ढिकेन, रतनगढ़, काछल होते हुए 9 जनवरी को प्रातः 7.00 बजे सिंगोली प्रवेश किया। सैकड़ों स्वागत द्वार, होर्डिंग एवं जगह-जगह पादप्रक्षालन, नीरांजना के थाल लिए ससमूह श्रावक। पूज्य आचार्यश्री विमर्शसागर जी के पहुँचते ही भक्तों ने 'आचार्य' के संबोधन से जयकारे लगाए, इस बार आचार्यश्री ने उन्हें नहीं रोका। तभी कल्पद्रुम विधान में सानिध्य दे रहीं आर्यिका विज्ञानमति ने आकर सविनय नमोस्तु की, समाचारी पूर्ण की। हुए विधानस्थल पर प्रवचन, प्रथम वरिष्ठ आर्यिका विज्ञानमति जी पश्चात् संघ के नायक पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी के। आचार्यश्री के आध्यात्मिक प्रवचन सुनकर सबके मन मयूर नाच उठे। विधानाचार्य. पं. कुमुद सोनी, अजमेर पूज्य आचार्यश्री से बोले—'साधु के मुख से अध्यात्म सुनना बहुत अच्छा लगता है। हे पूज्यवर! अजमेर को भी धन्य करें।

कोटा प्रवेश : 2011

आचार्य संघ 16 जनवरी को कोटा पहुँचा। महावीर नगर विस्तार योजना के भक्तों ने आचार्यश्री की 108 स्वागत द्वार, रंगोली, पादप्रक्षालन एवं नीरांजना उतारकर भव्य अगवानी की। 21 जनवरी से 23 जनवरी तक नवनिर्मित शिखर की शुद्धि एवं कलशारोहण का कार्य संपन्न किया गया।

यांत्रिक बूचड़खाने का विरोध

आचार्यश्री को जब ज्ञात हुआ कि कोटा की धरती पर यांत्रिक बूचड़खाना खोलने का प्रयास चल रहा है तब सकल जैन समाज कोटा के अध्यक्ष राजमल

पाटोदी के द्वारा महापौर डॉ. रत्ना जैन तक अपना संदेश प्रेषित कराया। और कहा–महापौर अहिंसा को बढ़ावा दें हिंसा को नहीं। तभी कोटा में अमन-चैन रह पाएगा। महापौर डॉ. रत्ना जैन ने आश्वासन दिया, ऐसा ही होगा। किन्तु दूसरे दिन बूचड़खाने के लिए जमीन हेतु समिति गठित कर दी।

जब 26 जनवरी से 28 जनवरी तक शास्त्री मार्केट में वेदी प्रतिष्ठा हेतु आचार्यश्री का आगमन हुआ, तो 30 जनवरी को प्रसिद्ध पीपल के पेड़, रामपुरा में सर्वधर्म सभा का आयोजन बूचड़खाने के विरोध में रखा। जिसमें पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी ससंघ, गोदावरी धाम के रामानंद सरस्वती, शैलेन्द्र भार्गव, सनातन पुरी जी महाराज, काजी अनवर अहमद, विधायक ओम बिरला, भवानी सिंह राजावत, पंकज मेहता आदि धर्मगुरु तथा राजनेताओं ने विचार रखे।

पू. विमर्शसागर जी ने महापौर डॉ. रत्ना जैन एवं नगरीय विकासमंत्री राजस्थान सरकार के श्री शांतिलाल धारीवाल के जैनत्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हुए कहा–

'जैन समाज अहिंसा में विश्वास रखता है। भगवान महावीर स्वामी ने प्राणीमात्र को अहिंसा धर्म और अहिंसक जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया। जैन समाज के इतिहास में करुणा, दया, प्रेम, अहिंसा का पैगाम एवं देश के लिए बलिदान निहित है, किन्तु कभी स्लॉटर हाउस खोलने जैसे निंदनीय कार्य की नींव जैन समाज ने नहीं रखी। परंतु बड़े आश्चर्य की बात है कि कोटा जैनसमाज के राजनेता स्लॉटर हाउस का निंदनीय कदम उठाकर जैनसमाज को कलंकित करनेवाला इतिहास लिख रहे हैं, लेकिन हम सभी अहिंसा प्रेमी, उनके क्रूरतापूर्ण दुस्साहस को कभी सफल नहीं होने देंगे। कोटा शैक्षणिक नगरी है, इस धरती से क्रूरता का संदेश देना शिक्षा पर कलंक होगा, अतः समस्त अहिसा प्रेमी इसका कड़ा विरोध करेंगे। आचार्यश्री ने एक घंटे तक कत्लखाने के विरोध में प्रवचन किया।

पूज्य आचार्यश्री का यह संदेश सभी न्यूज पेपरों में विशेष रूप से कवरेज किया गया। आचार्यश्री ने पुनः-पुनः पत्रकार वार्ता करके कत्लखाने के विरोध में अपनी कड़ी आपत्ति दर्ज कराई।

जैनाचार्य का कड़ा विरोध देखकर कोटा के अनेकों संगठन भी विरोध में उतर आए। उन्होंने जैनाचार्य का संदेश भी प्रसारित किया। सब तरफ स्लॉटर हाउस का विरोध होने लगा।

महापौर डॉ. रत्ना जैन ने इस विषय में पूज्य आचार्यश्री से आकर वार्ता की। आचार्यश्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा–'रत्ना जी! आप महापौर हैं इससे

जैनसमाज गौरवान्वित है, यदि आप जैनत्व की पहिचान बनकर चलें तो जैनधर्म भी गौरवान्वित होगा।' महापौर ने कहा—आप आशीर्वाद दीजिए, जो आपने कहा, मैं वैसा ही कर सकूँ।

आचार्यश्री नसियाँ जी पहुँचे, वहाँ नेता हुकुम जैन 'काका' से बात की। उन्होंने कहा—आचार्यश्री! इस समय आपने जो स्लॉटर हाउस का विरोध करने में आक्रामक तरीका अपना रखा है इससे जैनधर्म और जैनसंतों का प्रभाव अन्य समाज तक पहुँच रहा है। कोटा में जितने भी संगठन और अन्य धर्मावलम्बी अब विरोध कर रहे हैं उसमें आपका ही संदेश मुख्यता से दिया जा रहा है। राजनेताओं को विरोध से ही झुकाया जा सकता है। आप न्यूज चैनलों पर भी कड़ा विरोध कीजिए, यह समाचार पूरे राजस्थान में जाएगा और दो-तीन दिन में यह प्रस्ताव रद्द हो जाएगा। मैं भी मुख्यमंत्री अशोक गहलौत से मिलने जाऊँगा।

आचार्यश्री ने दोपहर न्यूज चैनलों पर अपना कड़ा विरोध दर्ज कराया। 6 फरवरी को मिला अहिंसा प्रेमी समाज को न्याय, जब नगरीय विकासमंत्री शांतिधारीवाल ने जयपुर से कोटा आकर पूज्य आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया, और स्लॉटर हाउस का प्रस्ताव रद्द कर दिया। आचार्यश्री ने दिया, 'अहिंसा परमोधर्मः' का शुभाशीष।

आचार्यपद के बाद प्रथम दीक्षा

आचार्य संघ राजस्थान की शैक्षणिक नगरी कोटा में अवस्थित ही था। कोटा जिसे विद्यार्थी लोग 'एजुकेशन हब' कहते हैं, आचार्य विमर्शसागर जी ने उसे शिक्षा केन्द्र से ऊपर 'दीक्षा केन्द्र' की परिभाषा प्रदान की और 26 मार्च 2011 को ब्र. राजीव भैया को ऐलक दीक्षा प्रदान कर दी।उस दिन ही हजारों लोगों के समक्ष ब्र. राजीव का सम्पूर्ण परिचय आया कि वे अशोकनगर के पास स्थित सिंघाड़ा गांव के हैं। उनका जन्म 14 जून 1983 को सुनागरिक श्रीपद्मकुमार जी जैन के गृह प्रदेश में उनकी सुयोग्य पत्नी श्रीमती सरोज जैन की पावन कुक्षि से हुआ था। भैया जी स्नातक हैं। उन्होंने बी.एस.सी. (मैथमैटिक्स) तक भौतिक शिक्षा प्राप्त की है और अब आध्यात्मिक शिक्षा की ओर पूज्य विमर्शसागर जी के चरण सान्निध्य में आगे बढ़ रहे हैं। उनका नाम गुरुदेव के मुखारविंद से 'ऐलक 105 विचिंत्यसागर जी' किया गया है।

उन्हें दीक्षा देने के पश्चात् विद्वतवर्ग ने आचार्यश्री विमर्शसागरजी पर विचार मंथन शुरू कर दिया। उनकी चर्या और प्रज्ञा से जो कार्य सम्पन्न हुआ

था वह संत-पंथ और धर्मपंथ के सुवर्धन का कारण था। अतः विद्वानों ने एक स्वर में स्वीकारोक्ति दी कि जिस प्रकार स्वर्ण को जंग नहीं लगती, अग्नि को दीमक नहीं लगती उसीप्रकार ज्ञायक स्वभाव के धनी आचार्य विमर्शसागर जी के भाव में आवरण अथवा न्यूनता या अशुद्धि नहीं आ सकती। आगम का यह महान वाक्य जैसे उन्हीं के लिए लिखा गया है।

अशोकनगर वर्षायोग : 2011

पाठकों को स्मरण होगा कि 8 वर्ष पूर्व आचार्य विमर्शसागर जी 'मुनि अवस्था' में अशोकनगर में भारी प्रभावनाकारी वर्षायोग कर चुके हैं, वह सन् 2003 का समय था। अतः अब 2011 के वर्षायोग की चर्चा विस्तार से नहीं कर रहा हूँ क्योंकि कुछ विशिष्ट आयोजनों को छोड़कर सभी कार्यक्रम और सभी भक्त 'जस के तस' थे। बदला तो केवल एक महान दिगम्बर भेष जो अब आचार्य के रूप में पहली बार अशोकनगर के समक्ष था। कलश स्थापना से लेकर वर्षायोग निष्ठापना तक अनेक कार्यक्रम हुए थे, सभी विशिष्ट थे। यहाँ ही आचार्यश्री ने दो बहिनों को संघ प्रवेश दिया था, जिनका उल्लेख करना न्यायसंगत है, प्रथम बहिन हैं ब्र. श्वेता दीदी और द्वितीय हैं ब्र. नमिता दीदी।

ब्र. श्वेता दीदी

सन् 2011 में जब आचार्यश्री अशोकनगर में थे, तब श्वेता दीदी को 14 जुलाई को संघ प्रवेश की अनुमति प्रदान की थी। इस भद्र कन्या ने आचार्य विमर्शसागर जी से ही 12 मार्च 2011 को कोटा प्रवास के समय ब्रह्मचर्यव्रत प्राप्त किया था। करीब साल भर बाद जब आचार्यश्री पृथ्वीपुर में थे, तब 14 फरवरी 2012 को सात प्रतिमा का व्रत लेने में सफल हुई थीं। वे बी.ए. पास मनीषी शिष्या हैं और संघ में रहकर श्रेष्ठ आराधना करती हैं।

ब्र. नमिता दीदी

संघ प्रवेश की दृष्टि से ये श्वेता दीदी की सहेली है, इन्होंने भी 14 जुलाई 2011 को अशोक नगर में ही गुरुदेव से प्रवेश की अनुमति प्राप्त की थी। अन्य तिथियाँ भी इनकी साथ-साथ हैं। इन्होंने भी 12 मार्च 2011 को कोटा के विशाल मंच पर आचार्यश्री विमर्शसागर जी से ब्रह्मचर्य व्रत प्राप्त किया था और 14 फरवरी 12 को पृथ्वीपुर में पृथ्वी के देवता विमर्शसागर जी से सात प्रतिमा का व्रत लिया था। एम.ए. पास हैं अब धार्मिक शिक्षा में समय दे रही हैं।

ब्र. नमिता दीदी और ब्र. श्वेता दीदी आपस में सगी बहिनें हैं, उनकी गृह-त्याग की कहानी एक-सी है।

छोटी बात-बड़ी शिक्षा

आचार्यश्री ससंघ जब अशोकनगर की ओर बढ़ रहे थे तब गौघाट का एक प्रसंग सामने आता है। वे बिहार करते हुए भी प्राकृत की कक्षा नित्य लिया करते थे जिसमें पूरा संघ उपस्थित रहता था और श्रावकगण भी। वहाँ विद्यालय में रुकना हुआ था। दीदीयों ने स्कूल की एक कक्षा से बोर्ड उठाकर आचार्यश्री के कमरे में रख दिया। जब वे आए पढ़ाने के लिए, तो वहाँ बोर्ड, चाक और डस्टर देखकर प्रसन्न हुए, फिर पूछा ये कहाँ से आ गए? दीदी ने बतलाया कि हम लोग बाजू-वाली कक्षा से उठा लाए हैं। सुनते ही गुरुदेव का चेहरा मलीन हो गया, फिर बोले—यहाँ संघ को मात्र रुकने का स्थान दिया गया है, किसी वस्तु का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी गई है, और बिना पूछे किसी वस्तु के ले लेने से चोरी का दोष लगता है, आप लोग इसे जहाँ का तहाँ रख दें, आज नहीं पढ़ाऊँगा।

गुरुदेव के एक वाक्य मात्र से दीदीयों के हृदय में भूकम्प सा हो उठा, उन्हें अपनी त्रुटि पर पश्चाताप हो आया, फलतः उनके मुँह से निकला—'भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेंगे, क्षमा कीजिए गुरुदेव।' घटना छोटी थी, किन्तु अध्यात्म योगी ने अपने वचन और चर्या के माध्यम से बहुत बड़ी शिक्षा दे दी थी।

अशोकनगर के दो दृश्य

प्रथम है स्थापना दिवस का। उस दिन आचार्यश्री के सानिध्य में भक्तामर-महामंडल विधान आयोजित किया गया था। उसी दिन दर्शनार्थ पहुँचे सुयोग्य विद्वान् डॉ. उदयचंद जैन, उदयपुर (राज.) ने अपने उद्बोधन में कहा—'पू. आचार्यश्री जब मुनि-अवस्था में थे, तब डूँगरपुर में मात्र सात दिन अध्ययन कराने का शुभ-अवसर मुझे मिला था। किन्तु सात दिनों में ही उन्होंने इतना अधिक ज्ञान अर्जित कर लिया कि मैं चकित रह गया। उन्होंने प्राचीन आचार्यश्री अमितगति कृत विख्यात ग्रंथराज 'योगसार प्राभृत' की टीका 'प्राकृत भाषा' में लिखना शुरू कर दी जो समय पर पूर्ण भी होगी। मैं उनकी प्रज्ञा और प्रतिभा से प्रभावित तो हुआ ही, गौरवान्वित भी हुआ हूँ। उनकी 'ज्ञान-ग्रहण शक्ति' अतुलनीय है। मैंने अपने जीवनकाल में ऐसा श्रेष्ठ स्वाध्यायी नहीं देखा।'

दूसरा दृश्य है चातुर्मास निष्ठापन का। 26 अक्टूबर 2011 को निष्ठापन के पश्चात् आचार्यश्री ने भक्तों को एक ऐसी पुस्तक वितरित की जो सर्व-समाज के लिए ग्राह्य है। पुस्तक का नाम है-'जैन श्रावक और दीपावलि पर्व'। यह उन्होंने कब लिखी पता ही न चला और जब निष्ठापना के पश्चात प्रवचन हुए

तो श्रोताओं को उस पुस्तक के अनुसार ही जैन पर्व दीपावलि की विधि समझाई। था हर श्रावक गद्‌गद।

उनकी सन्निधि का लाभ लेते हुए समाज ने 30 अक्टूबर को 'आध्यात्मिक कवि'-सम्मेलन' का आयोजन किया जिसमें भक्तों के अनुरोध पर आचार्यश्री ने भी काव्य सुनाया। 31 अक्टूबर को 'पिच्छिका परिवर्तन समारोह' सम्पन्न किया गया। म.प्र. शासन के कैबिनेट मंत्री श्री बाबूलाल गौर ने उपस्थित होकर दर्शन किए। इसी दिन अशोकनगर के अजय जैन ने पूज्य आचार्यश्री से ब्र. व्रत ग्रहणकर संघ में प्रवेश लिया और बन गए ब्रा.ब्र. अजय भैया।

विमर्श लिपि

पू. आचार्य विमर्शसागर जी ने इस चातुर्मास में स्वतंत्र विमर्श लिपि का सृजन किया, जो उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है। विद्वत समाज एवं साहित्य जगत ने इसे विशिष्ट उपलब्धि बताया। इस पर शोध ग्रंथ लिखा जाए, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

चरण शिवपुरी की ओर

संत के जो पतित-पावन चरण,पीछी ग्रहण करने के पश्चात् 14 दिसम्बर 1998 से मोक्षनगरी कहलाने वाली 'शिवपुरी' की ओर बढ़ रहे हैं, वे आज देश में आबादनगर शिवपुरी की दिशा में चल पड़े। कारण था वह विनम्र निवेदन जो कुछ दिन पूर्व शिवपुरी-समाज प्रमुख श्रीअजित चौधरी (अध्यक्ष चंद्रप्रभु दिगम्बरजैन मंदिर शिवपुरी) और उनके साथीगण करने आए थे। अशोकनगर एवं शिवपुरी के सैकड़ों भक्त आचार्यश्री के साथ चल रहे थे, कोई लौटने का मन न बना पा रहा था। शाम होने के पूर्व आचार्यश्री ने समीपस्थ गोशाला में विराम लिया ससंघ, तब श्रावकगण समुचित सेवा-चर्या कर वापिस हुए।

रास्ते में ही जैन समाज जतारा के सैकड़ों भक्तों ने पूज्यश्री के चरण पकड़ लिए, बोले—हमारे नगर के पंचकल्याणक के लिए आशीर्वाद और सान्निध्य प्रदान कीजिए। पूज्यश्री ने उनकी खुशी कम न होने दी, कहा—शिवपुरी आकर विस्तार से चर्चा कर लें।

विहार करते हुए रास्ते के अनेक नगरों के भक्तों को समय और वात्सल्य दिया। महिदपुर फिर नईसराय। पाठकों को यह तो मालूम ही है कि हर नगर में गुरु स्वागतार्थ द्वार-द्वार रंगोली सजाई जाती हैं, स्वागत द्वार बनाए जाते हैं,

बंदनवार बांधे जाते हैं। ये सभी उपक्रम नईसराय में भी देखने को मिले। समाज ने अनुरोध किया कि 'कल्याण मंदिर विधान को सन्निधि दीजिए। आचार्यश्री ने निराश नहीं किया समय दिया, फलतः पं. नरेश जी वारी ने विधि संभाली और भक्तों ने भक्ति।

पुनः चले तो म्याना। बड़ी बात यह कि वे अपनी प्राकृत टीका लिखने में भी समय देते रहे। फिर पहुँचे बदरवास। युवक ऐसे पिछयाए कि सुबह से शाम तक कोई न हटा। भारी उत्साह। शाम को धर्मशाला में प्रवचन।

बोरबेल का गला तर किया

चरण थे नगर कोलारस की ओर। रास्ते में शाम हो गई तो सामने निर्मित 'चिल्ड्रन-स्कूल' पुकारने लगा—हे संतवर, मेरी गोद को पवित्र करें। आप रात भर का विराम लेंगे, मगर मुझे युगान्त तक का इतिहास समृद्ध करने का क्षण मिल जाएगा। रुके वहाँ ही, साथ में सैकड़ों भक्तगण, जो अशोकनगर, शिवपुरी, कोलारस, बदरवास आदि नगरों के थे। स्कूल के संचालक अग्रवाल बंधु आचार्यश्री की आरती करने आए और बतलाने लगे—'स्कूल का बोरबेल एक माह से कार्य नहीं कर रहा था, मिस्त्री विचार करते थक गया कि पम्प गड़बड़ है या मोटर। जब समझ में न आया तो बदलने का निर्णय ले लिया। परंतु आज गजब हो गया। आपके चरण इस परिसर में पड़े तो यह बोरबेल पानी देने लगा। आपका सान्निध्य पाकर न केवल उसका, बल्कि छात्रों के साथ-साथ समस्त श्रावकबंधुओं का गला तर हो गया। आपका आगमन शुभों का प्रतीक है। चमत्कारों का सृजक है। हम लोग धन्य हुए हैं।' इतना करने के बाद अग्रवाल बंधुओं ने आचार्यश्री के पावन चरणों का प्रच्छालन किया। की फिर झूम-झूमकर भक्तिपूर्वक आरती। उन बंधुओं की भक्ति और भावनाएँ वातावरण को गरिमा प्रदान कर गईं। भोलेभाले गुरुदेव मुस्काते हुए मौन ही रहे।

अब शिवपुरी समीप थी, रास्ते में तीर्थ सेसई की वंदना की संघ ने, फिर सायंकाल राजकुमार जैन (जड़ीबूटी) के फार्महाउस पर विराम। सुबह पुनः विहार।

शिवपुरी प्रवेश

सारा शहर प्रतीक्षित था अतः बालाबाल नर नारी पूर्व से नगर सीमा पर आकर जम गए अपने प्रिय संत के स्वागतार्थ। उनके साथ वाद्ययंत्र, पताकाएँ,

वैनर, आरती के थाल, प्रक्षाल के बर्तन भी गुरुदेव की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़े ही समय के बाद संघ के दर्शन होने लगे। आगे-आगे ध्वजधारी युवक थे, उनके पीछे पू. आचार्यश्री और उनके साथ मुनिश्री विश्वतीर्थसागर, ऐलक विचिन्त्यसागर, क्षु. विशुद्धसागर, क्षु. विश्वबंधुसागर भी दिख रहे थे। संघ के साथ सैकड़ों श्रावक जुलूस के रूप में चल रहे थे। वहाँ भी जय-जयकार, यहाँ भी जय-जयकार। आकाशक्षेत्र गुंजारों से भर गया था। वह 8 नवम्बर 2011 का मंगल दिवस था। स्वागत करनेवालों में विधायक श्री माखनलाल राठौर, नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमति रिषिका अष्ठाना, पुलिस अधीक्षक श्री आर-पी- सिंह सहित अनेक पार्षद और प्रतिनिधिगण आगे आ चुके थे, पार्श्व में सैकड़ों श्रावक बंधु थे। हुई भव्य अगवानी।

आचार्यश्री पहले छतरी मंदिर के दर्शन करने रुके। फिर नगर प्रवेश। मुख्यमार्ग से होते हुए श्री चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवेश किया। समिति के लोग पुनः पाद प्रक्षालन और आरती करने लगे। समीप ही पंडाल और मंच की व्यवस्था की गई थी। मंदिर के दर्शन के बाद कार्यकर्तागण आचार्य संघ को सीधा मंच पर ले गए। पंडाल ठसाठस भरा था श्रद्धालुओं से। दर्शन के उपरान्त प्रवचनों की प्यास श्रोताओं को सता रही थी। पूज्यश्री ने पावन गिरा से वचन-झरणी बहाई तो लोग वाह-वाह कह उठे। था यह दिवस पूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण का अतः कुछ विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। धर्मसभा के पश्चात् घोषणा सुनने मिली कि प्रतिदिन सुबह 8:15 से प्रवचन पीयूष प्राप्त हो सकेगा। लोग हर्ष मनाते हुए घरों को लौटे।

श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान

पूर्व नियोजन के अनुसार कार्यकर्ताओं ने पूज्यश्री से आशीष और आज्ञा लेकर12 नवम्बर 2011 से श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान महोत्सव शुरू कर दिया। दिया सान्निध्य पूज्यश्री ने। प्रथम दिवस घट-यात्रा। पूज्यश्री की उपस्थिति से रेजीमेंट परेड भी घटयात्रा के साथ-साथ आयोजित की गई। कहें, जो सोना था, उसमें सुहागा का भी साथ हो गया। कार्यक्रम गांधीपार्क में रखा गया था, जहाँ पूर्व में पूज्यश्री के सान्निध्य में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न किया गया था।

जतारा का विशाल प्रतिनिधि मंडल यहाँ भी समय पर पूज्यश्री के समक्ष हाजिर हुआ और श्रीफल अर्पितकर पुरानी विनय दोहराई। मिला उन्हें

आशीर्वाद। कार्यक्रम के कई दिन धर्म चिंतन अध्यात्म और गुरु-दर्शन में बीत गए। 22 नवम्बर को समापन के पूर्व 'नगर में गजरथ यात्रा' निकाली गई जिसमें श्रीजी रथ पर और उनके महान-भक्त पू. आचार्यश्री अपने पैरों पर चल रहे थे ससंघ। हजारों जैनाजैन धर्मात्मा जुलूस में चल रहे थे। था वह अद्‌भुत दृश्य। कहें—एक महान आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो गया शिवपुरी में।

जन्म जयन्ती : 29वीं

समाज को मालूम था कि 15 नवम्बर को पूज्यश्री का जन्म हुआ था, अतः उनसे पूछे बगैर, विधान के मध्य ही, 15 नवम्बर को 'विमर्श जागृति-मंच' के सहयोग से, माधव चौक स्थित स्कूल प्रांगण में सम्पूर्ण नगर ने जयन्त्योत्सव मनाया दो चरणों में। प्रातः निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया गया तो मध्यान्ह बेला में 'नशामुक्ति एवं सुसंस्कार' विषय पर पूज्यश्री के मंगल प्रवचन। समापन के समय वस्त्रों और दवाओं का निःशुल्क वितरण भी किया।

कलशारोहण

याद होगा, छतरी मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव गुरुदेव के सान्निध्य में सन् 2008 में कराया गया था, अतः कार्यकर्ताओं ने उन्हीं पूज्यश्री की पावन उपस्थिति में 23 नवम्बर 2011 को भगवान शांतिनाथ मंदिरजी के शिखर पर श्री राजकुमार जैन जड़ीबूटी परिवार के सौजन्य से कलशारोहण भी सम्पन्न कराया। जय हो गुरुदेव की।

चरण जतारा की ओर

24 नवम्बर का प्रभात शिवपुरी को पीड़ा प्रदान कर रहा था, क्योंकि शिवपुरी के राजा का विहार जतारा की ओर हो पड़ा था। लोग पीछे-पीछे भाग रहे थे। पूज्यश्री मुस्काते हुए आगे बढ़ रहे थे। करैरा आदि ग्रामों को दर्शन देते हुए पूज्यश्री ने 29 नवम्बर को झांसी नगर में प्रवेश किया। भव्य आगवानी। पूज्यश्री सबसे पहले दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पहुँचे। दर्शन, वंदना। शाम तक तीर्थक्षेत्र करगुवाँजी जा पहुँचे। की भावसहित वंदना।

1 दिसम्बर को विहार। 2 दिसम्बर को ओरछा। 3 को पृथ्वीपुर पाठक समझ चुके होंगे कि जतारा जैन समाज के कर्मठ युवक विहार के समय साथ चल रहे थे और आगे-आगे व्यवस्थाएँ बना रहे थे। पृथ्वीपुर में श्री प्रकाशचंद जैन, चंद्रकुमार, कमलेश जैन आदि के साथ समाज ने अनुरोध किया तो पूज्यश्री ने

4 दिसम्बर को प्रवचन प्रसाद का वितरण भी किया। अंगुली पकड़कर हाथ पकड़ लेने की परम्परा हमारे देश में पुरातन काल से है, अतः समाज ने लगे हाथ चौबीसी निर्माण और पंचकल्याणक की चर्चा भी शुरू कर दी तब पूज्यश्री ने समझाया 'आप धैर्य धरिए, जतारा पहुँचिए। वहाँ सूत्र प्राप्त हो जावेंगे। शाम को विहार कर दिया। श्री पूरनमल जैन टी.आई. अगवानी से लेकर विदाई तक साथ रहे।

5 दिसम्बर को बम्होरी, दिगौड़ा लहरगुवाँ। सात दिसम्बर को आहारचर्या के बाद चले तो ठंड की कंपा देनेवाली हवाओं ने शाम तक चरण चूमे। पूज्यश्री के रुकने की व्यवस्था स्कूल में की गई। वहाँ भी दरवाजों और खिड़कियों की पोलों में से हवाएँ भक्तों की तरह घुस-घुस कर पूज्यश्री का पावन स्पर्श पाती रहीं। वे ठिठुरते रहे। यह भी तो है भक्ति और साधना का एक रंग।

जतारा प्रवेश

दूसरे दिन, 8 दिसम्बर 2011 को पूज्यश्री ने ग्राम बैरवार में 'प्रीतवार' का प्रवचन किया और प्रीति तथा वात्सल्य की गंगा बहाई। आहारोपरांत सामायिक। यह नगर जतारा से मात्र तीन किमी. पर है। अतः पूरा जतारा बैरवार जा पहुँचा। मध्यान्ह बेला में विहार कर पूज्यश्री ने जतारा सीमा को स्पर्श दिया।

मातृभूमि के गुरुभक्त

पाठकगण जानते हैं कि नगर जतारा पूज्यश्री की मातृभूमि है। संत होने के नाते भले ही पूज्यश्री को सभी नगरों से बराबरी का स्नेह है पर मातृभूमि के श्रावकों को अपने परमपूज्य और प्रियतर गुरुदेवता से कुछ अधिक ही लगाव है। फलतः वह 8 दिसम्बर का दिन उनके लिए दीवाली-दशहरा से कम न था। लगभग 16 वर्षों के बाद 'नगर-पुत्र राकेश' एक महान-संत के रूप में नगर जो पधारे हैं। श्रावकों ने पूरे नगर को सजाया था, बंदनवार और स्वागतद्वार यथास्थान तैयार तो किए ही गए थे अनेक सुहागिनों ने अपनी कन्याओं के साथ प्रांगणों में मंडल भी माड़े थे। उन्हें खुशी यह थी कि हमें कोई देखे या न देखे, हम 'नगर पुत्र' को अपने पास देखना चाहते हैं।

समाज प्रमुखों के साथ अनेक नेतागण भी अपना कर्तव्य निभाने हाजिर थे जिनमें म.प्र. शासन के मंत्री एवं जतारा विधायक श्री हरिशंकर जी, जिला कांग्रेसाध्यक्ष श्री नवीन साहू, पूर्व जनपद अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सिंह गौर, नगर

पालिकाध्यक्ष श्री जगदीश शरण नायक प्रमुख थे। फिर पूरा समाज, पूरा नगर। समाज ने तय कर लिया था कि ज्यों ही संघ 'कुंड पहाड़ी' पहुँचेगा तो धूमधाम से अगवानी की जावेगी। मगर सत्य तो यह भी था कि अगवानी तो जतारा के समाज ने बैरवार से ही प्रारम्भ कर दी थी जो कदम-कदम पर जारी थी। लोग सोच रहे थे—श्रीरामचंद जी 14 वर्षों में अयोध्या लौट आए थे, पर यह लाल तो 16 वर्ष के बाद आ रहा है, पता नहीं, हमें पहिचानेंगे या नहीं? अतः लोग जब पूज्यश्री के चरण स्पर्श कर नमन करते तो उठते-उठते पूछ बैठते-'महाराज मुझे पहचान लिया?' महाराज शोर-शराबे में क्या बोलते सो हँसकर आशीष दे देते। लोगों को विश्वास हो जाता कि उन्हें पहिचान गए। बैंडबाजों और जयकारों की आवाज भक्तों का समर्थन कर रही थी।

चलते-चलते, आचरण के चरण, कुंडपहाड़ी पहुँच गए। समीप ही विशाल पंडाल तैयार किया गया था। किया गया वहाँ पूज्यश्री का स्वागत, चरण-प्रक्षालन और आरती से। लोग दौड़-दौड़ कर आते और संत के निकट खड़े होकर फोटो उतरवाते। हुई भव्य अगवानी। पूज्यश्री बस स्टैंड की ओर बढ़े, फिर मुख्य मार्ग पर आ गए। विराट जन-मेदिनी उनके पीछे-पीछे चल रही थी। वृद्ध माताएँ और छोटे-बच्चे अपने घर के छत पर चढ़कर पूज्यश्री के दर्शन कर रहे थे। छत, सड़क और जुलूस का, हर आम और खास, एक झलक लख लेना चाहता था। बैनर और होर्डिंग्स कुछ अधिक ही मात्रा में लगा दिए गए थे। कहें नगर को दूल्हा सा सजाया गया था।

समूह के साथ आचार्यश्री आरामशीन रोड से होते हुए 'नीचे की गली' तक पहुँच गए। वहाँ उनके पारिवारिक सदस्य श्री सनतकुमार जी, श्रीमती भगवती देवी (पू. माँ) श्री राजेश कुमार, श्रीमती स्नेहलता, श्री चक्रेश कुमार, चि. प्रियंका एवं श्रीमती कमलादेवी आदि उपस्थित थे 'सपूत' का पाद-प्रक्षालन कर आरती करने। पूरा मोहल्ला हाजिर था उस क्षण। जैनाजैन सब। वहाँ से आगे बढ़े तो भक्तों ने आचार्यश्री को सनतकुमार के घर की ओर मोड़ने का वात्सल्यमयी संकेत किया। गए वहाँ भी। सनत जी ने सपरिवार पादप्रक्षालन और आरती का संयोग पा लिया। फिर पूज्यश्री चले गए जिनालय में। रुके उसी परिसर में ससंघ। बड़ी रात तक भक्त दरबार में जमे रहे।

दूसरे दिन, 9 दिसम्बर को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का 29वाँ मुनि-दीक्षा दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

द्वितीय आचार्य पदारोहण दिवस

भक्त शांत न रहे और 12 दिसम्बर 2011 को आचार्यश्री विमर्शसागर जी का उन्हीं के गृह-नगर में 'द्वितीय आचार्य पदारोहण दिवस' भक्तिभाव से मनाया। पूरे नगर में त्योहार का वातावरण दिख रहा था।

दोपहर में श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई। नवयुवक संघ का बैंडदल संगीत गुँजा रहा था, सैकड़ों नर-नारी हाथों में धर्मध्वज लेकर चल रहे थे। साथ में पूरा संघ। देखते ही देखते शोभायात्रा 'पांडुक शिला-मैदान' जा पहुँची। वहाँ समाज ने सुंदर मंच बनाया था। कार्यकर्ताओं ने आचार्य संघ को यथास्थान मंचासीन कराया। फिर जैसा हर जगह होता है—मंगलाचरण, चित्रअनावरण, दीप प्रज्ज्वलन, पाद-प्रक्षालन, शास्त्र भेंट आदि की परंपरा पूर्ण करते हुए भक्तों ने गुरुचरणों में श्रीफल अर्पित किए। अपने-अपने शब्दों में विनयांजलि के मधुर वाक्य प्रकट किए। इस अवसर पर 'विमर्श-जागृति मंच-भिंड' द्वारा जतारा समाज को नवीन सिंहासन भेंट किया गया। फिर 'विमर्श जागृति मंच अशोकनगर' के सदस्यों के साथ सभी ने पूज्यश्री की आरती की। सुकोमल कन्या चि. आँचल जैन (सॉफ्टवेयर इंजीनियर) ने अपने माता-पिता और पारिवारिक जन से आज्ञा लेकर पूज्यश्री से ब्रह्मचर्य का व्रत ग्रहण किया और संघ में प्रवेश पाया।

जब भक्तों के उद्बोधन पूर्ण हो गए तो ऐलक विचिन्त्यसागर, ब्र. श्वेता दीदी, ब्र. नमिता दीदी ने विनयपूर्वक उद्बोधन दिए। पूर्व तैयारी के अनुसार श्री प्रकाशचंद जैन एडवोकेट के निर्देशन में पूज्यश्री से संबंधित 'लघु नाटिका' प्रस्तुत की गई। हुए फिर पूज्यश्री के प्रवचन, जिनके लिए 'जतारा के कान' वर्षों से प्रतीक्षारत थे। पूज्यश्री ने अपने उद्बोधन में अपने गुरु के उपकारों का स्मरण किया फिर आचार्य पद की गरिमा के संरक्षण में मार्मिक प्रवचन किए। अध्यक्ष श्री सुनील बंसल सहित अन्य भक्तों के उद्बोधन भी प्रभावक रहे।

जतारा में कार्यक्रमों की बाढ़ सी आ गई थी। 14 दिसंबर को भक्तों ने पूज्यश्री का 'मुनिदीक्षा दिवस' मनाते हुए 'आचार्य विमर्शसागर विधान' भक्तिपूर्वक संपन्न किया।

शीतकालीन वाचना : जतारा

16 दिसम्बर को पूज्यश्री ने श्री रयणसार ग्रंथ की वाचना का शुभारंभ

किया। उसके पूर्व, मंगल-कलश स्थापना का सौभाग्य श्री महेश कुमार व्या-परिवार को प्राप्त हुआ। वाचना के साथ-साथ कार्य-कर्तागण पूज्यश्री से मार्गदर्शन लेकर पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियाँ भी करते जा रहे थे।

सभागार का शिलान्यास

7 जनवरी को नागपुर से आये प्रतिष्ठाचार्य ब्र. ऋषभ भैया ने पूज्यश्री के सानिध्य में पंचकल्याणक की वेदी का शिलान्यास कराया। उसी दिन कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर 'आचार्य विमर्शसागर सभागार' का भी शिलान्यास किया गया।

प्रत्यय और उपसर्ग का खुलासा

पूज्यश्री प्राकृत भाषा की कक्षा ले रहे थे कुछ दिनों से। प्रसंग 11 जनवरी 2012 का है, जब वे व्याकरण में प्रयोग किए जानेवाले प्रत्यय और उपसर्ग की उपयोगिता समझा रहे थे। तभी अचानक चिंतन में डूब गए। जब मिनिट-2 मिनट का समय बीत गया तब सभी शिष्यों ने विनयपूर्वक पूछा–'गुरुदेव आप पढ़ाते-पढाते क्यों रुक गए? जरूर कोई शुभ चिंतन चल रहा होगा?' तब आचार्यश्री मुस्कुराते हुए बोले-'शिष्यों को गुरु के साथ सदा प्रत्यय बनकर चलना चाहिए, उपसर्ग बनकर नहीं। यदि कोई उपसर्ग आ जाए तो शिष्यगण प्रत्यय न बने रहें, उपसर्ग बनकर सामने आ जावें। पूज्यश्री के शिष्य विद्वान हैं वे समझ गए कि शब्द के आगे जुड़नेवाला उपसर्ग होता है और शब्द के पीछे जुड़नेवाला प्रत्यय होता है। अतः पूज्यश्री से विनयपूर्वक बोले–'गुरुदेव आप धन्य हैं, पढ़ाते-पढ़ाते ही आपने दो बातें समझा दीं। व्याकरण के प्रत्यय और उपसर्ग तथा शिष्यों के कर्तव्यबोध को जाहिर करनेवाले प्रत्यय और उपसर्ग। वे आगे बोले-'गुरुदेव हम लोग हमेशा प्रत्यय बनकर रहें किन्तु उपसर्ग बनने का क्षण कभी न आए।

पूज्यश्री पहले दिन से ही 'जीवन है पानी की बूँद' नामक अपना प्रसिद्ध गीत शाम को प्रतिक्रमण के पश्चात् अवश्य सुनाते थे। फलतः जतारा के जैनियों में ही नहीं, हिन्दू, मुस्लिम और सिक्ख भाइयों में भी लोकप्रिय हो गया। लोग अपने घरों में वह गीत गुनगुनाते रहते थे। कतिपय उत्साही लोगों ने भजन की रिंगटोन बनाकर मोबाइल में सक्रिय कर दी अतः जब किसी का फोन आता तो भजन के बोल झरने लगते। यदि पूरे देश पर नजर डालें तो पूज्यश्री का यह गीत 'देवता' के रूप में हर जाति के लोगों के हृदय में स्थापित हो गया है। जतारा वाले भी पीछे नहीं रहे, विहारी जी के मंदिर में प्रतिदिन प्रभात बेला

में यह गीत गुंजित होने लगा।

जतारा का हर प्रबुद्ध व्यक्ति पूज्यश्री से चर्चा करना चाहता था। अतः हर पल लोगों की भीड़ लगी रहती थी। ज्ञान-चर्चा के साथ-साथ पूज्यश्री का सामीप्य भी मिल जाता था जिससे हार्दिक आनंद बढ़ जाता था।

मधुर मिलन गुरु भाइयों का

आचार्यश्री विशुद्धसागर जी ससघ रानीपुर जा रहे थे, रास्ते में जतारा था अतः पूर्व सूचना के अनुसार आचार्य विमर्शसागर जी संघ और समाज के साथ अपने अग्रज गुरुभाई की भव्य अगवानी करने नगर से 2 कि.मी. दूर जा पहुँचे। हुआ वात्सल्य मिलन दोनों संघों का। भक्तों ने पाद प्रक्षालन और आरती की। आचार्य विशुद्धसागर जी के साथ मुनिवर विश्वलोचनसागर एवं मुनिवर विश्वरत्नसागर जी भी थे। शोभायात्रा के साथ नगर प्रवेश कराया गया। रात्रि विराम के कारण दोनों संघ साथ-साथ रहे, फिर दूसरे दिन आहारचर्या के पश्चात् आचार्य विशुद्धसागर जी ने रानीपुर में आसन्न पंचकल्याणक के लिए विहार कर दिया।

गजरथ महोत्सव जतारा

पूज्यश्री के आशीर्वाद से जतारा के भक्तों ने महोत्सव की सभी तैयारियाँ कर ली थीं। अतः 28 जनवरी 2012 से 3 फरवरी तक 'पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रय-गजरथ महोत्सव' पूज्यश्री के सानिध्य में संपन्न किया गया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने में अनेक हाथ सक्रिय रहे थे, जिनमें टी.आई. रविन्द्र गौतम, मध्यप्रदेश शासन के मंत्री हरिशंकर जी, बुंदेलखंड के गणमान्य सामाजिक कार्यकर्ता कपूरचंद घुवारा डॉ. के. एल. जैन आदि प्रमुख थे। उक्त सभी लोगों ने आचार्यश्री के दर्शनकर आशीर्वाद पाया। महोत्सव की नींव में जो कर्मठ हस्ताक्षर दिन-रात कार्य करते रहे, उनमें समारोह समिति के अध्यक्ष राजीव जैन, सुनील बंसल, रतनचंद धनगौल, अजित माते, विनोद मोदी, पवन मोदी, विनोद ठेकेदार, अनिल जैन, देवेन्द्र बुखारिया, सुभाषचंद एडवोकेट, स्वतंत्र सिंघई, राजेश माते, देवेन्द्र सिंघई, रवि भोपाली, सतीश जैन, सोनू सिंघई, प्रकाश मुन्नू, रमेश रामगढ़, महेश व्या, वीरेन्द्र ठेकेदार आदि हैं, उन्होंने आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया।

प्रथम दिवस समारोह का ध्वजारोहण श्री संतोष मोदी एवं मंडल उद्घाटन पूज्य पिता श्रावकरत्न श्री सनतकुमार जी जैन ने किया, भगवान के माता पिता

बनने का सौभाग्य श्री महेश व्या एवं श्रीमती मनोरमा व्या को प्राप्त हुआ, वे आचार्यश्री के पारिवारिक जनों के रिश्तेदार भी हैं। सौधर्म इन्द्र का सौभाग्य श्री राजेश माते को मिला, जो आचार्यश्री के परम भक्त माने जाते हैं।

विशेषता जो प्रेरक है

विगत एक सदी के इतिहास में प्रतिष्ठापन्न प्रतिमाओं की प्रशस्ति संस्कृत या हिन्दी में लिखी जाती रही है, किन्तु समाज ने प्राकृत भाषा के विद्वान आचार्य विमर्शसागर जी को अपने समीप देखते हुए प्रतिमाओं पर 'प्राकृत भाषा' लिखवाई। प्रथम दिवस के कार्यक्रम का श्रीगणेश शोभायात्रा के साथ किया गया, साथ में ध्वजारोहण हेतु रेजीमेंट परेड निकाली गई। शोभा अद्‌भुत थी। दृश्य जतारावासियों को मोहक स्वप्न सा लग रहा था। जब शोभायात्रा कार्यक्रम स्थल पर पहुँची तो ध्वजारोहण परेड का आयोजन खिल उठा, किया फिर ध्वजारोहण।

प्रतिदिन विशाल जनसैलाब उपस्थित होता था। जन्मकल्याणक के दिवस दोपहर में कार्यकर्ताओं ने 'आध्यात्मिक कवि सम्मेलन' रखा, जिसमें श्रोताओं ने आचार्यश्री से अनेक रचनाएँ सुनने का सुअवसर पाया। उसी क्रम में श्री कपूरचंद बंसल द्वारा आचार्यश्री के जीवन पर लिखित पुस्तक 'जतारा का ध्रुवतारा' का विमोचन कराया गया। बंसल जी समाज के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

दूसरे दिन 1 फरवरी 2012 को दीक्षाकल्याणक के पावन अवसर पर संघस्थ ब्र. नमिता दीदी एवं ब्र. श्वेता दीदी ने ब्राह्मी और सुंदरी का रूप धारण कर आचार्यश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। उसी दिन उनके परिधान परिवर्तित किए गए।

अंतिम दिन, 3 फरवरी को, मोक्ष-कल्याणक महोत्सव मनाया गया और मध्यान्ह बेला में 'त्रय गजरथ महोत्सव' का भव्य आयोजन निर्विघ्न संपन्न हुआ। पच्चीसों ग्रामों से हजारों जैन और अजैन बंधु सपरिवार फेरी देखने पहुँचे थे। पुलिस ने उचित व्यवस्था की फलतः गजरथ स्थल के चारों ओर लाखों दर्शक शांति से महोत्सव देख सके। वे देखने आए थे गजरथ, किन्तु ललक थी अपने 'जतारा के संत' आचार्यश्री के दर्शनों की। सभी दर्शक धन्य-धन्य थे। जिन भाइयों को धरती पर से दृश्य नहीं दिख रहे थे वे वृक्षों का सहारा ले रहे थे।

समापन की बेला में, जतारा के टी.आई. रवीन्द्र गौतम ने सफल व्यवस्था

देने के बाद, आचार्यश्री के चरण स्पर्श किए फिर बताने लगे—जब आप आए थे तब मुझे विश्वास नहीं था कि इतना विशाल जनसैलाब उमड़ेगा। मुझे आश्चर्य हो रहा है क्योंकि मैंने अन्य वरिष्ठ आचार्यों के पंचकल्याणकों में भी दल-बल सहित सेवाएँ दी हैं किन्तु वहाँ ऐसी बड़ी भीड़ और शांति नहीं देखी थी। जिस दिन से आप पधारे हैं, उस दिन से आज तक कोई रपट लिखाने नहीं आया है। आश्चर्य यह भी है कि लोग अपना घर ताले के जिम्मे करके यहाँ आ गए किन्तु घरों में चोरी नहीं हुई, यह सब आपका आशीर्वाद है।

आचार्यपुंगव अलंकरण

समापन के क्षण 'सुंदर' से 'अतिसुंदर' करते हुए समिति ने आचार्यश्री को 'आचार्य पुंगव' उपाधि से विभूषित किया। समिति के अध्यक्ष महोदय ने गुरु के साथ-साथ भक्तों का भी आभार ज्ञापित किया।

पृथ्वीपुत्र के चरण पृथ्वीपुर की ओर

आचार्यश्री को तो रोज-रोज विहार करते हुए साधना करनी है अतः जतारा से भी विहार कर दिया। चूँकि कुछ दिन पूर्व पृथ्वीपुर के प्रकाशचंद जैन (अध्यक्ष जैन समाज), चंद्रप्रकाश जैन, कल्लू भैया आदि वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने पूज्यश्री से पृथ्वीपुर पधारने और श्री सिद्धचक्र विधान को सानिध्य देने हेतु विनय की थी अतः वे उसी दिशा में थे। जतारा के लोग लगातार अनुरोध कर रहे थे रुकने का। एक भक्त भक्ति-आवेश में कह पड़ा—गुरुदेव 16 साल बाद आए हो तो कम से कम 16 सप्ताह तो रुको। गुरुजी मुस्कुराकर बोले—हो गए 16 सप्ताह। तब भक्त ने उत्तर दिया—महाराज अभी मात्र 8 सप्ताह हुए हैं। जब जतारा वालों ने देखा कि हमारे कहने से महाराज नहीं रुक रहे हैं तो वे उनके लौकिक शिक्षागुरु को बुला लाए और बोले—आप ही रोको, शायद आपकी बात मान लें। 'शिक्षागुरु ने जगत्‌गुरु के समक्ष हाथ जोड़कर निवेदन किया किन्तु मुस्कानों में निवेदन पुष्प सा झड़ गया। तभी समाज ने शिक्षागुरु का भावभीना सम्मान किया।

समाज ने गुरुदेव को बहुत विलमाया, फिर भी वे उसी दिन (7 फरवरी 2012) को शाम के वक्त 4:30 बजे जतारा से दूर हो गए। लोग अश्रु पोंछते रह गए। चरण तीन दिन तक सक्रिय रहे, सगरवारा, चंदेरा, लिधौरा एवं मढ़िया ग्राम के भक्तों को समय देते हुए 10 फरवरी को पृथ्वीपुर की सीमा पर पहुँचे। हुई भव्य अगवानी।

पूर्व योजनानुसार 12 फरवरी से 20 फरवरी 2012 तक पूज्यश्री के सानिध्य में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान' ब्र. ऋषभ भैया नागपुर के साथ संपन्न किया गया। नगर में हुई धर्म प्रभावना से हर घर दमक उठा। विधान चलते हुए दीदियों के कुछ ऐसे संयोग बने कि 14 फरवरी को ब्र. श्वेता दीदी एवं ब्र. नमिता दीदी तथा 15 फरवरी को ब्र. रीना दीदी एवं ब्र. मीरा दीदी ने पूज्यश्री से 7 प्रतिमा के व्रत ग्रहण किए।

संत समागम

ऐसे संयोग हर नगर को नहीं मिलते जैसे पृथ्वीपुर को मिले। पूज्यश्री तो ससंघ विराजित ही थे, 16 फरवरी को आर्यिका विशाश्री माताजी का संघ सहित आगमन हुआ, तो 20 फरवरी को आचार्यश्री विभवसागर जी ससंघ का। दोनों संघों की श्रेष्ठ अगवानी की गई। संत-मिलन के बाद, आगत-संघ रुके नहीं, यथा समय अपने-अपने स्थानों की ओर विहार कर गए जिनका चित्रण आगे है।

आत्मा से मिल रहा हूँ

पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी समयसार का स्वाध्याय कर रहे थे, तभी एक सज्जन फुर्ती दिखाते हुए आए, महाराज को नमन किया फिर बोले-महाराजश्री! यहाँ तहसीलदार साहब आए हैं, आपसे मिलना चाहते हैं, फिर उन्हें दूर पर जाना है। आचार्यश्री ने कहा—अभी तो मैं आत्मा से मिल रहा हूँ। उनका उत्तर सुनकर वह सज्जन अचकचा गए किन्तु कक्षा में उपस्थित संघ के सदस्य और श्रावकगण खुश हो गए, उन्हें जीवन में पहली बार 'तत्व वाक्य' सुनने को मिला था। स्वाध्याय चलता रहा, तहसीलदार साहब कक्ष में आ गए और नमन कर बैठ गए, स्वाध्याय का रस लेने लगे।

कुछ देर बाद जब स्वाध्याय पूर्ण हो गया तो तहसीलदार विनयपूर्वक बोले—'आचार्यश्री ! आपकी आध्यात्मिक चर्या सुनकर बहुत आनंद आया, मैं धन्य हो गया।' आचार्यश्री मुस्काते हुए सवात्सल्य बोले-'यह तो आत्मा का आनंद है। इसे जो समझता है उसे आनंद ही आता है'। दर्शन कर तहसीलदार वापस हो गए।

कल तक सोना, आज सूना

आचार्य विभवसागर एवं आचार्य विमर्शसागर अपने संघों सहित दूसरे दिन ही विहार कर गए। 20 फरवरी को भरा-भरा दिखनेवाला पृथ्वीपुर 21 फरवरी को खाली हो गया। आचार्य विमर्शसागर जी 22 फरवरी को बरुआसागर पहुँचे, वहाँ विराजित मुनिश्री विनिश्चल सागर जी ने समाज के साथ भव्य अगवानी की। आहारों के समय आचार्यश्री की विधि नहीं मिली, अतः अंतराय हो गया। भक्तगण पश्चाताप करते रहे। 23 फरवरी को करगुवाँ जी पहुँचे वहाँ भी कर्मों ने आचार्यश्री को घेर लिया, फलतः प्रारंभ में ही वमन हो गया, पूरा आहार न हो सका। श्रावकों को आहार का पुण्य 24 फरवरी को मिला। फिर उसी दिन पूज्यश्री ने वहाँ से विहारकर झाँसी होते हुए दतिया की ओर कदम बढ़ाए। 26 फरवरी को दतिया का जनमानस धन्य हो गया पूज्यश्री को पाकर।

सोनागिर प्रवेश

3 संघ साथ-साथ चल रहे थे अतः तीनों ने 27 फरवरी 2012 को सैकड़ों भक्तों के साथ सिद्धक्षेत्र सोनागिर में प्रवेश किया। वहाँ उनके गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी का सत्संग मिला, शिष्यों ने गुरुचरणों में माथे टेक दिए।

क्षेत्र पर पंचकल्याणक समारोह चल रहा था जिसे आचार्य विरागसागर जी का सानिध्य प्राप्त हो रहा था। दीक्षाकल्याणक के पावन दिवस पर कुछ भव्य आत्माओं को दीक्षाएँ भी प्रदान की गईं। उस समय आचार्यश्री मेरुभूषण जी मुनि अमितसागर एवं आर्यिका श्री ज्ञानमति जी भी उपस्थित थे।

क्षेत्र पर आगरा-समाज के बंधु भी आए थे, अतः उन्होंने आचार्य विमर्शसागर जी से आगरा में महावीर जयंती मनाने का अनुरोध किया। आचार्यश्री ने अपने गुरुदेव से अनुमति ली, फिर स्वीकृति दी।

ग्वालियर विहार का संयोग

आचार्य विरागसागर जी को ग्वालियर के लिए विहार करना था, अतः आचार्य विमर्शसागर भी ससंघ उनके साथ हो गए और गुरु सानिध्य पाते रहे। संतों ने 7 मार्च 2012 को प्रातः कालीन बेला में भव्य आगवानी के बाद, प्रवेश किया। मुनिश्री विहर्षसागर वहाँ आचार्यों से मिले। दर्शन, समाचारी। बाद में समारोह स्थल पर दोनों के प्रवचन भी हुए समाज ने मुनिवर का अवतरण दिवस भी मनाया।

8 मार्च को विजयनगर (राजस्थान) से भक्तों की बस आई जिसमें शाह चाँदमल जी ने समस्त सदस्यों सहित आचार्य विमर्शसागर जी से विजयनगर में वर्षायोग करने की प्रार्थना की। बात उन्होंने गुरुदेव को बतलाई तो उन्होंने संकेत किया कि अभी काफी समय है, ये लोग जयपुर प्रवास के समय चर्चा कर लें।

होली के रंग - मुनियों के संग

उसी दिन, 8 मार्च को होलिकोत्सव भी था, अतः भक्तों की विनय पर दोपहर में कार्यक्रम रखा गया–'होली के रंग : मुनियों के संग'। बहुत सीधी सी बात है कि होली भले ही रंगीन कही जाती हो किन्तु मुनियों का एक ही रंग होता है–'स्वाध्याय'। अतः श्रावकों के साथ प्रवचन के माध्यम से स्वाध्याय का रंग उलीचा। वे प्रवचन का रंग बिखराने तत्पर हुए तो श्रावकगण अनुरोध कर बैठे–'पूज्यश्री हमें तरबतर करना है तो अपनी कविता सुनाइए-जीवन है पानी की बूँद। वह आपके लिए विचार प्रधान 'काव्य' है, तो हमारे लिए चिंतन प्रधान 'भजन'। प्रवचन भी कीजिए और अपने मधुर कंठ से भजन भी सुनाइए। पूज्यश्री ने उन दीवाने भक्तों की इच्छा पूर्ण कर दी। किया दूसरे दिन विहार। चरण मुरैना नगर की ओर।

मुरैना प्रवेश

आचार्यश्री विहार करते हुए क्रमशः मुरैना की ओर बढ़ रहे थे। चौथे दिन 17 मार्च को रास्ते में मुनि विनिश्चयसागर जी ने श्रेष्ठ प्रयास कर आचार्यश्री से समाचारी की। 18 मार्च को आचार्य संघ मुरैना की धरती पर था। यह वह धरती है जिसकी कुक्षि से वर्तमान आचार्यश्री ज्ञानसागर जी का उद्‌भव हुआ है। विहार निरंतर था, अतः 21 मार्च को मुरैना से विहार कर दिया। धौलपुर पहुँचे, 22 मार्च को आचार्य विमर्शसागर जी ने अपने गुरुदेव आचार्य विरागसागर जी को भावभीनी विदाई दी, वे ससंघ महावीर जी क्षेत्र के लिए और आचार्य विमर्शसागर जी ससंघ आगरा के लिए विहार कर गए।

आगरा प्रवेश, 2012

25 मार्च को मधुनगर होते हुए आगरा के छीपीटोला स्थित मंदिर जी में प्रवेश किया। विशाल जनसमूह, मीलों पहले से, साथ चल रहा था। छीपीटोला के भक्त मुनिचर्या के लिए प्रसिद्ध हैं, अतः सुबह-शाम-दोपहर भक्तों की

उपस्थिति बनी रहती थी। यहाँ के भक्त 'भक्तामर मंडल' द्वारा भक्ति-संगीत की ध्वनि के साथ वैयावृत्ति करते थे। पूर्व योजनानुसार गुरु का सानिध्य लेकर भक्तों ने 5 अप्रैल को 'महावीर जयंती महोत्सव' का शुभारंभ करते हुए विशाल शोभायात्रा निकाली जो हरिपर्वत स्थित मंदिर तक गई। राह लबी थी मगर भक्तों के उत्साह के समक्ष वह छोटी पड़ गई थी। श्रीजी को स्वर्ण गजरथ पर विराजमान कर भव्य झाँकी बनाई थी। गली-गली आरती। पहले भगवान की, फिर आचार्यश्री की। स्थिति यह हुई कि जो जुलूस सुबह 9 बजे प्रारंभ हुआ था वह शाम को 3.30 बजे हरिपर्वत पहुँच सका था। वहाँ प्रसिद्ध सामाजिक-कार्यकर्ता श्री स्वरूपचंद मार्सस, भोलानाथ जी, प्रदीप कुमार जी, पी.एन.सी, निरंजन लाल बैनाड़ा, मदनलाल बैनाड़ा, मनोज जैन, राजकुमार गोदाम, विसंभर दयाल, वीरेन्द्र शास्त्री, मुकेश लले आदि लोग आचार्यश्री की अगवानी करते हुए उन्हें मंच पर ले गए। जयंती से संबंधित अभिषेक और पूजन के बाद, डॉ. अनुपम जैन इंदौर का 'जैन-परिषद् आगरा' द्वारा सम्मान किया गया। फिर भक्तों की पुकार पर हुए आचार्यश्री के प्रवचन। सभी जन सराहना करते हुए धन्य-धन्य कह उठे। यहाँ ही आचार्य सुंदरसागर जी से पूज्यश्री का मिलन हुआ।

इतने विशाल कार्यक्रम के पश्चात् पूज्यश्री रुके नहीं, दूसरे दिन ही विहार कर दिया।

जयपुर विहार, 2012

6 अप्रैल को पूज्यश्री ने हरिपर्वत से विहार कर दिया और रास्ते के नगरों को धन्य करने लगे। 9 अप्रैल को संघ भरतपुर पहुँचा। वहाँ स्थित दिल्ली-पब्लिक स्कूल के एक कक्ष में विराम लिया। लोगों ने भव्य आगवानी कर हर्ष मनाया। स्कूल के प्राचार्य श्री एस.पी. दुबे ने आचार्यश्री को नमन कर अपनी आस्था प्रगट की। ज्यों ही संघ स्कूल के मुख्य द्वार पर पहुँचा तो मार्ग के दोनों ओर कतार में खड़े सैकड़ों छात्रों ने मधुर स्वर में स्वागत गीता गाया। छात्रों के एक दल ने बैंड वादन किया और संघ को कक्ष तक पहुँचाया। परिसर में अनेक जगह ताजा पुष्पों की मनोहर रंगोलियाँ बनाई गई थीं। फिर प्राचार्य जी सहित पूरे स्टाफ ने पूज्यश्री का पाद प्रक्षालन कर आरती उतारी और अपना सौभाग्य माना।

जब पूज्यश्री बैठे थे तो प्राचार्य जी पुनः उनके पास आए और बोले कि इस स्कूल के संचालक जी (मालिक) दिल्ली में रहते हैं। जब उन्हें हमने बतलाया कि आचार्यश्री विमर्शसागर जी पधार रहे हैं तो उन्होंने हमारा उत्साह बढ़ाया और

कहा–'भव्यता के साथ कार्य कीजिए'। आगरा के अनेक सामाजिक कार्यकर्ता वहाँ उपस्थित थे। समय का लाभ लेते हुए योग्य प्राचार्य श्री दुबे ने पूज्यश्री के सानिध्य में श्री विसंभर दयाल (अध्यक्ष छीपीटोला) से नवनिर्मित भवन का उद्घाटन कराया। छात्रों ने आचार्यश्री का जयघोष करते हुए हर्ष से तालियाँ बजायीं।

दोपहर में दुबे जी पुनः आचार्यश्री के पास पहुँचे, और निवेदन किया कि मैंने संचालक जी से फोन पर वार्ता कर ली है, हम जयपुर तक वाहन व्यवस्था करना चाहते हैं। तब आचार्यश्री ने स्नेहपूर्वक समझाया-हम लोगों को इस सब की आवश्यकता नहीं है जयपुर में हमारे गुरुदेव विराजमान हैं, हमें तो उन्हीं के पास रुकना है। आप संचालक जी को मेरा आशीर्वाद कह दीजिए।

मिथ्यावादी से

पूज्यश्री 13 अप्रैल को दौसा नगर में थे, पुनः विहार। पहुँचे ग्राम पाड़ली। यह एन.एच. 76 पर है। ब्रह्मकुमारी आश्रम वाले कुछ बंधु दर्शन करने सामने आ गए। उनमें से एक मास्टर जी बोले–आप पूर्ण वयस्क हैं, फिर भी नग्न रहते हैं, लाज नहीं आती? आचार्यश्री को जिस 'भटकी हुई आत्मा' की तलाश थी, शायद वह सामने आ गई थी, अतः सवात्सल्य बोले-बंधु, यह यथाजात स्वरूप है, जन्म से सभी नंगे आते हैं, जिन लोगों में विकारी भाव आ जाते हैं वे वस्त्र का आवरण तन पर लपेट लेते हैं मगर जो अविकारी, उदासीन और वैरागी होते हैं उन्हें वस्त्र पहनने की भावना नहीं होती। शिशु कभी स्वेच्छा से वस्त्र नहीं माँगता, न पहनता, क्योंकि उसमें वासना का विकार जन्म नहीं ले पाता। ऐसे शिशु का आभामंडल हम सभी को संदेश देता है–

हिंसा, झूठ, 'कुशील', परिग्रह, चोरी मत यह पाप करो,
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।

मास्टर साहब को कुछ कुछ समझ में आ गया, पर बहुत कुछ समझ में नहीं आया सो आगे पूछने लगे–नग्न स्वरूप देखकर माता-बहिनों को आपत्ति नहीं होती? तब आचार्यश्री एक महान पिता की तरह, उस तुच्छ व्यक्ति को ज्ञानपूर्वक समझाने लगे–भाई, गांधारी का पुत्र जब युद्ध में हारनेवाला था, तब माँ ने अपने पुण्य से पुत्र का तन वज्र सा बना देने के लिए उसे नग्न होकर आने को कहा था। इससे सिद्ध होता है कि पुत्र शिशु हो या युवक माँ उसमें और उसके नग्नत्व में विकार नहीं देखती। उसके विकास की कामना करती है, बस।

पच्चीसों भक्त साथ थे ही, अतः वे मास्टर के वार्तालाप पर हँसते हुए पूछने लगे–'आया कुछ समझ में'? आचार्यश्री तो साक्षात ज्ञान दिवाकर हैं, तेरे शुभ का उदय आया है इसलिए आज तुझे दर्शन का निमित्त भी मिल गया।' मास्टर की अकड़ ढीली पड़ गई। वह अपना अज्ञान छुपाता हुआ, आचार्यश्री से विनयपूर्वक पूछने लगा–गुरुदेव नग्नत्व और ब्रह्मचर्य पर तनिक और प्रकाश डालिए ताकि मेरा मन प्रकाशित हो सके। क्योंकि मैं अभी तक इतना जान पाया हूँ कि आत्मा का स्वभाव ब्रह्मचर्य है, इसलिए आत्मा का ध्यान करना चाहिए, नग्न रहने से ब्रह्मचर्य की उपासना नहीं होती। जगत के सभी पशु-पक्षी नग्न हैं, तो क्या वे ब्रह्मचारी माने जायेंगे? इसलिए हम ब्रह्मचर्य का स्थान आत्मा में पाते हैं, यही कारण है कि हमारे आश्रम में सैकड़ों पति-पत्नि ब्रह्म की उपासना करते हैं और रात्रि में एक ही पलंग पर सोते हैं। वहाँ ब्रह्मचर्य समझ में आता है।

आचार्यश्री समझ गए कि मास्टर जी की आत्मा अनेकों जन्मों से अंधकार में है अतः इसे प्रकाश में लाना सहज नहीं है, फिर भी मुझे अपना कर्तव्य तो करना ही चाहिए, भूले को राह बतला देना चाहिए, अतः वे मास्टर से बोले-'सुनिए! जब तक स्त्री त्याग' रूप व्यवहार की उपलब्धि नहीं होती, तब तक आत्मा के स्वभाव रूप ब्रह्मचर्य की प्राप्ति नहीं होती। जब आप वस्त्रों में निर्विकार रहते हैं तो वस्त्रों की आवश्यकता क्यों? एक दिगम्बर संत यहाँ, सड़क पर नग्न खड़े रहने की दक्षता रखता है, क्या आप कपड़े उतारकर एक घंटा सड़क पर चल सकते हैं? वैसी स्थिति में ही आपकी पत्नी सामने आ जावे फिर उसके और आपके हाव-भाव कैसे होंगे, जानते हो? वह आँखें बंद कर लेगी, आप हाथ से कुछ छुपाने लग जावेंगे। बस यही तो है वासना रूपी विकार। मगर जब आप आत्मा से ब्रह्मचर्य अपना लेंगे तो फिर आपको नग्नत्व अटपटा नहीं लगेगा।

आचार्यश्री की वार्ता सुन सभी भक्त वाह-वाह कह उठे। युवकों ने तालियाँ बजा दीं। मास्टर साब को ज्ञान की किरण मिल गई अतः आगे कुछ न बोल कर, आचार्यश्री के चरणों में नत-मस्तक हो गए, फिर बोले-हे गुरुदेव, आपने मेरा अंधकार समाप्त कर दिया। मुझे क्षमा कीजिए। (वार्ता समाप्त विहार शुरू)।

चूलगिरि प्रवेश

जयपुर से पहले तीर्थक्षेत्र चूलगिरि अवस्थित है, अतः पूज्यश्री ससंघ 14 अप्रैल को चूलगिरि के दर्शन कर सके। संयोग देखिए कि 14 अप्रैल को ही आचार्य विरागसागर जी जयपुर स्थित जग्गा की बावड़ी पहुँचे। अतः आचार्य विमर्शसागर जी उनके दर्शन करने आचार्य विशुद्धसागर जी आचार्य विभव सागर जी, आर्यिका विशाश्री माताजी के साथ गए। सबने किए गुरुदेव के दर्शन।

जयपुर के क्षण

यहाँ एकबात की चर्चा हो रही कि आचार्यश्री विमर्शसागर जी 240 किमी. की दूरी मात्र 8 दिन में तय कर आए हैं। भक्त बतलाते हैं कि वे प्रतिदिन 30 किमी. चले अपने गुरु के दर्शन करने के लिए। तदनुकूल सफल भी रहे और ठीक 15 अप्रैल को 'भवानी निकेतन' के ऐतिहासिक जयन्ती समारोह में अपनी सहभागिता दी। इतना ही नहीं, 17 अप्रैल को अपने गुरुदेव से देवागम स्तोत्र का अध्ययन भी प्राप्त किया सभी आगत आचार्यों के साथ। उसी क्रम में उन्होंने अपने गुरुदेव को 'युग प्रमुख श्रमणाचार्य' अलंकरण से अलंकृत भी किया।

विजयनगर समाज के पुनर्निवेदन पर आचार्य विरागसागर जी ने अपने प्रिय शिष्य आचार्य विमर्शसागर जी को वहाँ जाने का आशीष दिया। गर्मी की भीषण तपन के चलते गुरुदेव ने सभी संघों को विहार करने की अनुमति दे दी, फलतः सभी संघ 8 मई को अपने-अपने गंतव्य की ओर बढ़ गए। आचार्य विमर्शसागर जी विजयनगर की ओर थे, जनकपुरी होते हुए कीर्तिनगर को पाँच दिन दिए। पुनः 13 मई को विहार। रास्ते में दिगम्बर जैन मंदिर बड़ के बालाजी के दर्शन किए 14 मई को। इसी परिसर में कुछ दिन पूर्व महान गणिनी, आर्यिकारत्न श्री 105 सुपार्श्वमति माताजी की समाधि हुई थी। संयोग से उनकी शिष्या आर्यिका गरिमामति माताजी, गम्भीरमति माताजी वहाँ ही विराजमान थीं, की उन्होंने आचार्यश्री से समाचारी।

मंदिर के कार्य का अवलोकन कराया श्री भागचंद चूड़ीवाल ने, तब आचार्यश्री ने संकेत दिया कि मानस्तंभ का निर्माण भी अवश्य कराया जावे। आचार्यश्री ने दो दिन आहार का समय इस क्षेत्र को दिया किन्तु दोनों दिन अंतराय कर्म सामने आया। अस्तु। फिर भी आचार्यश्री ने विहार कर दिया, वह 15 मई 2012 की शाम थी। कहने को शाम, किन्तु हवाएँ आग उगल रही थीं।

नग्न दिगम्बर तन पर उपसर्ग ढा रही थीं। इस बीच श्री अशोक पाटनी भी आचार्यश्री के दर्शन कर धन्य हुए।

मौजमाबाद की मौज

संत कहीं भी रहें, मौज में (आनंद में) रहते हैं। आनंद उनका स्वभाव हो जाता है। महा गर्मी हो या भीषण ठंड, उन्हें मौज में ही देखा जाता है। सो मौजमाबाद में भी वह मौज बना रहा। है यह अतिशय क्षेत्र, आचार्यश्री ने दर्शन किए। वह 18 मई का दिन था। यहाँ ही कोटा निवासी श्री पदम बज ने आचार्यश्री द्वारा रचित -श्री भक्तामर विधान' का भव्य आयोजन किया। गुरुदेव ने 7 दिनों का समय दिया, की भारी प्रभावना। हर जन का मन मौज समझ सका। क्षेत्र पर उपाध्याय श्री ऊर्जयन्तसागर जी भी आए और आचार्यश्री की चरण वंदना की। मगर आचार्यश्री ने 24 मई को विहार कर दिया। संयोग से मुनि देवेन्द्रसागर जी रास्ते में मिले, हुई समाचारी, आचार्य वंदना।

चरण अजमेर शहर की ओर

30 मई को गुरु चरण किशनगढ़ की धरती को स्पर्श देते हुए आगे बढ़ गए। उन्हें अजमेर समाज का अनुरोध याद हो आया अतः 1 जून 2012 को अजमेर के भक्तों को समय दिया। भव्य अगवानी। समाज के साथ मुनिश्री विज्ञानसागर जी भी सीमा पर पहुँचे थे। किया वात्सल्य मिलन। विशाल शोभायात्रा के साथ आचार्य-संघ को छोटा धड़ा की नसियाँ में रोका। देश के अनेक महान संत गत सौ वर्षों में यहाँ रुकते रहे हैं। समाज के अनुरोध पर पूज्यश्री का अजमेर प्रवास नौ दिवसीय हो गया। रोज प्रातः 8.15 पर सोनी जी नसियाँ परिसर में भक्तों को पूज्यश्री के प्रवचन सुनने मिलने लगे। विख्यात सोनी परिवार के वंशज सहित विद्वान् पं. कुमुद जैन सोनी भी सपत्नीक, समयसार की वाचना का लाभ लेते रहे।

चरण विजयनगर की ओर

9 जून को सैकड़ों भक्तों से विदाई ले, पूज्यश्री ने विहार कर दिया। कीर नगर होकर, संघ 12 जून को नसीराबाद पहुँच गया। तीन दिन का समय दिया पूज्यश्री ने। फलतः समाज के साथ-साथ श्री राजकुमार जैन, राजू भैया, श्वेता, नुपूर आदि को संघ की सेवा और आहारों का पुण्य मिल सका। 15 जून को प्रातःकालीन बेला में पूज्यश्री ने ससंघ विहार कर दिया।

बिजयनगर वर्षायोग : 2012

जुलाई माह का शुभारम्भ होने कुछ ही दिन बचे थे, सो दृष्टि कलेण्डर (पत्रा) से जा टकराई कि संतों का 'वर्षायोग-स्थापन-कर्म' किस तिथि/वार को है। आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की तारीख थी, दो जुलाई। दिन सोमवार।

मैं सोचता रहा कि कहाँ जाऊँ? स्वास्थ्य ने उत्तर दिया—'इस बार स्थानीय संतों का समागम ही करें, देह में कमजोरी है, नहीं है वह बाहर जाने योग्य।' अतः जबलपुर ही रुककर, पृथक-पृथक दिनों में तीन मुहल्लों के तीन संघों का लाभ लिया। शिवनगर वार्ड में मुनिरत्न 108 श्री प्रबुद्धसागर जी, संगमकालोनी में आर्यिकारत्न 105 श्री कुशलमति माता जी एवं 105 श्री धारणामति माताजी तथा जूड़ी तलैया में क्षुल्लकरत्न 105 श्री गोसलसागर जी के कार्यक्रमों का साक्षी बना। आत्मानंद की अनुभूति की।

कुछ दिनों बाद मासिक पत्रिका संस्कार-सागर का ताजा अंक आया जिसमें सम्पूर्ण देश में सम्पन्न किए जा रहे चातुर्मासों एवं संतों का सुंदर विवरण था। प्रमुख आचार्यों के स्थानों पर नजर फैलाई। जब पू. विमर्शसागर जी का नाम आया तो दृष्टि वहीं ठहर गई। स्थान का नाम था बिजयनगर (राजस्थान) बस मन ने बार-बार कहा—'चलो बिजयनगर'।

'मन' स्वभाव से बेईमान होता है क्या? मैंने उसे उपालम्भ दिए—'जब पूज्यश्री जबलपुर के समीप थे, तब क्यों नहीं बोला? अरे, बिजयनगर की तुलना में अशोकनगर, टीकमगढ़ और जतारा काफी समीप थे, तब तेरा 'मूड' क्यों नहीं बना? अब राजस्थान में भटकाने की चाल चल रहा है क्या?' तभी प्रज्ञाचक्षु खुले, विचार आया कि हर कार्य की काललब्धि निर्धारित है। मन को डाँटना बंद कर दिया। सोचा, क्यों न बिजयनगर जाऊँ और महासंत के ससंघ दर्शन करूँ। सोचते विचारते कई सप्ताह हाथ से निकल गए। फिर मन बन गया कि क्यों न पूज्य आचार्यश्री का 'जीवन चरित्र' लिखा जावे, बस दूसरे ही पल एक पत्र उन्हें लिख दिया कि यह सरल नाम का लेखक आपकी जीवनी लिखना चाहता है और 7 नवम्बर 2012 को मध्यान्ह बाद आपके चरणों में पहुँच रहा है।

टिकटों का रिजर्वेशन (आरक्षण) कराया, साथ में ब्र. नवीन भैया का भी। फिर करने लगे नवम्बर माह की प्रतीक्षा। हमें तो बिजयनगर के वर्षायोग की जानकारी लिखना है अतः चलें, वहाँ का विवरण लिखें। आचार्य विमर्शसागरजी ससंघ 17 जून 2012 को बिजयनगर पहुँचे थे, भव्य प्रवेश के साथ समाज ने उन्हें चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन संस्थान परिसर में ठहराया। उसी दिन गुरुदेव के मंगल सान्निध्य में नवोदित तीर्थधाम शांति-जिनायतन के शिलान्यास की चर्चा

भी की गई। संयोग देखिए कि उसी दिन ब्रह्मचारी प्रकाशजी जयपुर का मंगल प्रवेश संघ में हुआ, हुए फिर वस्त्र परिवर्तन।

22 जून 2012 को चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन संस्थान के अंतर्गत तीर्थधाम शांति-जिनायतन का समारोहपूर्वक भव्य शिलान्यास गुरुदेव के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से सम्पन्न कराया गया। सभा के चलते हुए कार्यकर्ताओं ने चातुर्मास हेतु श्रीफल अर्पित किए और गुरुदेव से प्रार्थना की। प्रार्थना के स्वर में एक स्वर संसदीय सचिव एवं विधायक ब्रह्मदेव कुमावत का भी था, वे गुरुदेव का आशीष पा धन्य हो गए।

3 जुलाई को आचार्यश्री ने ससंघ गुरु पूर्णिमा मनाई। हजारों भक्तों ने उपस्थित होकर उनकी प्रवचन सुधा का पान किया। इसी क्रम में 4 जुलाई को वीरशासन जयंती का भव्य समारोह सम्पन्न हुआ।

कलश स्थापना : 2012

6 जुलाई को गुरुदेव ने ससंघ विधि-विधानपूर्वक चातुर्मास की स्थापना की। उस दिन नगर के हर जाति और हर वर्ग के लोग प्रसन्न थे। कार्यक्रम प्रातःकाल से शुरू कर दिया था, पहले भक्तगण आचार्य संघ को शोभायात्रा के साथ, वसतिका से जिनालय ले गए, फिर वहाँ से श्रीजी की प्रतिमा पालकी पर विराजित कर सारे नगर के मार्गों पर धर्म प्रभावना करते हुए पंडाल पहुँचे। श्रोताओं में दिगम्बर जैन, श्वेताम्बर जैन, ब्राह्मण आदि समस्त जाति के लोग देखे जा रहे थे। मुख्य कलश स्थापित करने का सौभाग्य मिला—श्री चाँदमल जी, राकेश कुमार जी, संदीप कुमार जी शाह परिवार को। अन्य चार कलश प्राप्त करनेवालों में—(1) श्री प्रभाचंद अभिषेक कुमार बड़जात्या (2) श्री रतनलाल मनोज कुमार कोठारी (3) श्री भंवरलाल राजेश कुमार बड़जात्या (4) श्री मदनलाल पवन कुमार गोधा।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा का कलश श्री जयकुमार अभिषेक कुमार पहाड़िया ने प्राप्त किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम विजयनगर की धरती पर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावनाकारी सिद्ध हुआ।

8 जुलाई को 'श्री भक्तामर शिक्षण शिविर कलश' की स्थापना की गई और शिविर शुरू किया गया। ज्ञानकलश स्थापना का सौभाग्य जैन समाज अध्यक्ष श्री सुभाष कासलीवाल को मिला। नितप्रति शिविर के माध्यम से भक्त और भगवान के मध्य संबंध बनने लगे। इसी क्रम में 25 जुलाई को भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव मनाया गया। पंडाल में सामूहिक पूजन के साथ निर्वाण लाड्डू चढ़ाया गया। अवसर विशेष पर आचार्यश्री द्वारा भगवान के दसों भवों का मार्मिक चित्रण किया गया और भगवान की क्षमा का यथार्थ स्वरूप

समझाया गया। 2 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व गुरुचरणों में मनाया गया, नगर के श्रावकों ने अपने जीवन में प्रथमबार आचार्यश्री की छत्रछाया में धर्म की राखी बाँधने का सौभाग्य पाया। जब गुरुदेव ने रक्षाबंधन पर व्याख्यान दिया तो समस्त श्रोता समूह के नेत्र नम हो गए। उस दिन मुख्य अतिथि संसदीय सचिव श्री ब्रह्मदेव कुमावत भी अपनी आँखें रूमाल से पोंछते हुए देखे गए थे। 5 अगस्त को रविवार था, गुरुदेव के रविवारीय प्रवचन हर शहर में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं, अतः उस दिन अनेक नगरों के लोग प्रवचन सुनने पहुँचे, जिनमें कोटा एवं आगरा जैसे दूरस्थ नगरों के भक्त भी थे।

'राष्ट्रयोगी' अलंकरण

स्थानीय भारत विकास परिषद् के अनुरोध पर, उसी के तत्त्वावधान में आचार्यश्री ने 12 सितम्बर से 16 सितम्बर तक पंचदिवसीय 'दिव्य संस्कार प्रवचनमाला' के लिए समय दिया। परिषद् ने कृषिमण्डी प्रांगण में मंच और पंडाल की व्यवस्था की थी। आचार्यश्री 5 दिन तक अमृतवर्षा करते रहे। विषय थे—सत्संग, भ्रूण हत्या निरोध, नशा मुक्ति, अहिंसक जीवन और उन्नत संस्कार। प्रतिदिन हजारों श्रोता उपस्थित होकर शब्द-शब्द सुनते थे और पंक्ति-पंक्ति गुनते थे। इसी क्रम में अंतिम दिवस परिषद् ने आचार्यश्री को 'राष्ट्रयोगी' के अलंकरण से विभूषित किया, जिसकी चर्चा समग्र नगर में हुई।

विमर्श जागृति मंच का गठन

30 सितम्बर को क्षमावाणी पर्व का आयोजन किया गया, हर वर्ष की तरह आचार्य का उद्बोधन अत्यंत मार्मिक रहा। दोपहर में सामूहिक कलशाभिषेक सम्पन्न किया गया। शाम को अनेक युवकों के अनुरोध पर गुरुजी की चरण छाया में 'विमर्श जागृति मंच शाखा विजयनगर' का गठन सम्पन्न हुआ।

आनंद महोत्सव

7 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक पंचदिवसीय आनंद महोत्सव मनाया गया जिसमें विभिन्न नगरों के भक्तों ने भाग लिया। यह महोत्सव मूल रूप से श्रीमज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर ही था जिसमें सभी श्रावकों ने पूजा की प्रशस्त विधि समझी और सीखी। कार्यक्रम के दौरान 11 अक्टूबर को आचार्यश्री के सान्निध्य में नगर की उत्साही महिलाओं ने 'विमर्श–महिला–जागृति मंच' का गठन किया तो बालिकाओं ने 'विमर्शबालिका जागृति मंच' का। 22 अक्टूबर को संघ के सदस्यों की सख्या बढ़ गई, आचार्यश्री ने ब्र. देवेन्द्र भैया (एटा) को संघ प्रवेश दे दिया।

अणु दीक्षा समारोह

बहुचर्चित रचना 'जीवन है पानी की बूँद' के मूल रचयिता परम पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज के सान्निध्य में, बिजयनगर (राजस्थान) की पावन धरती पर जिन-शासन संवर्धक, नियत मोक्षमार्ग प्रवेशक, स्वात्मनियोजक 'अणु दीक्षा समारोह' का विशाल कार्यक्रम श्री वर्षायोग समिति विजयनगर ने आयोजित किया, जिसमें बा.ब्र. अजय भैया जी एवं ब्र. प्रकाश भैया जी को विधि-विधानपूर्वक आचार्यश्री ने क्षुल्लक दीक्षा दी। सम्पूर्ण कार्यक्रम अतिविशाल एवं अति भव्य था।

बुधवार 24 अक्टूबर प्रातःकाल गुरु- संकेतानुसार दीक्षार्थियों ने केशलुंचन किए, फिर कार्यकर्ताओं ने मंगल स्नान कराया। तब तक आचार्यश्री ससंघ वहाँ से प्रस्थान कर मंडप की ओर बढ़े। ज्यों ही गुरुवर मंच पर पहुँचे तो विशाल दर्शक समूह खड़ा होकर जयघोष करने लगा।

आचार्यश्री ने विलम्ब नहीं होने दिया, प्रतिष्ठाचार्य को संकेत किया और अणु दीक्षा समारोह का अर्थ दृश्यमान करते हुए, दीक्षाविधि प्रारंभ कर दी। सभी लोग तन्मय हो देख रहे थे। लगभग डेढ़ घंटे में दीक्षा पूर्ण हुई। आचार्यश्री ने ब्र. अजय भैया का नामकरण किया 'क्षुल्लक 105 श्री विजेयसागर जी' एवं ब्र. प्रकाश भैया का 'क्षुल्लक 105 श्री विश्वाभसागर जी।'

मंच की श्री शोभा

अणु दीक्षा समारोह का वर्णन अभी पूरा नहीं हुआ, यह भी देखना है कि उस दिन मंच पर कैसी सुंदर व्यवस्था थी। परमपूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज मंच पर स्थित ऊँचे काष्ठ सिंहासन पर विराजित थे। उनकी एक तरफ पूज्य ऐलक श्री 105 विचिंत्य सागर जी महाराज विराजे थे तो दूसरी ओर पूज्य क्षुल्लक 105 श्री विशुद्धसागर जी एवं पूज्य क्षुल्लक 105 श्री विश्वबंधुसागर विराजे थे। मंच के एक कोने में संघस्थ ब्र. प्रकाश भैया थे तो दूसरे कोने में ब्रह्मचारिणी श्वेता दीदी, ब्र. नमिता दीदी, ब्र. रीना दीदी ब्र. मीरादीदी, ब्र. रेणुदीदी, ब्र. प्रियंका दीदी, ब्र. आंचल दीदी, ब्र.नेहा दीदी, ब्र. ट्विंकल दीदी एवं ब्र. ज्योति दीदी विराजित थीं। उन्हीं के पास गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी की संघस्थ अनेक ब्रह्मचारिणी दीदी विराजित थीं। और आचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी की संघस्थ दीदियाँ भी। कुल मिलाकर मंच एक हरे भरे उद्यान की तरह संतों और त्यागी वृंदों की उपस्थिति से खिल रहा था। समीप ही आमंत्रित विद्वानों के लिए स्थान बनाया गया था जहाँ वे सभी विराजे हुए थे।

दीक्षार्थी अजय भैया के धर्म के माता-पिता बने थे—श्री महावीर प्रसाद जी गोधा एवं श्रीमती बसंती देवी। प्रकाश भैया के थे श्री सुशील कुमार पहाड़िया एवं श्रीमती मैना देवी।

प्रथम अधिवेशन

त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 23 तारीख को श्री 'विमर्श-जागृति-मंच' का मध्यान्ह बेला में पूज्यश्री के सान्निध्य में प्रथम-अधिवेशन हुआ था, जिसमें पुरुष, महिला और बालिका मंच के प्रतिनिधि अनेक नगरों से आए हुए थे। चंदेरी, भिण्ड, अशोकनगर, विजयनगर, एटा, जतारा, शिवपुरी, आगरा, कोटा के प्रतिनिधि प्रमुख थे।

24 अक्टूबर को चंदेरी से विख्यात पत्रकार एवं सम्पादक समन्वयवाणी श्री अखिल बंसल के प्राधान्य में एक शिष्टमंडल आया और श्रीफल अर्पित कर प्रार्थना की, कि 27 जनवरी 13 से चंदेरी स्थित नवोदित तीर्थधाम आदीश्वरम् में सम्पन्न होनेवाले पंचकल्याणक समारोह में सान्निध्य प्रदान करें। गुरुदेव के सान्निध्य में तुरंत पंचकल्याणक पत्रिका का विमोचन सम्पन्न कर दिया गया एवं पहुँचने की स्वीकृति भी मिल गई।

श्री विजयमुनि जी

29 अक्टूबर को श्वेताम्बर सम्प्रदाय के विख्यात संत श्री सुशील जी मुनि के परम शिष्य श्री विजय मुनि जी गुरुदेव के दर्शनार्थ पधारे। कुछ चर्चाएँ भी की। जाते-जाते उन्होंने कहा—आचार्यश्री में सच्चा मुनित्व समाया हुआ है 'वे श्रम और साधना के पथ पर हैं', हम तो 'सुविधा भोगी' हैं।

नवम्बर माह अन्य-अन्य नगरों के भक्तों के लिए खुल सा गया था क्योंकि हर दिन कोई न कोई विशिष्ट पहुँच रहा था। 4 नवम्बर को राजस्थान सरकार के पूर्वगृह मंत्री श्री गुलाबचंद जी कटारिया पहुँचे और गुरु उपदेश सुने, मंगल आशीर्वाद पाया। 5 नवम्बर को स्थानीय सेंटपाल स्कूल परिसर में आचार्यश्री की प्रवचन सभा रखी गई जिसमें 1200 छात्रों सहित शिक्षकों ने प्रवचन लाभ तो लिया ही, शराब और मांस का जीवन पर्यंत त्याग किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रिंसीपल फादर जी. फ्रांसेस ने गुरुदेव के पादप्रक्षालन कर आशीर्वाद लिया। 6 नवम्बर को भारत सरकार के कारपोरेट मंत्री श्री सचिन पायलट आए आशीर्वाद लिया और प्रवचन पान किया। उसी दिन कांग्रेस के पूर्व जिला प्रमुख श्री पुखराज जी पहाड़िया भी आए और आशीष पाया।

अब यहाँ इस लेखक की चर्चा करना चाहता हूँ जिसने रिजर्वेशन कराकर ट्रेन की प्रतीक्षा की थी। 6 नवम्बर को समय पर प्रस्थान कर 7 नवम्बर को मैं

ओर ब्र. नवीन संध्या 6 बजे विजयनगर पहुँचे। वहाँ के बंधु श्री सुशील कुमार कासलीवाल ने स्टेशन पहुँचकर गुरुदर्शन करने तथा रुकने की उचित व्यवस्था बना दी।

जब गुरुवर के समीप पहुँचा तो धन्य हो गया। मेरी आँखों में भक्ति थी, उनके नेत्रों में वात्सल्य था। लगा ही नहीं कि वे आचार्य के रूप में पहली बार दृष्टिक्षेत्र में आए हैं। दोनों ओर से, चेहरे स्पष्ट कह रहे थे कि हम तो जन्मों से परिचित हैं। उनके चरणों पर मस्तक धर दिया श्रीफल के मानिन्द। दिया उन्होंने हाथ रखकर आशीष। कुछ देर वार्ता हुई। फिर आचार्यभक्ति का समय हो गया। गुरुजी को बड़े सभाभवन की ओर चलने कतिपय भक्त अनुरोध करने लगे। उनमें चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुभाष चंद कासलीवाल और जैन युवक मंडल के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार कासलीवाल के साथ अनेक कार्यकर्ता थे श्री संदीप शाह, आदि।

गुरुदेव के पीछे-पीछे सभी लोग चल पड़े। भवन में अनेक माताएँ, बहिनें, बच्चियाँ और श्रावकगण प्रतीक्षा कर रहे थे। बच्चों का एक बड़ा दल पृथक से गुरुजी के सिंहासन के पास साधिकार बैठा था। गुरुदेव के प्रवेश के पूर्व सभी जन खड़े होकर जयघोष करने लगे। कुछ ही मिनटों में सब जन यथास्थान बैठ गए। आचार्यभक्ति के समय 6 वर्ष से लेकर 26 वर्ष तक के बालक और युवक मौखिक रूप से पाठ कर रहे थे। प्राकृत और संस्कृत के श्लोक समान रूप से याद थे उन्हें। मैं उनके शुद्ध उच्चारणों से प्रसन्न हो उठा।

बाद में मैंने सुशील जी से पूछा—'छोटे-छोटे बच्चे भी श्लोकादि बोल रहे थे, कहाँ सीखा इन्होंने। वे सगौरव बोल उठे—सरलजी, आचार्यश्री की यह चार माह की साधना का सुफल है, उन्होंने बच्चों, बच्चियों, युवक-युवतियों को अनेक स्तोत्र, विनतियाँ, भक्तियाँ, सामायिक पाठ, अभिषेक पाठ, पूजा पाठ, भजन, आरती, जिनवाणी स्तुति अपने समक्ष बैठाकर याद कराई हैं। उन्हें अभिषेक और पूजा करने का सद्ज्ञान दिया है। उनके आगमन से विजयनगर तो संस्कारों का सागर बन गया है। हमारे होश सँभालने से लेकर, आज तक, ऐसा संत देखने में नहीं आया। उन्होंने मंदिरों, जिनवाणी ग्रंथों के साथ-साथ नगरवासियों का कायाकल्प कर दिया है। हम दिगम्बर जैन तो मात्र 50-60 घर के हैं, उनके प्रवचन सुनने हमारे श्वेताम्बर भाई भी आते हैं, वे करीब 6 हजार हैं, उनमें से साढ़े तीन हजार स्त्री-पुरुष बच्चे किसी न किसी दिन आते ही रहते हैं। वे तन-मन से समर्पित हो गए हैं संत चर्या पर। शायद इसीलिए नवधाभक्तिपूर्वक चौके भी लगाए और आहारदान के क्षण भी प्राप्त किए। कुछ भाईयों ने तो दिन में दो-तीन बार तक गुरुदेव के कार्यक्रमों में सश्रद्धा उपस्थिति दी है।

सुशील भाई ने दूसरे दिन बतलाया कि हमारे नगर के कतिपय हिन्दू भाई भी प्रवचन लाभ लेने आते रहे, बाद में तो कुछ मुस्लिम बंधु भी विनयपूर्वक पधारे और प्रवचन सुने। किसी भी जाति और वर्ग के लोग पूज्यश्री के प्रवचनों और दिनचर्या की सराहना करते नहीं थकते।

8 नवम्बर 2012 को, हाँ दूसरे दिन ही, प.पू. विमर्शसागर जी ने अपने गुरु प.पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज का 21वाँ आचार्य-पदारोहण उत्सव मनाया। विशाल मंच पर उनके चित्र को स्थापित कर, गणाचार्य जी का वृहत्-पूजन किया गया। पूजन की पुस्तक देखी तो ज्ञात हुआ कि इसके रचनाकार कोई और नहीं, आचार्य विमर्शसागर जी ही हैं। भक्ति के साथ साहित्य का आनद भी पूजन से मिला, सुंदर और प्रेरक रचना है। पू. विमर्शसागर जी को सुनने सभी लालायित थे, तभी संचालक श्री ने पहले ब्र. नवीन भैया का और उनके पश्चात् मेरे व्याख्यान का अनुरोध किया। हम दोनों ने अनुरोध पूर्ण किया। मेरे बाद पू. आचार्यश्री के प्रवचन हुए, मैं तन्मयता से सुनने लगा। मेरे लिए तो वह प्रथम अवसर था, पर मित्रों और टी.वी. चैनलों के माध्यम से उन्हें सुनता रहा था पूर्व से। आचार्यश्री ने अपने गुरुदेव के कतिपय, प्रभावनाकारी प्रसंग सुनाए। उनकी वाणी उस क्षण वीणा की तरह कर्ण सुख दे रही थी। बोलने का लहजा, शब्दों का चयन और विषयवस्तु की प्रस्तुति मेरे मन को छू गई। वे बीच में काव्य और गजल का सुंदर उपयोग कर रहे थे। संगीत के परमज्ञानी प्रतीत हो रहे थे। क्योंकि जब वे दो-चार पंक्तियाँ गाकर सुनाते तो साजिन्दे (वाद्य यंत्र कलाकार) सुंदरता से संगीत लपेट देते थे। स्वर और संगीत का संगम कानों को गुदगुदा जाता था। मैंने प्रवचन का विशेषज्ञ मान लिया उन्हें, उसी क्षण। प्रवचन सम्राट।

संध्याकाल में लेखन संबंधी चर्चा की। संघस्थ ऐलक 105 श्री विचिन्त्य सागर जी एवं ब्र. दीदियाँ खुशी प्रकट कर रहे थे। उन्होंने संकेत किया कि जीवन से संबंधित कुछ प्रसंग वे उपलब्ध करा देंगे। मैंने सबको यथायोग्य नमन कर आभार ज्ञापित किया।

11 नवम्बर को दीपावली के पूर्व आनेवाली धनतेरस थी जिसे गुरुवर ने अपने प्रवचनों के माध्यम से 'धन्य तेरस' में व्याख्यायित किया।

ठीक निर्वाण दिवस 13 नवम्बर को प्रातः बेला में समग्र समाज ने आचार्यश्री के सान्निध्य में सामूहिक रूप से निर्वाण लाड्डू चढ़ाया। उसी क्रम में आचार्यश्री ने ससंघ, वर्षायोग का निष्ठापन किया, तभी सकल दिगम्बर जैन समाज बिजयनगर ने खड़े होकर उनके चरणों में श्रीफल अर्पित किए और शीतकालीन वाचना की प्रार्थना की।

40वाँ जन्मदिवस समारोह

हफ्तों पहले से नगर के लोग जिस आयोजन की तैयारी कर रहे थे, उसकी तिथि आ गई, 15 नवम्बर 12 को गुरुदेव 39वसंत देख चुके थे अतः भक्तों ने 40वाँ जन्मजयंती समारोह धूमधाम से मनाया। गुरुदेव कभी अपने जन्मदिन पर मंच पर नहीं विराजते किन्तु विजयनगर के भक्तों ने जब बतलाया कि आपकी प्रेरणा से हम लोग गरीब बच्चों को वस्त्र वितरण कर रहे हैं, वृद्धाश्रम में भोजन प्रदान कर रहे हैं और अस्पतालों में फलों का वितरण कर रहे हैं अतः उन पीड़ितों को आशीर्वाद देने और दो शब्द कहने मंच पर विराजिए, आचार्यश्री फिर मना नहीं कर सके।

प्रातः बेला में समस्त भक्तों ने 'आचार्य विमर्शसागर विधान' सम्पन्न किया तो मध्यान्ह बेला में सांस्कृकि कार्यक्रम जिसमें 'विमर्श जागृति मंच' 'विमर्श महिला जागृति मंच' एवं 'विमर्श बालिका जागृति मंच' के भक्तों ने भाग लिया। श्रीमती रोमा कासलीवाल ने अपनी सहेलियों सहित विशिष्ट रचना प्रस्तुत की जिसकी सभी ने सराहना की। शब्द कुछ इस तरह थे—

'दर्शन ले लो ज्ञान बांच लो, अपना लो चारित्र को।
भाँति-भाँति के मोती लाई, सखी, सहेली, मित्र को।।'

पूज्य आचार्यश्री के आशीर्वाद से नवोदित तीर्थधाम शांति-जिनायतन में चौबीसी निर्माण हेतु दान-दातारों की घोषणा हुई, आई एक करोड़ की राशि। समिति के लिए मंदिर निर्माण कार्य सरल हो गया। सांध्य बेला में भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रम निरन्तर रहा।

मुनिश्री विचिंत्यसागर जी ने अपनी लेखनी से गुरुदेव पर सुन्दर व्याख्या लिखी है वह यहाँ देना पूर्ण उपयुक्त है। वे लिखते हैं—अंतरंग, बहिरंग तप के स्वामी ज्ञातृ वंश के राकेश, धर्मतीर्थ के प्रवर्तनकर्ता भगवान महावीर स्वामी के उपदेशित अर्थ अविकलता, व्यंजन अविकलता, अर्थ व्यंजन अविकलता, काल शुद्धि, उपधान शुद्धि, विनयशीलता आचार्यों का बहुमान के साथ नाम उद्धृत करनेवाले 8 प्रकार के ज्ञानाचार से आलोकित श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज कर्मों का क्षय करने के लिए सतत उद्यमशील हैं, उन्हें मैं नमन करता हूँ।

वे आगम के अर्थ, पदों के अर्थ तथा वाक्यों के शुद्ध अर्थ की अवधारणा करते हुए प्रवचन और स्वाध्याय करते हैं, जिससे उक्त 8 ज्ञानाचारों में से प्रथम अर्थाचार का निर्वाह सहज सा हो जाता है। आगम के पद वाक्यों और अक्षरों का शुद्ध उच्चारण कर वे व्यंजनाचार की साधना करते हैं। अर्थ, पद तथा शब्दों आदि का शुद्ध उच्चारण और निर्दोष अवधारणा से उनका अर्थ, व्यंजन शुद्धि

का संकल्प पूरा होता है। आगम ग्रंथों को तीन कुटिल संध्याओं ग्रहण, उल्कापात्त, अतिवृष्टि आदि निषिद्ध समय में स्वाध्याय न करके, योग्य अवधि में स्वाध्याय करना, उनका कालाचार का अभिप्राय पूर्ण करता है।

पाँचवाँ ज्ञानाचार उपधानाचार का वे पल-पल ध्यान रखते है। यथा—स्वाध्याय प्रारंभ होने पर समाधि पर्यंत कोई विशेष नियम ले लेना शास्त्रों पर बेष्टन, अछार (कवर) आदि लगाना, ग्रंथ को नाभि से ऊपर रखकर स्वाध्याय करना तथा स्वाध्याय का स्मरण रखना। योग्य क्षेत्र, काल में श्रुतभक्ति तथा आचार्य भक्ति आदि रूप कृतिकर्म करके विनयपूर्वक स्वाध्याय करना उनके विनयाचार का प्रतीक है। जिन गुरुदेव से शिक्षण प्राप्त किया है उनका नाम नहीं छिपाना, बहुमान से लेना, अनिह्निवाचार की पूर्ति करता है। ऐलक जी ने 8वें आचार की चर्चा करते हुए अपने गुरुदेव को ज्ञानाचार प्रवीण कहा है वे लिखते हैं कि बहुमानाचार के निर्वाह के समय उनकी भावना यह रहती है—'-मुझे इस ग्रंथ का स्वाध्याय करने का अपूर्व क्षण प्राप्त हुआ है, जिसे मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ।' इस तरह आगम के प्रति बहुमान प्रगट करते हैं।

सत्य है कि मुनिश्री ने परम पूज्य विमर्शसागर जी को पंचाचार प्रवीण सिद्ध किया है, जिसके अनुसार उक्त पंक्त्यिों में ज्ञानाचार की चर्चा की गई है इसी तरह उनके अन्य चार आचार दर्शनाचार, चारित्राचार, वीर्याचार और तपाचार भी शत-प्रतिशत स्वस्थ और सही है। मुनिश्री भक्तिपूर्वक नमन करते हुए अपने गुरु के समक्ष शब्द पुष्प का अर्घ चढ़ाते हैं।

पंचाचार परायणः ऋषिवरः सूरि विमर्शसागरः।
षट्त्रिंशत् गुण शोभितं यतिवरः अध्यात्माराधकः।
सागर सम् गम्भीर हृदय वरं, मृग सम सरल वृत्तिम्।
वायुः सम् निःसंग चर्यापरम, वन्दे विमर्शसागरम्।

आचार्यश्री का जयंती समारोह हो और उनके शिष्यगण कुछ न लिखें, ऐसा हो नहीं सकता। संघस्थ समस्त साधकों ने उनके विषय में डायरी में कुछ पंक्तियाँ अवश्य लिखी होंगी। मुझे भाई श्री सुशील कासलीवाल जी के माध्यम से बहिन ब्रह्मचारिणी आँचल दीदी का लेख प्राप्त हुआ अतः उसके अंश यहाँ दे रहा हूँ, यह मानकर कि लेख की शब्द भावना केवल आँचल दीदी की नहीं हैं, दसों दीदियों की हैं। वे लिखती हैं—हमारे पूज्य गुरुदेव में अपने गुरुदेव के प्रति भक्ति का महासागर समाया हुआ है, ऐसा लगता ही नहीं कि वे अपने गुरुदेव से दूर हैं किन्तु उनके मिलने पर वे जिस तरह पास-पास होते हैं, वैसे ही दूर रहने पर भी हृदयस्थ रहते हैं।

श्रमणाचार्य पूज्य विमर्शसागरजी गुणों की खान, आगम के ज्ञाता, दया-क्षमा-

साधना-आराधना की मूर्ति, वात्सल्य के सागर, मोक्षमार्ग के नेता और गुरु भक्त शिरोमणि संत हैं वे अपनी प्रभावना और यशःप्राप्ति का श्रेय सदा अपने गुरुदेव को देते हैं। धन्य हैं वे और उनकी गुरु-भक्ति। कामना करती हूँ कि जिसतरह हमारे गुरु, अपने गुरु पर हर-क्षण श्रद्धा रखते हैं, उसीप्रकार हम लोग अपने गुरुदेव पर श्रद्धा बनावें और उनकी भक्ति में डूबे रहें।

गुरुदेव पूज्य विमर्शसागरजी तीर्थंकर स्वरूप प्रतीत होते हैं। यदि चतुर्थकालीन तीर्थंकर भगवंत हमारे मध्य आ जावें तो वे गुरुदेव जैसे ही लगेंगे, जो सब पर समभाव लेकर, समवशरण के साथ विहार करते रहते हैं तथा अपनी दिव्यदेशना से प्राणिमात्र का कल्याण करते हैं।

वे कहते हैं कि 'फर्स्ट सेल्फ कंट्रोल देन डिसीपिलिन' (First self control then diciplin) अर्थात् पहले निज पर शासन करें फिर अनुशासन। जब तक व्यक्ति खुद को नियंत्रण में नहीं रख पाता तब तक आत्मा में अनुशासन का उदय नहीं हो पाता। वे बतलाते हैं–'अनुशासन जीवन का सुगंधित पुष्प है और उसी से जीवन आदर्श बनता है। ध्यान रहे अनुशासन की जड़ें कड़वी लगती हैं किन्तु फल मीठे होते हैं।'

डॉक्टर लोकेश खरे, जो बचपन से ही मित्र होने के नाते राकेश को उसका पर्यायवाचक शब्द 'इन्दु' कहते थे बाद में जब उन्होंने राकेश नामक बालक का आचार्य विमर्शसागर जी के रूप में विराट स्वरूप देखा तब उन्हें कहना पड़ा–'अम्बर स्थित इन्दु'। वे लिखते हैं जैन संत परम्परा में निश्चित ही पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी का नाम सूर्य की भाँति प्रकाशित हो रहा है और उस प्रकाश की आभा हम जैसे तुच्छ व अकिंचन्य मित्रों (पूर्वकालीन) को भी लाभान्वित कर रही है।

उनके महान व्यक्तित्व पर लेखनी चलाने का साहस कर रहा हूँ परंतु मैं यह भलीभाँति जानता हूँ कि विराट व्यक्तित्व की जीवनी या अनुभव लिखने के लिए न तो मैं योग्य हूँ और न ही मेरे द्वारा जगत को कुछ भेंट करने का साहस है कि उनका भक्त संसार मेरी लेखनी को पढ़े।

'सन् 95 में सम्पन्न जतारा गजरथ महोत्सव का सबसे बड़ा परिणाम यह है कि जतारा की पवित्र भूमि को विमर्शसागर जी ने संसार में गौरवान्वित होने का अवसर दिया है। मुझे आत्मिक सुख है कि मैंने उन्हें पहले गृहस्थ अवस्था में देखा, फिर आहारजी में उनके द्वारा किए गए प्रण को देखा फिर ब्रह्मचर्य व्रत लेते देखा, ऐलक दीक्षा ग्रहण करते देखा, मुनि-दीक्षा ग्रहण करते देखा ओर आचार्यपद पर देख रहा हूँ।

'चूँकि वे बचपन से ही मेरे मित्र थे अतः वर्तमान को मैं इस तरह देखता हूँ कि मैं उनका सुदामा नाम का मित्र हूँ और वे मेरे कृष्ण महाराज जैसे मित्र

हैं। यह सुख मुझे कई जन्मों तक प्राप्त नहीं हो सकता था।'

पिच्छिका परिवतन समारोह : 2012

विजयनगर के प्रसिद्ध स्थान प्राग महाराजा पैलेस में भव्य समारोह के साथ 'पिच्छिका परिवर्तन' का आयोजन किया गया, तथा समाज द्वारा आचार्यश्री को 'सर्वोदयी संत' की उपाधि भेंट की गई।

आचार्यश्री की पिच्छी श्री सुशील पहाड़िया को मिली, ऐलक विचिंत्यसागर जी की पीछी श्री प्रभाचंद बडजात्या को क्षुल्लक विशुद्धसागर जी की श्री प्रकाश गोधा को तथा क्षुल्लक विश्वबंधुसागर जी की श्री बसंतीलाल कोठारी को। समारोह में अनेक नगरों के भक्त उपस्थित हुए थे जिनमें से आगरा, सिंगोली, एटा के कार्यकर्ता वर्ष 2013 के वर्षायोग हेतु प्रार्थना करने लगे। गुरुदेव मुस्कराते रहे।

18 नवम्बर का दिन व्यस्त दिन रहा क्योंकि दोपहर में 1 बजे से आचार्यश्री के सान्निध्य में महावीर मार्केट परिसर में 'आध्यात्मिक कवि सम्मेलन' का भव्य-आयोजन भी सम्पन्न हुआ, जिसमें भक्तों के अनुरोध पर आचार्यश्री ने भी काव्यपाठ किया और सारा नगर झूम उठा। उन्होंने चंद शब्दों के माध्यम से पड़ोसी के प्रति करुणा की भावना इस तरह व्यक्त की थी–

रोता पड़ोसी देख के दिल जिसका रो दिया,
समझो उसी ने दिल से नफरत को खो दिया।
चाहे अमीर हो या आदम गरीब हो,
सब भेदभाव खोके दिले प्रेम बो दिया।।

आचार्यश्री ने एक दूसरे काव्य के द्वारा बतलाया कि दौलत ही क्या 'अपने' भी साथ छोड़ देते हैं–

दौलत न साथ जाएगी, सौहरत न साथ में,
अच्छा, बुरा किया ही साथ जाता है हरदम।
अपनों को भी देखा है मुँह फेरते यहाँ
पत्ते भी साथ छोड़ते, पतझड़ का हो मौसम।'

श्रोताओं ने मधुर वाणी में ललित काव्य जीवन में पहली बार सुना था अतः वाह-वाह कर उठे। इसी क्रम में उपस्थित कवि-गणों ने स्थानीय भारत विकास परिषद् का साथ देते हुए आचार्यश्री को 'प्रज्ञामनीषि' अलंकरण भेंट किया।

अजमेर स्थित, केसरगंज जैन समाज के कार्यकर्ता 19 नवम्बर को गुरुदेव के समक्ष पहुँचे और शीतकालीन वाचना हेतु प्रार्थना की।

समारोह में यह भी हुआ

18 नवम्बर 2012 को पिच्छिका परिवर्तन एवं आध्यात्मिक काव्य गोष्ठी का मिलाजुला कार्यक्रम रखा गया था। उस दिन आहार के समय गुरुदेव को अंतराय हो गया था मगर काव्य गोष्ठी के मंच पर कवियों और श्रोताओं के अनुरोध पर उन्हें लगभग 1 घंटे से अधिक तक काव्यपाठ करना पड़ा। सभी ने दिल खोलकर प्रशंसा की थी।

जब गुरुजी वसतिका में आ गए तो एक भक्त ने कहा—'आपके प्रवचन और कविताओं ने सारे विजयनगर को मंत्रमुग्ध कर दिया किन्तु दुख इस बात का रहा कि आपका अंतराय हो गया था। हम लोगों ने सुना था—'भूखे भजन न होय गोपाला' मगर आपने तो इस कहावत को निष्फल कर दिया, आप भूखे भी रहे ओर भजन भी किए।' उसकी बातें सुनकर गुरुदेव ने एक ही वाक्य कहा—'ये तो कर्म निर्जरा के अवसर होते हैं' सभी लोग धन्य-धन्य करते रह गए, उन्होंने स्वीकारा कि गुरुदेव दृढ़-संकल्पी हैं, कठोर तप और साधना में लीन रहनेवाले संत हैं, स्पष्टवादिता एवं सहिष्णुता के सागर हैं।

चातुर्मास के चलते

विजयनगर में गुरुदेव के आहार जिस किसी भी चौके में होते थे, वहाँ पाद-प्रक्षालन के बाद एक भक्त अनिल जैन ट्रांसपोर्ट थाली में से चरणोद्क स्टील के डिब्बे में भरकर ले जाता था। कुछ दिन लगातार देखने के बाद एक दीदी ने उनसे पूछ लिया—'आप रोज-रोज ले जाते हैं, क्या करते हैं इसका? तब उस भक्त ने विनीत हृदय से उत्तर दिया—'मेरा मकान बन रहा है, विमर्श महल। मैं चरणोदक को रोज दीवारों पर छिड़क देता हूँ ताकि निर्माण कार्य में कोई विघ्न न आ पाए और जब इसमें निवास करूँ तो घर में सुख-शांति बनी रहे।' कहना न होगा कि उस भक्त ने गुरुदेव के प्रति जिस श्रद्धा और विश्वास का उदाहरण दिया था, वह दुर्लभ है।

पाठशाला

25 नवम्बर को आचार्य विमर्शसागर जी की छत्रछाया में 'आचार्य विराग-विमर्श संस्कारोदय पाठशाला' का कलश स्थापन तथा उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न किया गया।

27 नवम्बर को आचार्यश्री का आशीर्वाद लेकर स्थानीय कार्यकर्तागण नवीन पिच्छि के साथ जयपुर गए और उसको गणाचार्य विरागसागर जी के समक्ष प्रस्तुत किया।

बिजयनगर से विहार

जिस तरह हिन्दू शास्त्रों में कृष्ण जी के गमन की सूचना मात्र से रागहीन किन्तु अनुरागी गोप-गोपियाँ आकुल-व्याकुल हो उठते थे और विचार करते थे कि अभी भगवन कुछ और साथ रहें, उसी तरह बिजयनगर के श्रावक-श्राविकाएँ, युवक युवतियाँ और बच्चे बच्चियाँ भी यही सोचते रहते थे कि दिसम्बर माह आनेवाला है, आचार्यश्री विहार न कर देवें। सोच-विचार के बीच उन श्रेष्ठ श्रावकों ने पुनः श्रीफल चढ़ाए और शीतकालीन वाचना निरंतर रखने की प्रार्थना की। किन्तु आचार्यश्री ने 28 नवम्बर को ससंघ विहार कर दिया। नगर की हर आँख गीली हो पड़ी। पूरा शहर विदाई के लिए उमड़ पड़ा, विशाल जुलूस संघ के पीछे-पीछे हो गया। गुरुदेव जा रहे थे जैन-अजैन, भक्तगण रो रहे थे। कुछ समय चलने के बाद रात्रि विराम हेतु संघ को गुलाबपुरा में रोका गया।

सारे बिजयनगर में उस दिन से आज तक चर्चा हो रही है कि ऐसे संत दुर्लभ हैं। काश उनके दर्शन पुनः-पुनः मिलें। सच भी है, आचार्यश्री की वाणी से प्रभावित होकर दिगम्बर तो दिगम्बर, वहाँ के श्वेताम्बर समाज ने भी अनेक दिनों तक चौके लगाए थे और निर्विघ्न आहार दिए थे। वे दृश्य देश में प्रथम बार ही देखने मिले थे। पूरे विजयनगर में दिगम्बर जैनों की कुछ जनसंख्या मात्र 350 है किन्तु प्रवचन सभा में सहस्त्राधिक श्रोता उपस्थित होते थे, यह आचार्यश्री का ही जादू है। बिजयनगर ने एक और इतिहास बनाया कि वहाँ जैन समाज के हर घर में चौका लगा और हर परिवार ने निर्विघ्न आहार दिए। वे सभी भक्त बार-बार अपने गुरुदेव को इस तरह याद करते हैं—

गुरु के दिल में हमें मंदिर दिखाई देता है।
गुरु की नजरों में समुन्दर दिखाई देता है।
फूल से झरते हैं सच कहता गुरुवाणी में
इनके जैसा न तवंगर दिखाई देता है।

बिन्दु-बिन्दु परिचय

पारिवारिक नाम	: श्री राकेश कुमार जैन
पिताजी	: श्रावक श्रेष्ठी स्व. सनत कुमार जैन
माताजी	: गृहणीरत्न श्रीमती भगवती जैन
जन्मतिथि	: 15 नवम्बर 1973, गुरुवार मार्गशीर्ष, कृष्णा पंचमी, संवत 2030)
जन्मस्थान	: ग्राम जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
शिक्षा	: बी.एस.सी (बॉयोलॉजी)
खेल	: बैडमिंटन एवं शतरंज (दोनों में चैम्पियन)
रुचि	: अध्ययन, संगीत, पेंटिग, नाट्यमंचन।
सामाजिक सेवा	: मंत्री जैन नवयवुक संघ जतारा के माध्यम से।
भ्राता	: दो (अग्रज श्री राजेशकुमार, अनुज श्री चक्रेशकुमार)
बहिनें	: दो (अग्रजा कमला, अनुजा प्रियंका)
विवाह	: बाल ब्रह्मचारी
ब्रह्मचर्य	: 27 फरवरी 1995, सिद्ध क्षेत्र अहारजी में।
सामायिक प्रतिमा	: क्षेत्रपालजी, ललितपुर, 1995
ऐलक दीक्षा	: 23 फरवरी 1996, देवेन्द्रनगर (पन्ना) फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार संवत 2052)
मुनि दीक्षा	: 14 दिसम्बर 1998 अतिशय क्षेत्र बरासों (भिण्ड) (पौष कृष्ण एकादशी, सोमवार सं. 2055)
आचार्य पद घोषणा	: सन् 2005 में (तीर्थक्षेत्र कुन्थुगिरि पर 14 आचार्य एवं 200 पिच्छियों के मध्य)
आचार्य पद ग्रहण	: 12 दिसम्बर 2010, बाँसवाड़ा (राज.)। (मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067, रविवार)
गुरु	: सभी संयम संस्कारों के गुरु आचार्यश्री विरागसागर जी।

गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य

(1) हे वंदनीय गुरुवर (काव्य) (2) गूँगी चीख (प्रवचन) (3) शंका की एक रात (प्रवचन) (4) मानतुंग के मोती (5) विमर्शान्जलि (पूजा पाठ संग्रह) (6) गीतांजलि (भजन) (7) विरागांजलि (श्रमण पाठ संग्रह) (8) जीवन है पानी

की बूँद (भाग 1) (9) जीवन है पानी की बूँद (भाग 2) (10) जीवन है पानी की बूँद (समग्र) (11) जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य) (12) खूबसूरत लाइनें (काव्य) (13) समर्पण के स्वर (काव्य) (14) आइना (काव्य) (15) सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य) (16) मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य) (17) वाह क्या खूब कही (काव्य) (18) करलो गुरु गुणगान (काव्य) (19) आओ सीखें जिनस्तोत्र (22) जनवरी विमर्श (21) चटपटे प्रश्न स्वादिष्ट उत्तर (पहेली) (22) जैन श्रावक और दीपावली पर्व (23) भरत जी घर में वैरागी (24) शब्द-शब्द अमृत।

गज़ल संग्रह—ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान—आचार्य विरागसागर विधान, श्री भक्तामर विधान, श्री कल्याण मंदिर विधान, श्री रक्षाबंधन विधान।

चालीसा—गणधर चालीसा।

विमर्शलिपि—प.पू. गुरुदेव ने स्वविवेक से संसार के भाषाविदों के समक्ष प्रेरणासूत्र प्रस्तुत करते हुए एक अनोखी लिपि की रचना की है, जिसे 'विमर्शलिपि' की संज्ञा प्रदान की गई है संघस्थ साधक और कतिपय भक्तगण इसे सीख रहे हैं।

पद्यानुवाद—(1) सुप्रभात स्तोत्र (2) महावीराष्टक स्तोत्र (3) लघु स्वयंभू स्तोत्र (4) गोम्मटेश स्तुति (5) भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद) (6) विषापहार स्तोत्र (7) द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ) (8) एकीभाव स्तोत्र (9) पंचमहागुरु भक्ति (10) तीर्थंकर जिनस्तुति (11) गणधर वलय स्तोत्र (12) कल्याण मंदिर स्तोत्र (13) परमानन्द स्तोत्र।

भजन—गुरुदेव द्वारा रचित श्रेष्ठ तीन भजन भक्ति संसार में विख्यात हुए हैं, उनकी सी.डी. भी उपलब्ध है—

(1) जीवन है पानी की बूँद (2) कर तू प्रभु का ध्यान (3) ऋणमुक्ति का वर दीजिए।

गुरुदेव की प्रेरणा से प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथ—

(1) सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागर जी, सम्पादक आचार्य विमर्शसागर)

(2) हिन्दी साहित्य की संत परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशील (डॉ. लोकेश खरे)

(3) समसामायिक आचार विद्वत संगोष्ठी (कोटा)

(4) प्रज्ञाशील महामनीषी

(5) पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन

संगोष्ठियाँ

(1) समसामयिक आचार विद्वत संगोष्ठी (कोटा 2006)

(2) पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (शिवपुरी 2007)

(3) जैन कर्मसिद्धांत अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी बड़ौत (2014)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एव गजरथ महोत्सव 2002, रजवांस, सागर (म.प्र.)
2. आदिनाथ पचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2003, महरौनी, ललितपुर (उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2004 बूंदी (राजस्थान)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2007 रामगंजमण्डी, कोटा (राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2007 कोटा (राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2008 शिवपुरी (उ.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2008 आगरा (उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक एव गजरथ महोत्सव 2010 एटा (उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2012 जतारा (म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव 2013 चंदेरी (म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं त्रयगजरथ महोत्सव 2015 पृथ्वीपुर (म.प्र)

विभिन्न वर्षायोग स्थलों का विवरण

	स्थान	जिला/प्रदेश	सन	संघ प्रमुख
1.	मढ़िया जी तीर्थ	जबलपुर/म.प्र.	1996	आ. विरागसागर
2.	भिण्ड	भिण्ड/म.प्र.	1997	आ. विरागसागर
3.	भिण्ड	भिण्ड/म.प्र.	1998	आ. विरागसागर
4.	भिण्ड	भिण्ड/म.प्र.	1999	आ. विरागसागर
5.	महरौनी	ललितपुर/उ.प्र.	2000	मुनि विमर्शसागर
6.	अंकुर कॉलोनी	सागर/म.प्र.	2001	मुनि विमर्शसागर
7.	सतना	सतना/म.प्र.	2002	मुनि विमर्शसागर
8.	अशोकनगर	अशोकनगर/म.प्र.	2003	मुनि विमर्शसागर
9.	रामगंजमण्डी	कोटा/राज.	2004	मुनि विमर्शसागर
10.	सिंगोली	नीमच/म.प्र.	2005	घोषित आचार्य श्री विमर्शसागर
11.	कोटा	कोटा/राज.	2006	श्री विमर्शसागर
12.	शिवपुरी	शिवपुरी/म.प्र.	2007	श्री विमर्शसागर
13.	आगरा	आगरा/उ.प्र.	2008	श्री विमर्शसागर
14.	एटा	एटा/उ.प्र.	2009	श्री विमर्शसागर

15.	डूंगरपुर	डूंगरपुर (राज.)	2010	श्री विमर्शसागर
16.	अशोकनगर	अशोकनगर/म.प्र.	2011	आ. विमर्शसागर
17.	विजयनगर	अजमेर/राज.	2012	आ. विमर्शसागर
18.	भिण्ड	भिण्ड (म.प्र.)	2013	आ. विमर्शसागर
19.	बड़ौत	बागपत (उ.प्र.)	2014	आ. विमर्शसागर

ऐतिहासिक 'पूजन प्रशिक्षण शिविर'

(1) महरौनी (उ.प्र.) (2) वरायठा (म.प्र.) (3) अंकुर कॉलोनी, सागर (म. प्र.) (4) सतना (म.प्र.) (5) अशोकनगर (म.प्र.) (6) रामगंजमण्डी (राज) (7) भानपुरा (म.प्र.) (8) सिंगोली (म.प्र.) (9) कोटा (राज.) (10) शिवपुरी (म. प्र.) (11) आगरा (उ.प्र.) (12) एटा (उ.प्र.) (13) डूंगरपुर (राज.) (14) अशोकनगर (म.प्र.) (15) विजयनगर (राज.) (16) भिण्ड (म.प्र.) (17) बड़ौत (उ.प्र.)



पंचम खण्ड

विशिष्टताएँ : एक झलक

आचार्य विमर्शसागर जी की जन्मकुण्डली

एक वरिष्ठ ज्योतिषि ने अपना नाम प्रगट न करते हुए आचार्यश्री की जो कुण्डली बनाई थी उसको यदि उन्हीं की भाषा में देता तो पाठकों को पढ़ने और समझने में कष्ट होता अतः मैं उसका सार संक्षेप दे रहा हूँ।

चिरंजीव राकेश कुमार जैन का जन्म 15 नवम्बर 1973 को प्रातः 9:31 बजे हुआ था। उस दिन सूर्योदय का समय 6:31 था। अतः स्थानिक जन्म का समय 9:32 प्रातःकाल लिखा गया है। तदनुकुल मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी दिन गुरुवार वि.सं. 2030, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि, जतारा (टीकमगढ़) नगर में जैन आम्नाय के परवार वश में कोछल्ल गोत्र के श्रीमान् स्वर्गीय नाथूराम जैन के सुपुत्र श्रीमान सनतकुमार जी जैन की भार्या श्रीमती भगवती देवी जैन की कुक्षि से हुआ था। शिशु का राशि का नाम हीरालाल जैन, विप्र वर्ण, जलचर वश्य, मार्जार योनि, देवगण, आद्य नाड़ी।

जन्म पत्रक का भाष्य

ज्योतिषी जी ने जातक के शुभाशुभ फल का कथन करते हुए पूरे पत्रक में केवल शुभ ही शुभ का विवरण दिया है। अशुभ कुछ नहीं है। वे लिखते हैं–पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे जातक सुप्रतिष्ठित कार्यकर्ता, मेधावी, विचारक, सामान्य रोगों का शिकार होनेवाला और वृद्धावस्था में अधिक सुखी रहनेवाला होता है, फिर भी वह महात्मा एवं तपस्वी बन जाता है। शरीर सुघटित होता है, कद मध्यम होता है एवं मस्तिष्क विस्तृत होता है। भौंहे घनी, नाक लम्बी किन्तु छोटी, सुंदर आँखें चमकपूर्ण और व्यक्तित्व मधुर होता है। रंग गोरा और शरीर सुन्दर होता है। जातक साहसी और पराक्रमी होता है, कठिन से कठिन समस्याओं को अपने साहस और परिश्रम से सुलझाने में समर्थ होता है। उसमें पर्याप्त आत्मविश्वास होता है, स्फूर्ति और जोश भी। जातक की धर्म में विशेष रुचि होती है, सत्यवादी और उच्च्य शिक्षा प्राप्त करता है। यात्रा करने में निर्भय रहता है। उदार हृदय होता है जो आध्यात्मिक प्रवृत्ति और न्याय की ओर समर्पित रहता है।

जातक प्रसिद्ध वक्ता होता है। उसकी वाणी में मंत्रमुग्ध करने की शक्ति होती है। जन समुदाय की भावना को अपने पक्ष में कर लेने की कला में दक्ष होता है। रूपवान, सदाचारी और विविध सद्‌गुणों से युक्त होता है। जीवन में उच्च्य पद प्राप्त करता है। अत्यंत बुद्धिमान होता है और अपने कार्यों से विख्यात होता है।

जातक राजा के समान धनवान, ज्ञानवान और जन-जन द्वारा वंदनीय होता

है। ऐसा जातक अवसर मिलने पर अपने परिधानों तक का त्याग कर देता है और अपने कुटुम्ब से पृथक हो जाता है। अपनी चल अचल सम्पत्ति भी त्याग देता है। जातक का विवाह योग नहीं होता, बल्कि बाल-ब्रह्मचारी का योग होता है। घर परिवार तो क्या जन्मदायनी जननी से भी पृथक हो जाता है। दीर्घायु होता है। बालपन में ही सन्यास योग बन जाता है। अपनी साधना के बल पर चतुर्थकाल के मुनि की तरह केवलज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता है, यदि सन्यासी नहीं बनता तो राजयोग बनता है और राजा की तरह वैभव का स्वामी होता है।

ऐसा जातक अपने में श्रेष्ठ होता है और अपनी साधना से कठिन अनिष्टों का नाश करता है। सदा परोपकारी रहता है। इस तरह जातक के जीवन में सब कुछ शुभ ही शुभ रहता है।

आचार्यश्री के जन्मकाल का विवरण

जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा 5 सं. 2030 वी.नि. सम्वत् 2500 दिनांक 15.11. 1973 गुरुवार, रवि दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, नक्षत्र पुनर्वसु 4 चरण, योग शुभ, करन गर जन्म समय 9.31 सुबह इष्टकाल 7/26

जन्म लग्न कुण्डली, दिनांक 15.11.1973
लग्न 8/8/1/52



ऐलक दीक्षा, दिनांक 23.02.1996
लग्न 2/16/53/10



मुनि दीक्षा, दिनांक 14.12.1998
लग्न 1/2/45/12



जन्म कुण्डली में योगों की दृष्टि

शुभ योग, काहल योग, बुध आदित्य योग, मृगेन्द्र योग, दाम योग, कुटुम्ब त्याग योग, अचल सम्पत्ति त्याग योग, माँ से पृथक होने का योग, बाल ब्रह्मचारी योग, राज योग 3, अरिष्ट भंग योग 4, दीर्घायु योग, वैराग्य योग 8, आध्यात्मिक योग, ज्ञानवृद्धि योग, सर्वार्थसिद्धि योग।

श्री राकेश जी का पारिवारिक विवरण

परदादा–श्री पंचमलाल जैन चौधरी (जमींदार)

दादा–श्री नाथूराम जैन।

दादी–श्रीमती बेनीबाई जैन

पिता–श्री सनतकुमार जैन

माता–श्रीमती भगवती जैन

नाना–श्री रामप्रसाद जैन, मु. पहाड़ी (टीकमगढ़)

नानी–श्रीमति पूनाबाई जैन

मामा–श्री सुन्दरलाल जैन/श्री शिखरचंद जैन

मामी–श्रीमति भारती जैन/श्रीमती सुमन जैन

मौसी–श्रीमति शीला जैन/श्रीमती सुशीला जैन/श्रीमती मुन्नी देवी जैन

मौसा–श्री दीपचंद जैन/श्री बाबूलाल जैन/श्री लालचंद जैन

फूफा–श्री प्रकाश चंद जैन

बुआ–श्रीमती शीला देवी (चंदेरा)

भ्राता–श्री राजेश जैन, श्री चक्रेश जैन

बहिन–श्रीमती कमला जैन, सुश्री महिमा जैन

जीजा–श्री बालचंद जैन (दिगोड़ा) टीकमगढ

मामाजी मजना वाले–श्री पुत्तीलाल जैन

श्री हीरालाल जैन–श्रीमती रतनबाई जैन

श्री सुमत जैन/श्रीमती चंदाबाई जैन

श्री अभिनंदन जैन/श्रीमती बंदाबाई जैन

डॉ. मुन्नालाल जैन/श्रीमती विमला जैन

श्री श्रेयांस जैन/श्रीमती चम्पाबाई जैन

श्री सनतकुमार के मामा जी–श्री प्रेमचंद जैन, सगरबारा, श्री मोतीलाल जैन, श्रीमती गजरा देवी, श्री कोमलचंद जैन–श्रीमती गुलाबबाई

दादी श्रीमती बेनीबाई की बहिन–

(1) श्रीमती हल्की बाई जैन/श्री बाबूलाल व्या

पुत्र–श्री संतोष जैन, श्री पद्मचंद जैन, श्री वीरेन्द्र जैन

पुत्रियाँ–श्रीमती चंदनबाई, श्रीमती शीला जैन, श्रीमती कुसुम जैन, श्रीमती निर्मला जैन, कु. सुमन जैन, कु. संध्या जैन।

(2) श्रीमती पार्वती बाई जैन/श्री रतनचंद जी व्या।

पुत्र—श्री विमल कुमार जैन/श्रीमती राजकुमारी जैन

श्री खेमचंद जैन, श्री पवन जैन, श्री अभय जैन

(3) श्रीमती केशरबाई जैन/श्रीमती मूलचंद जी व्या।

पुत्र—महेश जैन व्या—श्रीमती मनोरमा जैन

डॉ. सुरेश जैन/श्रीमती किरण जैन

श्री उदयचंद जैन/श्रीमती मंजूलता जैन

सूरज जैन, सुधीर जैन

पुत्री—कु. राजमती जैन

बल्लु के जन्म के समय मुहल्ले के परिवार—

1. श्री दयाराम सोनी/शांतिबाई सोनी (कक्की)।
   काशीराम सोनी, गोपाल सोनी, राधेश्याम सोनी, बाल मुकुन्द सोनी।
2. श्री पन्नालाल सोनी, मनोहर सोनी, धनीराम सोनी।
3. श्री ज्ञानचंद जैन शिक्षक (सपरिवार)।
4. श्री शीलचंद जैन, संतोष कुमार, देवेन्द्र, रविकुमार।
5. श्री वृंदावन तिवारी, लालाराम तिवारी (सपरिवार)।
6. श्री हजारीलाल जैन (सपरिवार)।
7. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रीराम सहाय नगाईच।
   हरिप्रसाद, रवि, अतुल (सपरिवार)
8. श्री नन्ना नामदेव, नंदी नामदेव।
9. सिंघई दीपचंद जैन, प्रकाश, सुभाष, पुष्पेन्द्र (कोठादार परिवार)।
10. श्री कुन्दन लाल मोदी निर्मल, विमल, कमल।
11. श्री नारायण दास गोस्वामी, सुखलाल (सपरिवार)।
12. श्री विनोद खरे—श्रीमती रेखा खरे, निरंजन खरे, लोकेश खरे।
13. श्री राधेश्याम सोनी, नत्थू (सपरिवार)।
14. श्री विनोद स्वामी (सपरिवार)।
15. श्री मिट्ठूलाल कोठादार, जीवन, नवल, बुद्धे।

उपर्युक्त विवरण सन् 1973 की स्थिति के अनुसार हैं)

(बल्लु के मौसा जी श्री बाबूलाल जैन लिधोरा एवं मौसी श्रीमती सुशीला देवी उस समय जतारा में निवास करते थे।)

—साहित्यकार श्री कपूरचंद बंसल—श्रीमती शांतिदेवी बंसल, सुनील बंसल,

सुधीर बंसल (सपरिवार) का भारी प्रेम था।

—श्री सनतकुमार की प्रथम शादी मजना ग्राम निवासी परिवार की सुपुत्री श्रीमती फूलवती जी जैन से सम्पन्न हुई थी, उनसे एक पुत्रीरत्न का जन्म हुआ था—सुश्री कमला जैन।

—श्रीमती फूलवती बाई के असामयिक निधनोपरान्त, श्री सनत जी का विवाह 4 मई 1965 को श्रीमती भगवती देवी से सम्पन्न हुआ था।

—चि. कमला की शादी 19 फरवरी 1985 को श्री बालचंद जी से सम्पन्न हुई थी। वे देवड़िया वीरउ निवासी थे, अब दिगौड़ा में विराजते हैं।

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य है, जिनके द्वारा रचित एक नई लिपि, जिसे 'विमर्श लिपि' की संज्ञा दी गई है

विमर्श लिपि

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
विमर्श लिपि (स्वर)	ო	ო.	ε	ε·	ω	ω̈
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	.	..	.	..	.	..

	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
विमर्श लिपि (स्वर)	3	'3	ɛ/	ɛ'/	ൿ	ൿ°
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	ɔ	ɔ'	c	c'	o	⊙

ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
3/	3e	8c	8ε

व्यंजन

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
विमर्श लिपि	/.	\\.	|.	>.	<.
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
विमर्श लिपि	ʔ.	e.	6.	9.	ϸ.
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
विमर्श लिपि	7.	∠.	⌉.	^.	Y.
		ड़ →	⌉o	^o ←	ढ़

त वर्ग	त	थ	द	ध	न
विमर्श लिपि					
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म
विमर्श लिपि					
अंतस्थ	य	र	ल	व	
विमर्श लिपि					
ऊष्माण	श	ष	स	ह	
विमर्श लिपि					
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ		
विमर्श लिपि					

विमर्श लिपि में शब्द के नीचे लाईन होती है।
चिन्ह भी लाईन पर ऊपर नीचे आगे-पीछे लगते हैं।

जैसे

राम जाता है	क्या राम जाता है?

पूज्य आचार्यश्री की यह रचना जिसे मध्यप्रदेश शिक्षाबोर्ड ने कक्षा ग्यारहवीं के लिए मकरंद (हिन्दी सामान्य) पुस्तक में चयनित किया –

देश और धर्म के लिए जियो

देश और धर्म के लिए जिओ–2
हर कदम–कदम पे सबको साथ ले,
एकता अखंडता की बात ले,
शुभ–पवित्र लक्ष्य के लिए जिओ
देश और धर्म के लिए जिओ।।1।।

मातृभूमि पर भी हमको गर्व हो,
मातृभूमि रक्षा एक पर्व हो,
ऐसे राष्ट्र पर्व के लिए जिओ,
देश और धर्म के लिए जिओ।।2।।

श्रम सभी का एक मूलमंत्र हो,
श्रम के लिए हर मनुज स्वतंत्र हो,
लोक–लाज शर्म छोड़कर जिओ,
देश और धर्म के लिए जिओ।।3।।

हो अनाथ दुखिया अगर राह में,
हो सहानुभूति हर निगाह में,
करुणा और प्रेम के लिए जिओ,
देश और धर्म के लिए जिओ।।4।।

भाईचारा सबके दिल में हो सदा,
कटुता घृणा बैर भाव हो विदा,
जीना, श्रेष्ठ कर्म के लिए जिओ,
देश और धर्म के लिए जिओ।।5।।

–आचार्य विमर्शसागर

आचार्यश्री के सान्निध्य में सम्पन्न वाचनाएँ

क्रम	स्थान	समय	अवस्था	ग्रंथ
1.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (1995)	ब्रह्मचारी	षटखण्डागम ग्रंथ पर (गुरुवर संघ)
2.	ललितपुर (उ.प्र.)	वर्षायोग (1995)	ब्रह्मचारी	षटखण्डागम धवला
3.	ललितपुर (उ.प्र.)	शीतकालीन (1995)	ब्रह्मचारी	धवलापुस्तक 15, 16
4.	कटनी(म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (1996)	ऐलक	धवला जी पचमखण्ड
5.	मढ़िया जी (म.प्र.)	वर्षायोग (1996)	ऐलक	धवला जी, यशोधर चरित्र
6.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (1997)	ऐलक	समयसार
7.	भिण्ड (म.प्र.)	वर्षायोग (1997)	ऐलक	आध्यात्मिक
		वर्षायोग (1998)	ऐलक	वाचना/समयसार/
		वर्षायोग (1998)	मुनि	मूलाचार
8.	तालबेहट (उ.प्र.)	ग्रीष्मकाल (2000)	मुनि	परमात्म प्रकाश
9.	महरौनी (उ.प्र.)	शीतकालीन (2000)	मुनि	समयसार
10.	बरायठा (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2001)	मुनि	रत्नकरण्ड श्रावकाचार
11	सागर (म.प्र.)	वर्षायोग (2001)	मुनि	गोम्मटसार जीवकाण्ड
12.	पटना बुजुर्ग (म.प्र.)	शीतकालीन (2001)	मुनि	पचास्तिकाय/छहढाला
13.	सागर (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2002)	मुनि	(गुरुवर के साथ)
14	अमरपाटन (म.प्र.)	शीतकालीन (2002)	मुनि	प्रवचनसार, पुरुषार्थसिद्धयुपाय
15.	सतना (म.प्र.)	वर्षायोग (2002)	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
16	मुँगावली (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2003)	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
17.	मण्डीबामौरा (म.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2003)	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
18.	अशोकनगर (म.प्र.)	वर्षायोग (2003)	मुनि	परमात्म प्रकाश
19.	अशोकनगर (म.प्र.)	शीतकालीन (2003)	मुनि	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
20.	कोटा (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2004)	मुनि	परमात्मप्रकाश
21.	रामगंजमण्डी (राज.)	वर्षायोग (2004)	मुनि	मरणकण्डिका
22.	भानपुरा (म.प्र.)	शीतकालीन (2004 05)	मुनि	अष्टपाहुड
23	विजयनगर (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2005)	मुनि	समयसार/जीवकाण्ड
24.	सिगोली (म.प्र.)	वर्षायोग (2005)	मुनि	समयसार/जीवकाण्ड
25.	रावतभाटा (राज.)	शीतकालीन (2005 06)	मुनि	समयसार/जीवकाण्ड
26	नैनवाँ (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2006)	मुनि	प्रवचनसार
27.	कोटा (राज.)	वर्षायोग (2006)	मुनि	परमात्म प्रकाश/ सर्वार्थसिद्धि
28.	कोटा (राज.)	शीतकालीन (2006)	मुनि	समयसार
29	झालरापाटन (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2007)	मुनि	योगसार प्राभृत
30.	रामगंजमण्डी (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2007)	मुनि	योगसार प्राभृत
31.	शिवपुरी (म.प्र.)	वर्षायोग (2007)	मुनि	समयसार/ पुरुषार्थसिद्धयुपाय

32.	शिवपुरी (म.प्र.)	शीतकालीन (2007–08)	मुनि	समयसार/ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
33.	आगरा (उ.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2008)	मुनि	समयसार
34.	आगरा (उ.प्र.)	वर्षायोग (2008)	मुनि	समयसार
35.	आगरा (उ.प्र.)	शीतकालीन (2008–09)	मुनि	रयणसार
36	एटा (उ.प्र.)	वर्षायोग 2009	मुनि	प्रवचनसार
37.	एटा (उ.प्र.)	शीतकालीन (2009)	मुनि	रयणसार
38.	भीलवाड़ा (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2010)	मुनि	समयसार/सर्वार्थसिद्धि
39	उदयपुर (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2010)	मुनि	सर्वार्थसिद्धि (गुरुवर के साथ)
40.	डूंगरपुर (राज.)	वर्षायोग (2010)	मुनि	समयसार/ भगवती आराधना
41	कोटा (राज.)	शीतकाल (2011)	आचार्य	समयसार
42.	अशोकनगर (म.प्र.)	ग्रीष्मकाल (2011)	आचार्य	रयणसार/ समयसार
43.	अशोकनगर (म.प्र.)	वर्षायोग (2011)	आचार्य	समयसार/रयणसार
44	जतारा (म.प्र.)	शीतकालीन (2011.12)	आचार्य	समयसार/रयणसार
45.	जयपुर (राज.)	ग्रीष्मकालीन (2012)	आचार्य	आप्तमीमांसा (गुरुवर के साथ)
46	विजयनगर (राज.)	वर्षायोग (2012)	आचार्य	समयसार/ भगवती आराधना
47.	चंदेरी (म.प्र.)	शीतकालीन (2013)	आचार्य	समयसार/ भगवती आराधना
48	झांसी (उ.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2013)	आचार्य	अष्टपाहुड़/भगवती आराधना
49.	भिण्ड (म.प्र.)	वर्षायोग (2013)	आचार्य	रयणसार/भगवती आराधना
50.	एटा (उ.प्र.)	शीतकालीन (2013–14)	आचार्य	श्रेणिकचरित्र/ अष्टपाहुड़
51	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	शीतकालीन (2014)	आचार्य	सिद्धान्तसार दीपक/ अष्टपाहुड़
52.	आगरा (उ.प्र.)	ग्रीष्मकालीन ((2014)	आचार्य	सिद्धान्तसार दीपक/ अष्टपाहुड़
53.	अलीगढ़ (उ.प्र.)	ग्रीष्मकालीन (2014)	आचार्य	अष्टपाहुड़, सिद्धान्तसार दीपक
54.	बड़ौत (उ.प्र.)	वर्षायोग (2014)	आचार्य	अष्टपाहुड़/रयणसार/ सिद्धान्तसार दीपक

आचार्यश्री के सान्निध्य में हुए विधान आदि आयोजन

1.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	1995	ब्रह्मचारी	नंदीश्वर महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
2.	भिण्ड (म.प्र.)	1997	ऐलक	कल्पद्रुम महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)

3.	मेहगाव (म.प्र.)	1998	ऐलक	सिद्धचक्र महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
4.	तालबेहट (म.प्र.)	2000	मुनि	सिद्धचक्र महामण्डल विधान (पृथक)
5.	घुवारा (म.प्र.)	2001	मुनि	सिद्धचक्र महामण्डल विधान
6.	बरौदिया (म.प्र.)	2002	मुनि	शान्तिविधान
7.	सागर (म.प्र.)	2002	मुनि	श्रीभक्तामर महामण्डल विधान
8.	अमरपाटन (म.प्र.)	2002	मुनि	नवग्रह विधान
9.	ललितपुर (उ.प्र.)	2003	मुनि	इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
10.	ललितपुर (उ.प्र.)	2003	मुनि	रत्नत्रय विधान (गुरुवर के साथ)
11	अशोकनगर (म.प्र.)	2003	मुनि	यागमण्डल विधान/शातिविधान
12.	कोटा (राज.)	2004	मुनि	शांतिविधान
13.	बूँदी (राज.)	2004	मुनि	शांति विधान/यागमण्डल
14	रामगंजमण्डी (राज.)	2004	मुनि	कल्पद्रुम महामण्डल विधान
15	भानपुरा (म.प्र.)	2005	मुनि	16 दिवसीय शान्ति विधान
16.	बोराव (राज.)	2005	मुनि	चौंसठऋद्धि विधान
17.	सिंगोली (म.प्र.)	2005	मुनि	सिद्धचक्र महामण्डल विधान/याग मण्डल
18	बेंची (राज.)	2005	मुनि	शांतिविधान
19.	विजयनगर (राज.)	2005	मुनि	यागमण्डल विधान/शांतिविधान
20.	भीलवाड़ा (राज.)	2005	मुनि	चौंसठऋद्धि विधान
21	सिंगोली (म.प्र.)	2005	मुनि	भक्तामर महामण्डल विधान
22.	रावतभाटा (राज.)	2005	मुनि	कल्पद्रुम महामण्डल विधान
23.	बोराव (राज.)	2006	मुनि	रत्नत्रय महामण्डल विधान
24.	बोराव (राज.)	2006	मुनि	श्री पंचपरमेष्ठी महामण्डल विधान
25	बूँदी (राज.)	2006	मुनि	पंचपरमेष्ठी विधान/शांतिविधान
26.	अलोद (राज.)	2006	मुनि	सिद्धचक्र महामण्डल विधान
27.	नैनवां (राज.)	2006	मुनि	भक्तामर विधान
28.	कोटा (राज.)	2006	मुनि	भक्तामर विधान (11 बार)
29.	कोटा (राज.)	2006	मुनि	कल्याणमंदिर/रत्नत्रय/शांतिविधान
30.	झालरापाटन (राज.)	2006	मुनि	भक्तामर विधान
31	रामगंजमण्डी (राज.)	2007	मुनि	यागमण्डल/शातिविधान
32.	कोटा (राज.)	2007	मुनि	शांतिविधान/यागमण्डल विधान
33.	सेसई (म.प्र.)	2007	मुनि	शातिविधान
34	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	आचार्य विरागसागर विधान/शांतिविधान, रक्षाबंधन विधान
35.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	सिद्धचक्र महामण्डल विधान/भक्तामर विधान
36.	सेसई (शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	कल्पद्रुम महामण्डल विधान/शांतिविधान
37.	नरवर (म.प्र.)	2007	मुनि	भक्तामर विधान
38.	ग्वालियर (म.प्र.)	2008	मुनि	यागण्मडल विधान/शांतिविधान
39.	मुरैना (म.प्र.)	2008	मुनि	नंदीश्वर महामण्डल विधान
40.	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	2008	मुनि	भक्तामर विधान
41.	आगरा (उ.प्र.)	2008	मुनि	भक्तामर विधान/श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

42.	शमशाबाद (उ.प्र.)	2008	मुनि	यागमण्डल विधान/शांतिविधान
43.	एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	शांतिविधान/यागमण्डल विधान/भक्तामर विधान
44.	एटा (उ.प्र.)	2010	मुनि	शांतिविधान/यागमण्डल विधान/रक्षाबधन विधान/श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान/रक्षाबधन विधान
45	विजयनगर (राज.)	2010	मुनि	भक्तामर महामण्डल विधान
46.	भीलवाड़ा (राज.)	2020	मुनि	श्री भक्तामर विधान
47.	डूंगरपुर (राज.)	2010	मुनि	श्री भक्तामर विधान/श्रमण उपसर्ग निवारण विधान
48.	लुहारिया (राज.)	2010	मुनि	श्री कल्पद्रुमविधान (गुरुवर के साथ)
49.	बांसवाड़ा (राज.)	2010	मुनि	गणधरवलय विधान/शांतिविधान (गुरुवर संग)
50.	कोटा (राज.)	2011	आचार्य	यागमण्डल विधान/शांतिविधान/भक्तामर विधान गणधर वलय विधान
51.	अशोकनगर (म.प्र.)	2011	आचार्य	श्री कल्याणमंदिर विधान/भक्तामर विधान आचार्य विरागसागर विधान
52	नई संराय (म.प्र.)	2011	आचार्य	कल्याणमंदिर विधान
53.	शिवपुरी (म.प्र.)	2011	आचार्य	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं गजरथ महोत्सव
54	जतारा (म.प्र.)	2011-12		आचार्य विमर्शसागर विधान भक्तामर विधान/यागमण्डल विधान/ शांतिविधान
55.	पृथ्वीपुर (उ.प्र.)	2012	आचार्य	सिद्धचक्र महाण्डल विधान
56.	आगरा (उ.प्र.)	2012	आचार्य	भक्तामर महामण्डल विधान
57	जयपुर (राज.)	2012	आचार्य	कल्पद्रुम महामण्डल विधान (गुरुवर के साथ)
58.	मौजमाबाद	2012	आचार्य	शांतिविधान
59.	विजयनगर (राज.)	2012	आचार्य	भक्तामर विधान/चौंसठऋद्धि विधान/ गणधर वलय विधान शांतिविधान/आचार्य विरागसागर विधान
60.	धंवलेश्वर (राज.)	2012	आचार्य	भक्तामर महामण्डल विधान
61	महुआ (राज)	2012	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
62.	सिगोली (म.प्र.)	2012	आचार्य	भक्तामर महामण्डल विधान
63.	बोराव (राज.)	2012	आचार्य	भक्तामर महामण्डल विधान
64	कोटा (राज)	2012	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान/यागमण्डल
65.	चंदेरी (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री भक्तामर विधान/यागमण्डल/शांतिविधान
66.	ईशागढ़ (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री भक्तामर विधान
67.	खतौरा (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री शांतिविधान
68.	इन्दार	2013	आचार्य	श्री भक्तामर विधान
69.	शिवपुरी (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
70.	पनिहार (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री यागमण्डल विधान
71	नगरा, झासी (उ.प्र.)	2013	आचार्य	श्री यागमण्डल विधान, शांतिविधान

72. झासी (उ.प्र.)	2013	आचार्य	श्री चौंसठऋद्धिविधान, यागमण्डल विधान, शांतिविधान
73. पृथ्वीपुर (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री यागमण्डल विधान
74. भिण्ड (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री शांतिविधान
75. भिण्ड (म.प्र.)	2013	आचार्य	श्री यागमण्डल विधान
76 एटा (उ.प्र.)	2013	आचार्य	श्री यागमण्डल विधान
77. फिरोजाबाद (उ.प्र.)	2014	आचार्य	श्री भक्तामर मण्डल विधान
78. खुर्जा (उ.प्र.)	2014	आचार्य	श्री भक्तामर मण्डल विधान
79 बड़ौत (उ.प्र.)	2014	आचार्य	श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान श्री दसलक्षण विधान, गणधरवलय विधान
80. खेखड़ा (उ.प्र.)	2014	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
81 खुर्जा (उ.प्र.)	2014	आचार्य	श्री शांतिविधान
82 कमलानगर, आगरा	2014	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
83. शालीमार, आगरा	2014	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
84. छीपीटोला, आगरा	2014	आचार्य	श्री चौंसठ ऋद्धि विधान
85. झासी (उ.प्र.)	2015	आचार्य	श्री भक्तामर महामण्डल विधान
86. जतारा (म.प्र.)	2015	आचार्य	श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

आचार्यश्री के सान्निध्य में पंचकल्याणक महोत्सव

1. ललितपुर (उ.प्र.) 1995	ब्रह्मचारी	आचार्य गुरुवर के साथ
2. द्रोणगिरि (उ.प्र.) 4 - 8 फरवरी 1996	ब्रह्मचारी	आचार्य गुरुवर के साथ
3. देवेन्द्र नगर (पन्ना) 19 - 26 फरवरी 1996	ऐलक	आचार्य गुरुवर के साथ
4. टीकमगढ़ (म.प्र.) 27 अप्रेल से 2 मई 1997	ऐलक	त्रयगजरथ महोत्सव (गुरुवर के साथ)
5. भिण्ड (म.प्र.) 14 - 21 जून 1999	मुनि	गुरुवर के साथ
6. करगुँवाजी, झांसी (उ.प्र.) 12 मार्च से 19 मार्च 2000	मुनि	गुरुवर के साथ
7. रजवास, सागर (म.प्र.) 10 - 16 फरवरी 2002	मुनि	(पृथक) नेमिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचाय पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प'
8. बरोदिया, सागर (म.प्र.) 17 से 25 फरवरी 2002	मुनि	मुनि विशदसागर जी के संग
9. महरौनी (उ.प्र.) 15 - 21 फर. 2003	मुनि	आदिनाथ पंच कल्याणक, गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. विमल कुमार सौरया

10.बूंदी (राज.)		
30 मई से 4 जून 2004	मुनि	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव
11 रामगंजमंडी (राज.)		
2 – 7 मई 2007	मुनि	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. जयकुमार निशांत
12.कोटा (राज.)		
11 – 14 मई 2007	मुनि	श्रीपार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रदीप 'मधुर' मुम्बई
13.शिवपुरी (म.प्र.)		
19 – 24 जून 2008	मुनि	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार निशांत
14.आगरा (उ.प्र.)		
1 – 7 मार्च 2009	मुनि	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जय निशात
15.एटा (उ.प्र.)		
6 – 13 फरवरी 2010	मुनि	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जय निशात
16 जतारा (म.प्र.)		
28 जनवरी से 3 फर. 2012	आचार्य	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव, प्रतिष्ठाचार्य ब्र. ऋषभ जी नागपुर
17.चंदेरी (म.प्र.)		
27 जन. से 1 फर. 2013	आचार्य	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य पं. राजेन्द्रकुमार टीकमगढ़ पं. शांति कुमार पाटिल जयपुर
18. पृथ्वीपुर (म.प्र.)		
16 फर. से 23 फर. 2015	आचार्य	श्रीआदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. ऋषभ भैया, नागपुर

वर्षायोग महोत्सव

1.	ललितपुर (उ.प्र.)	1995	ब्रह्मचारी	गुरुवर के साथ
2.	जबलपुर (म.प्र.)	1996	ऐलक	गुरुवर के साथ
3.	भिण्ड (म.प्र.)	1997	ऐलक	गुरुवर के साथ
4.	भिण्ड (म.प्र.)	1998	ऐलक	गुरुवर के साथ
5.	भिण्ड (म.प्र.)	1999	मुनि	गुरुवर के साथ
6.	महरौनी (उ.प्र.)	2000	मुनि	(पृथक) (2 पिच्छि) 1. मुनि विश्वपूज्यसागर
7.	सागर (म.प्र.)	2001	मुनि	(तीन पिच्छि) 1. बालाचार्य बाहुबलिसागर जी 2. मुनि विश्वपूज्य सागर जी
8.	सतना (म.प्र.)	2002	मुनि	(2 पिच्छि) 1. मुनिश्री विनर्घ्य सागर जी
9.	अशोकनगर (म.प्र.)	2003	मुनि	(2 पिच्छि) 1. मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी 2. मुनिश्री विनर्घ्यसागर जी
10.	रामगंजमंडी (राज.)	2004	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनि विश्वपूज्यसागर जी 2. क्षु. विशुद्ध सागर जी, (ब्र. राजीव भैया)
11.	सिंगोली (म.प्र.)	2005	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनि विश्वपूज्य सागर जी 2. क्षुल्लक विशुद्ध सागर जी (ब्र राजीव भैया)
12.	कोटा (राज.)	2006	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी 2. क्षु. श्री विशुद्धसागर जी (ब्र. राजीव भैया)
13.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनिश्री विश्वपूज्यसागर जी 2. क्षु. श्री विशुद्धसागर जी (ब्र. राजीव भैया
14	आगरा (उ.प्र.)	2008	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनिश्री विश्वपूज्य सागर जी 2. क्षु. श्री विशुद्धसागर जी (ब्र. राजीव भैया, ब्र.पवन भैया)
15.	एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	(3 पिच्छि) 1. मुनि विश्वपूज्यसागर जी 2. क्षु. विशुद्धसागर जी (ब्र. राजीव भैया, ब्र. दीपक भैया, बा.ब्र. रीना दीदी, मीरा दीदी, आशा दीदी, प्रियंका दीदी, रेणु दीदी
16.	डूंगरपुर (राज.)	2010	मुनि	(4 पिच्छि)

1. क्षु. अतुल्यसागर जी
2. क्षु. विश्वयोग सागर जी
3. क्षु. विश्वबंधु सागर जी
(ब्र. राजीव भैया, ब्र. रीना दीदी, आशा दीदी, मीरा दीदी, रेणु दीदी, प्रियंका दीदी

17. अशोक नगर (म.प्र.)2011 आचार्य (5 पिच्छी)
1. मुनि विश्वतीर्थ सागर जी
2. ऐलक विचिन्त्यसागर जी,
3. क्षु. विशुद्धसागार जी
4. क्षु. विश्वबंधु सागर जी
ब्र. कैलाश भैया, ब्र. रीना दीदी, मीरा दीदी, रेणु दीदी, प्रियंका दीदी, ब्र. ट्विंकल दीदी, श्वेता दीदी, नमिता दीदी

18. विजयनगर (राज.) 2012 आचार्य (6 पिच्छी)
1. ऐ. विचिन्त्यसागर जी
2. क्षु. विशुद्धसागर जी
3. क्षु. विश्वबधुसागर जी,
4. क्षु. विजेयसागर जी
5. क्षु. विश्वाभसागर जी
ब्र. देवेन्द्र भैया, ब्र. प्रकाश भैया बा. ब्र. श्वेतादीदी, नमिता दीदी, रीना दीदी, मीरा दीदी, रेणु दीदी, प्रियंका दीदी, आँचल दीदी, नेहा दीदी, ट्विंकल दीदी, ज्योति दीदी

19. भिण्ड (म.प्र.) 2013 आचार्य उक्तानुसार

20. बड़ौत (उ.प्र.) 2014 आचार्य (7 पिच्छि)
1. मुनि विचिन्त्यसागर जी
2. ऐलक विजेयसागर जी
3. क्षुल्लक विशुद्धसागर जी
4. क्षु. विश्वाभसागर जी
5. क्षु. विश्वज्ञसागर जी
6. क्षु. विश्वभूसागरजी
—बा.ब्र. रवि भैया, पारस भैया, प्रशांत भैया, सागर भैया, श्वेता दीदी, नमिता दीदी, रीना दीदी, विद्या दीदी, रेणु दीदी, कल्पना दीदी, मीरा दीदी, ट्विंकल दीदी, आंचल दीदी, नेहा दीदी, रिया दीदी, ज्योति दीदी, दीपा दीदी, सृष्टि दीदी।

आचार्यश्री की तीर्थवंदना : गुरुवर के साथ

1. 1995	ब्रह्मचारी	सम्मेदशिखर जी, थूबौन जी, चंदेरी, खदारगिरीजी, बीना बारहा
2. 1995	ब्रह्मचारी	बनारस जी
3. 1995	ब्रह्मचारी	सिद्धक्षेत्र अहार जी
4. 1996	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र पपौरा जी-वानपुर जी
5. 1996	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षेत्र द्रोणगिरि जी (सिद्धक्षेत्र)
6. 1996	ब्रह्मचारी	अतिशय क्षे. देवगढ़ जी
7. 1996	ब्रह्मचारी	सिद्धक्षेत्र बड़ागाँव (धसान)
8. 1996	ऐलक	अ.क्षे. श्रेयांसगिरी
9. 1996	ऐलक	अ.क्षे. बहोरिबंद
10.1996	ऐलक	अ.क्षे. मढिया जी, अ.क्षे. कोनीजी
11.1996	ऐलक	सिद्धक्षे. कुण्डलपुर जी
12.1996	ऐलक	सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी, बड़ागाँव (धसान)
13.1997	ऐलक	अ.क्षे. पपौरा जी
14.1997	ऐलक	अ.क्षे. करगुवां जी, बंधा जी
15.1997	ऐलक	सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी, गोपाचल पर्वत
16.1998	ऐलक	अ.क्षे. शौरीपुर बटेश्वर जी
17.1998	मुनि	अ.क्षे. बरासौजी (भिण्ड)
18.1998	मुनि	अ.क्षे. बरहीजी
19.1998	मुनि	अ.क्षे. सिहोनिया जी
20.1998	मुनि	अ.क्षे. पावई जी
21.2000	मुनि	करगुँवा जी

आचार्यश्री की तीर्थवंदना : संघनायक के रूप में

1. 2000	मुनि	अ.क्षे. सेरोन जी (उ.प्र.) पवाजी
2. 2000	मुनि	अ.क्षे. क्षेत्रपाल जी, ललितपुर (उ.प्र.)
3. 2000	मुनि	अ.क्षे. गिरार जी (म.प्र.)
4. 2000	मुनि	अ.क्षे. सीरोनजी (म.प्र.)
5. 2001	मुनि	अ.क्षे. नवागढ़ जी (म.प्र.)
6. 2001	मुनि	सिद्धक्षेत्र बड़ागाँव धसान (म.प्र.) गिरार जी
7. 2001	मुनि	अ.क्षे. पटनागंज (म.प्र.)
8. 2002	मुनि	अ.क्षे. ईसुरवारा (म.प्र.)

9. 2002	मुनि	अ.क्षे. बीना बारहा (गुरुवर के साथ)
10.2002	मुनि	सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी
11.2002	मुनि	सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जी
12.2002	मुनि	अ.क्षे. डेरा पहाड़ी, छतरपुर (म.प्र.)
13.2002	मुनि	अ.क्षे. श्रेयांसगिरि जी
14.2003	मुनि	अ.क्षे. श्रेयांसगिरि जी, अहार जी
15.2003	मुनि	अ.क्षे. बालाबेहट जी
16.2003	मुनि	अ.क्षे. सेरोन जी
17.2003	मुनि	अ.क्षे. क्षेत्रपाल जी, ललितपुर (उ.प्र.)
18.2003	मुनि	अ.क्षे. चंदेरी (म.प्र.)/अ.क्षेत्र खंदारगिरी जी
19.2003	मुनि	अ.क्षे. थूवौन जी (म.प्र.)
20.2003	मुनि	अ.क्षे. त्रिकाल चौबीसी अशोक नगर (म.प्र.)
21.2003	मुनि	अ.क्षे. बजरंगगढ़ जी (म.प्र.)
22.2004	मुनि	अ.क्षे. चाँदखेड़ी (राज.)
23.2004	मुनि	अ.क्षे. केशवराय पाटन (राज.)
24.2005	मुनि	अ.क्षे. कैथूली (राज.)
25.2005	मुनि	अ.क्षे. बिजौलिया जी (राज.)
26.2005	मुनि	अ.क्षे. चंवलेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
27.2006	मुनि	अ.क्षे. आवाँ (राज.) चाँपानेरी (राज.), बिजौलिया अ.क्षे. दादाबाड़ी, कोटा

28.2006	मुनि	अ.क्षे. केशवरायपाटन (राज.)
29.2007	मुनि	अ.क्षे. झालरापाटन (राज.) / अ.क्षे. नसिया जी, रामगंजमंडी (राज.)
30.2007	मुनि	अ.क्षे. सेसई जी (म.प्र.)
31.2007	मुनि	अ.क्षे. कोलारस (म.प्र.) छत्री मंदिर शिवपुरी/सेसई
32.2008	मुनि	सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी (म.प्र.)
33.2008	मुनि	सिद्धक्षेत्र गोपाचल, ग्वालियर (म.प्र.)
34.2008	मुनि	अ.क्षे. फिरोजाबाद (उ.प्र.)
35.2008	मुनि	सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी (उ.प्र.)
36.2009	मुनि	अ.क्षे. शौरीपुर बटेश्वर (उ.प्र.)
37.2009	मुनि	अ.क्षे. नेमिनाथ जिनालय, एटा (उ.प्र.)
38.2009	मुनि	अ.क्षे. महावीर जी (राज.)
39.2009	मुनि	अ.क्षे. कम्पिल जी (उ.प्र.)
40.2009	मुनि	अ.क्षे. फफोतु, एटा (उ.प्र.)
41.2010	मुनि	सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी (उ.प्र.)
42.2010	मुनि	अ.क्षे. चूलगिरी, जयपुर (राज.)
43.2010	मुनि	अ.क्षे. खानिया जी, जयपुर (राज.)
44.2010	मुनि	अ.क्षे. सांगानेर, जयपुर (राज.)/ अ.क्षे.चांपानेरी (राज.)
45.2011	मुनि	अ.क्षे. चांदखेड़ी (राज.)
46.2011	आचार्य	अ.क्षे. बजरंगगढ़, गुना (म.प्र.)
47.2011	आचार्य	अ.क्षे. त्रिकाल चौबीसी, अशोकनगर (म.प्र.)
48.2011	आचार्य	अ.क्षे. थूवौन जी (म.प्र.)
49.2011	आचार्य	अ.क्षे. चौबीसी, चंदेरी (म.प्र.)
50.2011	आचार्य	अ.क्षे. खंदार जी, चंदेरी (म.प्र.)
51.2011	आचार्य	अ.क्षे. प्राणपुर (म.प्र.)
52.2011	आचार्य	अ.क्षे. सैरोन जी (उ.प्र.)
53.2011	आचार्य	अ.क्षे. सैरोन जी (उ.प्र.)
54.2011	आचार्य	अ.क्षे. प्राणपुर (म.प्र.)
55.2011	आचार्य	अ.क्षे. चौबीसी चंदेरी, अतिशय क्षेत्र खंदार श्री चंदेरी (म.प्र.)
56.2011	आचार्य	अ.क्षे. त्रिकाल चौबीसी अशोकनगर (म.प्र.)
57.2011	आचार्य	अ.क्षे. सेसई, शिवपुरी (म.प्र.)

58.2012	आचार्य	अ.क्षे. करगुँवा जी, झांसी (उ.प्र.)
59.2012	आचार्य	सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी (उ.प्र.)
60.2012	आचार्य	सिद्धक्षेत्र गोपाचल, ग्वालियर (म.प्र.)
61.2012	आचार्य	अ.क्षे. खानिया जी जयपुर (राज.)
62.2012	आचार्य	अ.क्षे. मौजमाबाद (राज.)
63.2012	आचार्य	अ.क्षे. सोनीजी नसिया, अजमेर (राज.)
64.2012	आचार्य	अ.क्षे. चंवलेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
65.2012	आचार्य	अ.क्षे. विजौलिया पार्श्वनाथ, चांदखेड़ी (राज.)
66.2012	आचार्य	अ.क्षे. त्रिकाल चौबीसी, अशोकनगर (म.प्र.)
67.2013	आचार्य	अ.क्षे. थूवौन जी (म.प्र.)
68.2013	आचार्य	अ.क्षे. चौबीसी चंदेरी (म.प्र.)
69.2013	आचार्य	अ.क्षे. खंदारजी, चंदेरी (म.प्र.)
70.2013	आचार्य	अ.क्षे. पार्श्वनाथ जिनालय, रामनगर चंदेरी(म.प्र.)
71.2013	आचार्य	अ.क्षे. प्राणपुर, चदेरी (म.प्र.)
72.2013	आचार्य	अ.क्षे. सेसई, शिवपुरी (म.प्र.)
73.2013	आचार्य	अ.क्षे. करगुँवा जी
74.2013	आचार्य	अ.क्षे. बरासौ जी, बरही जी
75.2013	आचार्य	अ.क्षे. चाँदवाड़ फिरोजाबाद (उ.प्र.)
76.2014	आचार्य	अ.क्षे. खुर्जा जैन मंदिर (उ.प्र.)
77.2014	आचार्य	अ.क्षे. हस्तिनापुर (उ.प्र.)
78.2014	आचार्य	अ.क्षे. महलका (उ.प्र.)
79.2014	आचार्य	अ.क्षे. बरनावा (उ.प्र.)
80.2014	आचार्य	अ.क्षे. बड़ागांव (उ.प्र.)
81.2014	आचार्य	अ.क्षे. खुर्जा (उ.प्र.)
82.2014	आचार्य	सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी (म.प्र.)

आचार्यश्री का श्रमण श्रमणियों से भव्य मिलन

1.	1995	ब्र.	पपौरा जी (म.प्र.)	क्षु. विनयसागर
2.	1995	ब्र.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	मुनि हेमंतसागर जी, मुनि विरागसागर जी
3.	1995	ब्र.	खंदार गिरि (म.प्र.)	मुनि निर्वाणसागर जी
4.	1995	ब्र.	सम्मेदशिखर जी	आ.श्री भरतसागर जी, आ. सभवसागर जी, आ. स्याद्वाद मति जी
5.	1995	ब्र.	ललितपुर (उ.प्र.)	क्षु. चन्द्रमति जी
6.	1996	ऐलक	गौसलपुर (म.प्र.)	ऐ. गोसलसागर जी, मुनि सम्मेदसागर जी (गुरुवर के साथ)
7.	1996	ऐलक	करगुँवाजी (उ.प्र.)	मुनि समतासागर, मुनि प्रमाणसागर (गुरु के संग)
8.	1997	ऐलक	जबलपुर (म.प्र.)	तपस्वी सम्राट आ. श्री सन्मतिसागर जी
9.	1997	ऐलक	भिण्ड (म.प्र.)	आचार्य वीर सागर जी
10.	1999	मुनि	भिण्ड (म.प्र.)	आचार्य पुष्पदंतसागर जी (ससंघ)
11.	2000	मुनि	तालबेहट (उ.प्र.)	मुनिश्री श्रुतनंदी जी महाराज मुनिश्री मार्दवनंदी जी महाराज मुनिश्री अमरनंदी जी महाराज मुनिश्री वीरसम्राट जी महाराज
12.	2000	मुनि	जखौरा (उ.प्र.)	मुनिश्री विश्वकीर्तिसागर जी ऐलक विनम्रसागर जी क्षु. विनिश्चलसागर जी
13.	2000	मुनि	महारौनी (उ.प्र.)	आचार्यश्री पद्मनदी सागर जी महाराज, मुनिश्री श्रुतनंदी जी महाराज, मुनिश्री मार्दवनंदी जी महाराज, मुनिश्री अमरनंदी जी, मुनि विश्वकीर्तिसागर, ऐलक विनम्र सागर, क्षु. विनिश्चलसागर, क्षु. पदमसागर जी
14	2001	मुनि	घुवारा (म.प्र.)	मुनिश्री विमदसागर जी क्षु. कुंदकुंदसागर जी
15.	2001	मुनि	शाहगढ़ (म.प्र.)	मुनिश्री विशुद्धसागर जी मुनिश्री विशल्यसागर जी मुनिश्री विश्ववीर सागर जी
16.	2001	मुनि	शाहगढ़ (म.प्र.)	क्षु. रत्नकीर्ति जी महाराज
17.	2001	मुनि	अमरपाटन (म.प्र.)	उपाध्याय आत्मासागर जी
18.	2001	मुनि	सागर (म.प्र.)	बालाचार्य बाहुबलीसागर जी
19.	2001	मुनि	पटनागज (म.प्र.)	आचार्यश्री देवनंदी जी
20.	2001	मुनि	रहली (म.प्र.)	मुनिश्री वैराग्यनंदी जी
21	2002	मुनि	बरौदिया (म.प्र.)	मुनिश्री विशदसागर जी
22	2002	मुनि	देवेन्द्रनगर (म.प्र.)	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी

23.	2002	मुनि	सिलवानी (म.प्र.)	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज (ससंघ) मुनिश्री विशुद्धसागर जी
24.	2003	मुनि	बीना (म.प्र.)	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज
25.	2003	मुनि	ललितपुर (उ.प्र.)	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज, मुनिश्री विशदसागर जी, मुनिश्री विहर्षसागर जी, आर्यिका विभा श्री माताजी, मुनिश्री विनम्रसागर जी, क्षु. विधेय सागर जी, क्षु. विशारदसागर जी
26	2003	मुनि	खुरई (म.प्र.)	आर्यिका भावनामति माताजी आर्यिका प्रभावनामति माताजी (आ. विद्यासागर जी की शिष्या)
27	2003	मुनि	खिमलासा (म.प्र.)	आर्यिका विभाश्री माताजी
28	2003	मुनि	चंदेरी (म.प्र.)	मुनिश्री स्वभावसागर जी महाराज (शिष्य आ. श्री विद्यासागर जी)
29.	2002	मुनि	रहली (म. प्र)	मुनिश्री वैराग्यनंदी जी महाराज मुनिश्री तीर्थनदी जी महाराज
30.	2002	मुनि	रजवास (म.प्र.)	उपाध्याय विद्यासागर जी महाराज आर्यिका आदर्शमति माता जी
31	2002	मुनि	सागर (म.प्र.)	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी महाराज
32.	2002	मुनि	सागर (म.प्र.)	ऐ. विनम्रसागर जी
33.	2003	मुनि	श्रेयांसगिरि	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी महाराज
34.	2004	मुनि	अशोक नगर (म.प्र.)	मुनिश्री विनम्रसागर जी महाराज
35	2004	मुनि	अशोकनगर (म.प्र.)	आर्यिका विज्ञानमति माताजी (शिष्या आ.श्री विद्यासागर जी)
36.	2004	मुनि	कोटा (राज.)	आचार्यश्री विवेकसागर जी महाराज
37	2004	मुनि	कोटा (राज.)	क्षु. विशुद्धसागर जी
38.	2004	मुनि	कोटा (राज.)	उपा. संयमसागर जी
39.	2005	मुनि	भवानीमंडी (राज.)	मुनिश्री स्वभावसागर जी महाराज शिष्य आचार्यश्री विद्यासागर जी)
40.	2005	मुनि	ठुकराई (राज.)	मुनिश्री विप्रणसागर जी महाराज ऐ. विनीतसागर जी (अब आचार्य)
41	2005	मुनि	भीलवाड़ा (राज.)	मुनिश्री विनम्रसागर जी महाराज
42.	2004	मुनि	जोगणियां घाटा (राज.)	उपा. श्री आत्मासागर जी महाराज
43.	2005	मुनि	धामनिया	आर्यिका अक्षयमति माता जी
44.	2010	मुनि	महुआ (राज.)	मुनिश्री युधिष्ठिरसागर जी
45.	2010	मुनि	जयपुर (राज.)	आचार्यश्री भरतसागर जी (गुजरात केशरी)
46.	2010	मुनि	रैनवाल (राज.)	ऐलाचार्य नवीनसागर जी
47.	2010	मुनि	मालपुरा (राज.)	मुनिश्री विजय सागर जी, मुनिश्री मार्दव नंदी जी, मुनिश्री इन्द्रनंदी जी, मुनिश्री कचनसागर जी

48.	2010	मुनि	जूनिया के पास जंगल में	आचार्यश्री बाहुबलीसागर जी
49.	2010	मुनि	उदयपुर	मुनिश्री विनम्रसागर जी महाराज, मुनिश्री विधेयसागर जी महाराज
50.	2010	मुनि	उदयपुर (राज.)	आ. श्री विरागसागर जी महाराज, आ. श्री विपुलसागर जी महाराज मुनिश्री रविसागर जी महाराज मुनिश्री धैर्यसागर जी महाराज मुनिश्री निरंजनसागर जी महाराज
51.	2010	मुनि	डूंगरपुर (राज.)	क्षु. अतुल्यसागर जी
52.	2.1.	मुनि	सांवला (राज.)	उपाध्याय श्री ऊर्जयन्तसागर जी
53	2010	मुनि	लुहारिया (राज.)	आ. गुरुवर विरागसागर जी महाराज, आर्यिका सत्यमति माताजी, आर्यिका सकलमति माताजी, (शिष्या आ. श्री विद्यासागर जी) आर्यिका भरतेश्वरमति माता जी, आर्यिका नंदीश्वरमति माता जी, आर्यिका वीरमति माताजी
54.	2010	मुनि	बासवाड़ा (राज.)	मुनिश्री विनम्रसागर जी, आर्यिका सत्यमति आर्यिका सकलमति जी, आर्यिका भरतेश्वरमति

आचार्य पद के बाद : साधकों से वात्सल्य मिलन

1.	2010	आचार्य	बांसवाड़ा (राज.)	आ. श्री विरागसागर जी महाराज आ. श्री विनम्रसागर जी 2) आर्यिका सकलमति माताजी आर्यिका सत्यमति माताजी आर्यिका सकलमति माताजी आर्यिका भरतेश्वरमति माताजी आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी आर्यिका वीरमति माताजी
2.	2011	आचार्य	नीमच (म.प्र.)	आर्यिका सुभूषणमति माताजी (4)
3.	2011	आचार्य	प्रतापगढ़ (राज.)	आ. श्री सच्चिदानद जी महाराज(3)
4.	2011	आचार्य	सिगोली (म.प्र.)	आर्यिका विज्ञानमति माताजी (7)
5.	2011	आचार्य	कोटा (राज.)	मुनिश्री विप्रणसागर जी (2)
6.	2011	आचार्य	सागोद (राज.)	क्षु. नयसागर जी (1)
7.	2011	आचार्य	छबड़ा (राज.)	मुनिश्री प्रबलसागर जी (2)
8.	2011	आचार्य	चांदखेड़ी (राज.)	आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी (1)
9.	2011	आचार्य	रूठियाई (म.प.)	ऐलक सिद्धान्तसागर जी (1)
10.	2011	आचार्य	खंदारगिरि (म.प्र.)	मुनिश्री निर्वाणसागर जी (1)
11	2011	आचार्य	पिपरई (म.प्र.)	मुनिश्री सुव्रतसागर जी (1)
12.	2011	आचार्य	अशोकनगर (म.प्र.)	आर्यिका सरस्वतीभूषण माताजी (2)

13.	2012	आचार्य	जतारा (म.प्र.)	आचार्यश्री विशुद्धसागर जी (15)
14.	2012	आचार्य	जतारा (म.प्र.)	मुनिश्री विश्वरत्नसागर जी (2)
15.	2012	आचार्य	जतारा (म.प्र.)	मुनिश्री विश्वलोचनसागर जी
16.	2012	आचार्य	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	आचार्यश्री विभवसागर जी (5)
17.	2012	आचार्य	बरुआसागर (म.प्र.)	मुनिश्री विनिश्चलसागर जी महाराज (4)
18	2012	आचार्य	सोनागिर जी (म.प्र.)	आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज
				मुनिश्री विहर्षसागर जी (3)
				मुनिश्री अमितसागर जी (10)
				आर्यिका ज्ञानमति माताजी (10)
				क्षु. ज्ञानभूषण जी (1)
				आर्यिका विशा श्री माताजी (5)
				आर्यिका विभा श्री माताजी (2)
				आर्यिका विशाखा श्री माताजी (2)
				मुनि विश्वयशसागर जी (1)
				क्षु. सरल मति माताजी
19	2012	आचार्य	ग्वालियर (म.प्र.)	मुनिश्री विहर्षसागर जी (3)
20.	2012	आचार्य	मुरैना (म.प्र.)	मुनिश्री विनिश्चयसागर जी (5)
21.	2012	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	मुनिश्री विश्वरत्नसागर जी (2)
22	2012	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	आचार्यश्री सुन्दरसागर जी (10)
23.	2012	आचार्य	महुआ (राज.)	मुनिश्री युधिष्ठिर सागर जी (1)
24.	2012	आचार्य	चूलगिरी, जयपुर (राज.)	आ. श्री विशुद्धसागर जी (15)
				आचार्यश्री विभवसागर जी (5)
				आर्यिका विशाश्री (5)
				आर्यिका विभाश्री (2)
25.	2012	आचार्य	जयपुर (राज.)	आ. श्री विरागसागर जी महाराज
				आ. श्री विमदसागर जी महाराज (5)
				मुनि विशेषसागर जी (2)
				मुनिश्री विश्रुतसागर जी (2)
				मुनिश्री विशोकसागर जी (2)
				मुनिश्री विनर्घ्यसागर जी (2)
				मुनिश्री विनिश्चयसागर जी (5)
				आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी (5)
				आर्यिका सम्मेदशिखर मति माताजी (2)
				आर्यिका गरिमामति माताजी (2)
				आर्यिका विशाखाश्री माताजी (2)
				आर्यिका विशिष्टश्री माताजी (11)
				आर्यिका विदूषीश्री माताजी (7)
26.	2012	आचार्य	केकड़ी (राज.)	मुनिश्री देवेन्द्रसागर जी (1)
27.	2012	आचार्य	मौजमाबाद (राज.)	उपाध्याय ऊर्जयन्तसागर जी (1)
28.	2012	आचार्य	अजमेर (राज.)	मुनिश्री विज्ञानसागर जी (1)

29.	2012	आचार्य	अजमेर (राज.)	मुनिश्री विशुद्धसागर जी (1)
30.	2012	आचार्य	महुआ (राज.)	मुनिश्री विप्रसागर जी (1)
31	2012	आचार्य	कोटा (राज.)	आचार्यश्री विमदसागर जी (5)
32.	2012	आचार्य	चादखेड़ी (राज.)	मुनिश्री चिन्मयसागर जी (जगल वाले बाबा) मुनिश्री प्राप्तिसागर जी (1) आर्यिका सृष्टिभूषण माता जी (2)
33.	2012	आचार्य	चदेरी (म.प्र.)	मुनिश्री वृषभसागर जी
34.	2013	आचार्य	चदेरी (म.प्र.)	मुनि स्वयभूसागर, मनि यशोधर सागर, मुनि संस्कारसागर
35	2013	आचार्य	चदरी (म.प्र.)	उपा. उदारसागर जी मुनि उपशातसागर जी
36	2013	आचार्य	पनिहार (म.प्र.)	क्षुल्लकश्री
37.	2013	आचार्य	सोनागिर (उ.प्र.)	आ श्री चन्द्रसागर जी (2) मुनिश्री कीर्तिसागर आर्यिका ऋद्धिमति माताजी (4)
38	2013	आचार्य	झाँसी (उ.प्र.)	आ.श्री चन्द्रसागर जी (2) आर्यिका ऋद्धिमति माताजी (4)
39.	2013	आचार्य	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	मुनिश्री विनिश्चय सागर जी (7)
40.	2013	आचार्य	करगुँवा जी (उ.प्र)	आ.श्री चन्द्रसागर जी (6) मुनिश्री विनिश्चयसागर जी (7)
41.	2013	आचार्य	भिण्ड (म.प्र.)	मुनिश्री सुरत्नसागर जी (6)
42.	2013	आचार्य	भिण्ड (म.प्र.)	मुनिश्री विश्वनेमिसागर जी (1)
43	2013	आचार्य	बरई (उ.प्र.)	आ. सदयमति, आ. समय मति
44.	2014	आचार्य	एटा (उ.प्र.)	आचार्य नमिसागर जी
45.	2014	आचार्य	एटा (उ.प्र.)	आचार्य सुंदरसागर जी (12)
46	2014	आचार्य	एटा (उ.प्र)	स्वयभूसागर, मुनि यशोधरसागर
47.	2014	आचार्य	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	मुनिश्रीअमितसागर जी (7)
48.	2014	आचार्य	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	आर्यिका भाग्यमति माताजी (1)
49	2014	आचार्य	फिरोजाबाद (उ.प्र)	क्षु. योगभूषण जी (2)
50.	2014	आचार्य	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	मुनिश्री तरुणसागर जी (1)
51.	2014	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	क्षु. योगभूषण जी (1)
52	2014	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	आचार्य मेरुभूषण जी (1)
53.	2014	आचार्य	अलीगढ़ (उ.प्र.)	मुनि विजयसागर जी (1)
54.	2014	आचार्य	छोटा मवाना (उ.प्र.)	मुनि निर्वाणभूषण जी (1)
55.	2014	आचार्य	हस्तिनापुर (उ.प्र.)	आचार्य भारतभूषण जी (4)
56.	2014	आचार्य	हस्तिनापुर (उ.प्र.)	गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी आर्यिका चंदनामति माताजी
57.	2014	आचार्य	हस्तिनापुर (उ.प्र.)	एलाचार्य निशंक भूषण जी (1)
58.	2014	आचार्य	हस्तिनापुर (उ.प्र.)	क्षुल्लिका चारुमति माताजी (1)
59.	2014	आचार्य	सरधना (उ.प्र.)	आर्यिका प्रत्यक्षमति माताजी (2)

60.	2014	आचार्य	महलका (उ.प्र.)	क्षुल्लिका चारुमति माताजी (1)
61.	2014	आचार्य	बड़ौत (उ.प्र.)	क्षुल्लिका मुक्तिप्रभा माताजी (1)
62	2014	आचार्य	बड़ौत (उ.प्र.)	मुनि सुबोधसागर जी (1)
63.	2014	आचार्य	बड़ौत (उ.प्र.)	ग. आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी (5)
64.	2014	आचार्य	बड़ौत (उ.प्र.)	आचार्य ज्ञानसागर जी (3)
65	2014	आचार्य	गाजियाबाद (उ.प्र.)	मुनिश्री प्रमुखसागर जी (2)
66.	2014	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	आर्यिका सुनयमति माताजी (1)
67.	2014	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	मुनि विश्वतीर्थसागर जी
68	2014	आचार्य	मुरैना (म.प्र.)	आचार्य विनिश्चयसागर जी (6)
69.	2014	आचार्य	आगरा (उ.प्र.)	ऐलाचार्य विशुद्धसागर जी (1)
70.	2014	आचार्य	ग्वालियर (म.प्र.)	श्वेताम्बर आचार्य महाश्रमण जी (80)
71	2014	आचार्य	सोनागिर (म.प्र.)	आर्यिका नमन श्री माताजी (4)
72.	2014	आचार्य	सोनागिरि (म.प्र.)	मुनिश्री विश्वलोचन सागर जी (1)
73.	2014	आचार्य	सोनागिरि (म.प्र.)	मुनिश्री कीर्तिसागर जी (1)
74.	2014	आचार्य	झांसी (उ.प्र.)	आर्यिका सम्मेदशिखर माताजी (2)

आचार्यश्री के सान्निध्य में वेदी प्रतिष्ठाएँ

क्र. स्थान	दिनांक (समय)	अवस्था	आयोजन
1. अमरपाटन (म.प्र.)	14 दिसम्बर 2001	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव
2. भानपुरा (म.प्र.)	12 से 14 जन. 2005	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा एवं जिनबिम्ब स्थापना
3. भानपुरा (म.प्र.)	28 से 30 जन. 2005	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा एवं ध्वजदण्ड स्थापना
4. विजयनगर (राज.)	26 से 28 अगस्त 2006	मुनि	नवीन जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा समारोह
5. बूँदी (राज.)	18 से 21 फरवरी 2006	मुनि	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव
6. कोटा (राज.)	2006		मुनि–वेदी प्रतिष्ठा एवं ध्वजदण्ड [illegible]
7. नैनवां (राज.)	22 जून 2006	मुनि	कलशारोहण महोत्सव एवं रथोत्सव
8. म.न.प्रथम कोटा (राज.)		2007	मुनिनवीन जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा समारोह
9. आगरा सेक्टर 7 में	2008	मुनि	नवीन जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा समारोह
10. एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	शिखर शुद्धि, कलशारोहण महोत्सव
11. एटा (उ.प्र.)	2010	मुनि	वेदीशुद्धि, ध्वजदण्ड स्थापना
12. कोटा (राज.)	2011	आचार्य	शिखर शुद्धि, ध्वजदण्ड स्थापना (म.न. विस्तारयोजना)
13. शास्त्री मार्केट, कोटा	2011	आचार्य	नवीन वेदी प्रतिष्ठा एवं जिनबिम्ब स्थापना महोत्सव
14 गढ़ पैलेस कोटा (राज.)		2011	आचार्य शिखरशुद्धि, ध्वजदण्ड स्थापना समारोह, वेदी प्रतिष्ठा
15. शिवपुरी (म.प्र.)	23.11.2011	आचार्य	शिखर शुद्धि ध्वजदण्ड स्थापना समारोह

16	शिवपुरी (म.प्र.)	20.11.2011	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा एवं चार नवीन शिखरों पर कलशारोहण एवं ध्वजदण्ड स्थापना समारोह
17.	अ.क्षे पनिहार (म.प्र.)	11, 12 मई 2013	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा, प्राचीन उत्तंग प्रतिमाओं की शुद्धि एवं प्रतिमा विराजमान
18.	नगरा, झासी (उ.प्र.)	30, 31 मई, 1 जून 2013	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा, (ननीन जिनालय) जिनबिम्ब स्थापना समारोह
19.	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	10, 11, 12 जुलाई 2013	आचार्य	नवीन वेदी प्रतिष्ठा जिनबिम्ब स्थापना महोत्सव
20.	झाँसी (उ.प्र.)	3, 4, 5 जुलाई 2013	आचार्य	बड़े मंदिर में प्राचीन वेदिका के जीर्णोद्धार हेतु जिनबिम्ब उत्थापन समारोह।
21.	एटा (उ.प्र.)	11, 12, 13 दिसम्बर 2013	आचार्य	आचार्य विमलसागर प्रतिमा स्थापना तथा नवीन शिखरों पर कलशारोहण (नेमिनाथ जिनालय)
22.	झासी (उ.प्र.)	9, 10, 11 जनवरी 2015	आचार्य	बड़ा मंदिर त्रयवेदी प्रतिष्ठा एव जिनबिम्ब स्थापना समारोह
23.	पृथ्वीपुर (म.प्र.)	13, 14, 15 जनवरी 2015	आचार्य	वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं जिनबिम्ब स्थापना समारोह

आचार्यश्री के सान्निध्य में सम्पन्न कतिपय सम्मेलन व कार्यक्रम

क्र.	स्थान	दिनांक (समय)		कार्यक्रम, निर्वाण, जीर्णोद्धार आदि
1.	भिण्ड (म.प्र.)	1997	ऐलक	1997 वर्षायोग में गुरुवर के साथ जंगल जाते समय ऐलक विमर्शसागर जी के चिंतन धरातल से प्रभात की बेला में 'जीवन है पानी की बूँद(काव्य का जन्म हुआ जो आज एक महाकाव्य बनकर जन-जन को संसार की असारता का बोध करा रहा है यह गीत आज गुरुवर की पहचान बन चुका है।
2.	महरौनी (उ.प्र.)	2.11.2000		मुनि–अहिंसा सम्मेलन
3.	महरौनी (उ.प्र.)	6.11.2000		मुनि–वेदी शिलान्यास

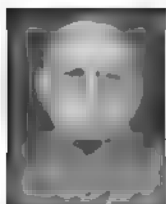
4.	सतना	2002		मुनि—आचार्यश्री की प्रेरणा से सतना समाज द्वारा श्रेयांसगिरि में धर्मशाला का निर्माण
5.	रामगंज मण्डी (राज.)	2004	मुनि	भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में मुनिश्री का विद्यालय के छात्रों को मंगल उद्बोधन इसी के निमित्त मुनिश्री ने 'देश और धर्म के लिए जिओ ' रचना लिखी, जिसे आगे चलकर मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 11वीं के पाठ्यक्रम में शामिल किया।
6.	सिगोली (म.प्र.)	2005 (वर्षायोग)		मुनि—मुनि विमर्शसागर मांगलिक भवन का लोकार्पण
7.	सिंगोली (म.प्र.)	2005)		मुनि—विमर्शसागर साहित्य सदन का शुभारम्भ
8.	रावतभाटा (राज.)	28.1.2005		मुनि—शहर के व्यस्ततम चौराहे पर 'अहिंसा सर्किल' का शिलान्यास
9.	कोटा (राज.)	2006 वर्षायोग		मुनि—राष्ट्रीय समसामयिक आचार विद्वत संगोष्ठी
10.	कोटा (राज.)	2006		मुनि—सर्वधर्म सम्मेलन जिसमें योगगुरु हर्षानंद जी के सयोजकत्व में सभी धर्म गुरुओं को आमंत्रित किया गया।
11.	कोटा (राज.)	2006		मुनि—विमर्शसागर साहित्य सदन का शुभारम्भ
12.	कोटा (राज.)	1 जनवरी 2007		मुनि—नये साल का शुभारम्भ ईद के साथ होना था, ईद के दिन करोड़ों जीवों की हत्या से द्रवित हो मुनिश्री के अहिंसा के आह्वान पर कोटा शहर के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने 1

				जनवरी को उपवास रखकर 'अहिंसा दिवस' के रूप में नववर्ष मनाया।
13.	आ.के.पुरम कोटा (राज.)		2006	मुनि–त्रिकाल चौबीसी जिनालय की वेदी शिलान्यास
14.	महावीर नगर-1	2006		मुनि–चौबीसी जिनालय का शिलान्यास
15.	बसंत विहार, कोटा(राज.)	2006		मुनि–शांतिनाथ प्रवचन सभागार का लोकार्पण
16.	कोटा (राज.)	2006		मुनि–ऋद्धिसिद्धि कॉलोनी में नवीन जिनालय की वेदी, मानस्तम्भ एवं सिंहद्वार का शिलान्यास।
17.	अंता, कोटा (राज.)	2007		मुनि–दिगम्बर जैन मंदिर का शिलान्यास
18.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007		मुनि–आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के रजत मुनिदीक्षा वर्ष में विमर्श जागृति मंच भिण्ड के अंतरर्गत मुनिश्री की प्रेरणा से 'आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला' की स्थापना
19.	शिवपुरी	2007		मुनि–मुनिश्री की रचनाएं उनकी ही आवाज में शिवपुरी के आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित की गईं।
20.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007		मुनि–विराग-विमर्श प्रवचन सभागार का लोकार्पण
21.	शिवपुरी	2007	मुनि	आचार्य विरागसागर जी के रजत मुनि दीक्षाजयन्ती महोत्सव मुनि द्वारा रचित 'आचार्य विरागसागर विधान का प्रथम बार आयोजन।

22.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	अखिल भारतीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन (पुरुषार्थ सिद्धयुपाय ग्रंथ पर)
23.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	मुनिश्री की प्रेरणा से आचार्यश्री आदिसागर जी अंकलीकर परम्परा पर विराट संगोष्ठी का आयोजन
24.	शिवपुरी (म.प्र.)	2007	मुनि	मुनिश्री का शिवपुरी जिला कारागृह में मंगल प्रवचन, 1200 कैदियों को संबोधन
25.	आगरा (उ.प्र.)	1.11.2008	मुनि	आचार्यश्री विरागसागर जी के रजत मुनि दीक्षा वर्ष में, मुनिश्री की प्रेरणा से 'विराग भवन' का शिलान्यास जिसमें, छात्रावास, औषधालय, कोचिंग सेण्टर का निर्माण होगा।
26.	एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	आचार्यश्री आदिसागर (अंकलीकर) परम्परा पर मुनिश्री की प्रेरणा से विद्वत संगोठी का आयोजन।
27.	एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	प्रसिद्ध जिला कारागृह एटा में मुनिश्री ने 1500 कैदियों को संबोधा जिससे प्रभावित हो नम आंखों से सैकड़ों कैदियों ने खोटी आदतों (व्यसनों) का त्याग किया।
28.	एटा (उ.प्र.)	2009	मुनि	विराग-विमर्श प्रवचन हॉल का निर्माण एवं संत निवास का निर्माण।
29.	बांसबाड़ा (राज.)	12.12.2010	आचार्य	आचार्य पद प्रतिष्ठा के अवसर पर आचार्यश्री विमर्शसागर जी द्वारा गुरुवर आचार्यश्री विरागसागर जी को 'सूरिगच्छाचार्य' का अलंकरण

			समर्पित किया गया।
30.	कोटा (राज.)	26 मार्च 2011	आचार्य आचार्य पद के बाद प्रथम दीक्षा समारोह
31.	कोटा (राज.)	23.12.2012 आचार्य	आचार्य विमर्शसागर श्रमण वसतिका' का शिलान्यास।
32.	जतारा (म.प्र.)	2012 आचार्य	आचार्य विमर्शसागर प्रवचन सभागार का भव्य शिलान्यास।
33.	विजयनगर (राज.)	22 जून 2012	आचार्य आचार्यश्री की प्रेरणा से विजयनगर में 'तीर्थधाम शांति जिनायतन' का शिलान्यास समारोह।
34.	विजयनगर (राज.)	17 जून. 1012	आचार्य 'श्रमणाचार्य विमर्शसागर श्रमण वसतिका' का लोकार्पण।
35.	आगरा (उ.प्र.)	2014 आचार्य	आचार्य ''विमर्श भवन'' का शिलान्यास, छीपीटोला आगरा में

साहित्य लेखन में नव-कीर्तिमान रचनेवाले सरल जी



गत शताब्दी में उदित साहित्य, संस्कृति और समाज के इतिहास में, किसी मनीषी से यह सुनने को नहीं मिला है कि बीते सौ वर्षों में, किसी साहित्यकार ने 15 महान दिगम्बर सन्तों के 'चरित्र' लिखे हों, किन्तु जब भारत वर्ष के गत 25 सालों के साहित्य पर दृष्टि डालते हैं तो अनेक प्रान्तों के विद्वानों से जानने को मिलता है कि श्री सुरेश सरल ने सन् 1985 से 2013 के मध्य, 15 'साधुचरित'' लिखे हैं, जिन्हें ''सन्त-गाथा/सन्त की जीवनी'' कहा जाता है। प्रत्येक ग्रन्थ दो-सौ पृष्ठ से ऊपर है और आधुनिक किन्तु आत्मिक शिल्प की उच्चगरिमा से खिला हुआ है। हरेक के तेवर और भावभूमि पृथक-पृथक है। हर 'जीवनी-ग्रन्थ' को संबंधित सन्तों द्वारा वात्सल्य भी दिया गया है। एक तरह से कल्पना और यथार्थ के तथ्यों को प्रमाणिकता का सुखद रूप देकर, कथा रचने की महान कला से सरल जी ने साहित्य का भंडार सम्पन्न किया है।

सरल जी की इन पुस्तकों से साहित्य और सन्तों के अनावृत्त संसार का एक बड़ा दृश्य सामने आ सका है, एक विराट उद्देश्य की सार्थकता सिद्ध हो सकी है और एक अभिनव-साहित्य-लेखन की नूतन-धारा स्पष्ट हो सकी है, अतः कोई विद्वान इस कार्य को दृष्टिपटल से ओझल नहीं कर सकता, उसका सम्यक्-अस्तित्व और प्रभाव स्वीकार करना होगा। डाक्ट्रेट (शोध) करने के कार्य से, यह 'कथा-लेखन' का कार्य कम न कहा जावेगा, मौलिकता के अधिक करीब माना जावेगा, शाश्वत और सदाबहार। सन्तों और श्रावकों की आगामी पीढ़ियों के लिए ग्रन्थ 'प्रकाश स्तम्भ' कहे जावेंगे। ग्रन्थों का अपना वजन और वजूद पृथक होगा, सौन्दर्य और वैभव भी। श्री सरल का सोच, नूतन आयाम की संरचना का उद्‌घाटक कहा जा सकता है, उनके सौद्देश्य, सार्थक और स्थायी महत्व के लेखन को जन-गण-मन का आदर और प्रेम भी भरपूर मिल रहा है।

'सन्त-जीवनी' का लेखन न सहज है, न आम, यह एक विशिष्ट लेखक की लेखनी से निःसृत वह साहित्यिक-अवदान है, जो गत सौ वर्षों से वांछित था। यह वह साहित्य है जो अत्यन्त विद्वान-पाठक के साथ-साथ, सामान्य-पाठक को, तुरन्त चाहिए था। सरल जी ने सन्त साहित्य के समानांतर सन्तों पर लिखित इस साहित्य से, साहित्य संसार का बहुत बड़ा शून्य क्षेत्र भर दिया है। उनका लेखन सौ प्रतिशत 'अकेडमिक' तो है ही, सौ टंच खरा भी है, और शाश्वत भी।

विभिन्न विधाओं के महारथी

सरल जी सन् 1960 से लगातार लिख रहे हैं। उनकी सबसे बड़ी महारत यह है कि वे हर विधा पर सार्थक लेखन कर लेते हैं। कथा, कहानी, कविता, लेख, व्यंग्य आदि।

यदि जैन पत्र-पत्रिकाओं के संसार में चलें, तो ज्ञात होगा सरल जी वहाँ सन् 1965 से आदर सहित विराजमान हैं। देश के अधिकतर पत्र उन्हें छापते रहे हैं। लोकल/स्थानीय अखबारों से लेकर राष्ट्रीय स्तर के पत्र-पत्रिकाओं के पन्नों पर सरलजी के शब्दचित्र धूम मचाते रहे हैं। सा. धर्मयुग, मासिक कादम्बिनी, मासिक नवनीत, मासिक राष्ट्रधर्म, मासिक तीर्थंकर, आदि कतिपय प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में देश के इने-गिने रचनाधर्मी ही स्थान पा सके हैं, मगर श्री सरल का नाम गौरव से लिया जाता है।

अभी तक उनके दो सौ लेख, सौ कथा-कहानियाँ और शताधिक कविताएँ अखबारों पर चमक बिखरा चुके हैं। इस विचारक और कर्मठ रचनाधर्मी के शताधिक शहरों में जैन-समाज और इतर समाज द्वारा 'नागरिक अभिनंदन' किये गये हैं। पुरस्कृत भी किया गया है।

उनके लेख व चिंतन आकाशवाणी से भी आते हैं, यह क्रम भी पुराना है, सन् 1962 से लोग उनकी आवाज आकाशवाणी पर सुन रहे हैं।

आत्मा में उतरने वाला कवि

सन् 1970-80 का दशक श्री सरल के लिए कवि सम्मेलन का युग था, वे कवि-सम्मेलनों के अखिल भारतीय मंचों पर सफलतापूर्वक सुनाते रहे हैं और यश पाते रहे हैं। चालीस हजार श्रोताओं की भीड़ में, तत्कालीन मंच के दिग्गज कवियों के मध्य, श्री सरल अपनी गरिमा की पृथक छाप छोड़ने में साफल्य भी पा सके हैं। पटना, पाटन, हस्तिनापुर, श्री महावीर जी, जबलपुर, रायपुर, मुम्बई, कोलकाता, सतना, नैनपुर, शिखरजी, लखनादौन, सोनागिरि, कुण्डलपुर, रांची, अयोध्या, लखनऊ, सिरोंज, सागर, दलपतपुर, गोटेगांव, करेली, नरसिंहपुर, मेरठ, खुरई, हजारीबाग, झूमरीतिलैया, कैमोर, दमोह, फतेहपुर आदि के ऐतिहासिक मंचों पर उनका काव्यपाठ ऊँचाई के नये आयाम गढ़ चुका है।

शिल्प मर्मज्ञ

आश्चर्यजनक सत्य है कि सरल जी की भाषा में चमत्कार उत्पन्न करने वाले शब्दों का अभाव और रस-अलंकारों का बिलगाव होते हुए भी जाने उसमें कौन सा रसायन घुला/मिला है कि हर पृष्ठ पर अधिक नवीन और अधिक रुचिकर होती जाती है और पाठक उसका पढ़ना नहीं रोक पाता। सरलजी 'शास्त्रीय-भाषा' को भी स्पर्श नहीं करते फिर भी उनकी 'भाषा का शास्त्र'

पाठकों के मन-मस्तिष्क में आत्मिक-शीतलता की अदृश्य वर्षा करता रहता है। सच, वे जितने बड़े लेखक हैं, उतने ही महान शिल्प मर्मज्ञ।

इस लघु लेखन में तीस ग्रंथ लिखनेवाले श्री सरलजी की बहुमुखी-प्रतिभा का लेखन संभव नहीं है, अतः इस 'ग्रंथकार' के निमित्त भी एक पुस्तक लिखनी पड़ जाये तो आश्चर्य नहीं है, क्योंकि वे शौक से लेखक नहीं है, वे अपने दर्शन, ज्ञान और चर्या से लेखक हैं। वे लेखक बने नहीं है, पैदाईशी लेखक हैं, तभी तो इंजीनियर होते हुए भी साहित्यकार का ठोस जीवन जीते हैं। उनका साहित्य जीवन्त है और वे जीवट के साहित्य साधक हैं। अपनी हर कृति को बहुत ही सरल भाषा का अनमोल शिल्प जुटाने में सिद्ध हैं। भाषा सरल है मगर चिन्तन गूढ़। कल्पनाशक्ति अत्यन्त ऊर्जावान और सक्रिय है। गत बीस वर्षों से वे 'मौन साहित्यकार' कहे जाते हैं, सभा, संस्था, गोष्ठी, सम्मेलन से दूर शांति से लेखन में प्रवृत्त रहते हैं और "ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर" उनके जीवन का मूलमंत्र है।

डॉ. आनन्द जैन
69, कटरा, गल्ला बाजार रोड
सागर (म.प्र.)

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला के महत्वपूर्ण प्रकाशन

विरागांजलि (श्रमण एवं श्रावक के लिये आवश्यक भक्ति पाठ संग्रह का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन)

- **आइना (काव्य संग्रह)** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित कविताओं का महत्वपूर्ण संकलन)
- **ज़ाहिद की ग़ज़लें** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित ग़ज़लों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
- **जीवन है पानी की बूँद (समग्र)** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित बहुचर्चित भजन के 1000 छन्दों का संग्रह एवं आकर्षक सुन्दर प्रकाशन)
- **चटपटे प्रश्न- स्वादिष्ट उत्तर** (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका एवं अपरा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका पर आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा लिखित पहेलियाँ)
- **हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन** (डॉ. लोकेश खरे द्वारा आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के व्यक्तित्व कृतित्व पर पी.एच.डी.)
- **गूँगी चीख** (गर्भपात विषय पर दिया गया आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज का ऐतिहासिक प्रवचन)
- **शंका की एक रात** (नि:शंकित अंग का हृदय को छू लेनेवाला विवेचन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
- **मानतुंग के मोती** (श्री भक्तामर स्तोत्र पर आधारित प्रश्नोत्तर सहित एवं आचार्यश्री के तीन पद्यानुवाद से सजी-सँवरी विधान एवं शिक्षण शिविरों के लिये उपयोगी कृति)
- **विर्मशांजलि** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित पूजा, स्तोत्र पद्यानुवाद एवं पूजाओं का सर्वोपयोगी संकलन)
- **सोचता हूँ कभी - कभी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सुन्दर आकर्षक काव्य संग्रह)
- **समर्पण के स्वर** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित गुरु चरणों में समर्पित हृदय स्पर्शी काव्य संग्रह)
- **खूबसूरत लाइनें** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित विभिन्न विषयों पर आधारित हृदय को छूनेवाला काव्य संग्रह)
- **जीवन चलती हुई घड़ी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित जीवन है पानी की बूँद तर्ज पर 100 छन्दों का दिल को छू लेनेवाला काव्य संग्रह)
- **हे वन्दनीय गुरुवर** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा रचित भजनों का संग्रह, परमगुरु आचार्यश्री विरागसागरजी मुनिराज के पावन कर कमलों में सादर समर्पित)
- **गीतांजली** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा लिखित भजनों का महत्वपूर्ण संकलन एवं सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)

- **जनवरी विमर्श** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा गहन चिन्तन से उद्भूत, दिल और दिमाग को झकझोरने वाला सुंदर सूक्ति संग्रह)

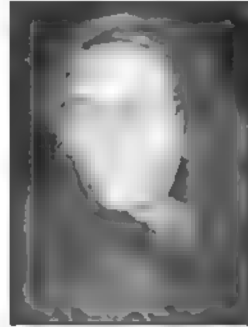
  शब्द शब्द अमृत (आचार्यश्री विमर्शसागरजी के हृदय स्पर्शी एवं चिंतन को नई ऊर्जा देनेवाले महत्वपूर्ण प्रवचनांशों का सुंदर एवं आकर्षक प्रकाशन)
- **जैन श्रावक और दीपावली पर्व** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित, जैन श्रावकों को दीपावली क्यों और कैसे मनाना चाहिये ? आदि अनेक प्रश्नों का मांगलिक समाधान एवं दीपावली पर्व का सुंदर विवेचन)
- **आओ सीखें जिन स्तोत्र** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा पद्यानुवादकृत महत्वपूर्ण जिनस्तोत्रों का संग्रह, पठन-पाठन हेतु उपयोगी कृति)
- **भरत जी घर में वैरागी** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी द्वारा जैन श्रावकों की जीवनशैली पर दिया गया एक प्रेरणास्पद प्रवचन संग्रह)
- **मेरा प्रेम स्वीकार करो** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित प्रभु भक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर आकर्षक प्रकाशन)
- **करलो गुरु गुणगान** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित गुरुभक्ति में समर्पित सर्वोपयोगी काव्य संग्रह का सुन्दर, आकर्षक प्रकाशन
- **वाह क्या खूब कही** (आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज द्वारा रचित सर्वोपयोगी सुन्दर आकर्षक काव्य संग्रह का प्रकाशन)
- **प्रज्ञाशील महामनीषी** (आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज का रोचक लघु जीवन चित्रण)
- **जतारा का ध्रुवतारा** (आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज का रोचक लघु जीवन चित्रण)
- **राष्ट्रयोगी** (देश के 16 महान संतों की जीवनी लिखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार सुरेश 'सरल' जी कृत प.पू. आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की रोचक जीवन कथा)

प्राप्ति स्थान

1. **श्री विमर्श जागृति मंच**
   C/o श्री सुखानन्द साड़ी सेन्टर,
   बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
   मो. 9826244355, 9826217291

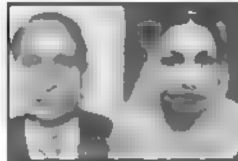
संस्थापक ग्रंथमाला

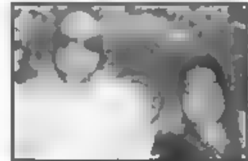

श्री कस्तूरचन्द जी बाबरिया
(दौतड़ावाले)


श्रीमती धापूबाई बाबरिया
(दौतड़ावाले)

शिरोमणि संरक्षक


श्री विनोद कुमार जी मित्तल
श्रीमती कल्पना जी मित्तल
C/o लाईम स्टोन ट्रेडर्स
बाजार नं. २, रामगंज मण्डी


डॉ सुगन चंद जी जैन
श्रीमती ऊषा जैन
अशोक नगर (म.प्र.)


श्री पदमचन्द पाटनी
श्रीमती कमलादेवी पाटनी
१-घ-३४, दादाबाड़ी,
कोटा-३२४००९ (राज)


श्री लक्ष्मीलाल जी जैन
श्रीमती भगवती जैन
डूंगरपुर (राज.)


श्री भगवती लाल जैन
श्रीमती शोभा जैन
डूंगरपुर (राज.)


श्री पुरुषोत्तम जैन
श्रीमती मीरा जैन
शिवपुरी (म.प्र.)



षष्ठ खण्ड

चित्रावली

वंदनीय आचार्य परम्परा

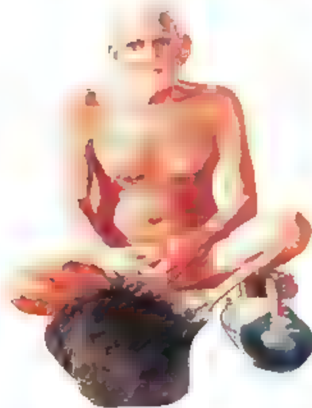
'आदि श्री' से 'विराग श्री' तक का 'सच तुमने किया उजागर'



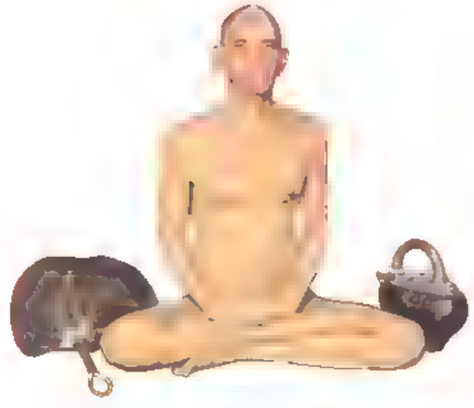
प्रथमाचार्य श्री 108 आदिसागर महाराज 'अंकलीकर'



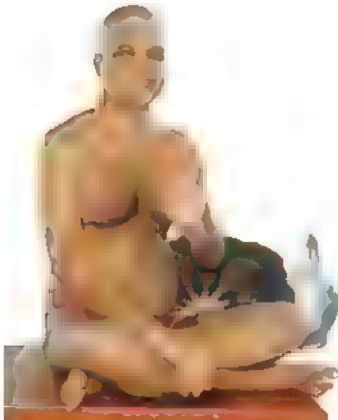
आचार्य श्री 108 महावीर कीर्ति महाराज



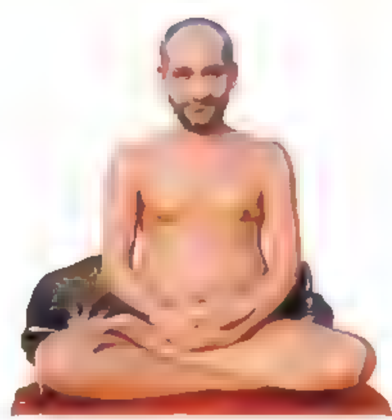
आचार्य श्री 108 विमल सागर महाराज



आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर महाराज



सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर महाराज



आचार्य श्री 108 विमर्शसागर महाराज

चित्र समूह - 1

गृहस्थ जीवन दर्शन



राकेश कुमार के यशस्वी पिता श्री सनतकुमार जी (2 प्रतिमाधारी)
एवं माता श्रीमती भगवती देवी।



जतारा स्थित वह निवास, जिसे राकेश की जन्मस्थली का गौरव मिला



सौम्य, सरल, सुसंस्कारित : बाल राकेश



गंभीर, चिंतनशील युवक : राकेश



राकेश बाबू : साथ हैं अभिन्न मित्रगण–लोकेश खरे, शैलेन्द्र त्रिपाठी और पंकज सैनी।
(वर्तमान में, सभी किशोर सुयोग्य विद्वान सिद्ध हुए)।



राकेश बाबू के साथ : मित्र द्वय लोकेश खरे और अनूप खरे। दोनों सहपाठी।



गुरु के प्रति विनय भाव बचपन से धारण करने वाले राकेश जी अपने
अध्यापक श्री एच.एस. चौहान और श्री आर.के तिवारी के साथ।
अन्य सहपाठी हैं–लोकेश, अनूप, के.के. शर्मा और राकेश यादव।



राकेश के योग्य मित्रों में सभी जातियाँ शोभा पाती थीं–
के.के. शर्मा, लोकेश खरे, अनूप खरे, राकेश यादव, शहादत हुसैन,
अतुल नगाइच, मनोज त्रिपाठी, विनोद प्रजापति



बैण्ड दल का गठन करने के बाद, श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ जतारा के सक्रिय सदस्य राकेश कुमार वाद्य-यंत्रों का वादन करते हुए।



मैना सुंदरी का अभिनय करते हुए राकेश कुमार। श्रीपाल के रूप में बैठे हुए अरविन्द माते, उन्हीं के समक्ष हैं मंत्री प्रमोद। मंच की दायीं ओर बैठा किशोर है राजेश जैन (राकेश के बड़े भाई) और बायीं तरफ निर्देशक-कपूर चंद बसल।



कुंडलपुर वंदना को जाते हुए बादलों ने घेर लिया, वर्षा होने लगी तब राकेश शांत भाव से जाप देने बैठ गए। साथ हैं स्वतंत्र सिंघई एवं अरविन्द माते।
उघारे तन देख कौन कहेगा कि ये नाटक के पात्र हैं–
मैना सुदरी, राजा श्रीपाल और राजा पहुपाल।



अवधेश प्रतापसिंह महाविद्यालय टीकमगढ़ में जब राकेश बी.एस.सी कर रहे थे तब अपने प्रोफेसर श्री चौरसिया जी (मध्य) के साथ। अन्य हैं
सहपाठी लोकेश, कमलेश बसंत और अन्य।





बरीघाट (टीकमगढ़) पर अपने सहपाठियों के साथ
पिकनिक मनाते राकेश बाबू



एक सुशिक्षित, सुंदर, शिष्ट और विनयशील युवक : राकेश।

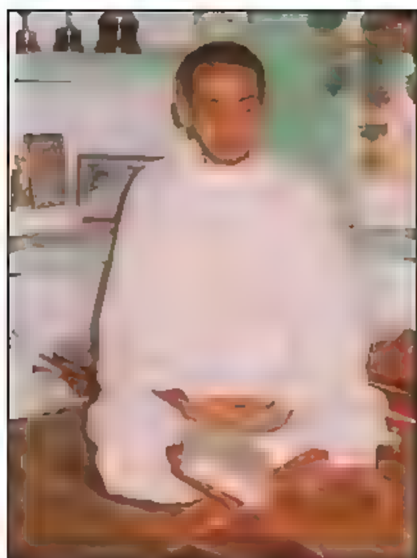
चित्र समूह 2
ब्रह्मचर्य जीवन दर्शन



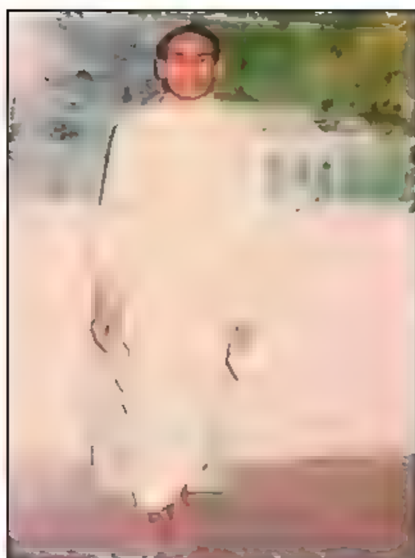
ब्र. राकेश जी अपने अध्ययनकक्ष में। साथ में पिता श्री सनत कुमार, माता श्रीमती भगवती देवी, भाभी स्नेहलता, बड़े भ्राता राजेश कुमार, लघु भ्राता चक्रेश कुमार, बुआ शीला देवी, छोटी बहिन महिमा। पीछे दिख रहे हैं वे पुरस्कार जो राकेश ने बैडमिंटन और शतरंज में जीते थे।



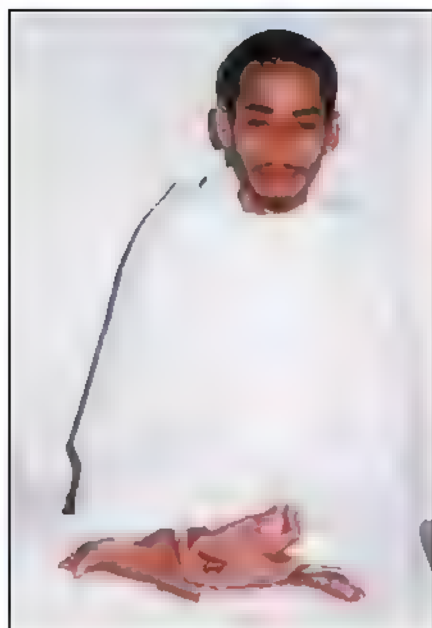
जब जतारा आए तो उनका पूर्व का
चित्र और पुरस्कार पूछने लगे—हमें क्यों छोड़ गए?



वैराग्य-पथ के पथिक ने अध्ययन कक्ष से
स्वाध्याय का काम लेना शुरू कर दिया।



ब्र. राकेश जी ललितपुर के एक
देवालय की छत पर। वर्षायोग : 1995 के समय।



ललितपुर में जाप करने बैठे तो
एक स्नेही ने उतारा चित्र। (सन् 1995)



फिर एक झलक सन् 1995 की।



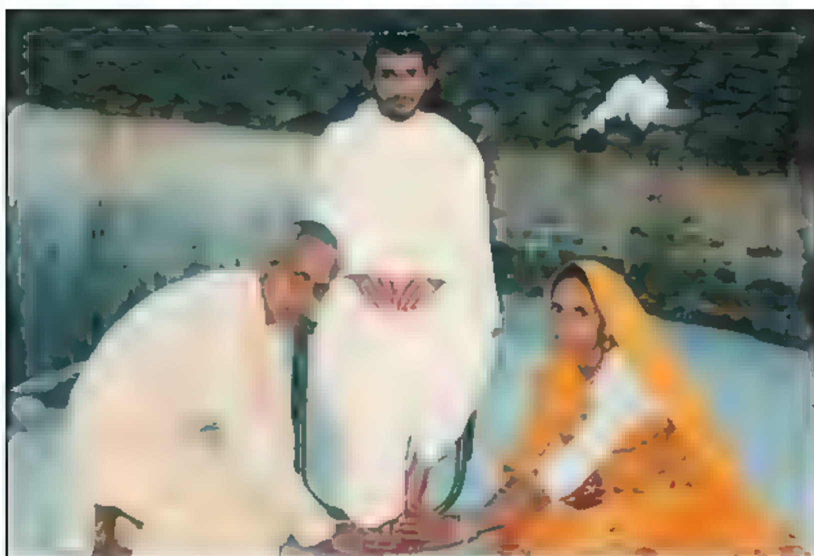
ब्र. राकेश जी एवं ब्र. विनोद जी जतारा में।
जैसे सोच रहे हो—इन वस्त्रों से कब मुक्त होंगे? (1995)



ललितपुर में गुरुदेव के पिच्छिका-परिवर्तन के समय उनकी पुरानी पीछी हाथ में ले भावना करने लगे—तुम कब आओगी हाथों में? समीप हैं ब्र. विनोद जी।



राकेश भैया जी अपनी दादी बेनी बाई के साथ



'आचरण को प्रणाम' : माता पिता चरण स्पर्श करते हुए।



बड़े भ्राता राजेश जी एवं छोटे भ्राता चक्रेश जी के मध्य ब्र. राकेश जी।



बड़ी भगिनी कमला जी एवं लघु भगिनी प्रियका के मध्य ब्र. राकेश जी।



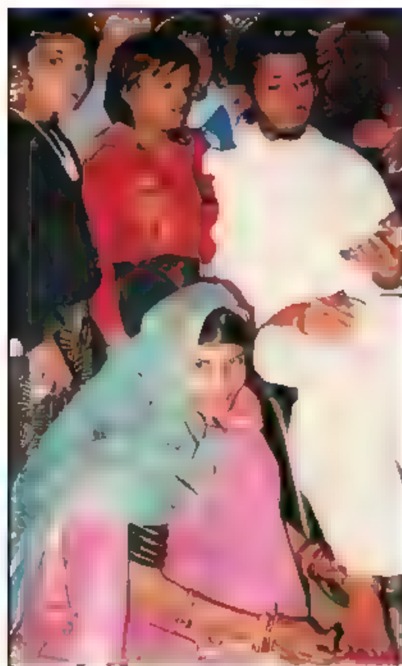
शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के चिर परिचित
वन के एकान्त में ध्यान करते हुए :
ब्र. राकेश जी (भाव यही रहे होंगे कि इसी पावन क्षेत्र से निर्वाण हो)



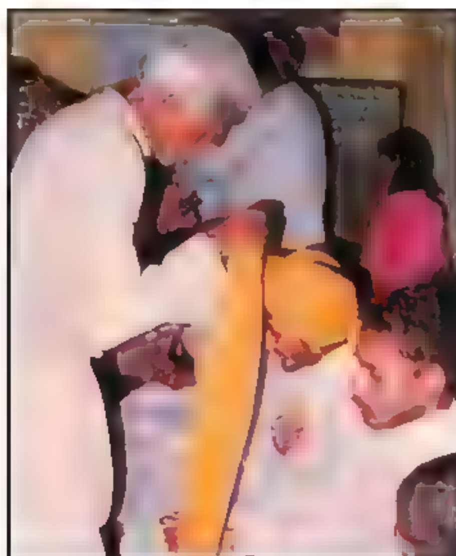
आचार्यवर्य श्री भरतसागर जी (अब समाधिस्थ) से
मधुबन में आशीर्वाद पाते हुए। (सन् 1996)

चित्र समूह - 3

ऐलक दीक्षा दर्शन



बिनौली से पूर्व किया राकेश कुमार का शृंगार।
बहिनों ने लगाई मेंहदी, भाभी ने लगाया महावर। बच्चे हुए निछावर।



श्री फूलचंद जी ने पगड़ी बांधी गौरवपूर्वक ब्र. राकेश सहित सभी ब्र. भाईयों को।



मेंहदी के बाद आया क्रम नेत्रांजन का, लगाया भाभी ने।



मेंहदी से पूर्व किया उबटन भाभी ने।



गृह नगर जतारा से चला, वर बारात
लेकर मुक्तिवधु के ग्राम की ओर।
ब्र. राकेश सहित सभी भाई। विनौली।



धर्म के अश्व पर सवार ब्र. राकेश।
लौकिक शिक्षा का भवन छूट रहा है।
अलौकिक शिक्षा की ओर चरण।



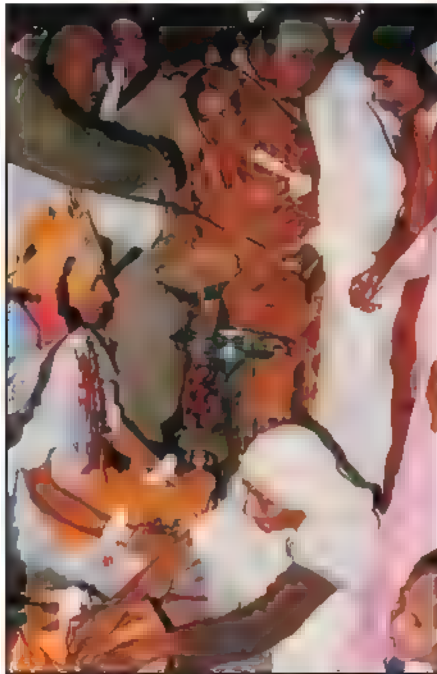
लोगों की आँखों में समा गया बिनौली का दृश्य।
आगे हैं–ब्र. राकेश भैया,
इनके पीछे छः भाई और जतारा प्रसन्न।



राजकुमारों की सफल पंक्ति। बिनौली के लिए तैयार सातों वीर बहादुर।



विनौली के बाद भैया जी संत हो जावेंगे अतः छोटी बहिन प्रियंका ने 'अंतिम पारिवारिक राखी' बांधी सभी भाईयों को। समीप ही माता श्री विराजित हैं।



भरी फिर अपने लाल की गोदी :
दादी बैनी बाई सहित पिता सनत जी,
माता भगवती जी, अग्रज राजेश,
बहिन प्रियंका, मौसाजी दीपचंद जी
एवं चाची किरण व्या ने। (जतारा।)



देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र. के मंच पर
ब्र. राकेश राजकुमार के रूप में विराजित
(23.02.1996 , तप कल्याणक का पावन दिवस, कुल 13 दीक्षाएं हुई थीं)



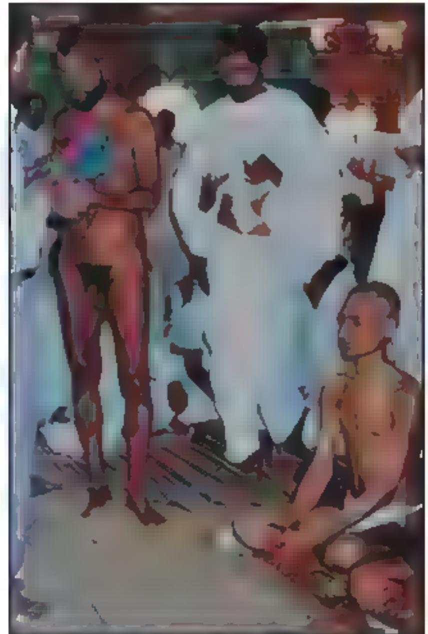
मुकुट, अलकारादि का त्याग
करते हुए ब्र. राकेश।



वस्त्रों का त्याग करते हुए।



ऐलक जी के दिव्य बाना में :
ब्र. राकेश हुए ऐलक विमर्शसागर।
(देवेन्द्रनगर, 23/02/1996)



ऐलक विमर्शसागर जी को
शास्त्र भेंट करते हुए



मढ़िया जी जबलपुर में परम पूज्य आचार्य विरागसागर जी के साथ ऐलक विमर्शसागर साथ में है मुनि विश्वजीत सागर जी, ऐलक विशल्यसागर जी, ऐलक विहर्षसागर जी ऐलक विनिश्चय सागर जी एव क्षुल्लक विमदसागर जी।



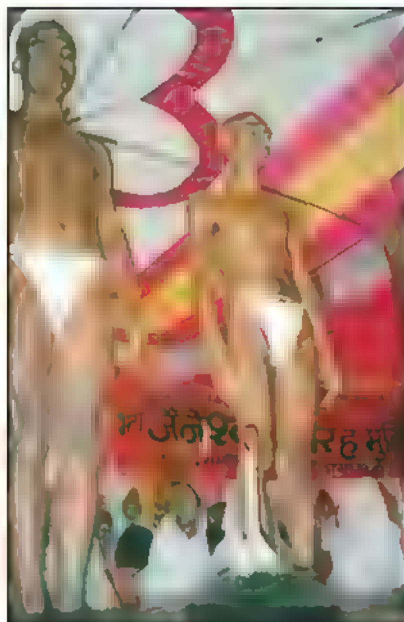
भिण्ड-चातुर्मास : 1997, पिच्छिका परिवर्तन के अवसर पर ऐ. विमर्शसागर जी की पुरानी पीछी, उनके देहतत्व के पिता दो प्रतिमाधारी श्रावक श्री सनतकुमार को प्रदान करते हुए : आचार्य विरागसागर जी।

चित्र समूह - ५

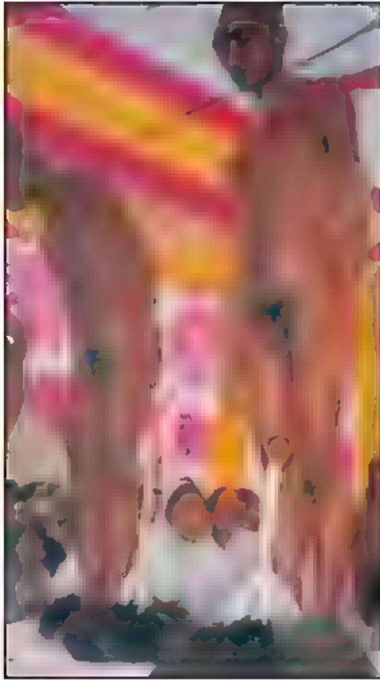
मुनि दीक्षा दर्शन



मुनि दीक्षा की प्रक्रिया के प्रथम चरण में ऐ. विमर्शसागर जी के केशलुंचन के बाद, ब्र. विमल जी शीश-प्रक्षालन करते हुए प्रसन्न। (तीर्थ क्षेत्र बरासौं, भिण्ड, 14 दिस. 1998)



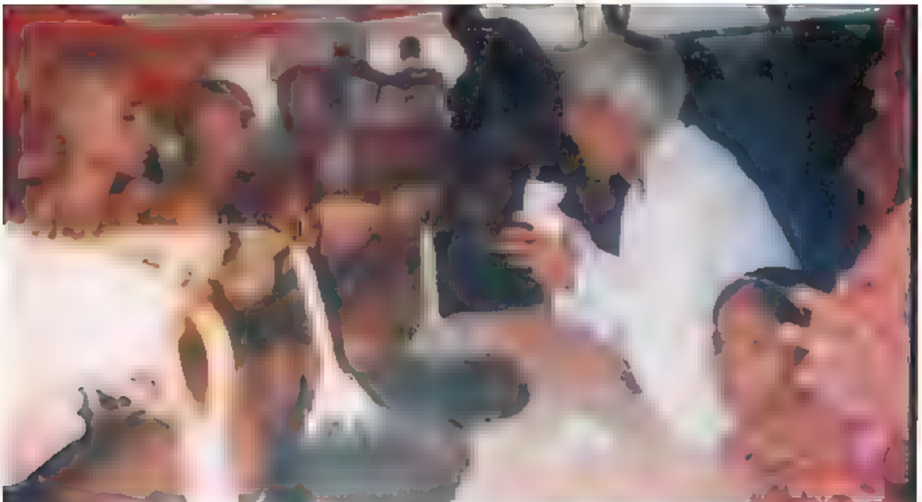
लंगोटी त्याग की आज्ञा सुनने तैयार ऐलक विमर्शसागर जी। साथ हैं ऐलक विभवसागर जी।



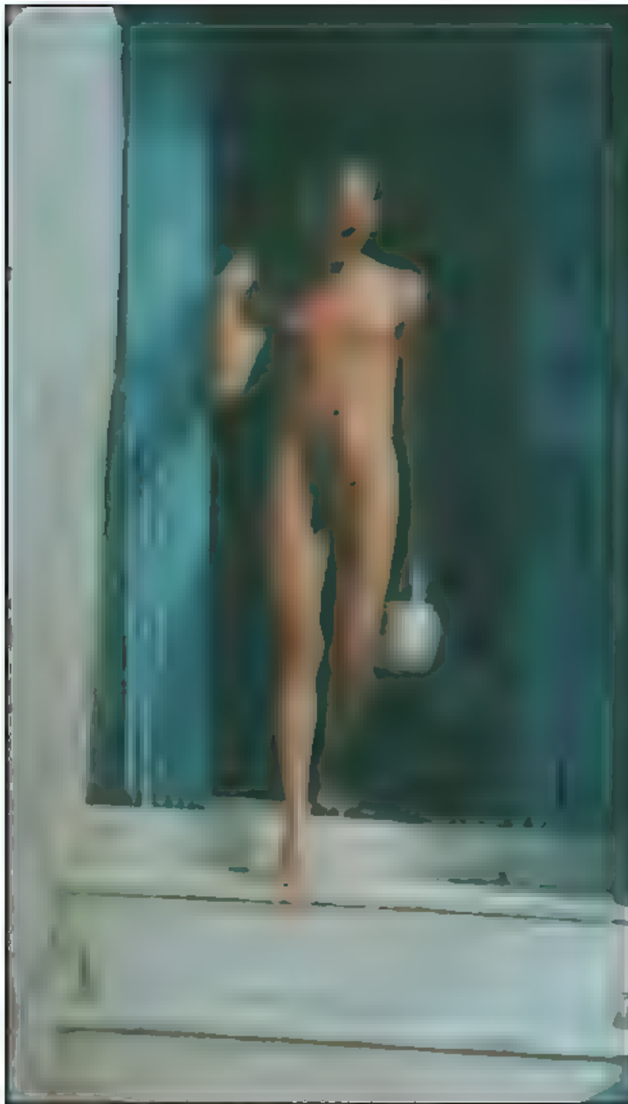
वस्त्र त्याग, जिन मुद्रा में ध्यानस्थ
मुनि विमर्शसागर



मुनि दीक्षा संस्कार करते हुए
गुरुदेव विरागसागर जी।



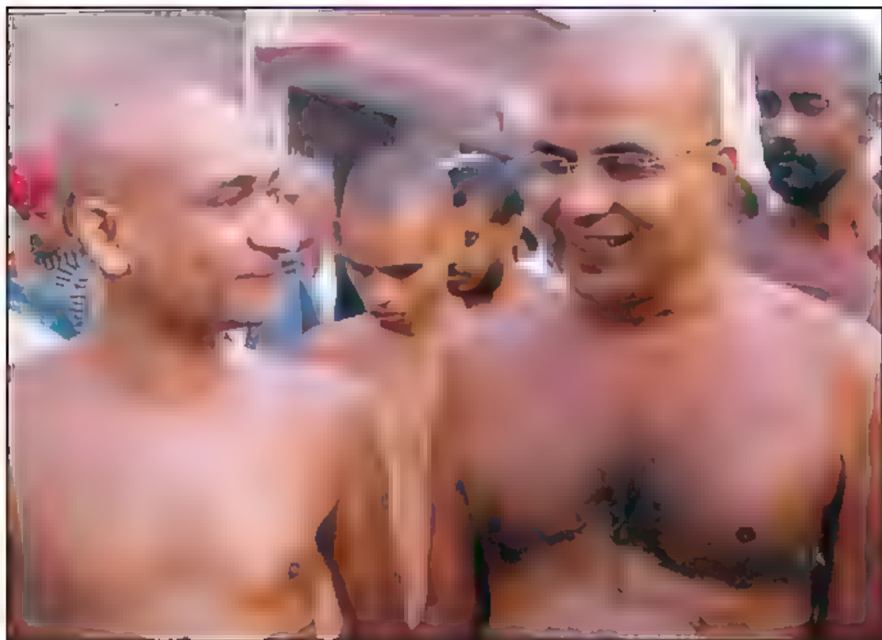
अंजुली में मंगल द्रव्य लिये मुनि श्री विमर्शसागर जी,
समीप हैं पिता श्री सनतकुमार जी एवं छोटी बहन महिमा



''जय तृषा परीषह करत जेर कहुँ रंज चलत नहिं मन सुमेर'
दीक्षोपरांत प्रथम आहार चर्या को मंदिर जी से निकलते हुए मुनिराज
पू. विमर्शसागर जी। (15 दिसम्बर 1998) बरासौ

चित्र समूह - 5

आचार्य पद दर्शन



गुरु विरागसागर जी को अपलक निहारते मुनि विमर्शसागर जी।



आचार्य पदारोहण शोभायात्रा के समय ऐसा क्या कह दिया गुरु विरागसागर जी ने कि शिष्य मुनि श्री विमर्शसागर जी खिलखिलाकर हँस पड़े।



आचार्य पद संस्कार महोत्सव में जाते हुए आचार्यश्री विरागसागर जी ससंघ एवं श्रावकजन



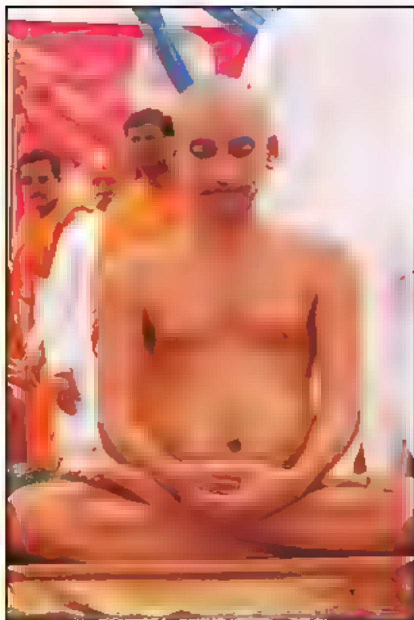
आचार्य पद संस्कार पूर्व पूज्य गुरुदेव को पिच्छी भेंट करते हुए
मुनि श्री विमर्शसागर जी व मुनि श्री विनम्रसागर जी



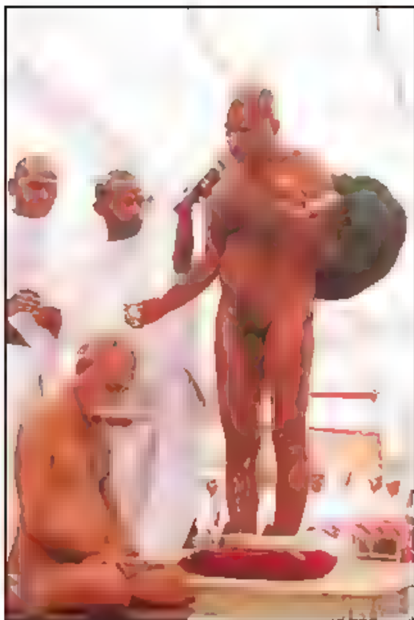
सूरिगच्छाचार्य पद की घोषणा करते हुए मुनि श्री विमर्शसागर जी
(बाँसवाड़ा १२/१२/२०१०)



आचार्य श्री को सूरिगच्छाचार्य प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए
मुनि श्री विमर्शसागर जी, मुनि श्री विनम्रसागर जी, आर्यिका विशिष्टश्री, आर्यिका सत्यमति,
क्षुल्लक विरजनसागर, क्षुल्लक अतुल्यसागर एव सुरेश सिंघवी (बाँसवाड़ा) एव मुनिसघ



आचार्य पदारोहण के समय तीर्थंकर मुद्रा
में विराजित मुनिश्री विमर्शसागर जी



सिर पर गंधोदक निक्षेप करते पूज्य आचार्यश्री



पूज्य आचार्यश्री बायें हाथ से सिर का स्पर्श कर
आशीर्वाद देते हुए (१२/१२/२०१०)



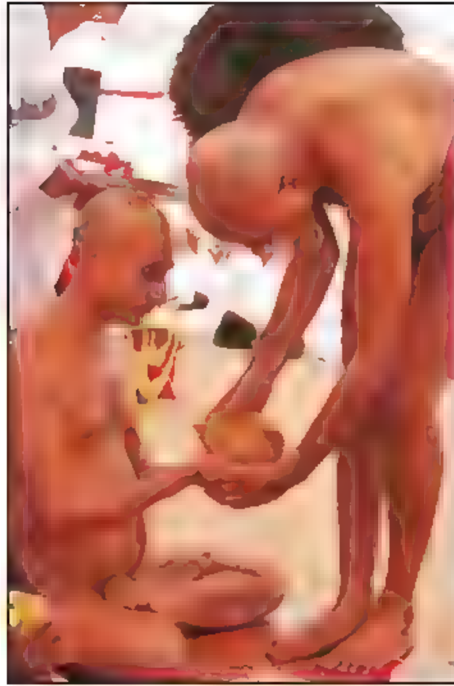
केशलोंचन विधि सम्पन्न करते हुए पूज्य आचार्यश्री



आचार्य पद के सस्कार करते हुए प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
(बाँसवाड़ा १२/१२/२०१०)



श्री कार लेखन करते हुए पूज्य विरागसागर जी।



पवित्र अंजलि में मंगल द्रव्यपूर्वक व्रत प्रदान करते हुए पूज्य विरागसागर जी



आचार्य पद के समय मुनि विमर्शसागर जी महाराज के जन्मदात्री पिता श्री सनतजी एव माता भगवती देवी।
धर्म के माता–पिता श्री सुरेश चन्द जी एव श्रीमती रेखा बाबरिया (रामगज मडी) एव
पद प्रदाता आचार्य श्री विरागसागर जी।



पूज्य विमर्शसागर जी जन्मदात्री माँ भगवती जी एवं
धर्ममाता रेखा बाबरिया को मंगल द्रव्य प्रदान करते हुए।



पिताश्री सनतकुमार जी का सम्मान करते हुए मुनिसंघ सेवा समिति
के अध्यक्ष श्री सुरेश जी संघवी



आचार्य पद संस्कार विधि में मुनि श्री विमर्शसागर जी के चरणाभिषेक करते हुए संघस्थ त्यागीव्रती



आचार्य पद संस्कार विधि में मुनि श्री विमर्शसागर जी के अंगुष्ठ में
चंदनलेप करते हुए मुनि सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सुरेश जी सिंघवी



नवोदित आचार्य श्री को पिच्छी प्रदान करते हुए श्री भूपेन्द्र जैन बाँसवाड़ा



पूज्य आचार्य विरागसागर जी के करकमलों से
कमण्डलु ग्रहण करते हुए पूज्य विमर्शसागर जी



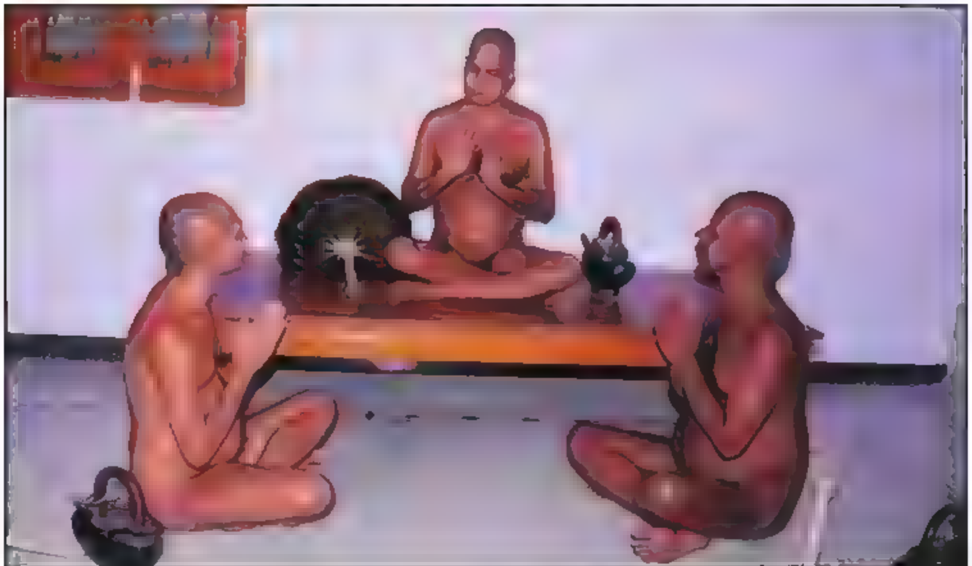
नवोदित आचार्य विमर्शसागर जी को ज्ञानोपकरण प्रदान करते त्यागीव्रती



पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी से सिंहासन पर विराजित होने
के लिए निवेदन करते हुए – अध्यक्ष सुरेश सिंघवी।



आचार्य पद स्थापना के समय आचार्य विरागसागर जी की संघस्थ आर्यिकाओं सहित
आर्यिका श्री सकलमती माताजी, आर्यिका श्री सत्यमती माताजी
(शिष्या आचार्य श्री विद्यासागर जी) एवं आर्यिका श्री भरतेश्वरी माताजी
(शिष्या आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज)



पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज नवोदित आचार्य विमर्शसागर जी एव
आचार्य श्री विनम्रसागर जी को रहस्य ग्रथ की शिक्षाएँ देते हुए



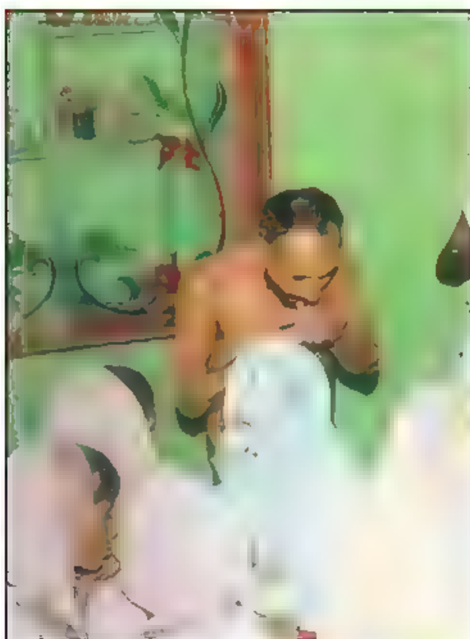


हम सब हजारों भक्त साक्षी हैं आचार्य पदारोहण के
(बाँसवाड़ा १२.१२. २०१०)

आहार चर्या दर्शन



छियालीस दोष बिना सुकुल,
श्रावक तनैं घर अशन को।

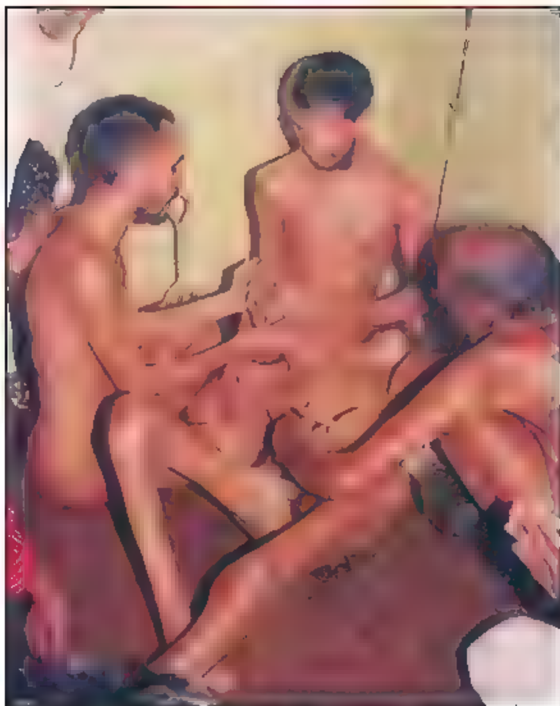


इक बार दिन में ले आहार,
खड़े अलप निज पान में।



धन्य हो गये भाग्य हमारे, आज मिला पड़गाहन गुरु का।

समाधि दर्शन



प्रथम दीक्षित मुनि विश्वतीर्थसागर जी को संबोधित करते हुए पूज्य विमर्शसागर जी।
साथ हैं मुनि विश्वपूज्यसागर जी एव मुनि विनर्घ्यसागर जी। (अशोकनगर-२००३)



समाधिलीन मुनि विश्वतीर्थसागर जी की अंतिम सस्कार यात्रा में
उपस्थित श्रद्धालु (अशोकनगर-२००३)



पूज्य विमर्शसागर जी द्वारा प्रथम दीक्षित आर्यिका विलक्षश्री माताजी की समाधि।
मुनि विमर्शसागर जी एव मुनि विनर्घ्यसागर जी सभा को संबोधित करते हुए ।
(सतना–२००२)



समाधिस्थ आर्यिका विलक्षश्री माताजी की संस्कार यात्रा (सतना–२००२)

तीर्थ वन्दना

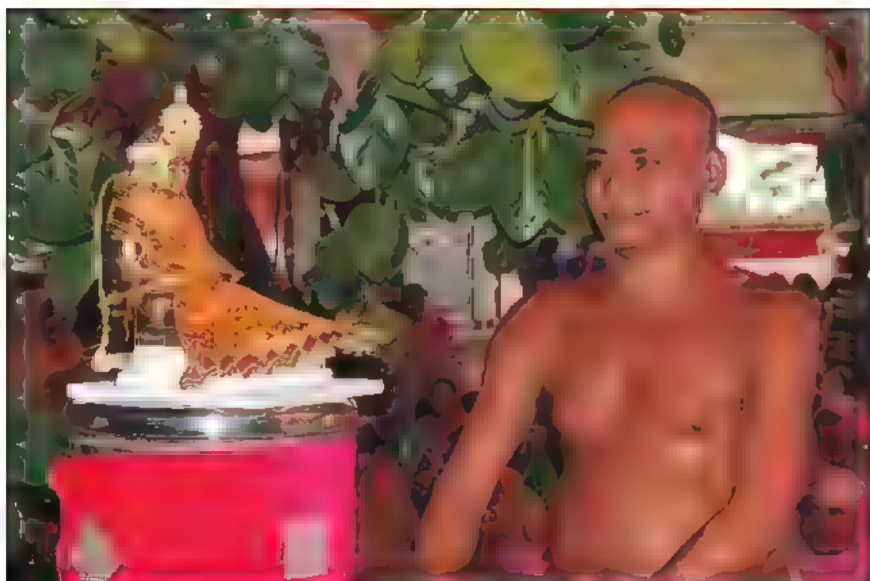


वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की चरण छत्री
पर आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज वदना करते हुए



आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ससघ तीर्थक्षेत्र मगलायतन में

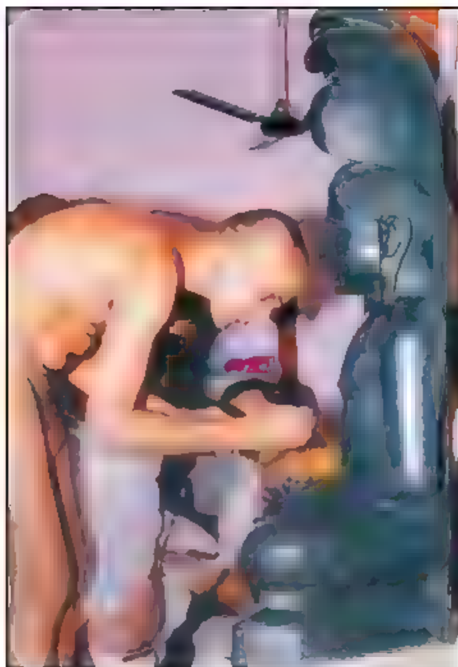
पंचकल्याणक दर्शन



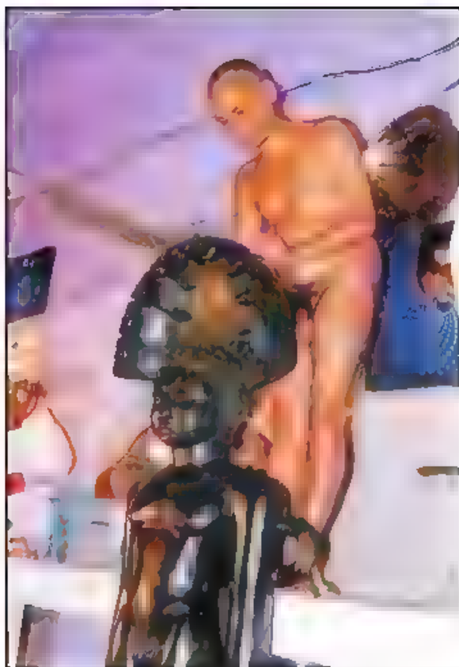
देखने में बात ये कितनी निराली है। किसी वैरागी ने, किसी वैरागी पर नजर डाली है।।
अहो वैरागी ! आप जिस मुक्तिवधु को वरण करने जा रहे हो, मैं भी उस का वरण करूगा।
(श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी शायद यही सोच रहे हैं)



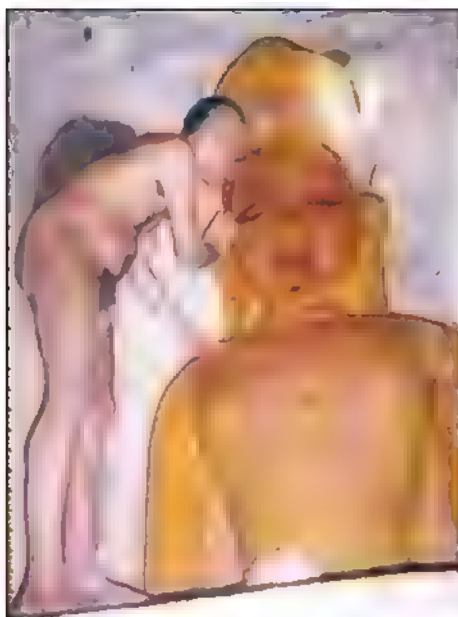
नसियां जी में पंचकल्याणक विधि करते हुए पूज्य श्री विमर्शसागर जी।
साथ हैं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार जी निशांत (रामगंजमंडी-२००७)



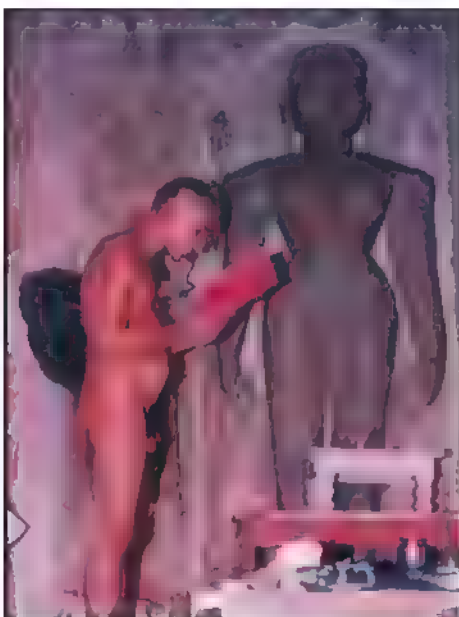
सरस्वती कॉलोनी में नवनिर्मित जिनालय में
स्थित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर
संस्कार विधि करते हुए पूज्य श्री (कोटा राज)



नेमिनाथ जिनालय में भगवान पार्श्वनाथ की
प्रतिमा पर संस्कार विधि करते हुए
पूज्य श्री विमर्शसागर जी (एटा उ.प्र.)



बरही क्षेत्र में प्रतिमाओं की शुद्धि के समय
संस्कार विधि करते हुए पूज्य आचार्य श्री
विमर्शसागर जी



छत्री मंदिर स्थित भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा पर
संस्कार करते हुए पूज्य विमर्शसागर
जी (शिवपुरी-२००८)



महामुनि आदिसागर जी की दीक्षा संस्कार विधि में वस्त्र त्याग करवाते
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी। समीप हैं सौधर्म इन्द्र श्री राजेश माते



विधिनायक आदिनाथ की प्रतिमा पर संस्कार करते हुए पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी
(पृथ्वीपुर पञ्चकल्याणक २१ फरवरी २०१५)



तीर्थधाम आदिश्वरम् स्थित जिनबिम्ब की संस्कार विधि करते हुए
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी (चंदेरी २०१३)



गजरथ परिक्रमा में आचार्य श्री एवं विश्वपूज्यसागर जी ससंघ (शिवपुरी-२००८)



श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ससंघ गजरथ महोत्सव में (पृथ्वीपुर २०१५)



ब्रिगेडियर ग्रुप पूज्य श्री से आशीर्वाद लेते हुए (१६ फरवरी २०१५-पृथ्वीपुर)

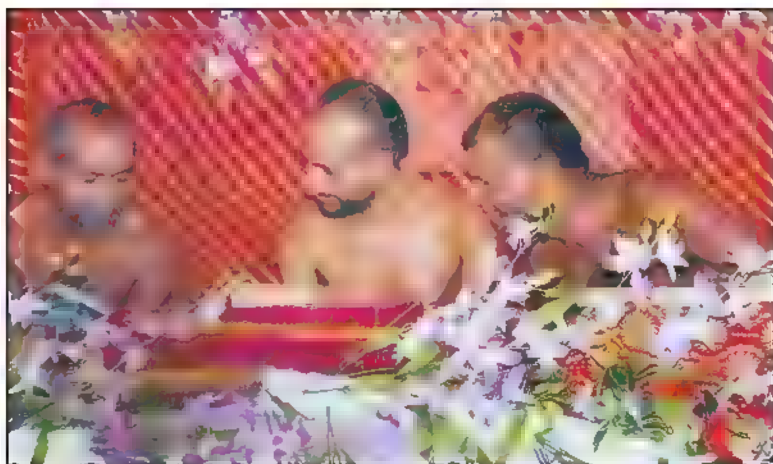
विराग संसद दर्शन



पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी के साथ हैं आचार्य श्री विशुद्धसागर जी, आचार्य श्री विमर्शसागर जी, आचार्य श्री विमदसागर जी, मुनि श्री विहर्षसागर जी, मुनि श्री विनिश्चय सागर जी



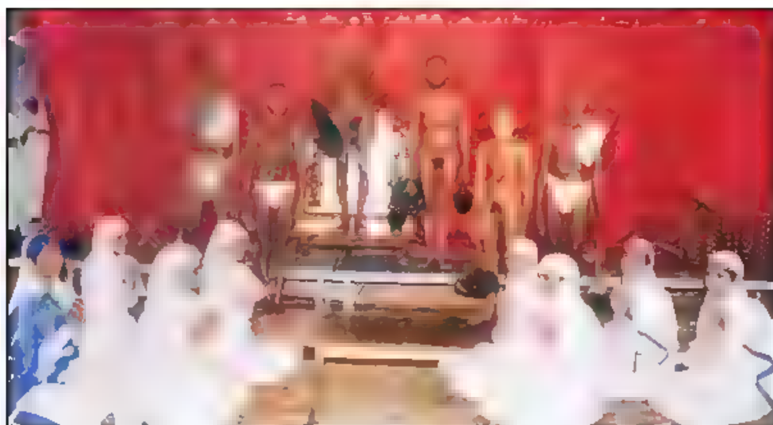
सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आचार्य श्री विमर्शसागर जी गुरु सान्निध्य में प्रवचन करते हुए। पास हैं आचार्य श्री विशुद्धसागर जी, आचार्य श्री विभवसागर जी, आचार्य श्री विमदसागर जी



गुरु भाईयों में तत्व चर्चा



विराग संसद में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विमर्शसागर जी



जयपुर में आचार्य श्री विरागसागर जी के संग – आचार्य श्री विमर्शसागर जी ससंघ

धर्मनेता की शरण में राजनेता



केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' गुरुदेव विमर्शसागर जी से वार्ता करते हुए



गृहमंत्री (राजस्थान सरकार) श्री गुलाबचन्द जी कटारिया पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



गृहमंत्री (राजस्थान सरकार) श्री शान्ति धारीवाल जी पूज्य आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



केन्द्रीय मंत्री सचिन पायलट पूज्य आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



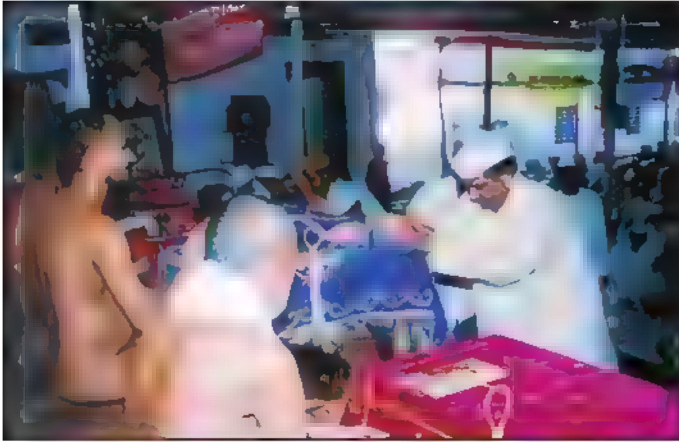
सासद रघुवीर सिंह कौशल पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



सांसद बागपत श्री सत्यपाल जी आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए।
साथ हैं श्री निर्मल जी साकुण्या नेताजी



विधायक श्री प्रहलाद गुजल रामगजमण्डी पूज्य श्री विमर्शसागर जी से आशीर्वाद ग्रहण करते हुये



पूर्व विधायक श्री अखण्ड प्रताप सिंह पूज्य श्री से वार्ता करते हुए (शिवपुरी २००८)



मंत्री (म प्र.) श्रीमती यशोधराराजे सिंधिया पूज्यश्री से आशीर्वाद लेती हुई



श्री इब्राहिम कुरैशी (अध्यक्ष अल्पसख्यक विभाग) पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

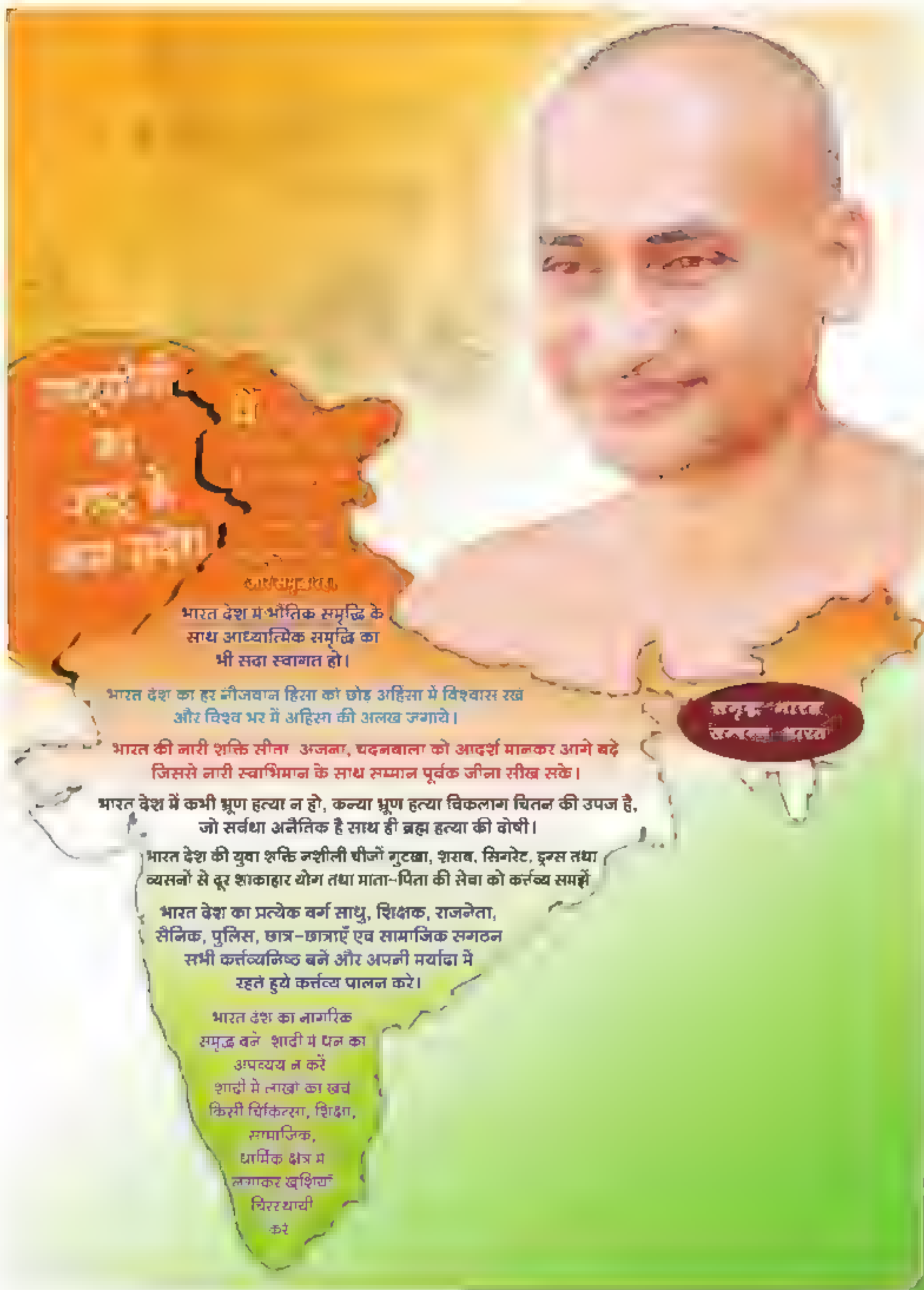
राष्ट्रयोगी अलंकरण



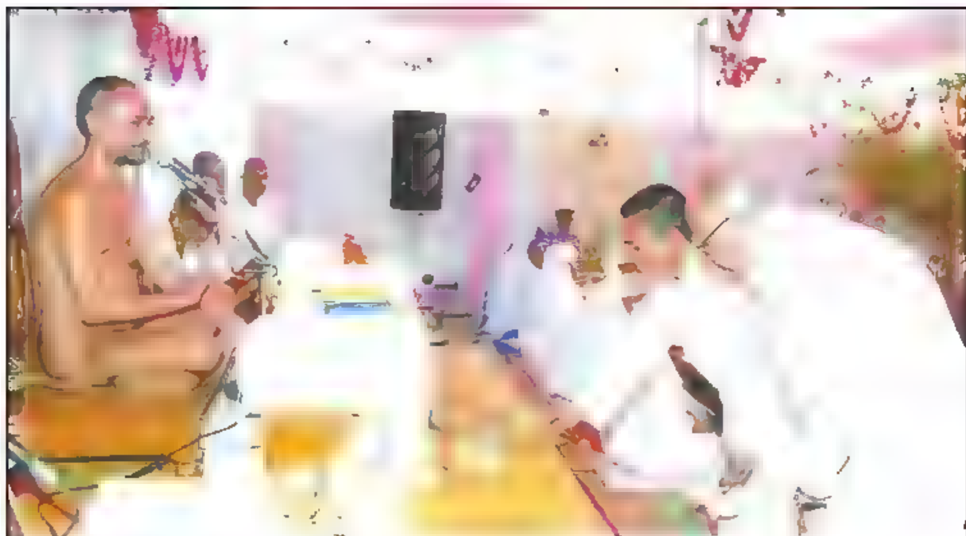


राष्ट्रवादी सस्था भारत विकास परिषद के प्रदेश सचिव श्री मुकुल राय एवं शाखा बिजयनगर राजस्थान के सदस्य विवेकानद जी के सार्धशति वर्ष समारोह के शुभ अवसर पर आचार्य श्री विमर्शसागर जी को राष्ट्रयोगी अलंकरण से अलंकृत करते हुए।




भारत देश मे भौतिक समृद्धि के
साथ आध्यात्मिक समृद्धि का
भी सदा स्वागत हो।
भारत देश का हर नौजवान हिंसा को छोड़ अहिंसा मे विश्वास रखे
और विश्व भर में अहिंसा की अलख जगाये।
भारत की नारी शक्ति सीता अंजना, चंदनबाला को आदर्श मानकर आगे बढ़े
जिससे नारी स्वाभिमान के साथ सम्मान पूर्वक जीना सीख सके।
भारत देश में कभी भ्रूण हत्या न हो, कन्या भ्रूण हत्या विकलांग चिंतन की उपज है,
जो सर्वथा अनैतिक है साथ ही ब्रह्म हत्या की दोषी।
भारत देश की युवा शक्ति नशीली चीजों गुटखा, शराब, सिगरेट, ड्रग्स तथा
व्यसनों से दूर शाकाहार योग तथा माता-पिता की सेवा को कर्त्तव्य समझें
भारत देश का प्रत्येक वर्ग साधु, शिक्षक, राजनेता,
सैनिक, पुलिस, छात्र-छात्राएँ एवं सामाजिक संगठन
सभी कर्त्तव्यनिष्ठ बनें और अपनी मर्यादा में
रहते हुये कर्त्तव्य पालन करे।
भारत देश का नागरिक
समृद्ध बने शादी में धन का
अपव्यय न करें
शादी मे लाखों का खर्च
किसी चिकित्सा, शिक्षा,
सामाजिक,
धार्मिक क्षेत्र में
लगाकर खुशियाँ
चिरस्थायी
करें

गुरू वंदना करते विद्वतगण



देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य साहित्यकार संत जीवन लेखक सुरेश जैन 'सरल'
पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी की वंदनाकर आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



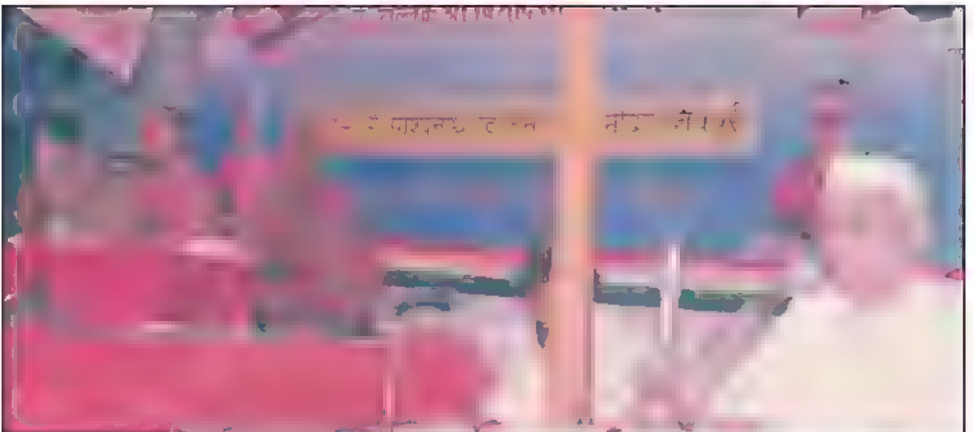
पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर की वदना करते डॉ. श्रेयास कुमार जैन बड़ौत (अध्यक्ष शास्त्रि परिषद)




विद्वत श्री हुकम चन्द भारिल्ल आचार्य श्री से तत्व चर्चा करते हुए



पूज्य विमर्शसागर जी के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत सगोष्ठी में आलेख वाचन करते हुए
डॉ. सुरेन्द्र भारती (महामत्री,विद्वत परिषद) (शिवपुरी २००७)



आयोजित राष्ट्रीय विद्वत सगोष्ठी में डॉ. रमेश चन्द बिजनौर (शिवपुरी २००७)



पूज्य विमर्शसागरजी की अभिवंदना करते श्री निर्मल जैन–सतना



डॉ. अशोक लाडनू पूज्य विमर्शसागर जी के सान्निध्य में
आयोजित राष्ट्रीय विद्वत सगोष्ठी में (शिवपुरी २००७)



डॉ. नरेन्द्र सनावद पूज्य विमर्शसागर जी के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत सगोष्ठी में (शिवपुरी २००७)



डॉ शीतल चन्द्र जी (अध्यक्ष विद्वत् परिषद), डॉ. सुरेन्द्र भारती (महामंत्री विद्वत् परिषद),
प्राचार्य निहालचंद जी एव प विनोद जैन रजवांस–कोटा



आचार्य श्री के सान्निध्य में जैन कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी(बड़ौत २०१४)

संत मिलन दर्शन



'गुरु–शिष्य का देख मिलन–धन्य हो गये श्रावक जन'
पूज्य आचार्य विरागसागर जी एवं मुनि विमर्शसागर जी का आत्मीय मिलन। (लोहारिया–२०१०)



आचार्य पुष्पदंतसागर जी के साथ मंचासीन मुनि विमर्शसागर जी (भिण्ड १९९९)



आचार्य आदिसागर जी अकलीकर एवं आचार्य शांतिसागर जी छाणी परम्परा के द्वय
आचार्य विमर्शसागर, आचार्य ज्ञानसागर जी का महामिलन (बड़ौत २०१४)



आचार्य चन्द्रसागर जी, आचार्य विमर्शसागर जी एव मुनि विनिश्चयसागर जी (करगुवाँ-२०१४)



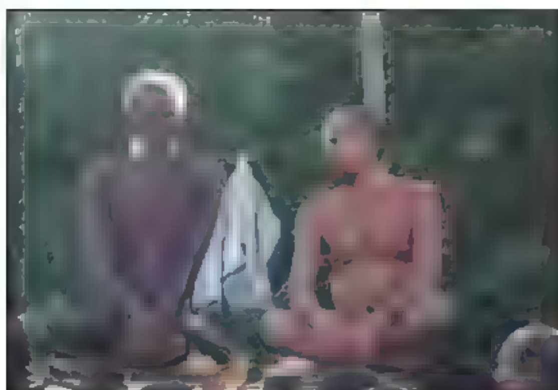
आचार्य गुप्तिनंदी एव पूज्य विमर्शसागर जी ससघ (एटा-२०१०)



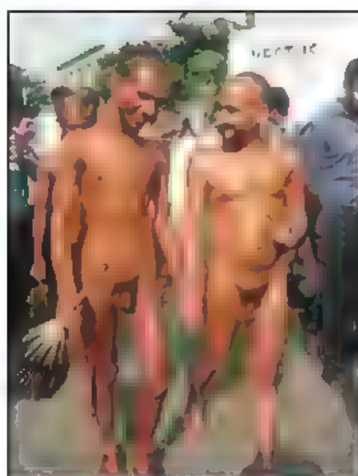
आचार्य विमर्शसागर जी का आचार्य नमिसागर जी एव
आचार्य सुन्दरसागर जी से आत्मीय मिलन (एटा-२०१४)



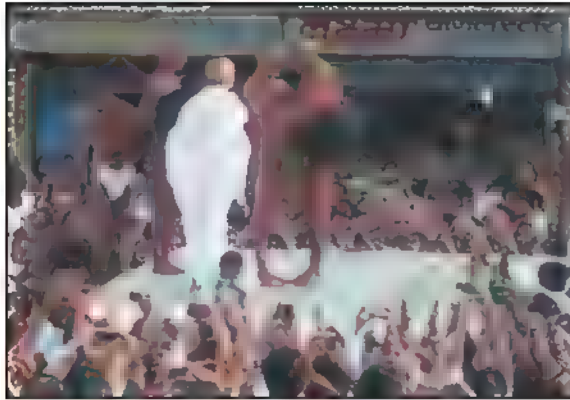
पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी एवं आचार्य विमदसागर जी वार्ता करते हुए (कोटा, २०१२)



आचार्य सौभाग्यसागर जी एवं आचार्य विमर्शसागर जी वार्ता करते हुए।



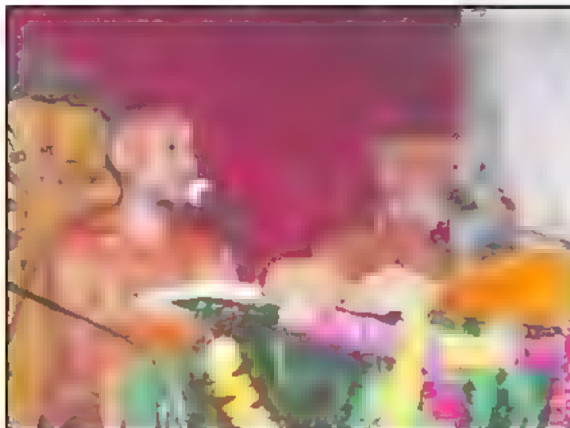
आचार्य भारतभूषण एव आचार्य विमर्शसागर जी (हस्तिनापुर-२०१४)



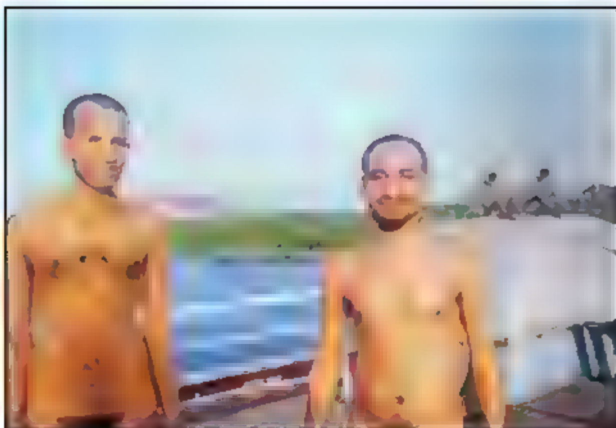
राष्ट्रयोगी से मिले राष्ट्रसंत, उमड़े श्रावक आया बसंत
आचार्य विमर्शसागर जी एव मुनि तरुणसागर जी का आत्मीय मिलन (फिरोजाबाद-२०१४)

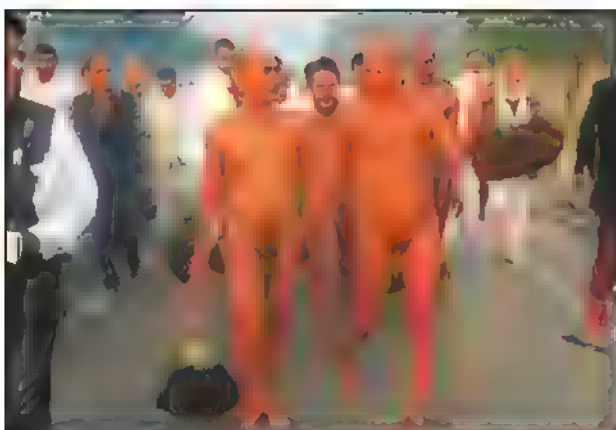


आचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि तरुणसागर जी ईर्यासमिति से गमन करते हुए



आचार्य विमर्शसागर जी एव मुनि अमितसागर जी मंचासीन (फिरोजाबाद-२०१४)


पूज्य विमर्शसागर जी एव पूज्य सिद्धसैन जी महाराज (कोटा)


आचार्य विमर्शसागर जी एव मुनि प्रमुखसागर जी का आत्मीय मिलन (गाजियाबाद–२०१४)


श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि सुरत्नसागर जी (भिण्ड–२०१३)



गुरु भाईयों से मिलन; पूज्य विमर्शसागर जी एवं मुनि विहर्षसागर,
मुनि विनिश्चयसागर जी कुशल क्षेम पूछते हुए



जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में पूज्य श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी की अगवानी करतीं
गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी



आचार्य आदिसागर जी अकलीकर एवं आचार्य शांतिसागर जी दक्षिण परम्परा के
आचार्य श्री विमर्शसागर जी एवं गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी ससंघ
(जम्बूद्वीप हस्तिनापुर-२०१४)



पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी के तात्विक सम्बोधन को सुनते हुए
तेरापंथ श्वेताम्बर संत आचार्य महाश्रमण जी एवं अन्य साधुवृंद (ग्वालियर-२०१४)



पूज्य विमर्शसागर जी एव श्वेताम्बर संत
कमलमुनि जी का आत्मीय मिलन
(आगरा-२००८)



श्वेताम्बर संत
दिनेश मुनि एवं कुमार श्रमण
के मध्य पूज्य विमर्शसागर जी

स्कूल प्रवचन



अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव १५०० छात्र–छात्रओं को संस्कार की शिक्षा देते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी





विजयनगर राजस्थान में सैंट पॉल स्कूल में अरिहंत ज्ञान गंगा महोत्सव में २००० बच्चों को 'देश और धर्म के लिये जीयो' का सन्देश देते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

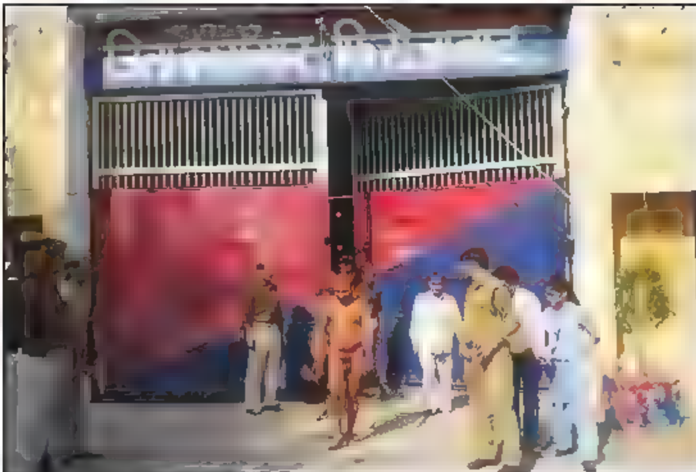


लॉर्ड महावीरा एकेडमी बड़ौत (उ.प्र) में 'अर्हंत ज्ञानगंगा महोत्सव' में २००० छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जेल प्रवचन



आचार्य श्री जिला कारागार एटा में प्रवचन कर आते हुये साथ हैं जेलर डॉ. वीरेशराज एवं अन्य



जिला कारागार फिरोजाबाद में प्रवचन कर आते पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी





विमर्श जागृति मंच के प्रथम सेमिनार को संबोधित करते हुए श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी।



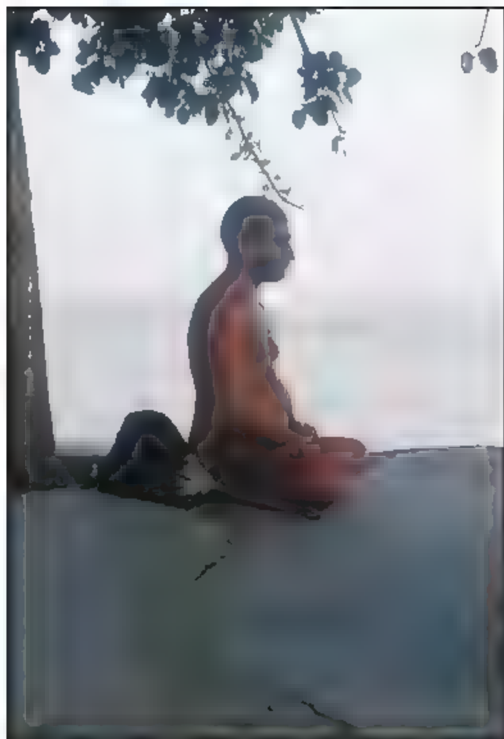
मंचासीन पूज्य विमर्शसागर जी एवं विश्वपूज्यसागर जी के सान्निध्य में महासभा के नैमित्तिक अधिवेशन में महासभा अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी जी बोलते हुए एवं श्री निर्मल जी सतना बैठे हुए।



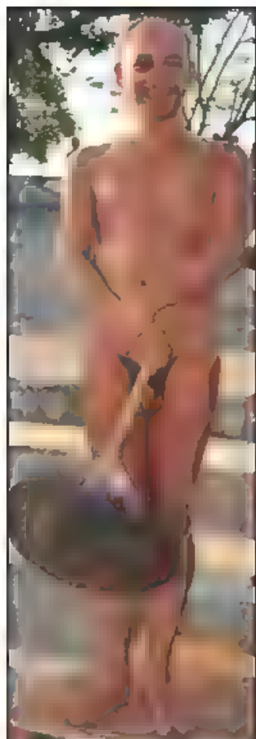
आचार्य श्री के सान्निध्य में भक्तामर स्तोत्र का शिक्षण लेते श्रद्धालु







परम भाव लीन योगीराज विमर्शसागर जी
करते तप शैल नदी तट पर,
तरु तल वर्षा की झड़ियों में।



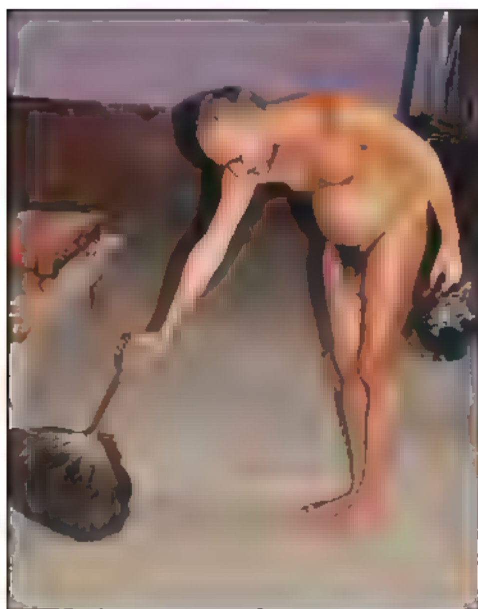
प्रफुल्लित सहज मुद्रा में
पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी



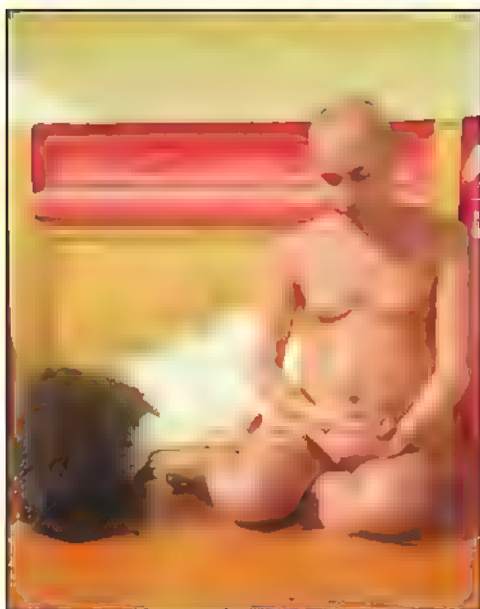
साधु–साध्वियों को अध्यात्म ध्यान–योग की शिक्षा देते श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी



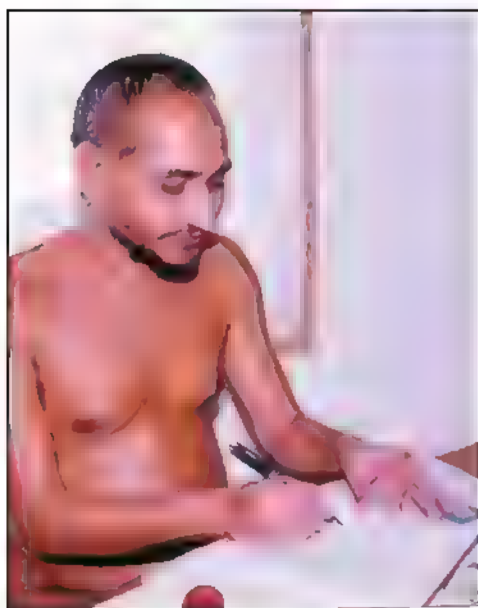
देख–देखकर पग धरते हो, धरती को उपकृत करते हो



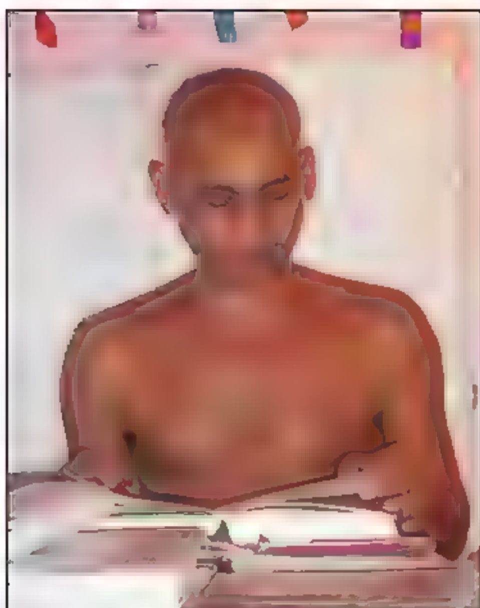
जीवाण रक्खणो धम्मो



कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थित
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी



आचार्य अमितगति कृत 'योगसार प्राभृत' की प्राकृत
टीका का लेखन करते हुए पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी।



ज्ञानाभ्यास करे मनमाहीं, ताके मोह–महातम नाहीं



सहज प्रसन्न वदन – श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज



जय चंद्रवदन राजीव नैन
कबहुँ विकथा बोलत न बैन



प्रतिक्रमण आवश्यक में लीन पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी



समवशरण में जिन वंदना करते पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी मानों
कुन्दकुन्दाचार्य, सीमंधर स्वामी की वंदना कर रहे हों

आचार्य श्री ससंघ





